श्रीविष्णुसहस्त्रनाम, श्रीसीतासहस्त्रनाम एवं श्रीललितासहस्त्रनाम हिंदी काव्य

(मूल संस्कृत श्लोक, हिंदी काव्य एवं हिंदी भावार्थ सहित)

हिंदी काव्यान्तरण

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्रीविष्णुसहस्त्रनाम, श्रीसीतासहस्त्रनाम
एवं
श्रीललितासहस्त्रनाम हिंदी काव्य

(मूल संस्कृत श्लोक, हिंदी काव्य एवं हिंदी भावार्थ सहित)

हिंदी काव्यान्तरण

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

३५मायना रिट्रीट, हिलरीज़, वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया – ६०२५

वेबसाइट: https://shriramkatha.org

ईमेल: srkperth@outlook.com

SHRIVISHNUSAHSTRNAM, SHRISITASAHSTRANAM EVAM SHRILALITASAHASTRNAM HINDI KAVYA (HINDI)

ISBN: 978-1-7648041-3-4

Author / All rights Reserved

© Author: Dr. Yatendra Sharma

1st Edition: June 2024

E-Book

Published by: Shri Ram Katha Sansthan

35 Mayena Retreat, Hillarys
W.A. 6025, AUSTRALIA
Telephone: +61 8 94011543
Email: srkperth@outlook.com

अस्वीकरण

इस काव्य पुस्तक की सामग्री जनहित एवं सामान्य ज्ञान के लिए प्रदान की गई है। हमारा तद्भाव पाठक को कोई परामर्श देने का नहीं है। इस काव्य पुस्तक की सामग्री किसी भी तरह से विशिष्ट परामर्श का विकल्प नहीं है। आपको इस ज्ञान के आधार पर कोई भी निर्णय लेने से पहले प्रासंगिक निपुण या विशेषज्ञ का परामर्श प्राप्त कर लेना चाहिए।

इस काव्य पुस्तक के रचयिता, प्रकाशक और उनका कोई प्रतिनिधि किसी भी विषय में इस काव्य पुस्तक से सम्बंधित कोई प्रत्याभूति नहीं लेते। इस काव्य पुस्तक का पठन-पाठन-गायन-श्रवण पाठक स्वयं के संज्ञान से दायित्व ले कर ही करें।

यद्यपि हमने इस काव्य पुस्तक में सटीक ज्ञान देने का पूर्ण प्रयास किया है लेकिन किसी भी प्रकार कोई त्रुटि अथवा अकृता रह गई हो तो उसके लिए रचयिता एवं प्रकाशक क्षमा प्रार्थी हैं और इसके परिणाम स्वरूप किसी विधि, सामाजिक, धार्मिक, इत्यादि का दायित्व नहीं लेते।

क्रमांक

अस्वीकरण 5
प्रार्थना 7
श्री विष्णु सहस्त्रनाम हिंदी काव्य 11
स्तुति 12
धर्मराज युधिष्ठिर एवं पितामह भीष्म संवांद 13
अथ श्री विष्णु सहस्त्रनाम स्तुति हिंदी काव्य 18
श्री सीता सहस्त्रनाम हिंदी काव्य 99
श्री ललिता सहस्त्रनाम हिंदी काव्य 154
प्रार्थना 155
श्रीललिता-महात्रिपुर-सुन्दरी: संक्षिप्त परिचय 160
माँ श्रीललिता-त्रिपुर-सुंदरी ध्यान 164
श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् - ध्यानम् 167
अथ श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम् – भावार्थ सहित 170
श्रीललितापञ्चरत्नम् 241
गुरु-शब्द 243

प्रार्थना

भगवान् के अनन्य भक्त पितामह श्री भीष्म पितामह ने धर्मराज युधिष्ठिर को कलियुग में अल्प प्रयास से सुख शांति एवं समृद्धि प्राप्त करने का साधन भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों का जपन करना बताया है, जिसको महर्षि वेद व्यास ने संस्कृत के श्लोकों में 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' नाम से लिपिबद्ध किया है। इसके महात्मय एवं जपने से चमत्कारिक शक्तियों द्वारा जन कल्याण कोई नया विषय नहीं है। अनगनित ग्रन्थ एवं ऋषियों ने भी इसके महात्मय के बारे में वर्णन किया है। संस्कृत लिपिवद्ध होने से उच्चारण में जन साधारण को कठिनाईओं का सामना करना पड़ता है। इस हिंदी काव्य के द्वारा मूल ग्रन्थ के भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों को यथाचित रखते हुए हिंदी काव्य में भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों का भावार्थ समझाने का प्रयास किया है। कविता रूप में पाठ करने से स्वर उच्चारण पर अति आनंद आता है तथा गायन तरंगों द्वारा भगवान् के प्रति आकर्षण बढ़ता है।

आप सभी जानते हैं कि जब कलियुग का आगमन हुआ तो भारतवर्ष में सत्य धर्म पालनहार, धर्म के अनुयायी एवं न्याय प्रिय सम्राट शिरोमणी परीक्षित का शासन था। अब काल का चक्र देखिये। एक घटना ने सब कुछ बदल दिया। महाराज परीक्षित एक दिन आखेट करने निकले। उन्होंने उस दिन स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था। उन्होंने स्वयं ही कलियुग को स्वर्ण में निवास करने की अनुमति दे रखी थी। कलियुग उसमें घुस गया और उसने सम्राट शिरोमणी परीक्षित की बुद्धि पलट दी।

आखेट करते हुए सम्राट शिरोमणी परीक्षित ने एक हिरन के पीछे अपना घोड़ा लगा दिया। बहुत दूर तक पीछा करने पर भी वह हिरन न मिला। थकावट के कारण उन्हें भूख और प्यास लग रही थी। एक मुनि आश्रम दिखाई दिया। यह एक वृद्ध मुनि महर्षि शमीक जी का आश्रम था। महर्षि ध्यान में मग्न थे। सम्राट ने ध्यानमग्न सम्राट से जल माँगा। ध्यानमग्न मुनि को सम्राट शिरोमणी परीक्षित का स्वर सुनाई ही नहीं दिया। कलि के प्रभाव से सम्राट की बुद्धि भ्रमित हो चुकी थी। थके और प्यासे सम्राट परीक्षित को मुनि के इस व्यवहार पर बड़ा क्रोध आया। कलि के प्रभाव से सम्राट परीक्षित ने सोचा कि मुनि ने घमंड के कारण हमारा तिरस्कार किया है। इस अपराध का उन्हें कुछ दंड देना अवश्य चाहिए। पास ही एक मरा हुआ साँप पड़ा था। सम्राट परीक्षित ने कमान की नोक से उसे उठाकर मुनि के गले में डाल दिया और अपनी राह ली। मुनि

के श्रृंगी नाम के एक महातेजस्वी पुत्र थे। वह स्नान ध्यानादि करने पास की नदी में गए हुए थे। जब आश्रम लौटे तो पिता के गले में मृतक सर्प देख क्रोध में आ गए। कोपशील महर्षि श्रृंगी पिता के इस अपमान को सहन नहीं कर पाए और उन्होंने कमंडल से जल लेकर (संकल्प कर) श्राप दिया कि जिस पापात्मा ने मेरे पिता के गले में मृत सर्प की माला पहनाई है, आज से सात दिन के अंदर तक्षक नाम का सर्प उसे डस लेगा। पिता के ध्यानावस्था से वापस आने पर पुत्र महर्षि श्रृंगी ने उपर्युक्त उग्र श्राप सम्राट शिरोमणी परीक्षित को देने की बात कही। महर्षि को पुत्र के अविवेक पर दुःख हुआ। उन्होंने एक शिष्य द्वारा सम्राट परीक्षित को श्राप का समाचार कहला भेजा। सम्राट परीक्षित ने ऋषि के श्राप को अटल समझकर अपने पुत्र युवराज जनमेजय को राजगद्दी पर बिठा दिया और सब प्रकार से मरने के लिये तैयार होकर अनशन व्रत करते हुए महर्षि श्री शुकदेव से श्रीमद्भागवत की कथा सुनी। सातवें दिन सर्पराज तक्षक ने आकर उन्हें डस लिया। विष की भयंकर ज्वाला से उनका शरीर भस्म हो गया।

सम्राट परीक्षित की मृत्यु के बाद कलियुग को रोक टोक करने वाला कोई न रहा और वह उसी दिन से अकंटक भाव से शासन करने लगा।

सम्राट जनमेजय इस प्रकरण से बहुत आहत हुए। उन्होंने सारे सर्पवंश का समूल नाश करने का निश्चय किया। इसी उद्देश्य से उन्होंने सर्प सत्र (सर्प यज्ञ) के आयोजन का निश्चय किया। यह यज्ञ इतना भयंकर था कि विश्व के सारे सर्पों का महाविनाश होने लगा। उस समय एक बाल ऋषि अस्तिक उस यज्ञ परिसर में आए। उनकी माता मानसा एक नाग थीं तथा उनके पिता एक ब्राह्मण थे। बाल ऋषि अस्तिक के आग्रह पर सम्राट जनमेजय ने सर्प सत्र (सर्प यज्ञ) तो समाप्त कर दिया परन्तु उनसे एक निवेदन किया। सम्राट जनमेजय बोले, 'हे बाल ऋषिवर, कलि के कारण मेरे पिता की बुद्धि भ्रम हुई क्योंकि उन्होंने स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था। महर्षि कश्यप, जो मेरे पिता को बचा सकते थे, लोभ वश कलि द्वारा धन देने पर धन की प्राप्ति होने पर पिता को बचाने नहीं आए। अब सांसारिक व्यक्तियों के पास स्वर्ण भी होगा ही। लोभ से भी बचना असंभव। अतः कलि से कैसे रक्षा की जा सकती है?’

तब बाल ऋषि अस्तिक ने अपने गुरु एवं महर्षि वेद व्यास के परम शिष्य महर्षि वैशम्पायन जी का आवाहन किया। महर्षि वैशम्पायन तब वहां पधारे।

महर्षि वैशम्पायन ने तब अपने गुरु महर्षि भगवान् वेद व्यास रचित श्री'विष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' का उल्लेख करते हुए वरदान दिया कि जो भी नर नारी 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' का जाप करेंगे उनके गृह में कलि का वास नहीं होगा। 'श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्' का पाठ करने वाले व्यक्ति को यश, सुख, ऐश्वर्य, संपन्नता, सफलता, आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्त होगा, तथा उनकी सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे ।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः ।।

यह ग्रन्थ सबके लिए अत्यंत उपयोगी है। भगवान् से आप सब के लिए सुख शांति और समृद्धि की याचना के साथ यह काव्य प्रस्तुत है। इस काव्य में ३६५ चौपाइयां हैं। अगर एक चौपाई का भी हृदय से प्रतिदिन गायन किया जाए तो एक वर्ष में सम्पूर्ण काव्य पढ़ा जा सकता है एवं भगवान का आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है।

श्रुति में वर्णित है कि सीता सहस्त्रनाम (माता सीता के 1,000 पवित्र नाम) का हिन्दू धर्म में अत्यधिक आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व है। यह स्तोत्र महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित 'अद्भुत रामायण' से उद्धृत है। ऐसी मान्यता है कि इसके नित्य नियम पूर्वक पठन, श्रवण और मनन करने से समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति: होती हैं। उस गृह में देवी सीता और प्रभु श्री राम का साक्षात् वास माना जाता है। इससे घर में सुख-समृद्धि और धन-धान्य की वृद्धि होती है। पापों का नाश और मोक्ष की प्राप्ति होती है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत श्लोक में रचित होने से उच्चारण में जन साधारण को कठिनाईओं का सामना करना पड़ता है। इस हिंदी काव्य के द्वारा मूल ग्रन्थ के माता सीता विष्णु के सहस्त्र नामों को यथाचित रखते हुए हिंदी काव्य में सहस्त्र नामों का भावार्थ समझाने का प्रयास किया है।

माँ ललिता माहेश्वरी शक्ति स्वरुपिणी षोडशी सबसे मनोहर श्री विग्रह वाली सिद्ध देवी हैं। महाविद्याओं में भगवती षोडशी का चौथा स्थान है। षोडशी महाविद्या को श्रीविद्या भी कहा जाता है। षोडशी महाविद्या के ललिता, त्रिपुरा, राज-राजेश्वरी, महा-त्रिपुर-सुन्दरी, बालापञ्चदशी आदि अनेक नाम हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्माणी-तीनों लोकों की सम्पत्ति एवं शोभा का ही नाम श्री है। श्रुति में ऐसा उल्लेख है कि

श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् के पाठ से इष्टदेवी प्रसन्न हो जाती हैं और उपासक की कामना को पूर्ण करती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् के जप से दुष्ट ग्रहों की बुरी दशा के कारण आ रही कठिनाईयों से विश्राम मिलता है। इस हिंदी ग्रन्थ के द्वारा मूल संस्कृत ग्रन्थ श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् को यथाचित रखते हुए हिंदी में सहस्त्र नामों का भावार्थ समझाने का प्रयास किया है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

हरि विष्णु से आप सब के स्वास्थ्य, ऐश्वर्य, धन-धान्य, यश, ईश-प्रेम एवं प्रभु कृपा की कामना करते हुए, प्रभु के चरणों में आपका अपना,

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान
ऑस्ट्रेलिया - ६०२५

श्रीविष्णुसहस्त्रनाम हिंदी काव्य

श्रीविष्णुसहस्त्रनाम हिंदी काव्य

मूल संस्कृत ग्रन्थ श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् पर आधारित

स्तुति

श्री परमात्मने नमः ।
यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ।।

श्री परमात्मने नमः ।
कर स्मरण नाम जिन भगवन । हो मुक्त जन्म-मरण भव-बंधन ।।
हैं जो मूल हेतु जन सृजन । करूँ मैं उन हरि विष्णु नमन ।। (१)

भावार्थ: *जिनके स्मरण करने मात्र से मनुष्य जन्म-मृत्यु रूप संसार बन्धन से मुक्त हो जाता है, सबकी उत्पत्ति के कारणभूत उन भगवान विष्णु को नमस्कार है।*

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।।

हैं जो आदिभूत सब भूजन । करते जो धारण समस्त भुवन ।।
सर्व समर्थ लें रूप विभिन्न । करूँ मैं उन हरि विष्णु नमन ।।(२)

भावार्थ: *सम्पूर्ण प्राणियों के आदिभूत, पृथ्वी को धारण करने वाले, अनेक रूपधारी और सर्वसमर्थ भगवान विष्णु को प्रणाम है।*

धर्मराज युधिष्ठिर एवं पितामह भीष्म संवांद

वैशम्पायन उवाच
श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥१॥

वैशम्पायन उवाच
सुन विधि पूर्ण धर्म उपच्छन्न । करें जो नष्ट अघ सब भूजन ।।
धर्मपुत्र युधिष्ठिर राजन । पूछे सुत शांतनु एक प्रश्न ।। (१)

भावार्थः *(महर्षि) वैशम्पायन जी कहते हैं कि धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने सम्पूर्ण विधिरूप धर्म तथा पापों का क्षय करने वाले धर्म रहस्यों को जानने हेतु शान्तनु पुत्र भीष्म से प्रश्न पूछा । (पौराणिक कथाओं के अनुसार यह उस समय की घटना है जब पितामह भीष्म महाभारत युद्ध में बाणों की शैया पर अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे थे।)*

युधिष्ठिर उवाच ।
किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥२॥

युधिष्ठिर उवाच ।
है कौन देव एक इस भुवन । कौन परम आश्रय स्थापन ।।
कर अवबोध जिनका भूजन । टूटें हिय ग्रंथि विस्मापन ।।
होते तुरंत दूर संशय मन । होते क्षीण सब कर्म भुवन ।।
कौन देव जिनकी कर अर्चन । हो कल्याण सब भांति भूजन ।। (२)

भावार्थः *समस्त जगत में एक देव कौन है ? परम आश्रय स्थान कौन है ? जिसका साक्षात्कार कर लेने पर जीव की अविद्यारूप हृदय-ग्रन्थि टूट जाती है। सब संशय नष्ट हो जाते हैं। संसार के सम्पूर्ण कर्म क्षीण हो जाते हैं। किस देव की स्तुति करने से मनुष्य सब भांति कल्याण की प्राप्ति कर सकते हैं?*

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥३॥

है कौन धर्म सर्व धर्म महन । उपलब्ध धर्म जो इस भुवन ।।
जपत हों जन दूर भव-बंधन । मिले मुक्ति चक्र जनम मरन ।। (३)

भावार्थ: *समस्त पृथ्वी पर उपलब्ध धर्मों में कौन धर्म श्रेष्ठ है? जिसके जपन से जीव जन्म-मरण रूप संसार बंधन के चक्र से मुक्त हो जाता है ?*

भीष्म उवाच ।
जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥४॥

भीष्म उवाच ।
स्वामी स्थावर जंगम भुवन । देवों के देव पुरुष महन ।।
देश काल वास्तु अपरिछिन्न । जो श्रेष्ठ क्षर अक्षर भगवन ।।
करते निरंतर उनका भजन । हेतु   सहस्त्रनाम   उच्चारन ।।
तरें भूजन इस   भव-बंधन । मिले मुक्ति उन्हें सब खेदन ।। (४)

भावार्थ: *स्थावर जंगम संसार के स्वामी, देवों के देव, देश-काल और वस्तु से अपरिच्छिन्न, क्षर-अक्षर से श्रेष्ठ पुरुषोत्तम का सहस्र नामों के द्वारा निरन्तर भजन करने से पुरुष सब दुःखों से पार हो जाता है।*

तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥५॥

जपें अनादि अनंत नारायन । करें उनका भजन और अर्चन ।।
हेतु हरि सहस्त्रनाम स्तवन । पाएं सुख सब दुःखी भूजन ।।(५)

भावार्थ: *अनंत नारायण का निरंतर भजन, पूजन करने से, उन्हीं का ध्यान करने से तथा सहस्र नामों के द्वारा स्तवन करने से प्राणी सब दुःखों से छूट जाता है।*

अनादिनिधनं   विष्णुं   सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥६॥

रहित जन्म मृत्यु छै विकार । सर्व्यापक ईश्वर सब संसार ।।
करें स्वामी भू नित्य स्तवन । मिटें अघ जब करें नर भजन ।।(६)

भावार्थः *जन्म-मृत्यु, छै विकारों (उत्पत्ति, शरीर वृद्धि, बाल्यावस्था, परिपक्वता, प्रौढ़ता, अंत) से रहित, सर्वव्यापक, सम्पूर्ण लोकों के महेश्वर, लोकाध्यक्ष देव की निरन्तर स्तुति करने से मनुष्य सब दुःखों से पार हो जाता है।*

ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं   महद्भूतं   सर्वभूतभवोद्भवम् ॥७॥

करें जो सृजन यह त्रिभुवन । हितैषी ब्राह्मण   चतुरानन ।।
तप श्रुति कर्ता सुकृतन । बढ़ाते कीर्ति समस्त भूजन ।।
ईश लोक हेतु भूत उत्पन्न । ज्ञाता धर्म हेतु भुवन भगवन ।।
करें जब उनका स्तवन । मिटें अघ जब करें नर भजन ।। (७)

भावार्थः *त्रिभुवन की रचना करने वाले ब्रह्मा, ब्राह्मण, तप, श्रुति और शुभ कर्म कर्ताओं के हितैषी, प्राणियों की कीर्ति बढ़ाने वाले, सम्पूर्ण लोकों के स्वामी, सब धर्मों को जानने वाले, समस्त भूतों के उत्पत्ति का कारण, संसार के कारणरूप परमेश्वर का स्तवन करने से मनुष्य सब दुःखों से छूट जाता है।*

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः ।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥८॥

मानूँ मैं इसे   उत्कृष्ट   धर्म । मध्य सभी अन्य विधिरूप धर्म ।।
कर हिय विराज कमल नयन । करें युक्त भक्ति उनका भजन ।। (८)

भावार्थ: *वह तीनों अन्य विधिरूप सभी धर्मों में मैं इसी धर्म को श्रेष्ठ मानता हूँ कि अपने हृदय कमलनयन (भगवान वासुदेव) को स्थापित कर भक्तिपूर्वक उनका भजन करें।*

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥९॥

हैं वही देव परम पावन । परम तप परब्रह्म पारायन ।।
वही परम गति समस्त भूजन । करो हिय धार उनका स्तवन ।।(९)

भावार्थ: *वही परम पवित्र, परम तप, परम ब्रह्म और परायण हैं। वही समस्त प्राणियों की परम गति हैं। हृदय में धारण कर उनका भजन करो।*

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥१०॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥११॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥१२॥

मध्य सभी तीर्थ जो पावन । दाता मंगल सब सुर भूजन ।।
स्वामी सभी देव जो भगवन । अविनाशी पिता सब भूजन ।। (१०)
हेतु हैं जो सब भूत उत्पन्न । आदि काल जब सृष्टि सृजन ।।
काल महा प्रलय कर अवसान । करें समाहित जन भगवान् ।। (११)
लोक प्रधान स्वामी भुवन । करें दूर भय भव-अघ भूजन ।।
करें सिद्ध सबके जो मन्मन् । सुनो सहस्त्रनाम उन भगवन ।।(१२)

भावार्थ: *जो पवित्र करने वाले तीर्थादिकों में परम पवित्र है, सभी देवों और प्राणियों के मंगल दाता है, सभी देवों के स्वामी हैं, प्राणियों के अविनाशी पिता हैं, कल्प के आदि में सृष्टि के समय जिनसे सम्पूर्ण भूत उत्पन्न होते हैं और महाप्रलय में जिन*

भगवान् में वह विलीन हो जाते हैं, लोकप्रधान, संसार के स्वामी, प्राणियों के भय और पाप दूर करते हैं, सबकी इच्छाएं पूर्ण करते हैं, उन भगवान के सहस्त्र नामों को सुनो।

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥१३॥

हुए प्रवृत्त नाम हेतु गुन । हैं विख्यात जो इस भुवन ।।
गाए गए मन्त्रद्रष्टा महन । इतस्तत सर्वत्र कथा भगवन ।।
हेतु सिद्धि पुरुषार्थ जन । करूँ वर्णन नाम नारायन ।। (१३)

भावार्थः जो नाम गुण के कारण प्रवृत्त हुए हैं, उनमें से जो संसार में प्रसिद्ध हैं और मन्त्रद्रष्टा मुनियों द्वारा जो जहाँ-तहाँ सर्वत्र भगवत्कथाओं में गाये गये हैं, उन नारायण के नामों पुरुषार्थ सिद्धि के लिये वर्णन करता हूँ।

अथ श्री विष्णु सहस्त्रनाम स्तुति हिंदी काव्य

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद् भूतभृद् भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१४॥

ॐ सच्चिदानंद रुप भगवन । विश्वम देते भूजन जीवन ।।
करते विष्णु जग का पालन । हैं हरि वषट्कार यज्ञ यामन् ।।
भूतभव्यभवत्प्रभुः नाम । जानहुँ तीन काल परिणाम ।।
भूतकृत करें सृजन संसार । हैं भूतभृत जग पालनहार ।।
अन्तर्यामी प्रभु भूतात्मा । दे जन्म जीव सो भूतभावना ।। (१४)

भावार्थ: ॐ *(१)सच्चिदानंद रुप भगवन हैं।* ***विश्वम*** *(२) प्राणियों को जीवन देने वाले हैं (जग प्रजनन देव)।* ***विष्णु*** *(३) जग के पालनकर्ता हैं। प्रभु* ***वषट्कार*** *(४) यज्ञ आहुति हैं। भूत, वर्तमान एवं भविष्य, तीनों कालों के ज्ञानी* ***भूतभव्यभवत्प्रभुः*** *(५) हैं।* ***भूतकृत*** *(६) इस संसार के रचयिता है, एवं* ***भूतभृत*** *(७) इसका पालन करते हैं। जीवों के गूढ़ रहस्य जानने वाले अन्तर्यामी प्रभु* ***भूतात्मा*** *(८) हैं।* ***भूतभावना*** *(९) प्रकृति को जन्म देते हैं।*

पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥१५॥

नाम प्रभु पावन पूतात्मा । परम सार सुर है परमात्मा ।।
दें मुक्तानामा निर्मोचन । हैं अव्यय अजर अमर भगवन ।।
हरि पुरुष करें पुर शयन । साक्षी प्रभु देखें दुःख जन ।।
क्षेत्रज्ञ जानें शुद्ध अशुद्ध । हैं अजर अमर अक्षर सिद्ध ।। (१५)

भावार्थ: *पवित्र आत्मा प्रभु का नाम* ***पूतात्मा*** *(१०) है। इस ब्रह्माण्ड की परम श्रेष्ठ आत्मा* ***परमात्मा*** *(११) हैं। परम गति (मोक्ष) देने वाले प्रभु* ***मुक्तानामा*** *(१२) हैं। अजर अमर भगवान् को* ***अव्यय*** *(१३) नाम से सम्बोधित किया गया है। पुर (शरीर) में शयन करने वाले अथवा नौ द्वार वाले पवित्र शरीर को व्याप्त करके शयन करने वाले हरि* ***पुरुष***

*(१४) हैं। भगवान् **साक्षी** (१५) प्राणियों की पीड़ा का अनुभव करते हैं। शुद्ध अशुद्ध के ज्ञाता **क्षेत्रज्ञ** (१६) हैं। अजर अमर सिद्ध **अक्षर** (१७) हैं।*

योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः ॥१६॥

इन्द्रियजित प्रभु हैं <u>योगा</u> । <u>योगविदनेत</u> हरैं सब रोगा ।।
<u>प्रधानपुरषेश्वर</u> हैं ईश्वर । <u>नारसिंहवपु</u> नरसिंहेश्वर ।।
<u>श्रीमान</u> हिय लक्ष्मी वासित । <u>केशव</u> केश सुभग अति भावित ।।
मारो केशी अभद्र पापिन् । हुए जग यशस्वी केशव भगवन ।।
<u>पुरुषोत्तम</u> क्षर अक्षर ज्ञाता । पुरुष श्रेष्ठ जग विख्याता ।।(१६)

***भावार्थः** इन्द्रिय नियंत्रित प्रभु **योगा** हैं। **योगविदनेत** (१८) रूप से हर प्रकार के रोगों का नाश करते हैं। संसार के ईश्वर **प्रधानपुरषेश्वर** (१९) हैं। नरसिंह अवतार स्वरुप **नारसिंहवपु** (२०) हैं। श्री (लक्ष्मी जी) के हृदय में वास करने वाले **श्रीमान** (२१) हैं। अति सुन्दर केश वाले **केशव** (२२) हैं। **:** अभद्र राक्षश केश का वध करने के कारण भगवान् को **केशव** नाम से संसार में प्रसिद्धि मिली। प्रभु को क्षर (विनास) एवं अक्षर दोनों का ज्ञान होने के कारण संसार में श्रेष्ठ पुरुष रूप में ख्याति हुई और उन्हें **पुरुषोत्तम** (२४) नाम से पुकारा गया।*

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥१७॥

हरि <u>सर्व</u> तुम हो सर्वज्ञाता । हैं प्रभु <u>शर्व</u> मृत्यु दाता ।।
<u>शिव</u> त्रि-अवगुण से रहित । रहें <u>स्थाणु</u> सदा समाधि स्थित ।।
<u>भूतादि</u> हेतु जन्म अघनाशी । <u>निधि</u> श्री <u>अव्यय</u> अविनासी ।।
<u>संभव</u> प्रगट हों स्वैच्छा । <u>भावन</u> करें पूर्ण सब इच्छा ।।
<u>भर्ता</u> हरि हैं पालक भूजन । हैं प्रभु <u>प्रभव</u> सृजक भुवन ।।
<u>प्रभूरीश्वर</u> स्वामी देवगन । सर्वेश्वर वह ईश त्रिभुवन ।।(१७)

भावार्थ: *सर्वज्ञानी होने से भगवान् को* ***सर्व*** *(२५) कहा जाता है। प्रभु मृत्यु के स्वामी तथा दाता हैं अतः* ***शर्व*** *(२६) हैं। तीनों अवगुणों (सत, रजस एवं तमस) के प्रभाव से रहित होने के कारण उन्हें* ***शिव*** *(२७) कहा गया। भगवान् सदैव समाधी में स्थिर रहते हैं इस कारण* ***स्थाणु*** *(२८) हैं। पापों का नाश करने वाले (जीवों के) जन्म का कारण प्रभु* ***भूतादि*** *(२९) हैं जो पापों का नाश करते हैं।* ***निधि*** *(३०) श्री हैं (सम्पदा के स्वामी) एवं* ***अव्यय*** *(३१) अविनासी हैं। अपनी स्वैच्छा से अवतरित होने से* ***संभव*** *(३२) हैं। सब की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले* ***भावन*** *(३३) हैं। समस्त प्राणियों का* ***भर्ता*** *(३४) भरण पोषण करते हैं। सभी जीवों की उत्पति उन्हीं से होती है, अतः* ***प्रभव*** *(३५) हैं। देवताओं के स्वामी* ***प्रभूरीश्वर*** *(३६) सब से श्रेष्ठ एवं जगत के ईश सर्वेश्वर हैं।*

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्करक्षो महास्वनः ।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥१८॥

स्वयंभू हैं स्वतंत्र भगवन । शम्भू हरि दें सुख सब भूजन ।।
अदिति प्रभु स्वामी क्षामन् । पुष्कराक्ष के पद्म सम नयन ।।
करें उच्च स्वर उत्पन्न महास्वन । रहित मरण जन्म अनादिनिधन ।।
धारें अनन्त रूप भू धाता । पंच करम फल दें विधाता ।।
धातुरुत्तम से उत्पन्न चेतन । हरें इस रूप प्रपंच भगवन ।। (१८)

भावार्थ: *ईश्वर स्वतंत्र हैं (अर्थात उनका स्वामी कोई नहीं है) इसलिए* ***स्वयंभू*** *(३७) हैं।* ***शम्भू*** *(३८) भक्तों को सुख देते हैं। पृथ्वी के स्वामी* ***अदिति*** *(३९) हैं। भगवान् के नैन कमल के समान हैं, अतः* ***पुष्कराक्ष*** *(४०) हैं। प्रभु में महान स्वर उत्पन्न करने की क्षमता है, इसलिए* ***महास्वन*** *(४१) हैं (श्रुति में ऐसा वर्णित हैं कि प्रभु अपने दिव्य स्वर से वेदों का गायन करते हैं)। प्रभु का जन्म और अंत कोई नहीं जान सका इसलिए* ***अनादिनिधन*** *(४२) हैं। अनंत (शेष नाग) रूप से पृथ्वी को धारण करने वाले* ***धाता*** *(४३) हैं। पांचो प्रकार के कर्म, उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन, का फल देने वाले* ***विधाता*** *(४४) हैं। जिनसे चेतना (धातु) उत्पन्न होती है, वह* ***धातुरुत्तम*** *(४५) हैं। (श्रुति में कथित है कि) इस रूप में भगवान् प्रपंच हरण करते हैं।*

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥१९॥

समझो अप्रमेय हरि अमित । हैं ऋषिकेश इन्द्रियजित ।।
नाभि स्थित पद्म सम आभा । हैं रूप चैतन्य पद्मनाभा ।।
नायक सर्व देव जो भगवन । अमरप्रभु रहित जन्म मरन ।।
यह सृष्टि कर्मभूमि भगवन । सेवित विश्वकर्म सब भूजन ।।
करें भक्तों का पथ दर्शन । रहते सदैव हरि मनु मनन ।।
काल प्रलय करें अशक्त जन । हैं वह त्वष्टा श्री भगवन ।।
स्थिर सदैव स्थविष्ठ भगवन । स्थविर ध्रुव सम अनिवर्तन ।।(१९)

भावार्थ: *जिन्हें नापा न जा सके वह **अप्रमेय** (४६) हैं। हृषीक (इन्द्रियां) जिनके अधीन हैं, वह **ऋषिकेश** (४७) हैं। जिनकी नाभि में कमल रूपी आभा विद्यमान है और चैतन्य स्वरुप हैं, वह **पद्मनाभा** (४८) हैं। सभी देवताओं के जो नायक हैं और जन्म मरण से रहित हैं वह **अमरप्रभु** (४९) हैं। विश्व (सृष्टि) ही जिनकी कर्मभूमि है और जो सब जीवों से सेवित हैं, वह प्रभु **विश्वकर्म** (५०) हैं। भगवान् सदैव मनन (समाधि) में रहते हैं एवं भक्तों के मार्ग दर्शिता हैं, इसलिए उन्हें **मनु** (५१) कहकर पुकारते हैं। प्रलय के समय प्रभु जीवों को क्षीण कर देते हैं (जिस से विलय में सरलता हो), इसलिए श्री भगवान् **त्वष्टा** (५२) हैं। सदैव स्थिर (प्रकृति) रहने से भगवान् **स्थविष्ठ** (५३) हैं। **स्थविर ध्रुव** (५४) अत्यंत स्थिर हैं।*

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥२०॥

रहित प्रभाव कर्मइन्द्रिय । हैं अग्राह्य हरि जग प्रिय ।।
हैं हरि सर्वकाल समागत । करे जग उच्चारित शाश्वत ।।
जिनकी सत्ता मंगल दाता । सच्चिदानंद कृष्ण कहलाता ।।
शुभ लाल श्री हरि के नयन । हैं वह लोहिताक्ष भगवन ।।
प्रलयकाल मोक्ष के दाता । प्रतर्दन नाम जग उच्चारता ।।
सर्वगुण सम्पन्न हैं भगवन । प्रभूत नाम विख्यात भुवन ।।
ऊंची नीची मध्य दिशाएं । हैं आश्रयदाता त्रिदिशाएं ।।
दें भक्तों को वास हरि धाम । कहे जग उन्हें त्रिककुबधाम ।।
भजत नाम होए पवित्र तन । पवित्रम नाम इस हेतु भगवन ।।
श्रेष्ठ शाश्वत परम नारायन । करें मंगल परम् भाग्यवन ।। (२०)

भावार्थ: *प्रभु कर्मेन्दियों के प्रभाव से रहित हैं, इसलिए संसार के प्रिय भगवान* ***अग्राह्य*** *(५५) हैं। भगवान् हर युग में उपस्थित रहते हैं इसलिए* ***शाश्वत*** *(५६) नाम से संसार में जाने जाते हैं। प्रभु का आश्रय मंगलदायक है, अतः वह सच्चिदानंद* ***कृष्ण*** *(५७) हैं। भगवान् के नेत्र शुभ लाल रंग के होने से वह* ***लोहिताक्ष*** *(५८) हैं। प्रलय काल में प्रभु (जीवों को) मोक्ष दान देते हैं, इसलिए उन्हें संसार* ***प्रतर्दन*** *(५९) नाम से पुकारता है। सर्वगुण (ज्ञान, ऐश्वर्य आदि) संपन्न होने से वह* ***प्रभूत*** *(६०) नाम से विश्व में विख्यात हैं। जो ऊपर, निचली एवं मध्य भेद वाली तीनों दिशाओं के आश्रयदाता हैं तथा भक्तों को साकेत धाम का (मरण उपरान्त) वास देते हैं उन्हें संसार* ***त्रिककुबधाम*** *(६१) कहता है। जिनके भजन से तन को पवित्रता मिलती है वह ईश्वर* ***पवित्रम*** *(६२) हैं। श्रेष्ठ शाश्वत* ***परम मंगल*** *(६३) प्रभु भाग्यवान बनाते हैं।*

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥२१॥

ईशान हरि हैं तम नाशक । करें वह जन जीवन चंद्रिक ।।
करें पोषित प्राणद भगवन । प्राण ईश दें जग जीवन ।।
ज्येष्ठ न कोई वय जानता । श्रेष्ठ हरि युक्त विशिष्टता ।।
प्रजापति भूपति त्रिभुवन । रहते जो अंदर अण्ड स्वर्न ।।
कहें उन्हें हिरण्यगर्भ भूजन । समझो उन्हें रूप नारायन ।।
है धरा स्थित हरि के गर्भ । कहे जग उन्हें श्री भूगर्भ ।।
मधु समान हैं माधव भगवन । मारो दैत्य मधु मधुसूदन ।। (२१)

भावार्थ: *अंधकार को दूर कर प्राणियों के जीवन को जो प्रकाशित करते हैं वह* ***ईशान*** *(६४) हैं। सभी जीवों को आहार प्रदान करते हैं, वह* ***प्राणद*** *(६५) हैं। जो प्रभु जीवन दान देते हैं, वह* ***प्राण*** *(६६) हैं (यहां अप्रत्यक्ष रूप से वायु प्रदान करने का उल्लेख किया गया है जो स्वास द्वारा हमें जीवन दान देती है)। प्रभु अत्यंत पुरातन हैं, कोई उनकी आयु नहीं जानता, अतः* ***ज्येष्ठ*** *(६७) हैं।* ***श्रेष्ठ*** *(६८) प्रभु विशिष्टता युक्त हैं (अर्थात अति उत्तम हैं। प्रभु तीनों लोकों के स्वामी हैं, अतः* ***प्रजापति*** *(६९) हैं। जो स्वर्ण के अंडे के भीतर रहते हैं और नारायण का स्वरुप हैं, जग उन्हें* ***हिरण्यगर्भ*** *(७०) कहता है। पृथ्वी उनके गर्भ में वासित हैं, इस कारण विश्व उन्हें श्री* ***भूगर्भ*** *(७१) नाम से*

*पुकारता है। शहद के समान (अति मधुर) प्रभु **माधव** (७२) हैं। मधु नाम दैत्य का संहार करने के कारण **मधुसूदन** (७३) नाम से विख्यात हुए।*

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥२२॥

हैं ईश्वर सर्वशक्तिमान । न कोई सूर विक्रमी समान ।।
जो धरेश धरापति भगवन । धन्वी धनुर्धारी रघुनन्दन ।।
मेधावी ज्ञाता ग्रन्थ सनातन । किए जब महाबाली यज्ञ पावन ।।
बद्ध बचन नापे त्रिभुवन । कहे विश्व उन्हें विक्रम भगवन ।।
नापे जग जब कर स्व-विस्तार । बामन देह हुआ क्रम अवतार ।।
अनुत्तम समान न कोई महन् । दुराधर्ष से डरते दुर्जन ।।
हो प्रसन्न जन अल्प समर्पन । देते सुगति कृत्यज्ञ भगवन ।।
कृति आधार क्रिया भूजन । आत्मवान रहें लीन साधन ।।(२२)

***भावार्थ**: सर्वशक्तिमान **ईश्वर** (७४) हैं। प्रभु के समान कोई शूरवीर नहीं, अतः **विक्रमी** (७५) हैं। जो भूपति भगवान् हैं, वह धनुषधारी श्री राम **धन्वी** (७६) हैं। भगवान् ग्रंथों के ज्ञाता हैं अतः **मेधावी** (७७) हैं। जब महाबाली ने यज्ञ किया (बामन अवतार में बाली को), वचनबद्ध कर तीनों लोकों को अपने पग से नापने पर विश्व में वह **विक्रम** (७८) कहलाये। जब त्रिलोक नापने के लिए भगवान् ने अपना विस्तार किया तो बामन शरीर में वह **क्रम** (७९) कहलाये। प्रभु से श्रेष्ठ कोई नहीं है, अतः **अनुत्तम** (८०) हैं। **दुराधर्ष** (८१) से सभी दुष्ट डरते हैं। अल्प समर्पण से ही प्रसन्न होकर **कृत्यज्ञ** (८२) प्रभु (भक्तों को) सद्गति प्रदान कर देते हैं। जीवों की (कर्म) क्रिया का आधार **कृति** (८३) हैं। साधना में लीन प्रभु **आत्मवान** (८४) नाम से जाने जाते हैं।*

सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः ।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥२३॥

सुर स्वामी सुरेश नारायण । दुःख हर्ता हैं श्री शरण ।।
दें हर्ष सुख हरि शर्म भूजन । हैं विश्वरेता हेतु जनन ।।
प्रजाभाव हेतु जन्म भूजन । करते प्रकाशित अहः भुवन ।।
हैं अनंत संवत्सर भगवन । व्याल हैं जटिल सम विषानन ।।
प्रत्यय हरि हैं अति बुद्धिवन । सर्वदर्शी अतः सर्वदर्शन ।। (२३)

भावार्थ: *सभी देवताओं के स्वामी प्रभु **सुरेश** (८५) हैं। सभी जीवों का दुःख दर्द हरण करने वाले श्री **शरण** (८६) हैं। प्राणियों को हर्ष एवं परमानंद देने वाले प्रभु **शर्म** (८७) हैं। (विश्व की) उत्पत्ति का हेतु भगवान् **विश्वरेता** (८८) हैं। भगवान् समस्त प्रजा की उत्पति के हेतु है, अतः **प्रजाभाव** (८९) हैं। **अहः** (९०) विश्व को प्रकाशित करते हैं। प्रभु अनंत हैं (उनके आदि और अंत का किसी को ज्ञान नहीं है) अतः **संवत्सर** (९१) हैं। सर्प के समान जटिल होने से (ग्रहण करने में न आ सकने के कारण) **व्याल** (९२) हैं। भगवान् अत्यंत बुद्धिमान हैं, अतः **प्रत्यय** (९३) हैं। सर्वदर्शी होने से **सर्वदर्शन** (९४) हैं।*

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥२४॥

हैं रहित जो हरि जन्म मरन । कहे जग उन्हें श्री अज भगवन ।।
स्वामी सर्व देव सर्वेश्वर । हैं नित्य सिद्धि परमेश्वर ।।
हैं कारण हेतु जन जीवन । हैं सर्वादि स्वामी त्रिभुवन ।।
अच्युत प्रभु हैं अति पावन । हैं स्थिर स्व-शक्ति यह भगवन ।।
वर्ष करें पूर्ण जग सत मन्मन् । अवतरे कपि हेतु धर्म पालन ।।
न नाप सकें अस्त्वित भगवन । कहे अमेयात्मा उन्हें भुवन ।।
हैं रहित बंधन ममता कृत । नाम हरि सर्वयोगविनसृत ।।(२४)

भावार्थ: *जो जन्म मरण से रहित हैं उन्हें विश्व श्री **अज** (९५) कहता है। समस्त देवों के स्वामी होने से प्रभु **सर्वेश्वर** (९६) हैं। समस्त सिद्धि भगवान् को प्राप्त हैं, अतः **सिद्धि** (९७) हैं। तीनों लोकों के स्वामी, सभी जीवों के जीवन के हेतु **सर्वादि** (९८) हैं। अतिपावन प्रभु जो अपनी शक्ति में सदैव स्थिर रहते हैं, **अच्युत** (९९) हैं। संसार की इच्छा पूर्ण करने वाले प्रभु **वर्ष** (१००) हैं। भगवान् ने धर्म पालन के लिए कपि रूप धारण किया, इसलिए **कपि** (१०१) नाम से जाने जाते हैं। प्रभु के आत्मा स्वरुप का*

*माप परिच्छेद करना असंभव है, अतः संसार उन्हें **अमेयात्मा** (१०२) कहता है। प्रभु ममता और इच्छा के बंधन सेरहित हैं, इसलिए उन्हें **सर्वयोगविनसृत** (१०३) कहा जाता है।*

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मासम्मितः समः ।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥२५॥

बसें प्रभु हिय जग आत्मा । हैं वसु नर सुर जीवात्मा ।।
प्रशस्त पुष्प सम जिनका मन । हैं वह उत्कृष्ट हरि वसुमन ।।
है स प्राण त अन्न य सूर्य । करें शुभ कार्य मूर्ति सत्य ।।
समात्मा रखें सम भाव जन । हैं सम्मित सम रूप स्थित जन ।।
हैं रहित राग द्वेष सम भगवन । अमोघ करें अभय जब सुमिरन ।।
बसें कमल समान हृदय मध्य । पुण्डरीकाक्ष प्रभु हैं पूज्य ।।
धर्मरूप हैं प्रभु वृषकर्मा । करें हरि वृषाकृति सतकर्मा ।। (२५)

भावार्थः *भगवान् में सब जीव बसते हैं, वही सब नर, सुर आदि की जीवात्मा हैं, अतः वह **वसु** (१०४) हैं। प्रभु सदैव पुष्प समान प्रसन्नचित्त एवं उत्कृष्ट हैं, इसीलिये उन्हें **वसुमन** (१०५) के नाम से जाना जाता है। (श्रुति के अनुसार) 'स' प्राण है, 'त' अन्न है और 'य' सूर्य है, (अतः प्राण, अन्न और सूर्य रूप होने के कारण) प्रभु **सत्य** (१०६) हैं एवं शुभ कार्य करते हैं। भगवान् में सम भाव (अर्थात एक) है, इसलिए **समात्मा** (१०७) हैं। भगवान् (सब) जीव में समान रूप से स्थित हैं, अतः **सम्मित** (१०८) हैं। जो राग, द्वेष से रहित है, वह **सम** (१०९) हैं। स्मरण मात्र से ही **अमोघ** (११०) (प्रभु) निर्भय कर देते हैं। हृदय कमल के मध्य में स्थित होने के कारण पूजनीय प्रभु **पुण्डरीकाक्ष** (१११) हैं। जिनके कर्म धर्मरूप हैं, वह **वृषकर्मा** (११२) हैं। जो धर्म और सत्य कर्म के लिए ही अवतरित होते हैं, वह **वृषाकृति** (११३) हैं।*

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥२६॥

प्रलयेश हैं <u>रुद्र</u> महावीरा । अगनित शीश अतः <u>बहुशिरा</u> ।।
हैं <u>बभ्रु</u> ही जग अन्नपूर्णा । हैं <u>विश्वयोनि</u> विश्वपूर्णा ।।
सुमर <u>शुचिश्रवा</u> हों पवित्र । हैं अजर अमिट अतः <u>अमृत</u> ।।
<u>शाश्वत स्थाणु</u> नित्यानंद । हैं सत दृढ़ समान हिमनंद ।।
हैं प्रभु ही मोक्ष के दाता । हैं <u>वरारोह</u> जग विख्याता ।।
है सृष्टि-विषयक ज्ञान महन । <u>महातपा</u> हैं स्वामी सब जन ।। (२६)

भावार्थ: *प्रलय काल में महावीर रूप धारण कर जो संहार करते हैं, वह* ***रूद्र*** *(११४) हैं। अनगनित शीश होने के कारण प्रभु* ***बहुशिरा*** *(११५) हैं। समस्त प्राणियों का भरण करते है, अन्नपूर्णा हैं, अतः* ***बभ्रु*** *(११६) हैं। विश्व के पूरक हैं (भगवान् रहित विश्व का कोई अस्तित्व नहीं), अतः* ***विश्वयोनि*** *(११७) हैं। भगवान् के नाम का श्रवण अत्यंत पावन है, अतः वह* ***शुचिश्रवा*** *(११८) हैं। भगवान् अजर, अमर हैं इसलिए उन्हें* ***अमृत*** *(११९) नाम से पुकारा जाता है।* ***शाश्वत स्थाणु*** *(१२०) प्रभु सत्य एवं अनश्वर है एवं हिमालय के समान दृढ़ बुद्धि वाले हैं। प्रभु में आरूढ़ हुए जीवों को इस संसार में वापस नहीं आना पड़ता, अर्थात मोक्ष प्राप्ति होती है, इसलिए भगवान्* ***वरारोह*** *(१२१) के नाम से विख्यात हैं। भगवान् का सृष्टि-विषयक तप ज्ञान अत्यंत महान है, वह प्राणियों के ईश्वर हैं, इसलिए वह* ***महातपा*** *(१२२) हैं।*

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः ॥२७॥

जग व्यापक <u>सर्वग</u> अनिरुद्ध । सर्व ज्ञानी हैं हरि <u>सर्वविद्</u> ।।
देख रण में <u>विष्वक्सेन</u> भगवन । भाग जाएं हो भयभीत द्विषन ।।
मित्र संत परन्तु रिपु दुष्ट । करें <u>जनार्दन</u> अर्चन शिष्ट ।।
हैं वेद रूप अतः प्रभु <u>वेद</u> । हैं ज्ञाता <u>वेदविद</u> चतुर्वेद ।।
पूर्ण ज्ञानेश प्रभु <u>अव्यंग</u> । वेद <u>वेदांग</u> हैं हरि के अंग ।।
करें हरि <u>वेदवित</u> चिंतन वेद । <u>कवि</u> प्रभु जानें सभी के भेद ।। (२७)

भावार्थ: *सर्व व्यापी होने के कारण भगवान् को* ***सर्वग*** *(१२३) पुकारा गया। सर्वज्ञानी हैं अतः भगवान्* ***सर्वविद्*** *(१२४) हैं। भगवान्* ***विष्वक्सेन*** *(१२५) को रण में देखते ही शत्रु भयभीत होकर भाग जाते हैं। संतों के मित्र तथा दुष्टो के शत्रु* ***जनार्दन*** *(१२६) प्रभु*

*की सभी सुशिक्षित वंदना करते हैं। भगवान् स्वयं ही **वेद** (१२७) हैं। चारों वेद जिनमें समाहित हैं (वेद तथा वेदों के अर्थ भलीभांति समझते एवं अनुभव करते हैं), इसलिए **वेदविद** (१२८) हैं। ज्ञानादि से परिपूर्ण प्रभु **अव्यंग** (१२९) हैं। वेद ही जिन के अंग रूप हैं, ऐसे भगवान् को श्रुति ने **वेदांग** (१३०) कहकर पुकारा है। वेदों का चिंतन करते हैं, अतः भगवान् **वेदवित** (१३१) हैं। प्रभु **कवि** (१३२) रूप में सभी के भेद अर्थात गूढ़ रहस्य जानते हैं।*

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥२८॥

हैं लोकाध्यक्ष ईश संसार । सुराध्यक्ष प्रभु सुर आधार ।।
हैं धर्माध्यक्ष धर्म के देव । कृताकृत रत कर्म सदैव ।।
सृष्टि काल रूप देव ब्रह्मा । हों प्रगट श्री चतुरात्मा ।।
करें चारों व्यूह की रचना । चतुर्व्यूह हैं विश्व यशोधना ।।
हैं चतुर्दंत नरसिंह भगवन । चतुर्दंष्ट्र हैं प्रसिद्ध भुवन ।।
चार भुजाओं से हरि युक्त । चतुर्भुज प्रभु हैं नियंत ।। (२८)

भावार्थः *समस्त लोक उनके अधीन हैं, अतः **लोकाध्यक्ष** (१३३) हैं। समस्त देवताओं के वह आधार (स्वामी) हैं, इसलिए **सुराध्यक्ष** (१३४) हैं। धर्म नियम के नियंता हैं, अतः **धर्माध्यक्ष** (१३५) हैं। कार्यरूप से सदैव कार्यरत रहते हैं, इसलिए **कृताकृत** (१३६) हैं। सृष्टि की उत्पति के लिए ब्रह्मा रूप में प्रगट होते हैं, अतः **चतुरात्मा** (१३७) हैं। चार व्यूह (वासुदेव आदि मूर्तियों) की रचना करते हैं, अतः **चतुर्व्यूह** (१३८) के नाम से विश्व में प्रसिद्ध हैं। नरसिंह अवतार में प्रभु चार दाढ़ों के साथ प्रगट हुए, अतः **चतुर्दंष्ट्र** (१३९) नाम से संसार में विख्यात हैं। प्रभु की चार भुजाएं हैं अतः वह भगवान् **चतुर्भुज** (१४०) हैं।*

भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥२९॥

धर्म सत्य के रूप भगवान् । हैं <u>भ्राजिष्णु</u> प्रभा निधान ।।
करें भोग माया हरि <u>भोजन</u> । हेतु <u>भोक्ता</u> माया सम अन्न ।।
करें जो दोष भक्त निवारन । हैं वह <u>सहिष्णु</u> श्री भगवन ।।
स्थित हैं सृष्टि पूर्व भगवन ।<u>जगदादिज</u> श्री नारायन ।।
हैं विष्णु निष्पाप पावन ।कहें वेद उन्हें <u>अनघ</u> भगवन ।।
जीते सब लोक हरि स्व-सगुण ।कहें <u>विजय</u> त्रिलोक विचक्षण ।।
मन हो मोहित पाए उत्कर्ष ।हो <u>जेता</u> सुमर जन हिय हर्ष ।।
हैं विश्व और योनी भगवन ।करें <u>विश्वयोनि</u> अघ उन्मूलन ।।
लिए अवतार कई बार भुवन ।कहें <u>पुनर्वसु</u> सब सु र भूजन ।।(२९)

भावार्थ: *भगवान् धर्म और सत्य के स्वरुप हैं तथा प्रकाश का भण्डार है, इस कारण वह* ***भ्राजिष्णु*** *(१४१) हैं। माया के भोग को भोगते हैं, इसलिए हरि* ***भोजन*** *(१४२) हैं। माया जिन्हें अनाज के समान है (अतः जो माया को अन्न के समान भोगते हैं), वह* ***भोक्ता*** *(१४३) हैं। जो भक्तों के दोष दूरते हैं, वह प्रभु* ***सहिष्णु*** *(१४४) हैं। सृष्टि उत्पति से पहले ही स्थित (अर्थात अवतरित) श्री प्रभु को* ***जगदादिज*** *(१४५) नाम से पुकारा गया। भगवान् पापहीन एवं पवित्र हैं, अतः वेद उन्हें* ***अनघ*** *(१४६) नाम से पुकारते हैं। अपने सद्गुणों के कारण प्रभु ने सब लोकों को जीत लिया (अर्थात दुष्टों से विहीन कर दिया), इस हेतु उन्हें त्रिलोक में बुद्धिमान* ***विजय*** *(१४७) नाम से सम्बोद्धित करते हैं। प्रभु के* ***जेता*** *(१४८) नाम स्मरण से जीवों का ह्रदय प्रसन्नता से भर जाता है तथा वह उन्नति को प्राप्त करता है। प्रभु विश्व (जीव) एवं योनि (आत्मा) हैं और जीवों के पापों का उन्मूलन करते हैं, अतः* ***विश्वयोनि*** *(१४९) हैं। हरि ने कई बार पृथ्वी पर (धर्म रक्षा हेतु) अवतार लिया, इसलिए सब देव और प्राणी उन्हें* ***पुनर्वसु*** *(१५०) कहते हैं।*

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरुर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥३०॥

<u>उपेंद्र</u> स्वामी पति-व्योमन ।आए बाली यज्ञ रूप <u>बामन</u> ।।
तीन पग से नापे त्रिभुवन ।कहें <u>प्रांशु</u> सुर और भूजन ।।
नहीं व्यर्थ यत्न कभी भगवन ।करें <u>अमोघ</u> पूर्ण सब मन्मन् ।।
जो सुमिरें अविरत हरि नाम ।मरण काल पाएं <u>शुचि</u> धाम ।।
न कोई प्रबल प्रभु समान ।<u>ऊर्जित</u> हरें दुष्टों के प्रान ।।

है सुर न कोई सम भगवन । हैं अतीन्द्र प्रसिद्ध भुवन ।।
संग्रह करें एकत्रित जीवजन । प्रलय काल में हों जब भूजन ।।
हरि सर्ग करें सृजन जन तन । हैं अजन्मा धृतात्मा भगवन ।।
हैं नियम निर्णायक देव । शाश्वत प्रभु यम आयुषदेव ।।(३०)

भावार्थः *इंद्र के स्वामी होने से* ***उपेंद्र*** *(१५१) हैं। बाली के यज्ञ में प्रभु* ***बामन*** *(१५२) रूप में अवतरित हुए। अपने तीन पग से तीनों लोकों को नाप लिया इस कारण उन्हेंदेव और प्राणी* ***प्रांशु*** *(१५३) नाम से पुकारते हैं। प्रभु की चेष्टा कभी व्यर्थ नहीं जाती, उनके स्मरण से समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं, इसलिए उन्हें* ***अमोघ*** *(१५४) नाम से जाना जाता है। जो हरि के नाम का निरंतर स्मरण करते हैं, उन्हें मरण पश्चात (प्रभु)* ***शुचि*** *(१५५) अपने धाम में भेज देते हैं। दुष्टों का वध करने वाले प्रभु के समान कोई बलशाली नहीं है, अतः वह* ***उर्जित*** *(१५६) हैं। समस्त देवताओं से श्रेष्ठ होने के कारण वह* ***अतीन्द्र*** *(१५७) नाम से विश्व में विख्यात हैं। प्रलय काल में प्राणियों की जीवात्माओं को एकत्रित करते हैं, अतः* ***संग्रह*** *(१५८) हैं। जीवों के शरीर की रचना करते हैं, इस कारण* ***सर्ग*** *(१५९) कहलाये जाते हैं। भगवान् जन्मादि से रहित हैं, अतः* ***धृतात्मा*** *(१६०) हैं। भगवान् धर्म नियंत्रणकर्ता हैं, अतः* ***नियम*** *(१६१) हैं। अविनासी प्रभु* ***यम*** *(१६२) रूप में आयु प्रदानकर्ता हैं।*

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥३१॥

हों प्रगट जन हिय सहजहिं । नाम वेद्य वेद ग्रंथ कहहिं ।।
ग्रन्थ सभी रचे श्री भगवन । हैं वैद्य नियंत्रक जीवन ।।
हैं सदायोगी सर्वव्यापी । वधें वीरहा असुर पापी ।।
करें माधव विद्या का वाचन । सम मकरंद मधु हिय भावन ।।
हैं अतीन्द्र रहित-विषयक । महामाय हैं माया नायक ।।
तत्पर हरि हेतु जग पालन । महोत्साह तारें भव-भुवन ।।
भीम सम बलशाली भगवन । महाबलः सम न है युद्धिवन ।।(३१)

भावार्थः *भक्तों के हृदय में सहज ही प्रगट हो जाते हैं, इसलिए शास्त्र* ***वेद्य*** *(१६३) के नाम से उन्हें सम्बोद्धित करते हैं। सर्व शास्त्रों के रचियता जीवनदाता भगवान्* ***वैद्य***

*(१६४) नाम से जाने जाते हैं। सर्व-व्यापी प्रभु **सदायोगी** (१६५) हैं। दुष्कर्म समर्थक राक्षसों का संहार करते हैं, अतः **वीरहा** (१६६) हैं। विद्या (मा) के स्वामी (शिक्षक) होने से उन्हें **माधव** (१६७) नाम से बुलाया जाता है। शहद की भांति मधुर हृदय को भाने वाले भगवान् **मधु** (१६८) हैं। विषयरहित हरि **अतीन्द्र** (१६९) हैं। मायावियों के भी आप नायक हैं, इसलिए **महामाय** (१७०) हैं। संसार सागर को तारने वाले प्रभु जगत पोषण के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, अतः **महोत्साह** (१७१) हैं। भीम के समान बलशाली हैं, जगत में उनके समान कोई योद्धा नहीं है, अतः **महाबलः** है (१७२) ।*

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥३२॥

मेधावी अतुलित सतनाम । <u>महाबुद्धि</u> नामक भगवान ।।
हरि के शुक्र से जन्मे माया । <u>महावीर्य</u> तब ग्रंथन गाया ।।
परम बली प्रभु हो परमेश्वर । <u>महाशक्ति</u> तुम हो संतेश्वर ।।
ज्योति जले अंतर्भाग भगवन । <u>महाद्विती</u> करें दुःख हरन ।।
स्वाधीन विधि पालन कर्ता । <u>अनिर्देश्यवपु</u> जन हित कर्ता ।।
<u>श्रीमान</u> प्रभु श्री आत्मा । जानें न थाह जग <u>अमेयात्मा</u> ।।
उठाए कनिष्ठिका गिरि भगवन । <u>महाद्रिधृक</u> अर्चित भुवन ।। (३२)

भावार्थः *अत्यंत बुद्धिमान प्रभु **महाबुद्धि** (१७३) हैं। हरि के वीर्य से ही माया की उत्पत्ति हुई है, अतः आप **महावीर्य** (१७४)हैं। हे संतेश्वर आपका बल अपरिमित है, अतः आप **महाशक्ति** (१७५) हैं। जिनके अन्तः मन में सदैव ज्योति (ज्ञान ज्योति) जलती रहती है, तथा जिनके स्मरण मात्र से जीव दुःख रहित हो जाते हैं, ऐसे प्रभु **महाद्विती** (१७६) हैं। जो स्वाधीन हैं (जिनका कोई स्वामी नहीं है) तथा प्रकृति के नियमों का पालन करते हैं, ऐसे जनहित कर्ता प्रभु को **अनिर्देश्यवपु** (१७७) कहा गया है। प्रभु श्री (लक्ष्मी) के पति है, अतः **श्रीमान** (१७८) हैं। भगवान् अनंत है, उनकी थाह कोई नहीं जान सकता, इसलिए **अमेयात्मा** (१७९) हैं। सर्व पूजित एवं पर्वत को उंगली पर धरने वाले प्रभु **महाद्रिधृक** (१८०) हैं।*

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥३३॥

पुरुषोत्तम धनुर्धर महन।हैं महेष्वास राम निरूपन।।
प्रलय काल जल डूबे भुवन। करें महीभर्ता शीश धारन।।
है हृदय निवास धन माता। श्रीनिवास हैं सुख दाता।।
दें साधु संत सुगति सुमती। आनंददायक सतामगती।।
निष्पक्ष नियंत तुम सर्वदा। अनिरुद्ध हरि दें प्रेम सदा।।
हों प्रसन्न सुमर सुरानंद। गोविन्द मिलें हेतु वेद वचन।।
ज्ञानी वेद गौरक्षक भगवन। करे जग गोविदां पतिः पूजन।।(३३)

भावार्थः *परम श्रेष्ठ धनुर्धारी पुरुषोत्तम* ***महेष्वास*** *(१८१) राम के रुप हैं। जब प्रलय काल में प्रभु ने जलमग्न पृथ्वी को धारण कर उसका उद्धार किया तो उन्हें* ***महीभर्ता*** *(१८२) नाम से बुलाया गया। सुख देने वाले भगवान् के हृदय में माँ लक्ष्मी (श्री) का निवास है, अतः वह* ***श्रीनिवास*** *(१८३) हैं। आनंददायक* ***सतामगती*** *(१८४) प्रभु साधु संतों को सुमति एवं सुगति प्रदान करते हैं। सदैव निष्पक्ष प्रेमदायी प्रभु* ***अनिरुद्ध*** *(१८५) हैं। जिनके स्मरण से आनंदित होते है, वह प्रभु* ***सुरानन्द*** *(१८६) हैं। वेद वाणी द्वारा प्राप्त होने वाले* ***गोविन्द*** *(१८७) हैं। वेदों के ज्ञाता और गौरक्षक* ***गोविदां पतिः*** *(१८८) हैं।*

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥34॥

अति तेजस्वी मारीचि भगवन। करें वध दुष्ट हरि श्री दमन।।
हों भय दूर सुमर हरि हंसा। हैं गरुड़ वाहन सुपर्ण ईशा।।
हैं हस्त बली हरि भुजगोत्तम। हिरण्डयनाभ नाभी मृग सम।।
करें बद्रिकाश्रम तप पावन।हैं वह नर नारायण निरूपन।।
रहते अग्रिम समाधि भगवन।समझो उन्हें सुतपा सनातन।।
है नाभि सम नीरज नियंत।शाश्वत पद्मनाभ हरि अनंत।।
स्वामी प्रजापति सब भूजन। करते जो रक्षा त्रिभुवन।। (३४)

भावार्थः *तेजस्वियों में भी तेजस्वी प्रभु* ***मारीचि*** *(१८९) हैं। दुष्टों का नाश करते हैं, अतः* ***दमन*** *(१९०) हैं। जिनके स्मरण से भय का नाश होता है, वह प्रभु* ***हंसा*** *(१९१) हैं।*

*जिनके वाहन गरुड़ हैं, वह **सुपर्ण** (१९२) हैं। जिनकी भुजाओं में अतुलित बल है, वह प्रभु **भुजगोत्तम** (१९३) हैं। जिनकी नाभि (अति सुन्दर) मृग समान है, वह **हिरण्डयनाभ** (१९४) हैं। बद्रिकाश्रम में नर नारायण रूप में पावन तप करने वाले, समाधी में अग्रिम रहने वाले भगवान् को अजन्मा **सुतपा** (१९५) समझो। जिन भगवान् की नाभि कमल के समान है, वह अविनाशी अनंत हरि **पद्मनाभ** (१९६) हैं। प्रभु सभी जीवों के स्वामी एवं त्रिभुवन के रक्षक हैं, अतः **प्रजापति** (१९७) हैं।*

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः ।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥३५॥

अजर अमर रहित जन्म मरन । अमृत्यु अविनाशी भगवन ।।
सर्वदृक सर्व स्थल विद्यमान । सिंह शौर्य न कोई समान ।।
शुभ अशुभ कर्म फल के दाता । देते सहज सुख सब सन्धाता ।।
हैं मित्र भक्त महन सन्धिमान । रहें स्थिर हर स्थिति समान ।।
बसें हृदय अज धर्मात्मन् । करें दुर्मर्षण अघ निवारन ।।
शास्ता हैं नियंत्रक नियम । किए श्रवण ग्रन्थ विश्रुतात्म ।।
हैं रक्षक सुर मर्दक सब दुष्ट । हरि सुरारिहा देवों के इष्ट ।। (३५)

भावार्थः *भगवान् अविनाशी (अमर) हैं, इसलिए **अमृत्यु** (१९८) हैं। सर्वव्यापक प्रभु **सर्वदृक** (१९९) हैं । भगवान् के समान कोई शौर्यवान नहीं, इसलिए **सिंह** (२००) हैं। कर्मों के अनुसार शुभ अथवा अशुभ फल देने वाले एवं सभी को सहज सुख प्रदान करने वाले **संधाता** (२०१) हैं। भक्तों के महान मित्र **सन्धिमान** (२०२) हैं। सदा एक रूप में स्थित होने के कारण **स्थिर** (२०३) हैं। भक्तों के हृदय में बसने वाले प्रभु **अज** (२०४) हैं(वास्तव में अज का अर्थ समाना अथवा फेंकना होता है। प्रभु संतों के हृदय में समाते हैं एवं दुष्टों को फेंकते हैं, इसलिए अज हैं)। पापों का निवारण करते हैं, अतः **दुर्मर्षण** (२०५) हैं। (प्रकृति के) नियम नियंत्रक हैं, इसलिए **शास्ता** (२०६) हैं। ग्रंथों का श्रवण करते हैं, अतः **विश्रुतात्म** (२०७) हैं। देवों के इष्ट, उनकी रक्षा करने वाले तथा सभी दुष्टों का मर्दन करने वाले भगवान् **सुरारिहा** (२०८) हैं।*

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥३६॥

ज्ञान मूल हैं गुरु भगवन। गुरुतम दें ज्ञान चतुरानन।।
हैं परम ज्योति धाम पावन।हैं हरि सत्य धर्म निरूपन।।
हैं सरंक्षक धर्म श्री भगवन।सत्यपराक्रम युक्त शुष्मन्।।
रहें योग साधन में भगवन।देख सकें जग निमिष बंद नयन।।
अनिमिष स्थिर दृष्टि ईश्वर।हरि स्त्रग्वी बैजंतीश्वर।।
वाचस्पती रुदारधी भगवन।वाक् चतुर सर्वभूत पावन।।(३६)

भावार्थः *भगवान् ही ज्ञान का मूल (ज्ञान शिक्षक) हैं, अतः* ***गुरु*** *(२०९) हैं। ब्रह्मा को भी ज्ञान देने वाले प्रभु को* ***गुरुतम*** *(२१०) कहकर पुकारा गया है। भगवान् परम ज्योति हैं, इसलिए पावन* ***धाम*** *(२११) नाम से उच्चारित किया जाता हैं। धर्म रूप होने से उन्हें* ***सत्य*** *(२१२) कहा गया हैं। धर्म की रक्षा करने वाले अत्यंत शूरवीर प्रभु* ***सत्यपराक्रम*** *(२१३) हैं। प्रभु योगासन में मुंदे नेत्र से विश्व को देखते हैं, अतः* ***निमिष*** *(२१४) हैं। स्थिर दृष्टि होने के कारण* ***अनिमिष*** *(२१५) हैं। सदैव कंठ में माला (वैजयंती) धारण करते हैं, अतः हरि* ***स्त्रग्वी*** *(२१६) हैं। भगवान् वाक् चतुर सर्वव्यापी पवित्र हैं , अतः* ***वाचस्पती रुदारधी*** *(२१७) हैं।*

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥३७॥

सुमिरें तब प्रशस्त पद पावें। जप अग्रणी जीव तर जावें।।
ग्रामणी विश्व संचालक।श्रीमान श्री के भर्तृक।।
करें नेता जग मार्ग दर्शन।न्याय हरि दें न्याय भूजन।।
दें समीरणा जीवन भूजन।सहस्त्रमूर्ध सहस्त्रानन।।
सार विश्व के हैं विश्वात्मा।करें दूर भ्रम निवृत्तात्मा।।
सहस्त्र पग के प्रभु स्वामी। सहस्त्रपात हैं सर्वगामी।। (३७)

भावार्थः *जिनके स्मरण से उच्च पद की प्राप्ति होती हैं तथा जीव भवसागर से तर जाते हैं, वह प्रभु* ***अग्रणी*** *(२१८) हैं। विश्व के संचालक* ***ग्रामणी*** *(२१९) हैं।* ***श्रीमान*** *(२२०) लक्ष्मी के स्वामी हैं। संसार का नेतृत्व करने वाले* ***नेता*** *(२२१) हैं। प्राणियों के न्यायदाता* ***न्याय*** *(२२२) हैं। प्राणियों के जीवनदाता हैं, अतः* ***समीरणा*** *(२२३) हैं। (हरि के) एक सहस्त्र मुख हैं, इसलिए* ***सहस्त्रमूर्ध*** *(२२४) हैं। विश्व की आत्मा होने के कारण*

विश्वात्मा *(२२५) हैं। भ्रम दूर करने वाले प्रभु* ***निवृत्तात्मा*** *(२२६) हैं। सर्वव्यापी प्रभु सहस्त्र चरणों (पाद) के स्वामी हैं, अतः* ***सहस्त्रपात*** *(२२७) हैं।*

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः ।
अहःसंवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥३८॥

भव-सागर पारें आवर्तना । निवृत्तात्मा करें मुक्त बंधन ।।
संवृत करें दूर अशुभता । करें सम्प्रमर्दन दूर दुष्टता ।।
अहःसंवर्तक हरि सम रवि । करें वह्नि स्वीकार यज्ञ हवि ।।
अनिल हैं अनादि सर्वभूता । धारी शीश भू धरनीधरा ।। (३८)

भावार्थः *संसार चक्र (भव-सागर) से* ***आवर्तना*** *(२२८) प्रभु पार करते हैं।* ***निवृत्तात्मा*** *(२२९) बंधन (लौकिक) से मुक्त करते हैं। अशुभता को नष्ट करने वाले प्रभु* ***संवृत*** *(२३०) हैं। दुष्टता को नष्ट करने वाले हरि* ***सम्प्रमर्दन*** *(२३१) हैं। सूर्य की तरह प्रकाश देने वाले भगवान्* ***अहःसंवर्तक*** *(२३२) हैं। यज्ञ हवि को स्वीकार करने वाले प्रभु* ***वह्नि*** *(२३३) हैं। अनादि एवं सर्वव्यापी होने से प्रभु* ***अनिल*** *(२३४) हैं। सिर पर पृथ्वी को धारण करते हैं, अतः* ***धरनीधरा*** *(२३५) हैं।*

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥३९॥

करें उपकार अपि अपकारा । सुप्रसाद प्रभु अति कृपाला ।।
रहें सदा प्रसन्नात्म प्रसन्न । शीश विश्वधृक भार भुवन ।।
हैं विश्वभुग विश्व पालक । विभु प्रभु हैं आनंददायक ।।
सत्कर्ता करें कृत्य पावन । साधु हरि करें धर्म अनुसरन ।।
पूजें संत हरि सत्कृत पुन्य । करते कर्म जो न्याय परायन ।।
काल प्रलय हों विलीन भूजन । जह्नु नाम से प्रसिद्ध भगवन ।।
करते नारायण जल शयन । दें नर निवास धाम भगवन ।।(३९)

भावार्थः *कृपाल हरि अपकार करने वालों का भी उपकार करते हैं, इसलिए* ***सुप्रसाद*** *(२३६) हैं। प्रभु सदैव आनंदित रहते हैं, अतः वह* ***प्रसन्नात्म*** *(२३७) हैं। (जिनके) शीश*

*पर पृथ्वी का भार है, वह **विश्वधृक** (२३८) हैं। समस्त विश्व के पालनकर्ता **विश्वधृक** (२३९) हैं। दिव्य आनंद देने वाले प्रभु **विभु** (२४०) हैं। सत कर्म करने वाले **सत्कर्ता** (२४१) हैं। धर्म का अनुसरण करने वाले प्रभु **साधु** (२४२) हैं। संत दिव्य भगवान् **सत्कृत** (२४३) की पूजा करते हैं जो न्याय परायण कार्य करते हैं। प्रलय काल में जीव भगवान में विलीन हो जाते हैं, अतः वह **जह्नु** (२४४) नाम से प्रसिद्ध हैं। **नारायण** (२४५) जल में शयन करते हैं। **नर** (२४६) प्रभु के धाम का निवास (मरण उपरांत) देते हैं।*

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥४०॥

अनेक नाम हैं अतः असंख्येय । अप्रेयात्मा के रुप अप्रमेय ।।
सुर भी आकार हरि न जाना । विशिष्ट प्रभु महाबलवाना ।।
हैं हरि अत्यंत कुशल शासक । शिष्टकृत प्रभु हैं अभिभावक ।।
पावन शरीर पावन आत्मा । शुचि हरि श्रेष्ठ परमात्मा ।।
सिद्धार्थ हैं संपन्न सत्कर्म । दें सिद्धिद प्रभु फल कर्म ।।
सिद्धसंकल्प सिद्धि पूरक । सिद्धिसाधन सिद्धि साधक ।।(४०)

भावार्थः *प्रभु के असंख्य नाम होने से वह **असंख्येय** (२४७) हैं। (श्री विष्णुसहस्त्रनाम में भगवान् के सहस्त्र नामों का उल्लेख करते हुए भगवान् वेद व्यास जी कहते हैं कि यह तो प्रभु के कुछ ही नाम हैं)। प्रभु के रूप को मापा नहीं जा सकता, वह अनंत हैं अर्थात **अप्रेयात्मा** (२४८) हैं। देवता भी प्रभु के आकार को जानने में अनभिज्ञ हैं, ऐसे महाबलशाली प्रभु को **विशिष्ट** (२४९) कहकर सम्बोद्धित किया गया है। इस सृष्टि को प्रभु **शिष्टकृत** (२५०) अभिभावक बन कुशलता से शासित करतें हैं। जिनका तन एवं मन, दोनों ही पवित्र हैं, ऐसे परमात्मा को **शुचि** (२५१) कह कर बुलाते हैं। सत्य कर्मों से संपन्न प्रभु **सिद्धार्थ** (२५२) हैं। **सिद्धिद** (२५३) भगवान् कर्मों का फल देते हैं। **सिद्धसंकल्प** (२५४) सिद्धियों (मनोरथ) को पूर्ण करते हैं। सिद्धिओं के साधक हरि **सिद्धिसाधन** (२५५) हैं।*

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥४१॥

धर्म पालक हैं परमात्मा । वृषाही परम पवित्र आत्मा ।।
वृषभ करें सब पूर्ण मन्मन् । विष्णु करें सब जग का पालन ।।
साधन स्वर्ग है नाम जपन । वृषपर्वा अति सुन्दर भगवन ।।
हरि वृषोदर हैं दाता अन्न । बढ़े मान वर्धना सुमिरन ।।
सुमिरन से हों प्रकट सवेग । वर्धमान की गति अति वेग ।।
हैं विविक्त अप्रपंच भगवन । करते श्रुतिसागर दुःख हरन ।।(४१)

भावार्थ: *परम पवित्र आत्मा एवं धर्म पालक प्रभु* ***वृषाही*** *(२५६) हैं।* ***वृषभ*** *(२५७) रूप में (भक्तों) की समस्त कामनाएं पूर्ण करते हैं।* ***विष्णु*** *(२५८) समस्त सृष्टि का पालन करते हैं। अति सुन्दर रूप वाले* ***वृषपर्वा*** *(२५९) स्वर्ग प्राप्ति के साधन हैं। (वृषपर्वा भगवान् का स्मरण जीवों को मरणोपरांत स्वर्ग का पथ निश्चित करता है)। इस जग का पोषण करने वाले (अन्नपूर्णा) भगवान्* ***वृषोदर*** *(२६०) हैं। प्रभु का* ***वर्धना*** *(२६१) नाम स्मरण करने से सम्मान की प्राप्ति होती है।* ***वर्धमान*** *(२६२) नाम के स्मरण से (भक्तों की रक्षा हेतु) प्रभु शीघ्र प्रकट हो जाते हैं ताकि वह दुष्टों का संहार कर सकें)। प्रभु का स्वभाव प्रपंचहीन है अतः वह* ***विविक्त*** *(२६३) हैं। (दीन दुखियों के) दुःख हरण करने वाले* ***श्रुतिसागर*** *(२६४) हैं।*

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः ।
नैकरूपो बृहद् रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥४२॥

सुभुजा युक्त भुजा महान । हैं दूभर दुर्धर भगवान् ।।
करें वाग्मी वेद मधुर गायन । हैं इंद्रपति महेंद्र भगवन ।।
धनपति वसुद श्री के स्वामी । दें धन वसु संत अनुगामी ।।
अनेक रूप अवतरित भुवन । नैकरूप तब कहें भूजन ।।
बृहत रूप नापे त्रिभुवन । बृहदरूप से बाली प्रसन्न ।।
शिपविष्ट हरि गौ में स्थित । दें प्रकाशन प्रकाश जगत ।।(४२)

भावार्थ: *बलशाली भुजा से युक्त हरि* ***सुभुजा*** *(२६५) हैं।* ***दुर्धर*** *(२६६) भगवान् दूभर हैं (अर्थात कठिनता से प्राप्त होते हैं। यहां तप और श्रद्धा को महत्वा दी गयी है)। वेदों को मधुर वाणी से गायन करने वाले* ***वाग्मी*** *(२६७) हैं। इंद्रदेव के स्वामी* ***महेंद्र*** *(२६८) हैं। धन सम्पदा से युक्त* ***वसुद*** *(२६९) माँ लक्ष्मी (श्री) के पति हैं।* ***वसु*** *(२७०) रूप में*

वह संत अनुगामियों को धन वितरित करते हैं (सम्पन्नता देते हैं)। भगवान् अनेक रूपों से इस धरा पर अवतरित होते हैं, अतः ***नैकरूप*** *(२७१) नाम से प्राणी पुकारते हैं। भगवान् के त्रिलोक नापने वाले बृहत रूप को देखकर बाली अत्यंत हर्षित हुए, इसलिए उन्हें* ***बृहदरूप*** *(२७२) नाम से जाना गया। प्रभु के अंदर गौ माता का वास है, अतः वह* ***शिपविष्ट*** *(२७३) हैं। प्रभु का स्वरुप जग को प्रकाशित करता है, इसलिए* ***प्रकाशन*** *(२७४) हैं।*

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥४३॥

ओजस्तेजोद्युतिधर भगवन । प्राण बल ज्ञान गुण संपन्न ।।
प्रकाशात्मा दें प्रकाश जन । हैं सम रवि ओज प्रतापन ।।
ऋद्ध धर्मबोध से सम्पन्न । स्पष्टाक्षर रहें सदैव प्रसन्न ।।
हैं ज्ञानी चतुर्वेद मंत्रण । चन्द्रांशु सम शीतल किरण ।।
समाहित सूर्य सम ज्योति । भास्करद्युति ज्ञान प्रेरति ।।(४३)

भावार्थः ओजस्तेजोद्युतिधर *(२७५) भगवान् प्राण, बल, ज्ञान गुणों से संपन्न हैं। प्राणियों को प्रकाशित करने वाले (अर्थात ज्ञान देने वाले)* ***प्रकाशात्मा*** *(२७६) हैं। सूर्य के समान जिनका तप है वह* ***प्रतापन*** *(२७७) हैं। धर्म ज्ञान से संपन्न प्रभु* ***ऋद्ध*** *(२७८) हैं। भगवान् सदैव प्रसन्न रहने वाले है, अतः* ***स्पष्टाक्षर*** *(२७९) हैं। जिनमें चारों वेदों का ज्ञान समाहित है, वह* ***मंत्रण*** *(२८०) हैं। शीतल किरणों के समान* ***चन्द्रांशु*** *(२८१) हैं (यहाँ संसार ताप रूप सूर्य के ताप से संतप्त चित्त जीवों को शीतल किरणों के समान शीतलता प्रदान करने का उल्लेख किया गया है)। प्रभु में सूर्य के समान तेज समाहित है, और वह ज्ञान प्रेरणा हैं, अतः* ***भास्करद्युति*** *(२८२) हैं।*

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥४४॥

हुए प्रकट सोम सागर मन्थन । हेतु अमृतांशूद्भव भगवन ।।
भानु तपन सम प्रतिदिवन् । करें शशबिन्दु अरोगिन् ।।
करें इंद्र सुरेश्वर पूजन । करें निरोग औषध भूजन ।।
जगतसेतु तारें भव-पुरन । करें प्रेरित चलें धर्म जन ।।
हैं वह ईश्वर अति पावन । सत्यधर्मपराक्रम भगवन ।।(४४)

भावार्थ: *समुन्द्र मंथन के समय चद्रमा की उत्पति प्रभु* ***अमृतांशूद्भव*** *(२८३) के कारण हुई। सूर्य के समान तप वाले भगवान्* ***भानु*** *(२८४) हैं।* ***शशबिन्दु*** *(२८५) (प्राणियों को) निरोग करते हैं। इंद्र से पूजित प्रभु* ***सुरेश्वर*** *(२८६) हैं। प्रभु जग को निरोग करते हैं, अतः* ***औषध*** *(२८७) हैं।* ***जगतसेतु*** *(२८८) भव-सागर से तारने वाले हैं (मोक्ष देने वाले हैं)। प्राणियों को धर्म की राह पर चलने के लिए प्रेरित करने वाले अति पवित्र भगवान्* ***सत्यधर्मपराक्रम*** *(२८९) हैं।*

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥४५॥

जानें भूत भविष्य वर्तमान । भूतभव्यभवन्नाथ भगवान ।।
हैं वायु रूप ईश पवन । पावन करें पवित्र भूजन ।।
हैं अग्नि रूप अनल भगवन । कामहा करें अंत कामन ।।
कामकृत करें पूर्ण मन्मन् । हैं कान्त धारी सुन्दर तन ।।
पाएं लक्ष्य करें काम अर्चन । कामप्रद करें पूर्ण मन्मन् ।।
हैं प्रभु उत्कृष्ट भगवन । करे जग उनका पूजन अर्चन ।। (४५)

भावार्थ: *जो भूत, वर्तमान और भविष्य जानते हैं, वह* ***भूतभव्यभवन्नाथ*** *(२९०) (२९६) प्रभु हैं।* ***पवन*** *(२९१) (२९७) वायु रूप भगवान् हैं।* ***पावन*** *(२९२) (२९८) प्राणीयों को पवित्र करते हैं।* ***अनल*** *(२९३) भगवान् अग्नि रूप हैं।* ***कामहा*** *(२९४) कामनाओं का अंत करते हैं।* ***कामकृत*** *(२९५) (भक्तो की) इच्छाएं पूर्ण करते हैं।* ***कान्त*** *(२९६) सुन्दर तन धारी हैं।* ***काम*** *(२९७) के पूजन से जीवन का लक्ष्य मिलता है।* ***कामप्रद*** *(२९८)मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।* ***प्रभु*** *(२९९) उत्कृष्ट भगवन हैं जिनका संसार पूजन करता है।*

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥४६॥

हो युग आरम्भ प्रभु के कृत्य । युगादिकृत संसार पूज्य ।।
युग आवर्तन करें नियंत । कहे जग उन्हें युगावर्त अनंत ।।
करें धारण बहु माया भगवन । अतः नैकमाय प्रसिद्ध भुवन ।।
कल्प अंत करें जीव गिलन । मोक्ष नियंत हैं हरि महाशन ।।
विषय रहित दिव्य श्री भगवन । हैं अदृश्य सम काल दुर्जन ।।
हैं स्व-प्रकाशित सुन्दर रूप । अव्यक्तरूप योगी अनुरूप ।।
किए रण वध असंख्य असुर । सहस्त्रजित संगी संत सुर ।।
अनंतजित अजेय भगवन । जीत न सकें कोई असुरगन ।।(४६)

भावार्थः *विश्व पूजित* ***युगादिकृत*** *(३००) प्रभु के कृत्य से ही युग का प्रारम्भ होता है। प्रभु ही समस्त युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग) का आवर्तन करतें हैं, अतः संसार उन्हें अनंत* ***युगावर्त*** *(३०१) कहता है। अनेक माया को प्रभु धारण करते हैं, अतः* ***नैकमाय*** *(३०२) (नाम से) जगत में प्रसिद्ध हैं। कल्प के अंत में (प्रलय काल) सभी जीवों का आहार बनाकर उन्हें मोक्ष की प्राप्ति कराते हैं, अतः* ***महाशन*** *(३०३) हैं। विषयों से रहित, दुष्टों के लिए काल समान* ***अदृश्य*** *(३०४) दिव्य भगवान् हैं। स्वयं प्रकाशित सुन्दर रूप वाले योगी सदृश्य प्रभु* ***अव्यक्तरूप*** *(३०५) हैं। सुर और संतों के साथी* ***सहस्त्रजित*** *(३०६) हैं।* ***अनंतजित*** *(३०७) अजेय भगवन हैं। उन्हें कोई असुर नहीं जीत सकता।*

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥४७॥

इष्ट हरि करते हवि ग्रहन । देते पुण्य फल यज्ञ भगवन ।।
अन्तर्यामी अमर अविशिष्टा । शिक्षक पंडित हैं शिष्टेष्टा ।।
शिखंडी हैं मोर पंख धारी । सुशोभित शीश मनहारी ।।
माया से हों भृमित असुर । नहुष सुमर तरें भवसागर ।।
हैं वर्ष शिक्षक ऋषि-धर्म । करें क्रोधहा नाश कुकर्म ।।
करें कोप हों नष्ट अधर्मी । क्रोधकृतकर्ता सतकर्मी ।।
समझो प्रभु ही कर्ता भर्ता । विश्वबाहु संत आश्रयदाता ।।
धार शीश की रक्ष वसुंधरा । हुए विख्यात प्रभु महीधरा ।। (४७)

भावार्थ: *यज्ञ में अर्पित हवि को ग्रहण करने वाले भगवान्* ***इष्ट*** *(३०८) यज्ञ का फल देते हैं। अन्तर्यामी और अजन्मा प्रभु* ***अविशिष्टा*** *(३०९) हैं। विद्वानों के भी शिक्षक* ***शिष्टेष्टा*** *(३१०) हैं। मस्तक पर मयूर पंख का धारण करने वाले मनोहर* ***शिखंडी*** *(३११) हैं। (जिनकी) माया से असुर भ्रमित हो जाते हैं और जिनके नाम स्मरण से भवसागर तर जाते हैं, वह* ***नहुष*** *(३१२) हैं। ऋषि-धर्म पालन करने वालों के शिक्षक* ***वर्ष*** *(३१३) हैं। कुकर्म का* ***क्रोधहा*** *(३१४) नाश करते हैं। सत कर्म करने वाले* ***क्रोधकृतकर्ता*** *(३१५) क्रोध से दुष्टों का संहार करते हैं। भगवान् ही कर्ताभर्ता हैं जो संतों के आश्रयदाता* ***विश्वबाहु*** *(३१६) हैं। पृथ्वी की रक्षा के लिए प्रभु ने इन्हें शीश पर धारण किया, अतः वह विश्व में* ***महीधरा*** *(३१७) के नाम से विख्यात हुए।*

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥४८॥

हैं अच्युत षष्ट हीन-विकार । प्रथित किए उत्पत्ति संसार ।।
हैं प्राण प्रभु जीवन आधार । प्राणद सुर नर बल आधार ।।
सुत अदिति लिए जन्म भुवन । थे इन्द्रानुज स्वरुप बामन ।।
वासवानुज नापे त्रिभुवन । दिए नृप महाबली स्वस्त्ययन ।।
स्वामी सागर आधार भुवन । अपांनिधि हैं ईश्वर भूजन ।।
हैं स्थित अन्तर्भाग सब जन । अधिष्ठान हैं सगुण भगवन ।।
अप्रमत्त दें न्याय सब कर्मी । प्रभु प्रतिष्ठित अति पराक्रमी ।। (४८)

भावार्थ *छै भाव विकारों से विहीन होने के कारण वह* ***अच्युत*** *(३१८) हैं। (जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश, ये छै विकार शास्त्र वर्णित हैं)। विश्व की उत्पत्ति करने वाले प्रभु* ***प्रथित*** *(३१९) हैं। इस सृष्टि के आधार प्रभु* ***प्राण*** *(३२०) हैं। देव एवं नर के बल आधार भगवान्* ***प्राणद*** *(३२१) हैं। अदिति पुत्र इन्द्र अनुज के रूप में पृथ्वी पर बामन स्वरुप में अवतार लेकर (कश्यप जी द्वारा अदिति से इन्द्र के अनुज के रूप में अवतरित हुए थे)* ***वासवानुज*** *(३२२) नाम से तीनों लोकों को नाप कर सम्राट महाबली का उद्धार किया। पृथ्वी के आधार, समुद्र के स्वामी* ***अपांनिधि*** *(३२३) प्राणियों के ईश्वर हैं। समस्त जीवों के अन्तः करण में स्थित* ***अधिष्ठान*** *(३२४) प्रभु साकार रूप में अवतरित हुए। सब कर्मियों को न्याय देने वाले प्रभु* ***अप्रमत्त*** *(३२५) हैं। महान पराक्रमी भगवान्* ***प्रतिष्ठित*** *(३२६) हैं।*

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥४९॥

स्कन्द अमर अजर परमेश्वर । स्कन्दधर हैं धर्म के ईश्वर ।।
धुर्य सहें सहज भार भूजन । दें फल वरद कर्म सब प्राणिन ।।
चले पवन पा आदेश भगवन । करें निर्देश वेग वायुवाहन ।।
वासुदेव बसें सुर हृदय । वृद्धभानु ओजित सम सूर्य ।।
जानें सब प्रथम देव भगवन । आदिदेव का करें सब वंदन ।।
करें ध्वस्त हरि नगर दुर्जन । कहें पाणिनी पुरंदर भगवन ।। (४९)

भावार्थः *अजर अमर प्रभु* ***स्कन्द*** *(३२७) हैं। धर्म के स्वामी* ***स्कन्दधर*** *(३२८) हैं। समस्त जीवों का भार सहजता से* ***धुर्य*** *(३२९) सहते हैं। सभी प्राणियों को* ***वरद*** *(३३०) कर्मों का फल देते हैं। प्रभु के आदेश से पवन बहती है और* ***वायुवाहन*** *(३३१) रूप से वह उसके वेग को निर्देशित करते हैं। देवों के हृदय में बसने वाले* ***वासुदेव*** *(३३२) हैं। सूर्य के समान तेज वाले* ***वृद्धभानु*** *(३३३) हैं। प्रथम देव* ***आदिदेव*** *(३३४) को सभी प्रणाम करते हैं। प्रभु दुष्टों के नगरों को ध्वस्त करते हैं इसलिए (महर्षि) पाणिनी ने उन्हें भगवान्* ***पुरंदर*** *(३३५) नाम से सम्बोधित किया है।*

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥५०॥

है शोक दोष उर्मि जानें जन। हैं <u>अशोक</u> दोषहीन वपुन।।
तारें जन भव-सागर भगवन। हैं मोक्ष आधार हरि <u>तारन</u>।।
हरें जन्म मरण भय भगवन। करें <u>तार</u> दूर दुःख भूजन।।
न कोई बली <u>शूर</u> समान। <u>शौरि</u> वीर वसुदेव संतान।।
करें <u>जनेश्वर</u> लोक नियंत। करें <u>अनुकूल</u> मंगल सब संत।।
हेतु रक्षा मही लें अवतार। <u>शतावर्त</u> प्रगटे शत बार।।
है शोभित हरि हस्त नीरज। हैं <u>पद्मी</u> सुभग समान सूरज।।
कमल सम हरि के लाल नयन। <u>पद्मनिभेक्षण</u> कहें त्रिभुवन।। (५०)

भावार्थ: *शोक एक प्रकार का उर्मि दोष है, भगवान्* ***अशोक*** *(३३६) इस दोष से मुक्त हैं। भगवान्* ***तारन*** *(३३७) प्राणियों को भव-सागर पार करा मोक्ष का आधार बनते हैं। जन्म मरण की घबराहट को हर* ***तार*** *(३३८) भगवान् प्राणियों के दुखों को दूर करते हैं। भगवान् के समान कोई वीर नहीं, इसलिए वह* ***शूर*** *(३३९) हैं। वीर वासुदेव के पुत्र* ***शौरि*** *(३४०) हैं। विश्व के नियंत्रक* ***जनेश्वर*** *(३४१) हैं।* ***अनुकूल*** *(३४२) (भगवान्) सब संतों का मंगल करते हैं। पृथ्वी की रक्षा के लिए प्रभु ने सैकड़ों (बहुत) अवतार लिए, इसलिए वह* ***शतावर्त*** *(३४३) नाम से विख्यात हुए। सूर्य के समान प्रतिभाशाली प्रभु के हाथों में कमल पुष्प शोभायमान है, इसलिए वह* ***पद्मी*** *(३४४) हैं। भगवान् के लाल नेत्र कमल के समान हैं, अतः उन्हें त्रिभुवन* ***पद्मनिभेक्षण*** *(३४५) नाम से बुलाता है।*

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥**५१**॥

स्थित कमल सम नाभिका तन। प्रज्ञात नाम <u>पद्मनाभ</u> भगवन।।
अति सुन्दर नियंत के नयन। हैं <u>अरविंदाक्ष</u> कमल लोचन।।
स्थित हिय रूप कमल के मध्य। त्रिभुवन में <u>पद्मगर्भ</u> पूज्य।।
सत सतकर्मा दें अन्न भूजन। कर्म <u>शरीरभृत</u> के पावन।।
स्वामी विपुल विभूति विधि। दें <u>महर्द्धि</u> जन रिद्धि सिद्धि।।
प्रपंच रूप हैं <u>रिद्ध</u> भगवन। हैं <u>वृद्धात्मा</u> हरि अजन्मन्।।
<u>महाक्ष</u> के हैं सहस्त्र लोचन। ध्वज <u>गरुड़ध्वज</u> गरुड़ चिन्ह।।(५१)

भावार्थ: *प्रभु के शरीर में कमल रूपी नाभिका स्थित है, इसलिए उन्हें* ***पद्मनाभ*** *(३४६) नाम से जाना जाता है। भगवान् के अति सुन्दर चक्षु कमल समान हैं, अतः वह* ***अरविंदाक्ष*** *(३४७) हैं। हृदय रूपी कमल के मध्य में स्थित* ***पद्मगर्भ*** *(३४८) तीनों लोकों में पूज्य हैं। प्राणियों को अन्न प्रदान करने वाले सत्य सतकर्मा पवित्र कर्म करने वाले* ***शरीरभृत*** *(३४९) हैं। रिद्धि सिद्धि को प्रदान करने वाले विपुल विभूति के स्वामी* ***महर्द्धि*** *(३५०) हैं। प्रपंच रूप होने से प्रभु को* ***रिद्ध*** *(३५१) सम्बोधित किया जाता है। प्रभु का रूप अजन्मा है, अतः वह* ***वृद्धात्मा*** *(३५२) हैं। हरि के सहस्त्र (अनगिनित) नेत्र हैं, अतः* ***महाक्ष*** *(३५३) हैं। प्रभु की ध्वजा गरुण के चिह्न वाली है, इसलिए वह* ***गरुड़ध्वज*** *(३५४) हैं।*

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जयः ॥५२॥

महायशी अतुल्य परमात्मा । हैं <u>अतुल</u> अमर अजर आत्मा ।।
अमर शरीर तुम सर्वभूता । हैं दृढ़ संकल्पी <u>शरभ</u> अजेता ।।
हैं हरि <u>भीम</u> महाबलशाली । <u>समयज्ञ</u> सम द्रष्ट वैभवशाली ।।
यज्ञ हवि होती अति पावन । करें ग्रहण <u>हविर्हरि</u> भगवन ।।
हैं परम ज्ञान के ज्ञाता दिव्य । कहे जग उन्हें <u>सर्वलक्षणलक्षन्य</u> ।।
<u>लक्ष्मीवान</u> के बसें श्री हिय । दें <u>समितिज्जय</u> रण में विजय ।।(५२)

भावार्थ: *अतुलनीय अजर अमर आत्मा के स्वामी महायशी प्रभु* ***अतुल*** *(३५५) हैं। दृढ़ संकल्पी अमरत्व प्राप्त अजेय सर्व व्यापी भगवान्* ***शरभ*** *(३५६) हैं। महाबलशाली प्रभु* ***भीम*** *(३५७) हैं। अत्यंत वैभवशाली सभी को समान दृष्टि से देखने वाले भगवान्* ***समयज्ञ*** *(३५८) हैं । पवित्र यज्ञ की हवि को स्वीकार करने वाले प्रभु* ***हविर्हरि*** *(३५९) हैं। प्रभु श्रेष्ठ ज्ञान के ज्ञाता हैं, अतः उन्हें विश्व* ***सर्वलक्षणलक्षन्य*** *(३६०) नाम से पुकारा जाता है। श्री (लक्ष्मी) को अपने हृदय में धारण करते हैं, इसलिए* ***लक्ष्मीवान*** *(३६१) हैं। युद्ध में* ***समितिज्जय*** *(३६२) विजय दिलाने वाला हैं।*

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥५३॥

हैं अविनासी <u>विक्षर</u> भगवन । धरें <u>रोहित</u> रोहू वर्पन् ।।
दें हरि <u>मार्ग</u> आंनद भूजन । करें वंदन <u>हेतु</u> हेतु मोचन ।।
बांधे माधव यशोदा खम्भ । <u>दामोदर</u> हैं सत जन स्तम्भ ।।
सहें <u>सह</u> भूजन के विकार । हैं हरि <u>महीधर</u> पर्वताकार ।।
जो भाग्यवान और पुण्यवत् । <u>महाभाग</u> नाम महाभगवत ।।
जैसे चले समीर तीव्र गति । चले <u>वेगवान</u> मन द्रुत गति ।।
हो मग्न जग उदर काल प्रलय । प्रभु <u>अमितासन</u> अति दिव्य ।। (५३)

भावार्थ: *जिनका कभी नाश नहीं होता (अविनासी), ऐसे प्रभु **विक्षर** (३६३) हैं। रोहू मत्सय के रूप में अवतरित हुए, इस कारण उन्हें **रोहित** (३६४) नाम से जाना जाता है। प्राणियों को आनंद देने वाले प्रभु **मार्ग** (३६५) हैं। **हेतु** (३६६) की वन्दना करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। संतों के आधार प्रभु को जब (माँ) यशोदा ने खम्भे से बांधा तो उन्हें **दामोदर** (३६७) नाम से सम्बोधित किया गया। प्राणियों (अपने भक्तों) के विकारों को सहन करने के कारण उनका नाम **सह** (३६८) पड़ा। प्रभु का आकार पर्वत रूप होने के कारण (अति विशाल) उन्हें **महीधर** (३६९) नाम से बुलाया गया। जो भाग्यशाली और पुण्यवत हैं, ऐसे महाभगवत को **महाभाग** (३७०) नाम से पुकारा गया है। जिस प्रकार वायु अत्यंत तीव्र गति से बहती है उसी प्रकार **वेगवान** (३७१) का मन अत्यंत वेग से प्रवाहित आता है। प्रलय के समय दिव्य प्रभु **अमितासन** (३७२) के उदर में संसार समाहित हो जाता है।*

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥५४॥

हैं <u>उद्भव</u> शासक सब भूजन । करें पापी भयभीत <u>क्षोभन</u> ।।
जिनके पूजन से हों पवित्र । वह हरि <u>देव</u> स्थित सर्वत्र ।।
करें वास श्री उदर नारायन । <u>श्रीगर्भ</u> नाम प्रसिद्ध भुवन ।।
<u>परमेश्वर</u> प्रभु परम ईश । करें जग निर्माण <u>करण</u> जगदीश ।।
विश्व सृजन नियंत्रण कर्ता । <u>कारण</u> हरि हैं जग के भर्ता ।।
हैं हरि <u>कर्ता</u> स्वतंत्र सदा । <u>विकर्त</u> प्रभु हैं वास्तुविदा ।।
<u>गहन</u> समान न कृत्य क्षमता । करें दूर <u>गुह</u> माया ममता ।।(५४)

भावार्थ: *पृथ्वी के समस्त जीवों के स्वामी होने के कारण उन्हें* ***उद्भव*** *(३७३) नाम से पुकारा जाता है। पापियों को भयभीत करने वाले भगवान् का नाम* ***क्षोभन*** *(३७४) है। सर्वत्र स्थित प्रभु* ***देव*** *(३७५) का पूजन करने से पवित्र होते हैं। श्री (माँ लक्ष्मी) प्रभु के उदर में वास करती हैं, अतः उन्हें* ***श्रीगर्भ*** *(३७६) के नाम से बुलाया जाता है। परम ईश प्रभु* ***परमेश्वर*** *(३७७) हैं।* ***करण*** *(३७८) प्रभु इस जग के निर्माण हेतु हैं। आप ही विश्व का निर्माण करते हैं एवं पोषण करते हैं, अतः* ***कारण*** *(३७९) हैं। सदैव स्वतंत्र हरि* ***कर्ता*** *(३८०) हैं। प्रभु वास्तुकार होने से सदैव विचित्र भुवनों की रचना करते हैं, अतः* ***विकर्त*** *(३८१) हैं। कोई भगवान् की कृत्य क्षमता को स्पर्श नहीं कर सकता, इसलिए* ***गहन*** *(३८२) हैं। माया ममता से अपने स्वरुप को आवर्तित कर लेते हैं (ढक लेते हैं), अतः* ***गुह*** *(३८३) हैं।*

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥५५॥

देें कर्म ज्ञान व्यवसाय भगवन । व्यवस्थान करें पोषण भुवन ।।
मिले जन अंत काल पद्मपाद । करें जब पूजन संस्थान पाद ।।
देें स्थानद फल कर्म अनुरूप । हैं ध्रुव अक्षय अटल स्वरूप ।।
चहुँ ओर है जिनकी प्रसिद्धि । है क्षमा रीति हरि परर्द्धि ।।
हैं हरि परम सत्य के वक्ता । परमस्पष्ट धर्म अधिवक्ता ।।
रहें तुष्ट त्रप्त मय-आनंद । हरि पुष्ट दें जग परम आनंद ।।
हो ज्ञान सत जिनके सुमिरन । वह शुभेक्षण हैं रिपु दुर्जन ।। (५५)

भावार्थ: *प्रभु कर्म ज्ञान देने वाले गुरु हैं, अतः* ***व्यवसाय*** *(३८४) हैं। जग की पूर्ति करते हैं (व्यवस्था करते हैं), अतः उन्हें* ***व्यवस्थान*** *(३८५) कहा जाता है। मरण पश्चात जिनके पूजन करने से कमल रूपी चरणों में निवास मिलता है, वह* ***संस्थान*** *(३८६) हैं। कर्मों के अनुसार जो फल देते हैं, वह* ***स्थानद*** *(३८७) हैं। प्रभु अक्षय अटल हैं, अतः* ***ध्रुव*** *(३८८) हैं। ऐसे भगवान् जिनकी क्षमा ही रीति है, तथा जिनकी प्रसिद्धि चहुं ओर है, वह* ***परर्द्धि*** *(३८९) हैं। धर्म एवं सत्य के अधिवक्ता प्रभु* ***परमस्पष्ट*** *(३९०) हैं। सदैव तृप्त रहने वाले त्रप्तानंद प्रभु* ***तुष्ट*** *(३९१) हैं। परमानंद में रहने वाले हर प्रकार से पूर्ण प्रभु* ***पुष्ट*** *(३९२) हैं। जिनके स्मरण से सत्य का ज्ञान होता है तथा जो दुष्टों के शत्रु हैं, वह* ***शुभेक्षण*** *(३९३) हैं।*

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥५६॥

रमणें योगी नित्य स्वरूप । राम नृप दशरथ प्रतिरूप ।।
प्रलय काल समाहित आत्मा । विराम प्रभु हैं परमात्मा ।।
विराज करें न सेवन विषय । दें निर्मोचन हरि अति पूज्य ।।
पवित्र पूज्य मार्ग भगवन । देते मार्ग जन निर्मोचन ।।
हो पवित्र तन नेय भजन से । दें विश्व नेतृत्व रुप नय से ।।
हैं आत्मनिर्भर अनय नियंत । न नृप कोई अतिरिक्त अनंत ।।
वीर करें कार्य सुचेष्ट । समान न कोई शक्तिमश्रेष्ठ ।।
धर्म हरि सत बोधन दाता । धर्मविदुत्तम ग्रंथ ज्ञाता ।।(५६)

भावार्थः *जिन नित्यस्वरूप भगवान् में योगी रमण करते हैं, एवं जो (अवध नरेश) दशरथ जी के प्रतिरूप हैं (उनके पुत्र हैं) उनका नाम* ***राम*** *(३९४) है। प्रलय काल में जिनमें आत्मा समाहित हो जाती है ऐसे परमात्मा प्रभु* ***विराम*** *(३९५) हैं। विषय सेवन में जिन्हें राग नहीं है तथा जो अति प्रिय भगवान मोक्ष प्रदान करते हैं, वह* ***विराज*** *(३९६) हैं। पवित्र* ***मार्ग*** *(३९७) भगवान् प्राणियों को मोक्ष का मार्ग देते हैं।* ***नेय*** *(३९८) भगवान् के जप से शरीर पवित्र हो जाता है।* ***नय*** *(३९९) समस्त संसार के नेता हैं।* ***अनय*** *(४००) भगवान् स्वतंत्र हैं।उनके अतिरिक्त हमारा कोई स्वामी नहीं है। महाबलशाली भगवान्* ***वीर*** *(४०१) सदैव शुभ कर्म करते हैं।* ***शक्तिमश्रेष्ठ*** *(४०२) के समान कोई नहीं है। प्रभु सत्य का ज्ञान कराते हैं, अतः* ***धर्म*** *(४०३) हैं। ग्रंथों के ज्ञाता हैं, इसलिए* ***धर्मविदुत्तम*** *(४०४) हैं।*

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ॥५७॥

गति अवरोधा वैकुण्ठ अनंत। अमापित सभी तुला नियंत ।।
देते हरि सदा फल सुकर्म। करें नाश पुरुष दुष्कर्म ।।
वायु विहीन से हो जग अंत। पवन रूप हैं प्राण नियंत ।।
करें अंत प्राणद काल प्रलय। हैं प्रणव प्रभु अति पूज्य ।।
प्रपंच रूप से विस्तृत भगवन। पृथु नाम प्रसिद्ध ग्रंथन ।।
जन्मे ब्रह्मा हरि के वीर्य। हिरण्डयगर्भ सब जग पूज्य ।।
किए वध रण रिपु सुर संत। हैं शत्रुघ्न हरि धर्म नियन्त ।।
जिनके वर से सफल सब काम। व्याप्त सर्वभूत सत नाम ।।
हैं हरि वायु पावन गंध। अधोक्षज के मध्य भू नभ अंग ।। (५७)

भावार्थ: *गति को अवरोध करने वाले (जगत के प्रारम्भ में बिखरे हुए जीवों को परस्पर मिलाकर उनकी गति को रोकने वाले) प्रभु जिनका कोई मापदंड नहीं है, वह* ***वैकुण्ठ*** *(४०५) हैं। जो प्रभु शुभ कर्मों का फल देते हैं, दुष्कर्मों को नष्ट करते हैं, वह* ***पुरुष*** *(४०६) हैं। वायु विहीन (वातावरण) से जीव का अंत हो जाता है, उनके लिए पवन रूप प्रभु* ***प्राण*** *(४०७) हैं। प्रलयकाल में सभी जीवों को अंत करने वाले (मुक्ति देने वाले) प्रभु* ***प्राणद*** *(४०८) हैं। भगवान् अति पूजनीय हैं, अतः* ***प्रणव*** *(४०९) हैं। प्रपंच रूप से विस्तृत होने के कारण प्रभु को* ***पृथु*** *(४१०) नाम से सभी ग्रंथों ने सम्बोद्धित किया है। पूज्य हरि ने अपने शुक्र से ब्रह्म देव को उत्पन्न किया, अतः वह* ***हिरण्डयगर्भ*** *(४११) नाम से जगत में पूज्य हैं। संत एवं देवताओं के शत्रुओं का रण में वध कर प्रभु धर्म को नियमित करते हैं, अतः* ***शत्रुघ्न*** *(४१२) हैं। सर्व-व्यापी सत्य नाम भगवान् के वर से सभी कार्य सफल होते हैं, इसीलिये उन्हें* ***व्याप्त*** *(४१३) नाम से पुकारा गया है। प्रभु पुन्य गंध हैं, इसलिए* ***वायु*** *(४१४) हैं। (उद्योगपर्व में ऐसा वर्णित है कि) भगवान् के अंग आकाश और पृथ्वी के मध्य में स्थित हैं, इसलिए* ***अधोक्षज*** *(४१५) हैं।*

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥५८॥

हैं नियंत्रक ऋतु षष्ठ काल। सुदर्शन करें नष्ट दुर्काल ।।
ज्ञान रूप हैं श्री भगवन। काल करें सब जीवन गणन ।।
स्थित नभ हिय मध्य श्रेष्ठी। परमेश्वर हरि हैं परमेष्ठी ।।
करें ग्रह भक्तों की अर्चन। परिग्रह हरि हैं अति पावन ।।

हों भयभीत असुर देख उग्र।करें पालन वह विधि समग्र।।
करें संवत्सर वास दैह्य जन।दक्ष हरि हैं सब कार्य निपुन।।
तरें भव सागर जिनका लक्ष्य।हैं विश्राम उनके अति प्रिय।।
हैं समर्थ सब कर्म भगवान।दें विश्वदक्षिण सबको निर्वान।। (५८)

भावार्थ: *छै मौसम (वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत एवं शिशिर) के नियंत्रण कर्ता हैं, अतः* ***ऋतु*** *(४१६) हैं।* ***सुदर्शन*** *(४१७) भगवान् बुरे समय का नाश होता है। प्रभु ज्ञान स्वरुप हैं जो समस्त जीवों की गणना करते हैं, अतः* ***काल*** *(४१८) हैं। हृदय आकाश के मध्य में स्थित रहने वाले अत्यंत श्रेष्ठ परमेश्वर* ***परमेष्ठी*** *(४१९) हैं। भक्तों की अर्चन स्वीकार करने वाले अत्यंत पवित्र भगवान्* ***परिग्रह*** *(४२०) हैं। जिनसे भयभीत होकर असुर (सृष्टि के) नियमों का पालन करते हैं, उन प्रभु का नाम* ***उग्र*** *(४२१) हैं। जीवों की आत्मा में जो वास करते हैं, वह* ***संवत्सर*** *(४२२) हैं।* ***दक्ष*** *(४२३) सब कार्यों में निपुण हैं । भवसागर तरना जिनका लक्ष्य है, उनको* ***विश्राम*** *(४२४) अति प्रिय हैं (क्योंकि वह उनके लक्ष्य की पूर्ति करते हैं)।* ***विश्वदक्षिण*** *(४२५) भगवान् सर्व कार्य में समर्थ हैं और उनके स्मरण से मोक्ष की प्राप्ति होती है।*

विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥५९॥

करें समाहित सत भूजन में।हैं विस्तार विख्यात धरा में।।
हैं अचल स्थिर गुणमय भगवन।करो स्थावरस्थाणु पूजन।।
दें धर्म ज्ञान शिक्षा भगवन।हैं प्रमाण प्रवक्ता उल्लसन।।
बिन कारण हरि कृपा कर्ता।बीजमव्ययम सम लय मधुरता।।
हैं विश्व सुख स्वरूप भगवन।करें पावन हरि अर्थ पूजन।।
निःस्वार्थ हरि प्रेम मूर्ति।अनर्थ प्रभु शान्ति मूर्ति।।
महाकोश प्रभु अन्नदाता।महाभोग हरि आनंददाता।।
हैं हरि स्वामी समस्त सम्पदा।पूजें महाधन जन सर्वदा।।(५९)

भावार्थ: *जीवों में सत्य समाहित करने वाले प्रभु* ***विस्तार*** *(४२६) पृथ्वी पर प्रसिद्ध हैं। अचल स्थिर और गुणमय प्रभु* ***स्थावरस्थाणु*** *(४२७) का पूजन करें। धर्म ज्ञान के शिक्षक प्रभु प्रसन्नता के प्रवक्ता हैं (अतः प्रसन्नता फैलाते हैं), अतः* ***प्रमाण*** *(४२८) हैं।*

*बिना कारण ही अत्यंत कृपा करने वाले भगवान् का **बीजमव्ययम** (४२९) संगीत की तरह लयमय है। सुख के स्वरुप पवित्र **अर्थ** (४३०) भगवान् का सब पूजन करते हैं। निःस्वार्थ ही प्रेम बरसाने वाले प्रभु **अनर्थ** (४३१) प्रेम और शान्ति के अवतार हैं। अन्नदाता प्रभु **महाकोश** (४३२) हैं। आनंद को प्रदान करने वाले भगवान् **महाभोग** (४३३) हैं। सर्व पूजित **महाधन** (४३४) हरि श्री (सम्पदा) के स्वामी हैं।*

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥६०॥

द्वेषहीन अनिर्वेद भगवंता । <u>अनिर्विण्ड़</u> तब नाम नियन्ता ।।
सिर अनल रवि चंद्र हैं नयन । हरि <u>स्थविष्ठ</u> वैराज निरूपन ।।
<u>अभु</u> हैं अजर अमर भगवन । हैं <u>धर्मयूप</u> हरि धर्म चरन ।।
स्वीकारें यज्ञ हवि भगवान् । <u>महामख</u> हरि दें जीव निर्वान ।।
हैं <u>नक्षत्रनेमि</u> तारक द्रष्टा । <u>नक्षत्री</u> चंद्र सम प्रतिष्ठा ।।
जो क्षमाशील सम राम भगवन । हैं <u>क्षम्</u> समर्थ दें लक्ष्य भूजन ।।
हों अघहीन जब करें ध्यान । दें <u>क्षाम</u> आत्म-भाव संज्ञान ।।
हो सृजन सृष्टि हरि चेष्टा । हैं <u>समीहन</u> सत पथ के द्रष्टा ।।(६०)

भावार्थ: *भगवान् द्वेषहीन एवं सकारात्मक हैं, अतः उन्हें **अनिर्विण्ड़** (४३५) नाम से जाना जाता है। विराट रूप (वैराज रूप) प्रभु **स्थविष्ठ** (४३६) का अग्नि शिर तथा सूर्य और चन्द्रमा नेत्र हैं। अजर, अमर प्रभु **अभु** (४३७) हैं। हरि का अवतार धर्म स्तम्भ की स्थापना के लिए हुआ है, अतः **धर्मयूप** (४३८) हैं। प्रभु यज्ञ की हवि स्वीकार करते हैं और निर्वाण प्राप्त कराते हैं, अतः **महामख** (४३९) हैं। प्रभु खगोल शास्त्र ज्ञाता हैं, अतः **नक्षत्रनेमि** (४४०) हैं। चंद्र के सामान प्रतिष्ठा वाले भगवान् **नक्षत्री** (४४१) हैं। श्री राम के समान क्षमाशील प्रभु जो प्राणियों को लक्ष्य तक पहुंचाते हैं (मोक्ष दिलाते हैं), उन प्रभु का नाम **क्षम** (४४२) है। आत्म-भाव संज्ञान देने वाले **क्षाम** (४४३) प्रभु के ध्यान से समस्त पापों का नाश होता है। जिनके प्रयास से सृष्टि की रचना होती है एवं जो सत्य मार्ग दिखाने वाले हैं, उन भगवान् को **समीहन** (४४४) कह कर पुकारा गया है।*

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥६१॥

<u>यज्ञ</u> हरि स्वयं यज्ञ स्वरूप । हैं पूजनीय <u>इज्य</u> सत रूप ।।
मिले मोक्ष जब करें हरि पूजा । <u>महेज्य</u> सम नहीं कोई दूजा ।।
करें सुमर हों पूर्ण लिप्सा । हैं सत <u>क्रतु</u> संतों की आशा ।।
धर्म रक्षक प्रभु हैं सत रूप । दें ज्ञान <u>सत्र</u> विधि अनुरूप ।।
संत जब जाएं शरण नियंता । हरें <u>संतागति</u> उनकी चिंता ।।
हैं व्यापक <u>सर्वदर्शी</u> भगवन । दें <u>विमुक्तात्मा</u> निर्मोचन ।।
हैं <u>सर्वज्ञ</u> सर्व ज्ञान स्वरूप । हैं <u>ज्ञानमुत्मम</u> गुरु अनुरूप ।। (६१)

भावार्थः *हरि स्वयं यज्ञ स्वरुप हैं, अतः* ***यज्ञ*** *(४४५) हैं। सत्यरूप अति पूज्य प्रभु* ***इज्य*** *(४४६) हैं। जिनके समान कोई दूसरा नहीं एवं जिनके पूजन से मोक्ष प्राप्ति होती है, ऐसे प्रभु* ***महेज्य*** *(४४७) हैं। सभी संतों की आशा सत्य* ***क्रतु*** *(४४८) के स्मरण से समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं। सत्य रूप, धर्म रक्षक, न्यायदाता* ***सत्र*** *(४४९) भगवान् ज्ञान का वितरण करते हैं (ज्ञान की शिक्षा देते हैं)। जब संत प्रभु के शरणागत हो जाते हैं तो* ***संतागति*** *(४५०) उनकी सभी चिंताओं का नाश करते हैं। सर्व व्यापी प्रभु* ***सर्वदर्शी*** *(४५१) हैं।* ***विमुक्तात्मा*** *(४५२) मोक्ष देते हैं। सर्व ज्ञानी प्रभु* ***सर्वज्ञ*** *(४५३) हैं। गुरु अनुरूप (ज्ञान देने वाले भगवान्)* ***ज्ञानमुत्मम*** *(४५४) हैं।*

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥६२॥

देंं अभयदान जब जाएं शरन । <u>सुव्रत</u> नियंत प्रसिद्ध भुवन ।।
सुन्दर मुख नयन विशाला । <u>सुमुख</u> कंठ में शोभित माला ।।
सर्वव्यापी <u>सूक्ष्म</u> लघु शरीर । <u>सुघोष</u> नाद सम वेग समीर ।।
सुमिरें <u>सुखद</u> हो सुख सदा । <u>सुहृत</u> उदार हरें आपदा ।।
मन मोहक सुन्दर स्वरूप । <u>मनोहर</u> हरि ऐश्वर्य रूप ।।
<u>जितक्रोध</u> क्रोधहीन भगवन । दें सन्देश शान्ति सब संतजन ।।
हैं जो मित्र संत रिपु दुर्जन । किए वध <u>वीरबाहु</u> असुरजन ।।
करें जर्जर असुर जो भगवन । कहें उन्हें <u>विदारण</u> भूजन ।।(६२)

भावार्थ: *शरण में आने वाले को अभयदान देने वाले* ***सुव्रत*** *(४५५) जग प्रसिद्ध हैं। विशाल नेत्र और सुन्दर मुख वाले प्रभु* ***सुमुख*** *(४५६) के कंठ में माला (वैजयंती) शोभायमान है। सर्वव्यापी (भगवान्)* ***सूक्ष्म*** *(४५७) अत्यंत लघु शरीर के हैं। तीव्र वायु के समान गंभीर घोष करने वाले भगवान्* ***सुघोष*** *(४५८) हैं।* ***सुखद*** *(४५९) प्रभु के स्मरण से सदैव सुखता का अनुभव होता है। उदार* ***सुहृत*** *(४६०) आपदाओं का हरण करते हैं। मन को मोहित करने वाले सुन्दर और ऐश्वर्य स्वरुप के स्वामी प्रभु* ***मनोहर*** *(४६१) हैं। सब संतगणों को शान्ति का सन्देश देने वाले, क्रोध को जीतने वाले प्रभु* ***जितक्रोध*** *(४६२) हैं। जो दुर्जनों के शत्रु और संतों के मित्र हैं तथा असुर योद्धाओं को मारने वाले हैं, वह भगवान्* ***वीरबाहु*** *(४६३) हैं। असुरों को निहत करने वाले प्रभु को विश्व* ***विदारण*** *(४६४) कह कर सम्बोधित करता है।*

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥६३॥

सुमरत नाम न व्यापे माया । हो भज <u>स्वापन</u> पावन काया ।।
हैं स्वामी दुःखी दीन जन । समझो <u>स्ववश</u> स्वतंत्र भगवन ।।
सर्वगत <u>व्यापी</u> परमात्मा । असीमित आकार <u>नैकात्मा</u> ।।
<u>नैककर्मक्रत</u> सब कर्म कर्ता । हैं जनन पालन संहार कर्ता ।।
बसे ब्रह्माण्ड हरि के उदर । करें <u>वत्सर</u> वध असुर समर ।।
करें प्रेम संत <u>वत्सल</u> भगवन । करें समर्थ <u>वत्सी</u> जग पालन ।।
हैं <u>रत्नगर्भ</u> सम सागर रत्न । हैं <u>धनेश्वर</u> हरि धन सम्पन्न ।। (६३)

भावार्थ: *जिनके नाम स्मरण से माया नहीं व्याप्ती एवं तन पवित्र हो जाता है, वह भगवान्* ***स्वापन*** *(४६५) हैं। सब दुःखी दीनों के स्वामी एवं स्वभाव से स्वतंत्र, भगवान्* ***स्ववश*** *(४६६) हैं। प्रभु की आत्मा सर्वगत है, अतः वह* ***व्यापी*** *(४६७) हैं। भगवान् के आकार को मापा नहीं जा सकता, इसलिए* ***नैकात्मा*** *(४६८) हैं। सृष्टि के समस्त कार्य - जनन, पालन एवं संहार,* ***नैककर्मक्रत*** *(४६९) प्रभु द्वारा ही संचालित होते हैं। रण में दैत्यों का संहार करते हैं तथा जिनके उदर में ब्रह्माण्ड बसता है, वह प्रभु* ***वत्सर*** *(४७०) हैं। संत प्रेमी भगवान्* ***वत्सल*** *(४७१) हैं। जग का पोषण करने वाले समर्थ (भगवान्)* ***वत्सी*** *(४७२) हैं। प्रभु ही रत्नों से भरे सागर* ***रत्नगर्भ*** *(४७३) हैं। धन-धान्य के स्वामी भगवान्* ***धनेश्वर*** *(४७४) हैं।*

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी   सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥६४॥

लिए जन्म हरि धर्म स्थापन । धर्मगुप हेतु जन्म धर्म रक्षन ।।
हैं धर्म अधर्म रहित भगवन । जन्मे धर्मकृत हेतु संत रक्षन ।।
करें धर्मी हरि धर्म धारन । सत ब्रह्म असत प्रपंच वर्पन् ।।
हैं अक्षर कूटस्थ अविनासी । हैं क्षर नर सुर प्रन्यासी ।।
रहते लुप्त सजीव वासना । हैं अविज्ञाता रहित कामना ।।
है तेज हरि सम सूर्य किरण । सहस्त्रांशु हैं अति ऊष्ण ।।
करें जो आत्म ज्ञान चेतन । करें वह विधाता जग सृजन ।।
रचे शास्त्र प्राज्ञ नारायण । हैं वह नित्य सिद्ध कृतलक्षण ।। (६४)

***भावार्थः** धर्म के स्थापन एवं रक्षा के लिए जो अवतरित हुए प्रभु **धर्मगुप** (४७५) हैं। धर्म एवं अधर्म से रहित भगवान् **धर्मकृत** (४७६) संतों की रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं। धर्म की धुरी धारण करने वाले **धर्मी** (४७७) हैं। **सत** (४७८) ब्रह्म हैं। प्रभु के प्रपंच रूप को **असत** (४७९) नाम से सम्बोधित किया गया है। (प्रभु) अविनासी और कूटस्थ हैं, अतः **अक्षर** (४८०) हैं। **क्षर** (४८१) देवताओं और प्राणियों की आस्था हैं। जीव भोग वासना में लिप्त रहते हैं, प्रभु इस से अलिप्त (कामना रहित) हैं, अतः **अविज्ञाता** (४८२) हैं। **सहस्त्रांशु** (४८३) प्रभु का तेज सूर्य की किरण के समान अत्यंत ऊष्ण है। इस विश्व के जन्म दाता एवं आत्मिक ज्ञान को चेतन करने वाले प्रभु **विधाता** (४८४) हैं। शास्त्रों के रचयिता प्राज्ञ नित्यसिद्ध प्रभु **कृतलक्षण** (४८५) हैं।*

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥६५॥

प्रतिभा समान सूर्य मंडल । गभस्तिनेमि से जगमग अंचल ।।
हैं अंग हरि सत्तवस्थ पावन । सिंह बलशाली समर्थ भगवन ।।
हैं ईश्वर सुर असुर भूजन । भूतमहेश्वर हैं प्रिय संतन ।।
हैं जग पूजनीय पुरातन । आदिदेव प्रभु अति पावन ।।
उत्कृष्ट प्रभु हैं महादेव । देवेश नियंत्रक सभी देव ।।
सुर पालक नियंत शासक । देवभ्रदगुरु हरि हैं रक्षक ।। (६५)

भावार्थः *सूर्य मंडल समान प्रतिभा वाले भगवान्* ***गभस्तिनेमि*** *(४८६) इस मंडल को प्रकाशित करते हैं।* ***सत्तवस्थ*** *(४८७) हरि के अंग पवित्र हैं।* ***सिंह*** *(४८८) समर्थ तथा बलशाली भगवान् हैं। सुर, असुर, नर के ईश्वर* ***भूतमहेश्वर*** *(४८९) संतों के प्रिय हैं। जगत पूज्य पुरातन प्रभु* ***आदिदेव*** *(४९०) अति पवित्र हैं। उच्च कोटि के देव होने के कारण प्रभु* ***महादेव*** *(४९१) हैं। सभी देवताओं को नियंत्रित करने वाले (भगवान्)* ***देवेश*** *(४९२) हैं। देवताओं के पालक, स्वामी, रक्षक और नियंत्रक प्रभु* ***देवभ्रदगुरु*** *(४९३) हैं।*

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥६६॥

हैं भव बंधन रहित भगवन । <u>उत्तर</u> नाम प्रसिद्ध भुवन ।।
करें भगवन गौ भू पालन । <u>गोपति</u> गोप वेश कर धारन ।।
रक्षक जगत नाम है <u>गोप्ता</u> । <u>ज्ञानगम्य</u> ग्रंथों के वक्ता ।।
प्रथम पुरुष नाम <u>पुरातन</u> । <u>शरीरभूतभ्रद</u> करें तन पोषन ।।
विश्व पालक हरि हैं <u>भोक्ता</u> । <u>कपीन्द्र</u> कपि वराह देवता ।।
सत पावन यज्ञ हवि दक्षिणा । करें स्वीकार <u>भूरिदक्षिणा</u> ।। (६६)

भावार्थः *भव बंधनों से मुक्त लोक में प्रसिद्ध प्रभु* ***उत्तर*** *(४९४) हैं। गौ (माँ) और पृथ्वी के पालन कर्ता प्रभु को गोप वेश धारण करने के कारण* ***गोपति*** *(४९५) कहा गया है। जगत की रक्षा करने वाले* ***गोप्ता*** *(४९६) हैं। ग्रंथों का ज्ञान देने वाले* ***ज्ञानगम्य*** *(४९७) हैं। प्रथम पुरुष होने के कारण (जिनकी आयु कोई नहीं जानता)* ***पुरातन*** *(४९८) नाम से सम्बोद्धित किया गया है। जीवों के शरीर का पोषण करने वाले* ***शरीरभूतभ्रद*** *(४९९) हैं। विश्व का पालन करने वाले हरि* ***भोक्ता*** *(५००) हैं। कपि, वराह (आदि) के स्वामी* ***कपीन्द्र*** *(५०१) हैं। सत्य एवं पवित्र यज्ञ हवि को दक्षिणा के रूप में* ***भूरिदक्षिणा*** *(५०२) स्वीकार करते हैं।*

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतांपतिः ॥६७॥

देव रूप से करें सोम पान । <u>सोमप</u> हरि दें फल शुभ दान ।।
किए हरण सुधा समुद्र मंथन । किए सुर <u>अमृतप</u> हरि वितरन ।।
हैं महादेव अति पूज्य भूजन । करें हरि <u>सोम</u> संग उमा पूजन ।।
पाए विजय अनेक रण भगवन । कहें उन्हें <u>पुरुजित</u> भूजन ।।
<u>पुरुसत्तम</u> हैं विश्व वर्पन् । पावन युक्त सत मत प्रेम मन ।।
दें दंड <u>विनय</u> प्रभु दुर्जन । जीतें लघु प्रयास <u>जय</u> द्विषन ।।
<u>सत्यसन्धा</u> करें पूर्ण वचन । <u>दाशार्हा</u> रवि-कुल भगवन ।।
की रचना तंत्र शिव सात्वत । पाई कीर्ति <u>सात्वतामपति</u> ।। (६७)

भावार्थ: सोमप *(५०३) भगवान् देव रूप से सोम पान करते हैं और दान का शुभ फल देते हैं। समुद्र मंथन के समय अमृत हरण कर* ***अमृतप*** *(५०४) भगवान् ने देवताओं को वितरित किया। पार्वती सहित सभी प्राणी अति पूजनीय* ***सोम*** *(५०५) महादेव की पूजा करते हैं (महादेव और सोम एक ही रूप हैं)। अनेक युद्धों में प्रभु ने विजय प्राप्त की अतः प्राणी उन्हें* ***पुरुजित*** *(५०६) कहते हैं। जो विश्वरूप हैं, सत्य बुद्धि एवं जिनके मन में प्रेम है, वह पवित्र* ***पुरुसत्तम*** *(५०७) हैं। दुष्टों को दण्डित करने वाले प्रभु* ***विनय*** *(५०८) हैं। शत्रुओं को अल्प प्रयास से ही जो जीत लेते हैं, वह* ***जय*** *(५०९) हैं। वचनों को पूर्ण करने वाले (अर्थात वरदान देने वाले)* ***सत्यसन्धा*** *(५१०) हैं। सूर्य वंश में जन्म लेने वाले भगवान* ***दाशार्हा*** *(५११) हैं (भगवान् श्री राम सूर्य-वंश में अवतरित हुए थे)। शिव सात्वत (शिव तंत्र) के रचयिता* ***सात्वतामपति*** *(५१२) जग प्रसिद्ध हैं ।*

जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥६८॥

करें नियंत्रित तत्व भगवन । कहे जग प्रभु <u>जीव</u> विचक्षन ।।
विनयशील हैं अति नियंत । <u>विनयितासाक्षी</u> हैं अनंत ।।
मुक्तिदाता <u>मुकुंद</u> भगवान् । <u>अमितविक्रम</u> महा बलवान ।।
सुर असुर नर अन्तर्वासी । <u>अम्भोनिधि</u> सिंधु निवासी ।।
हैं <u>अनन्तात्मा</u> अनंत भगवन । करें <u>महोदधिशय</u> सागर शयन ।।
जो हरि रूप शिव संहारक । करें प्रलय काल अंत <u>अन्तक</u> ।।(६८)

भावार्थः *तत्व नियंत्रित करने वाले बुद्धिमान भगवान् को विश्व* ***जीव*** *(५१३) प्रभु कहता है। विनयशील प्रभु* ***विनयितासाक्षी*** *(५१४) हैं। मुक्ति देने वाले प्रभु* ***मुकुंद*** *(५१५) हैं। महाबलशाली भगवान्* ***अमितविक्रम*** *(५१६) हैं। देवता, दैत्य, मनुष्य के अंतर्मन में वास करने वाले हरि जिनका निवास स्थान समुद्र है, वह* ***अम्भोनिधि*** *(५१७) हैं। प्रभु अनंत हैं, अतः* ***अनन्तात्मा*** *(५१८) हैं। सागर में शयन करने वाले भगवान्* ***महोदधिशय*** *(५१९) हैं। जो (सृष्टि का) अंत करने हेतु प्रलय काल में संहारक शिव रूप धारण करते हैं वह* ***अन्तक*** *(५२०) हैं।*

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥६९॥

अजर अमर आदि अज भगवन । हैं अमूल्य महार्हः निरूपन ।।
नित्य सिद्धि हैं हरि स्वभावय । जितामित्र जीते सब दैत्य ।।
प्रमोदन दें आनंद सब सन्त । हैं आनंद आनंदित भगवंत ।।
नंदन सुमर हिय हर्षाता । हैं नन्द रिद्धि सिद्धि के दाता ।।
सत गुण धारी हैं सत्यधर्म । स्थित त्रिलोक में त्रिविक्रम ।। (६९)

भावार्थः *अजर अमर एवं आदि प्रभु को* ***अज*** *(५२१) नाम से पुकारा गया है।* ***महार्हः*** *(५२२) का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता (अमूल्य हैं)। नित्य सिद्धि हरि को* ***स्वभावय*** *(५२३) कहा गया है। सभी दैत्यों को जीतने के कारण वह* ***जितामित्र*** *(५२४) हैं। सब संतों को आनंदित करने वाले प्रभु* ***प्रमोदन*** *(५२५) हैं। भगवान्* ***आनंद*** *(५२६) आनंद स्वरुप हैं। जिनके नाम को हृदय में स्मरण करने से प्रसन्नता मिलती है, वह प्रभु* ***नंदन*** *(५२७) हैं। रिद्धि सिद्धि देने वाले भगवान्* ***नन्द*** *(५२८) हैं। सत गुण धारी* ***सत्यधर्म*** *(५२९) हैं। तीनों लोकों में जो स्थित हैं (अर्थात सर्वव्यापी हैं), वह* ***त्रिविक्रम*** *(५३०) हैं।*

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥७०॥

ज्ञानी सम कपिल भगवन । महर्षि <u>कपिलाचार्य</u> नामन ।।
रहें रत कृत नित्य परमात्मा । हैं <u>कृतज्ञ</u> कर्मी जीवात्मा ।।
हैं <u>मेदनीपति</u> भूपति दिव्य । नापे <u>त्रिपद</u> तीन पद विश्व ।।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति समय । हैं ईश <u>त्रिदशाध्यक्ष</u> देवन्य ।।
लिए मत्स्य अवतार सिंधु में । किए <u>महाश्रग</u> तांडव जल में ।।
कल्याणकारी पावन दिव्य । <u>कृतान्तकृत</u> करें वृद्धि पुन्य ।। (७०)

भावार्थ: *कपिल (मुनि) के समान ज्ञानी भगवान् को प्राणी **महर्षि कपिलाचार्य** (५३१) के नाम से सम्बोधित करते हैं। प्रभु सदैव कर्मों में रत रहते हैं, अतः ऐसे कार्यरती जीवात्मा को **कृतज्ञ** (५३२) नाम से सम्बोद्धित किया गया है। दिव्य प्रभु पृथ्वी के स्वामी हैं, इसलिए **मेदनीपति** (५३३) हैं। पूरे ब्रह्माण्ड को जिन्होंने (वामन रूप) तीन पग से नाप लिया, ऐसे भगवान् **त्रिपद** (५३४) हैं। (तीनों दशाओं) जाग्रत, स्वप्न अथवा सुषुप्ति समय में दिव्य **त्रिदशाध्यक्ष** (५३५) स्वामी हैं। भगवान् ने सागर में मत्स्य अवतार ले जल में तांडव किया था, इसलिए उन्हें **महाश्रग** (५३६) नाम से जाना जाता है। कल्याणकारी पावन दिव्य **कृतान्तकृत** (५३७) पुण्यों में वृद्धि करते हैं।*

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥७१॥

लिए अवतार स्वरूप वराह । तारा हिरण्डयक्ष <u>महाविराह</u> ।।
<u>गोविंद</u> ब्रजवासी गोरक्षक । <u>सुषेण</u> सेनापति सुर रक्षक ।।
दिव्य स्वर्ण भुजबंध धारी । <u>कनकांगदी</u> कृष्ण मुरारी ।।
हैं <u>गुह्य</u> ज्ञानी गुप्त विद्मन् । हैं <u>गभीर</u> परम धीर भगवन ।।
<u>गहन</u> कठिन करें हिय प्रविष्ट । <u>गुप्त</u> हरि रहते सदा अद्रष्ट ।।
है शोभित चक्र गदा शरीर । <u>चक्रगदाधर</u> बली और धीर ।। (७१)

भावार्थ: *हिरण्डयक्ष को तारने के लिए वराह रूप में अवतरित भगवान् **महाविराह** (५३८) हैं। गौ (माँ) के रक्षक ब्रजवासी प्रभु **गोविन्द** (५३९) हैं। देवताओं के रक्षक सेनापति **सुषेण** (५४०) (भगवान्) हैं। जिनके दिव्य स्वर्ण के भुजबंध है, उन कृष्ण मुरारी के स्वरुप को **कनकांगदी** (५४१) नाम से सम्बोधित किया गया है। गुप्त ग्रंथों (गोपनीय उपनिषद आदि) के ज्ञाता **गुह्य** (५४२) हैं । परम शांत स्वभाव वाले भगवान्*

गभीर *(५४३) हैं। ह्रदय में कठिनता से प्रवेश करते हैं (भगवत प्राप्ति के लिए साधना की आवश्यकता है), अतः* ***गहन*** *(५४४) हैं। सदैव अदृष्ट रहते हैं (सरलता से नहीं मिलते। उनसे मिलने के लिए गहन तप की आवश्यकता है), अतः* ***गुप्त*** *(५४५) हैं। शरीर पर चक्र और गदा से शोभायमान, शांत स्वभाव वाले बलशाली* ***चक्रगदाधर*** *(५४६) हैं।*

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः ।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥७२॥

रचयिता विधि वेधा भगवन । स्वांग करें कर्म सदैव स्व-तन ।।
अजित अजेय हरि त्रिलोक । कृष्ण नियंता भू सुर लोक ।।
सत्य शील बल धीर चरित्र । हैं दृढ़ हरि दृढ़ सत सूत्र ।।
प्रलय काल हर लेते चिंता । संकर्षण अच्युत हरि अनंता ।।
हैं शीतल समान संध्य किरण । करें वरुण यज्ञ हवि ग्रहण ।।
वारुण वशिष्ठ रूप इज्य । वृक्ष स्वर्ग स्थित वृक्ष दिव्य ।।
करें वास पद्म सम हिय सुजन । पुष्कराक्ष प्रभु योग्य पूजन ।।
सृजन पोषण संहार कृत्य । करें संभव महामना दिव्य ।।(७२)

भावार्थ: *प्रकृति के नियमों के रचयिता भगवान्* ***वेधा*** *(५४७) हैं। सदैव अपने शरीर से कार्यरत (प्रभु)* ***स्वांग*** *(५४८) हैं (कार्य करने में अपने ही शरीर का प्रयोग करते हैं, किसी पर आधारित नहीं हैं)। तीनों लोकों में जिन्हे जीता न जा सके, वह प्रभु* ***अजित*** *(५४९) हैं। पृथ्वी, सुरलोक के जो शासक हैं, वह प्रभु* ***कृष्ण*** *(५५०) हैं। जो सदैव सत्य एवं धर्म सूत्र में बंधे हैं एवं सत्य, शील, बल और धीरता जिनके चरित्र हैं, उन प्रभु को* ***दृढ़*** *(५५१) नाम से जाना जाता है। प्रलय काल में हर व्यथा को जो हर लेते हैं (ताकि मरण आसान हो जाए), ऐसे दिव्य प्रभु को* ***संकर्षण अच्युत*** *(५५२) कहा गया है। सांय कालीन (सूर्य की) किरणों के समान शीतलता धारण किये हुए यज्ञ हवि को स्वीकारने वाले प्रभु* ***वरुण*** *(५५३) हैं। गुरु वशिष्ठ के समान शिक्षक* ***वारुण*** *(५५४) हैं। स्वर्ग में स्थित (कल्पवृक्ष के समान) दिव्य वृक्ष (भगवान्)* ***वृक्ष*** *(५५५) हैं। सज्जन पुरुषों के कमल रूपी ह्रदय में वास करने वाले पूजन योग्य प्रभु* ***पुष्कराक्ष*** *(५५६) हैं। जिनके कारण (सृष्टि का) सृजन, पोषण एवं अंत कर्म होते हैं, ऐसे भगवान् को* ***महामना*** *(५५७) नाम से पुकारा गया है।*

भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥७३॥

हैं छै भग गुण श्री यश ज्ञान। ऐश्वर्य धर्म करें वेद बखान ।।
भग गुण धारी हैं <u>भगवान</u>। हरें <u>भगहा</u> भग जग अवसान ।।
रहें <u>आनंदी</u> सदैव पुष्पवत्। <u>वनमाली</u> हरि अति पुण्यवत ।।
करें सदैव कंठ में धारन। माला वैजयंती श्री भगवन ।।
करें धारण जो हल आयुध। हैं वह हरि श्री <u>हलायुध</u> ।।
लिए जन्म गर्भ अदिति वामन। कहें <u>आदित्य</u> उन्हें त्रिभुवन ।।
है ज्योति सम रवि जिन भगवन। कहें <u>ज्योतिरादित्य</u> भूजन ।।
सहें शीत उष्ण समान रूप। हैं वह <u>सहिष्णु</u> दिव्य स्वरुप ।।
गति जिनकी है अतिद्रुतम्। कहें उन्हें प्रभु <u>गतिसत्तम</u> ।।(७३)

भावार्थ: *छै भग गुण होते हैं, ऐसा वेदों में वर्णित है (छै भग गुण - ऐश्वर्य, धर्म, श्री, यश, ज्ञान और वैराग्य)। छै भग गुण धारी **भगवान्** (५५८) हैं। प्रलय काल में जो भगों का हरण करते हैं, वह प्रभु **भगहा** (५५९) हैं। सदैव प्रफुल्लित रहने वाले भगवान् **आनंदी** (५६०) हैं। कंठ में जिन भगवान् के वैजयंती माला सुशोभित है और अत्यंत पुण्यवत हैं, वह **वनमाली** (५६१) हैं। हल को जो अश्त्र रूप में धारण किये हैं, वह प्रभु **हलायुध** (५६२) हैं। (माँ) अदिति के गर्भ से जन्मे वामन प्रभु को **आदित्य** (५६३) नाम से त्रिलोक में जाना जाता है। सूर्य के समान तेज वाले प्रभु को प्राणी **ज्योतिरादित्य** (५६४) कहते हैं। शीत एवं उष्णता को जो समान रूप से सहते हैं, वह दिव्य स्वरुप **सहिष्णु** (५६५) हैं। परम गति से चलने वाले प्रभु **गतिसत्तम** (५६६) हैं।*

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥७४॥

करें जो शार्ङ्ग धनुष धारन। हैं वह <u>सुधन्वा</u> हरि पावन ।।
परसु अस्त्र हेतु वध द्विषन। हैं प्रसिद्ध <u>खंडपरसु</u> भगवन ।।
हैं <u>दारुण</u> कठोर रिपु संत। दें धन संत <u>द्रविणप्रद</u> अनंत ।।
गृह <u>दिवस्प्रका</u> धाम भगवन। <u>सर्वदृगव्यास</u> व्यास वर्पन् ।।
<u>वाचस्पतिरयोनिज</u> वाक् निपुन। लिए जन्म स्व-इच्छा इस भुवन ।। (७४))

भावार्थ: *शार्ङ्ग धनुष को धारण करने वाले पवित्र भगवान्* ***सुधन्वा*** *(५६७) हैं। परसु अस्त्र से जो शत्रुओं का वध करते हैं, वह प्रसिद्ध भगवान्* ***खंडपरसु*** *(५६८) हैं। संतों के शत्रुओं के लिए जो कठोर हैं, वह* ***दारुण*** *(५६९) हैं। संतों को धन देने वाले हरि* ***द्रविणप्रद*** *(५७०) हैं। वैकुण्ठ में वास करने वाले प्रभु* ***दिवस्प्रका*** *(५७१) हैं। (वेद) व्यास के समान* ***सर्वद्दगव्यास*** *(५७२) हैं। वाणी में निपुण* ***वाचस्पतिरयोनिज*** *(५७३) हैं। स्व-इच्छा से वह इस भूमि पर अवतरित हुए हैं।*

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥७५॥

हैं उदात्त अनुदात्त स्वरित । तीन देवव्रत सामा कथित ।।
करें स्तुति संत इन सामा । कहें ग्रन्थ हरि त्रिसामा ।।
सामग करें वेद का गायन । हैं ज्ञानी वेद साम भगवन ।।
हैं अत्यंत कृपालु नारायन । दाता मोक्ष निर्वाण भगवन ।।
भेषज हरि हरहिं सब रुग्णक । हैं भिषक भव सागर तारक ।।
करें प्रेरित हेतु निर्मोचन । त्याग भव सन्यासकृत भगवन ।।
दें शम गुरु समान शिक्षा । हैं हरि शांत अविषय निरिच्छा ।।
होते विलीन काल प्रलय जन । हैं वह निष्ठा पावन भगवन ।।
दें क्षेम प्रभु शांति शुभम । दें परायण उत्कृष्ट अयन ।। (७५)

भावार्थ: *देवव्रत नाम के तीनों सामाओं, उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित के द्वारा संतों द्वारा स्तुति किये जाते हैं, अतः* ***त्रिसामा*** *(५७४) हैं।* ***सामग*** *(५७५) वेदों का गायन करते हैं।* ***साम*** *(५७६) भगवान् वेद के ज्ञाता हैं। अत्यंत कृपालु नारायण मोक्षदाता हैं, इसलिए* ***निर्वाण*** *(५७७) हैं।* ***भेषज*** *(५७८) नाम जपने से सभी रोगों का विनाश होता है। भवसागर को पार करने वाले भगवान्* ***भिषक*** *(५७९) हैं। मोक्ष के लिए संसार को त्यागने (संन्यास योग) की प्रेरणा देने वाले भगवान्* ***सन्यासकृत*** *(५८०) हैं। गुरु समान शिक्षा देते हैं, अतः* ***शम*** *(५८१) हैं। विषय सुखों से और इच्छाओं से अनाशक्त होने के कारण* ***शांत*** *(५८२) हैं। प्रलय काल में जिनमें प्राणी समाहित हो जाते हैं, वह पवित्र भगवान्* ***निष्ठा*** *(५८३) हैं। अंधकार को दूर कर प्रकाश करने वाले एवं क्षेम देने वाले प्रभु* ***शांति*** *(५८४) हैं। श्रेष्ठ पद (अयन) देने वाले* ***परायण*** *(५८५) हैं।*

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥७६॥

हैं अंग शुभ <u>शुभांग</u> मोहन । अति सुन्दर तन कमल लोचन ।।
दाता शांति <u>शांतिद</u> इष्ट । हेतु सृजन जग जन्मे <u>स्रष्ट</u> ।।
जन्मे भूलोक <u>कुमुद</u> भगवन । करें <u>कुवलेशय</u> सिंधु में शयन ।।
हैं <u>गौहित</u> गौ माँ हितकारक । <u>गोपति</u> गौ भूजन के रक्षक ।।
रहते अदृश्य <u>गोप्ता</u> भगवन । हेतु साधना देते दर्शन ।।
देखें धर्म <u>वृषभाक्ष</u> नयन । <u>वृषप्रिय</u> करें पालन धर्म ।। (७६)

भावार्थः *जिनके अंग मोहित करने वाले हैं तथा मंगलकारी हैं, जिनका शरीर अति सुन्दर और नेत्र कमल समान हैं, वह* ***शुभांग*** *(५८६) हैं। शांति देने वाले इष्ट* ***शांतिद*** *(५८७) हैं। सृष्टि का सृजन करने वाले प्रभु* ***स्रष्ट*** *(५८८) हैं।* ***भावार्थः*** *कु अर्थात पृथ्वी पर अवतरित हुए, इसलिए प्रभु को* ***कुमुद*** *(५८९) कह कर सम्बोधित किया गया। सागर में शयन करते हैं, इस कारण* ***कुवलेशय*** *(५९०) हैं। गौ माँ के हितीय* ***गौहित*** *(५९१) हैं। गो (भूमि) और प्राणियों के रक्षक* ***गोपति*** *(५९२) हैं। जिनका रूप अदृश्य रहता है (वह केवल भक्तों को साधना द्वारा ही दृश्य होते हैं), वह भगवान्* ***गोप्ता*** *(५९३) हैं। भगवान् के नेत्र केवल धर्म (वर्ष) ही देखते हैं, अतः वह* ***वृषभाक्ष*** *(५९४) हैं। धर्म का पालन करने वाले,****वृषप्रिय*** *(५९५) हैं।*

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतांवरः ॥७७॥

है अरुचि <u>अनिवर्ती</u> अधर्म । करते दूर दुर्गुण सुजनम ।।
विषयहीन भगवत आत्मा । जपत सुख दें <u>निवृत्तात्मा</u> ।।
करें विश्व सूक्ष्म जब प्रलय । दें मोक्ष <u>संक्षेप्ता</u> भक्त अनन्य ।।
रक्षक क्षेमकृत संत संपत्ति । हो पावन तन जब शिव चेतति ।।
श्रीवत्स चिन्ह है वक्ष स्थित । हैं श्रीवत्सवक्ष पूज्य नियंत ।।
बसें लक्ष्मी हृदय हरि मध्य । <u>श्रीवास</u> भूजन आराध्य ।।
लक्ष्मीपति <u>श्रीपति</u> रघुवर । अति उत्तम हरि <u>श्रीमंतावर</u> ।।(७७)

भावार्थः *अधर्म में जिन्हे कोई रूचि नहीं है, अपने भक्तों के दुर्गुण दूर करने वाले हैं, वह* ***अनिवर्ती*** *(५९६) हैं। विषयहीन भगवान्* ***निवृत्तात्मा*** *(५९७) के जपने से सुख की प्राप्ति होती है। प्रलय काल में विश्व को सूक्ष्म बनाकर* ***संक्षेप्ता*** *(५९८) अपने अनन्य भक्तों को मुक्ति देते हैं। भक्तों की वस्तुओं के रक्षक* ***क्षेमकृत*** *(५९९) हैं।* ***शिव*** *(६००) को उद्देश्य बनाना शरीर को पवित्र कर देता है (अतः विष्णु भगवान् के स्वरूप शिव को भजने से तन पवित्र होता है)। दिव्य प्रभु के वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह स्थित है, अतः वह पूज्य भगवान्* ***श्रीवत्सवक्ष*** *(६०१) हैं। सबके आराध्य* ***श्रीवास*** *(६०२) के हृदय के मध्य में लक्ष्मी माँ का वास है। श्री (लक्ष्मी माँ) के स्वामी प्रभु* ***श्रीपति*** *(६०३) हैं। श्रेष्ठ प्रभु* ***श्रीमंतावर*** *(६०४) हैं।*

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥७८॥

देंं धन धान्य प्रभु <u>श्रीदा</u> । आराध्य श्री <u>श्रीसा</u> सदा ।।
करें निवास हिय साधु सिद्ध । <u>श्रीनिवास</u> ईश सभी ऋद्ध ।।
<u>श्रीनिधि</u> संपत्ति के दाता । <u>श्रीविभावन</u> कर्म फल दाता ।।
<u>श्रीधर</u> स्थिति लक्ष्मी वक्षा । लिए जन्म भू हेतु भक्त रक्षा ।।
करें <u>श्रीकर</u> हरि का स्मरन । हों भक्त धन धान्य सम्पन्न ।।
पाएं अति सुख जपें जब <u>श्रेय</u> । हैं <u>श्रीमान</u> श्रीपति पूज्य ।।
<u>लोकत्रयाश्रया</u> त्रिलोकपति । हों सुखी भक्त पा आश्रिति ।। (७८)

भावार्थः *धन धान्य देने वाले प्रभु* ***श्रीदा*** *(६०५) हैं। श्री (लक्ष्मी माँ) के सदैव आराध्य* ***श्रीसा*** *(६०६) हैं। संत सिद्धों के हृदय में बसने वाले सभी ऋद्धियों के स्वामी* ***श्रीनिवास*** *(६०७) हैं। धन धान्य के दाता* ***श्रीनिधि*** *(६०८) हैं।* ***श्रीविभावन*** *(६०९) कर्म फल देते हैं। लक्ष्मी जिनके वक्ष में विराजमान हैं और जो भक्तों की रक्षा के लिए पृथ्वी पर अवतरित होते हैं, उनको* ***श्रीधर*** *(६१०) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है।* ***श्रीकर*** *(६११) के स्मरण से भक्त धन धान्य प्राप्त करते हैं।* ***श्रेय*** *(६१२) भगवान् के जपने से अत्यंत सुख की प्राप्ति होती है।* ***श्रीमान*** *(६१३) श्री (लक्ष्मी) के पूज्य पति हैं। तीनों लोकों के स्वामी जिनका आश्रय भक्तों को सुख प्रदान करता है, वह* ***लोकत्रयाश्रया*** *(६१४) हैं।*

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥७९॥

समान सरोज स्वक्ष के नैन । स्वरूप स्वंग मन छीने चैन ।।
हो आनंद सुमर शतानंद । हरि नन्दि स्वरुप परमानंद ।।
ज्योतिर्गणेश्वर नक्षत्रीश । संयमित मन विजितात्मा ईश ।।
असंभव माप सकें विधेयात्मा । सत्कीर्ति सत विश्रुत आत्मा ।।
देख सकें आंवल कर स्व-नयन । नहीं करें संसय सुर भूजन ।।
है अति सूक्ष्म जिनका तन । हैं वह छिन्नसंशय भगवन ।।(७९)

भावार्थ: *कमल के समान नयन वाले भगवान्* ***स्वक्ष*** *(६१५) हैं। (प्रभु का) मनोहर रूप जो मन का चैन छीन ले, वह* ***स्वंग*** *(६१६) है। आनंद जिनके स्मरण से आनंद मिलता है, वह* ***शतानंद*** *(६१७) हैं। परमानंद के स्वरुप भगवान्* ***नन्दि*** *(६१८) हैं। नक्षत्रगणों के स्वामी होने के कारण उन्हें* ***ज्योतिर्गणेश्वर*** *(६१९) नाम से पुकारा जाता है। जिन्होंने मन (आत्मा) को जीत लिया, वह ईश्वर* ***विजितात्मा*** *(६२०) हैं। जिनका (स्वरुप) अंकन असंभव है, वह प्रभु* ***विधेयात्मा*** *(६२१) हैं। जिनकी आत्मा की सुप्रसिद्धि है, वह* ***सत्कीर्ति*** *(६२२) हैं। प्रभु हाथ पर रखे हुए आंवले को भी देख सकते हैं, इसमें किसी भी देवता और प्राणी को संशय नहीं है तथा जिनका शरीर अति सूक्ष्म है (सूक्ष्म दृष्टि धारक हैं), वह* ***छिन्नसंशय*** *(६२३) भगवान् हैं।*

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥८०॥

उदीर्ण सब भांति श्रेष्ठ । सर्वतश्चक्षु सर्वभूत प्रेष्ठ ।।
कहें वेद हरि अनीश स्वपति । शाश्वतस्थिर हैं विकार रहित ।।
किए जब प्रभु सागर तट शयन । पूर्ववत विजय लंका गमन ।।
दिए नाम उन्हें भूशय भूजन । लिए भूषण बहु अवतार भुवन ।।
हुई सुशोभित भू उपासन । हैं शासक जग भूति भगवन ।।
हैं शोकविगत हरि विशोक । शोकनाशन हरें सब शोक ।। (८०)

भावार्थ: *उत्कृष्ट प्रभु **उदीर्ण** (६२४) हैं। सर्व प्रिय भगवान् **सर्वतश्चक्षु** (६२५) हैं। जिन्हें वेद स्वपति (जिनका कोई स्वामी नहीं) कहते हैं, वह हरि **अनीश** (६२६) हैं। विकारहीन प्रभु **शाश्वतस्थिर** (६२७) हैं। लंका विजय को प्रस्थान से पूर्ववत प्रभु (श्री राम) ने सागर तट पर शयन किया, तब उन्हें प्राणियों ने **भूशय** (६२८) नाम दिया। अनेक बार पृथ्वी पर **भूषण** (६२९) ने अवतार ले अपनी उपस्थिति से पृथ्वी को सुशोभित किया। विश्व के शासक प्रभु **भूति** (६३०) हैं। शोकहीन होने के कारण भगवान् **विशोक** (६३१) कहलाये। (भक्तों के) समस्त शोकों का हरण करते हैं, इसलिए **शोकनाशन** (६३२) नाम से बुलाया जाता है।*

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥८१॥

<u>अर्चिष्मान</u> सम रवि प्रकाश । हैं <u>अर्चित</u> पूज्य थल आकाश ।।
है जैसे कुम्भ में जल निहित । है जग <u>कुम्भ</u> अंतः परिभावित ।।
विकारहीन हरि <u>विशुद्धात्मा</u> । <u>विशोधन</u> करें शुद्ध आत्मा ।।
<u>अनिरुद्ध</u> व्यूह भंजन ज्ञाता । <u>अप्रतिरथ</u> प्रतिपक्ष सराहता ।।
है भव्य कान्ति हरि समाहित । लिए जन्म <u>प्रद्युम्न</u> हेतु जग हित ।।
असीमित बल के हरि स्वामी । <u>अमितविक्रम</u> वीर अनुगामी ।। (८१)

भावार्थ: *सूर्य समान प्रकाशित प्रभु **अर्चिष्मान** (६३३) हैं। पृथ्वी और आकाश (सुरलोक) में पूज्य **अर्चित** (६३४) हैं। जिस प्रकार कुम्भ में जल रहता है, उसी प्रकार प्रभु के अन्तः में जग रहता है, इस कारण उन्हें **कुम्भ** (६३५) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। विकारहीन होने के कारण उन्हें **विशुद्धात्मा** (६३६) नाम से जाना जाता है। जो आत्मा पवित्र करते हैं, वह **विशोधन** (६३७) हैं। प्रभु व्यूह भंजन के ज्ञाता हैं, उन्हें **अनिरुद्ध** (६३८) हैं। जिन प्रभु की प्रतिपक्ष भी सराहना करता हैं, वह **अप्रतिरथ** (६३९) हैं। भव्य कांति के साथ जिन भगवान् ने जगत हित के लिए जन्म लिया, उन्हें **प्रद्युम्न** (६४०) नाम से जाना गया। शूरवीर जिनका अनुसरण करतें हैं और जो असीमित बल के स्वामी हैं, वह भगवान् **अमितविक्रम** (६४१) हैं।*

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥८२॥

किए कालनेमिनिहा प्रहार । किया कालनेमि असुर संहार ।।
बलशाली वीर जन्मे रघुकुल । शौरि हुए अवतरित शूर कुल ।।
शूरजनेश्वर हैं वीरेश्वर । त्रिलोकात्मा त्रिलोकेश्वर ।।
हैं स्वामी जो त्रिभुवन । कहें उन्हें त्रिलोकेश भूजन ।।
जिनकी ज्योति सम रवि किरन । हैं वह श्री केशव भगवन ।।
किए वध केसी अश्व निरूपन । प्रसिद्ध नाम केशिहा भुवन ।।
करें जो दूर अघ सब भूजन । हैं वह हरि स्वरुप भगवन ।। (८२)

भावार्थः कालनेमिनिहा *(६४२) प्रभु के प्रहार से कालनेमि असुर का वध हुआ। रघुकुल में जन्मे (श्री राम) बलशाली* ***वीर*** *(६४३) हैं। शूर कुल (सूर्यवंश) में अवतरित होने के कारण* ***शौरि*** *(६४४) कहलाये। शूर वीरों के स्वामी भगवान्* ***शूरजनेश्वर*** *(६४५) हैं। तीनों लोकों के ईश्वर* ***त्रिलोकात्मा*** *(६४६) हैं। जो तीनों लोकों के स्वामी हैं उन्हें प्राणी* ***त्रिलोकेश*** *(६४७) कहते हैं। (सूर्य की किरणों को केश कहते हैं) जिनकी सूर्य की किरणों के समान प्रभा है, वह प्रभु* ***केशव*** *(६४८) हैं। अश्व रूप धारी केसी का वध करने वाले* ***केशिहा*** *(६४९) नाम से जग में प्रसिद्ध हैं। जो समस्त प्राणियों के पाप दूर करते हैं, वह* ***हरि*** *(६५०) स्वरुप भगवान हैं।*

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥८३॥

करें फलित सब संत कामना । दें कामदेव हृदय सांत्वना ।।
करें पूर्ण हरि इच्छा भूजन । हितकारी कामपाल भगवन ।।
पूर्ण काम अतः हरि कामी । कान्त दिव्य देह के स्वामी ।।
कृतागम धर्म ग्रंथ सम्मत । रुप अनिर्देश्यवपु अवर्णित ।।
हैं सर्वज्ञ करें सर्वत्र गमन । समाहित विष्णु मही गगन ।।
विभूत करें नियंत्रित भुवन । नाम वीर प्रसिद्ध त्रिभुवन ।।
हैं हरि अनंत अविषयी पावन । हैं अग्नि पति धनञ्जय भगवन ।। (८३)

भावार्थः *संतों की कामनाओं को फलित कर प्रभु* ***कामदेव*** *(६५१) उन्हें शान्ति प्रदान करते हैं। प्राणियों की कामना को पूर्ण करने वाले हितकारी भगवान* ***कामपाल*** *(६५२) हैं। पूर्ण काम हैं अतः प्रभु* ***कामी*** *(६५३) हैं। दिव्य तन के स्वामी होने से* ***कान्त*** *(६५४) हैं। धर्म ग्रंथों के ईश्वर* ***कृतागम*** *(६५५) हैं। जिनके रूप को वर्णित नहीं किया जा सकता, वह भगवान्* ***अनिर्देश्यवपु*** *(६५६) हैं। सर्वत्र गमन करने वाले एवं सर्वव्यापी प्रभु* ***विष्णु*** *(६५७) धरती और गगन में समाहित हैं। पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले बलशाली* ***वीर*** *(६५८) तीनों लोकों में प्रसिद्ध हैं। विषयहीन पवित्र प्रभु* ***अनंत*** *(६५९) हैं। अग्नि के स्वामी भगवान्* ***धनञ्जय*** *(६६०) हैं।*

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः ।
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥८४॥

पूर्ण वेद ब्रह्म योग ज्ञान । ब्रह्मण्य यशस्वी बुद्धिमान ।।
हों फलित तप हरि आशिषा । ब्रह्मकृत साधक की आशा ।।
रचें धर रूप ब्रह्मा भुवन । दें ज्ञान सत परम ब्रह्म भगवन ।।
ब्रह्मविवर्धन शिक्षक ज्ञानी । ब्रह्मवित्त ग्रंथ विज्ञानी ।।
ब्राह्मण ब्रह्म भेद के ज्ञाता । ब्रह्मेश ब्रह्मी विख्याता ।।
स्वतः ज्ञान सब वेद ब्रह्मज्ञ । ब्राह्मणप्रिय को प्रिय यज्ञ ।। (८४)

भावार्थः *वेद, ब्रह्म और योग के ज्ञाता यशस्वी बुद्धिमान* ***ब्रह्मण्य*** *(६६१) हैं।* ***ब्रह्मकृत*** *(६६२) प्रभु के आशीर्वाद से तप फलित होते हैं, अतः वह साधकों की आशा हैं। विश्व की रचना प्रभु* ***ब्रह्मा*** *(६६३) रूप से करते हैं। हरि* ***ब्रह्म*** *(६६४) परम सत्य ज्ञान देते हैं। प्रभु ज्ञानी शिक्षक हैं, अतः* ***ब्रह्मविवर्धन*** *(६६५) हैं। समस्त ग्रंथों का ज्ञान जिनमें समाहित है, वह* ***ब्रह्मवित्त*** *(६६६) (हैं। ब्रह्म भेद को जानने वाले* ***ब्राह्मण*** *(६६७) हैं। ब्रह्म के ईश्वर* ***ब्रह्मी*** *(६६८) विख्यात हैं। सब वेदों का जिन्हें स्वतः ज्ञान है, वह* ***ब्रह्मज्ञ*** *(६६९) है। यज्ञ के प्रिय* ***ब्राह्मणप्रिय*** *(६७०) हैं।*

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः ।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥८५॥

लघु बामन रूप पर पद महन । लिए अवतार महाक्रम भगवन ।।
करें सृजन पोषण संहार । हरि महाकर्मा जग आधार ।।
तपे सूर्य जिनके अति तेज । दें प्रकाश शशि महातेज ।।
वासुक सर्प के हैं जो ईश । हैं हरि महोरग भुजंगीश ।।
दें फल यज्ञ अश्वमेध समान । महाक्रतु हैं सुयज्ञ महान ।।
हरि महायज्व संचालक यज्ञ । प्रभु महायज्ञ स्वयं जप यज्ञ ।।
हैं कर्ता यज्ञ हरि महाहवि । दें मोक्ष कर स्वीकार हवि ।।(८५)

भावार्थः *लघु बामन रूप परन्तु अत्यंत विशाल पग में अवतरित प्रभु* ***महाक्रम*** *(६७१) हैं। जग सृजन, पालन एवं संहार कर्ता, संसार का सहारा प्रभु* ***महाकर्मा*** *(६७२) हैं। सूर्य जिनके तेज से ओजित होता है तथा जो चन्द्रमा को जो प्रकाश देते हैं, वह भगवान्* ***महातेज*** *(६७३) हैं। सर्प वासुक के स्वामी हैं, अतः प्रभु* ***महोरग*** *(६७४) भुजंगीश हैं। अश्वमेध समान यज्ञों के फल देने वाले* ***महाक्रतु*** *(६७५) भगवान् (स्वयं) महान यज्ञ हैं। यज्ञ को संचालित करने वाले प्रभु* ***महायज्व*** *(६७६) हैं। यज्ञों में जप यज्ञ भगवान्* ***महायज्ञ*** *(६७७) हैं। यज्ञ कर्ता तथा यज्ञ हवि को स्वीकार कर मोक्ष देने वाले प्रभु* ***महाहवि*** *(६७८) हैं।*

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥८६॥

करें स्तव का सुर जन पूजन । होते प्रसन्न स्तवप्रिय भजन ।।
हैं स्तोत्र काव्य विधि पूजन । हैं स्तुति विधि हरि अर्चन ।।
हैं सर्व रूप हरि स्तोता । धरें भक्त रूप स्वयं स्तुता ।।
हैं पंचायुध युक्त भगवन । रणप्रिय हैं संहारक दुर्जन ।।
हैं हीन-विकार पूर्ण अक्षर । हों नष्ट पाप पुण्य सुमर ।।
है सत्य प्रभु की कीर्ति । पुण्यकीर्ति पुण्य अनुभूति ।।
रहित रोग अनामय भगवन । सुमंगल सुन्दर पावन तन ।। (८७)

भावार्थः *जिनकी देव और भूजन पूजा करते हैं वह* ***स्तव्य*** *(६७९) हैं।* ***स्तवप्रिय*** *(६८०) भजन से प्रसन्न होते हैं। काव्य (रूप में) पूजा विधि* ***स्तोत्र*** *(६८१) हैं। भगवान् के अर्चना की पद्धिति* ***स्तुति*** *(६८२) हैं। सर्व रूप होने के कारण प्रभु* ***स्तोता*** *(६८३) हैं। स्वयं*

*भक्त रूप धारण करने वाले **स्तुता** (६८४) हैं (भक्त रूप धारण कर संसार को भगवद भक्ति का महात्मय समझाते हैं)। पांच आयुध धारी **रणप्रिय** (६८५) प्रभु असुरों का संहार करते हैं। प्रभु में कोई अभाव नहीं है (सब गुणों से युक्त एवं विकारों से विहीन हैं), अतः **पूर्ण** (६८६) हैं। **पुण्य** (६८७) नाम के स्मरण से समस्त पापों का नाश होता है। हरि की कीर्ति सत्य है, पवित्रता की अनुभूति **पुण्यकीर्ति** (६८८) हैं। समस्त व्याधियों से रहित, सुमंगल, सुन्दर काया वाले प्रभु **अनामय** (६८९) हैं।*

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥८७॥

मनोजव मन सम द्रुति पवन । करते रक्षा तुरंत भक्तजन ।।
तीर्थकर दें धर्म उपदेशन । वीर्य वसु वसुरेता उत्पन्न ।।
कुबेर रूप धन वितरण कर्ता । हैं वसुप्रद संतों के भर्ता ।।
दें सम मोक्ष श्रेष्ठ फल दिव्य । हैं वसुप्रदा विज्ञान इज्य ।।
वासुदेव हैं वसुदेव सुत । हेतु जन्म भू दुर्जन मुक्त ।।
बसें हिय नर नारि नियंत । हैं वसु भगवन अमर अनंत ।।
प्रभु हैं निर्णायक निष्पक्ष । बसें वसुमना हिय हर पक्ष ।।
करें स्वीकार यज्ञ हवि भगवन । पाएं शुभ फल तब भूजन ।। (८७)

भावार्थः *जिनके मन की गति आंधी के समान (अति तीव्र) है, जो भक्तों की तुरंत रक्षा करते हैं, वह **मनोजव** (६९०) हैं। धर्म ज्ञान देने वाले **तीर्थकर** (६९१) हैं। वसु (पवित्र स्वरुप) के वीर्य से उत्पन्न (वीर्य धारता) **वसुरेता** (६९२) हैं। कुबेर रूप में जो धन का वितरण करते हैं और संतों का पोषण करते हैं, वह प्रभु **वसुप्रद** (६९३) हैं। समस्त विद्याओं (विज्ञान) के शिक्षक और मोक्ष के समान श्रेष्ठ फल देने वाले **वसुप्रदा** (६९४) हैं। वसुदेव (जी) के पुत्र **वासुदेव** (६९५) हैं, जो पृथ्वी को दुष्टों से मुक्त करने के लिए अवतरित हुए। सभी जनों के हृदय में बसने वाले अमर अजर अनंत भगवान् **वसु** (६९६) हैं। हर पक्ष (पक्ष एवं प्रतिपक्ष) के हृदय में बसने वाले निष्पक्ष न्यायाधीश **वसुमना** (६९७) हैं। यज्ञ में आहुति स्वीकार कर प्राणियों को शुभ फल देने वाले **हवि** (६९८) हैं।*

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥८८॥

देें सद्गति सुगति हों प्रमत । हेतु ब्रह्मज्ञान हों उद्यत ।।(२५५)
है सत्कृति कार्य जग सृजन । हेतु जन्म दें भक्त निर्मोचन ।।
हैं अद्वैत रहित जाति वर्न । है सत्ता नाम प्रभु विलक्षन ।।(२५६)
हैं विहीन प्रपंच सत असत । सद्भूति चिदानंद नियंत ।।
हैं जो लक्ष्य सन्त सत्पुरुष । हेतु सत्परायण दें सत दर्श ।।(२५७)
शूरसेन नायक सुर सेना । करें प्रकाश जग अंत रैना ।।
यदुश्रेष्ठ यदुवंश अग्रणी । सन्निवास का हिय सतगुणी ।।
माँ यमुना के हैं सम्बन्धी । सुयामुन का परिवेश सुगंधी ।। (८८)

भावार्थः *जिनसे सुगति और ज्ञान की प्राप्त होती है और ब्रह्मज्ञान को प्रेरित होते हैं , वह* ***सद्गति*** *(६९९) हैं।* ***सत्कृति*** *(७००) प्रभु का अवतरण विश्व उत्पत्ति एवं भक्तों को मोक्ष देने के लिए हुआ है। जो जातीय भेदभाव से रहित अद्वैत प्रभु हैं, उनको* ***सत्ता*** *(७०१) नाम के विलक्षण नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। सत्य, असत्य, प्रपंच आदि से रहित आनंददायक प्रभु* ***सद्भूति*** *(७०२) हैं। सन्त के लक्ष्य, सत्य-पथ-दर्शा भगवान्* ***सत्परायण*** *(७०३) हैं। देवताओं की सेना के सेनापति जो अंधकार मिटा कर जग को प्रकाशित करते हैं, वह प्रभु* ***शूरसेन*** *(७०४) हैं। यदुवंशियों में प्रथम होने के कारण* ***यदुश्रेष्ठ*** *(७०५) हैं। सद्गुणों को हृदय में धारण करने वाले भगवान्* ***सन्निवास*** *(७०६) हैं। माता यमुना के सम्बन्धी (ग्रंथों में देवकी, वसुदेव, नन्द, यशोदा, बलभद्र, सुभद्रा को यमुना माँ का सम्बन्धी बताया जाता हैं) जिनका परिवेश सुगन्धित है, उनको* ***सुयामुन*** *(७०७) नाम से जाना जाता है।*

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥८९॥

बसें भूतावास हिय सुजन । करें वासुदेव माया हरन ।।
सर्वासुनलय दें आश्रय जन । अनल का तेज समान द्युवन् ।।
संहारें सभी असुर दुष्ट । हैं दर्पहा संत रक्षक इष्ट ।।
पाएं संत मान दर्पद कृपा । हो आनंद दृप्त अनुकम्पा ।।

दूभर धारण हिय हरि रूप । <u>दुर्धर</u> हरि न सम अनुरूप ।।
<u>अपराजित</u> अजित भगवंत । रक्षक सुर मुनि ऋषि संत ।। (८९)

भावार्थः *जीवों के हृदय में बसने वाले (जीवों के अन्तः करणी) भगवान्* ***भूतावास*** *(७०८) हैं। माया का उन्मूलन करने वाले हरि* ***वासुदेव*** *(७०९) हैं। प्राणियों के आश्रय दाता* ***सर्वासुनलय*** *(७१०) हैं। सूर्य के समान जिनका तेज है, वह* ***अनल*** *(७११) हैं। दुष्टों का संहार कर जो संतों की रक्षा करते हैं, वह* ***दर्पहा*** *(७१२) हैं। जिनकी कृपा से संतों का सम्मान होता है, वह* ***दर्पद*** *(७१३) है। जिनकी अनुकम्पा से आनंद की प्राप्ति होती है, उन्हें* ***दृप्त*** *(७१४) नाम से सम्बोधित किया जाता है। ऐसे प्रभु जिनके स्वरुप को हृदय में धारण करना कठिन है (साधना की आवश्यकता है), जिनके समान कोई और नहीं है, ऐसे प्रभु को* ***दुर्धर*** *(७१५) नाम से जाना जाता है। अजित (जिन्हें जीता नहीं जा सकता), जो देवताओं, मुनियों, ऋषियों और संतो के रक्षक हैं, वह प्रभु* ***अपराजित*** *(७१६) हैं।*

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥९०॥

<u>विश्वमूर्ति</u> सर्वभूत अनंत । मूर्ति जिनकी समस्त जगत ।।
करें शयन शय्या शेष भगवन । सम पर्वत है <u>महामूर्ति</u> तन ।।
<u>दीप्तमूर्ति</u> ऊर्जित आकार । <u>अमूर्तिमान</u> हैं निराकार ।।
लिए भू हरि अनेक अवतार । <u>अनेकमूर्ति</u> करे जग पुकार ।।
अनेक रूप अतैव अव्यक्ता । <u>अव्यक्त</u> हरि सन्त अधिवक्ता ।।
अगणित हैं प्रभु के रूप । <u>शतमूर्ति</u> सुन्दर स्वरूप ।।
सहस्त्र मुख हैं अतः <u>शतानन</u> । करें कृपा बहु भांति भगवन ।। (९०)

भावार्थः *सर्वव्यापी भगवान् समस्त विश्व जिनकी मूर्ति है, वह* ***विश्वमूर्ति*** *(७१७) हैं। शेषनाग की शय्या पर शयन करने वाले प्रभु जिनका शरीर पर्वत के समान (अति विशाल) है, वह* ***महामूर्ति*** *(७१८) हैं। ओजस्वी रूप वाले प्रभु* ***दीप्तमूर्ति*** *(७१९) हैं। जिनके आकार को मापा नहीं जा सकता (निराकार) हैं, वह भगवान्* ***अमूर्तिमान*** *(७२०) हैं। पृथ्वी पर अनेक बार उन्होंने अवतार लिया, अतः उन्हें* ***अनेकमूर्ति*** *(७२१) नाम से संसार ने पुकारा। अनेक रूपधारी, संतों के अधिवक्ता (पक्षधर) प्रभु जिन को*

*व्यक्त करना कठिन है, वह **अव्यक्ता** (७२२) हैं। सुन्दर स्वरुप वाले प्रभु के अगणित रूप हैं, इसलिए उन्हें **शतमूर्ति** (७२३) कहा जाता है। जो बहुत प्रकार से कृपा करते हैं और जिनके सहस्त्र मुख हैं, वह प्रभु **शतानन** (७२४) हैं।*

एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥९१॥

अनेक रूप पर हैं एक आनन । रहित भेद भाव हरि विलक्षन ।।
अनेक रूप धरे कारण माया । हैं नैक नेक ग्रंथन तब गाया ।।
दें फल सवः हवि समान अमृत । कः ब्रह्म स्वरुप हैं अर्चित ।।
किम हैं पुरुषार्थ निरूपन । यत निर्देश से सृष्टि सृजन ।।
करें जग विस्तार तत नियंत । पदमनुत्तमम हैं श्रेष्ठ अनंत ।।
लोकबंधु ईश्वर सब लोक । लोकनाथ शासक त्रिलोक ।।
हैं माधव शिक्षक मधु वंश । भक्तवत्सल हैं भक्त अनुषंग ।। (९१)

भावार्थ: *जो भेद भाव से रहित विलक्षण प्रभु हैं, अनेक रूप (सहस्त्र मुख) होने पर भी वह एक मुखी हैं, अतः **एक** (७२५) हैं। माया के कारण भगवान् ने अनेक रूप धारण किये, इस अनेकता के कारण ग्रन्थ उन्हें **नैक** (७२६) नाम से सम्बोधित करते हैं। यज्ञ हवि को अमृत में फलित करने वाले प्रभु **सवः** (७२७) हैं। ब्रह्म स्वरूप में जिनकी स्तुति होती है, वह भगवान् **कः** (७२८) हैं। (प्रभु के) पुरुषार्थ रूप **किम** (७२९) हैं। भगवान् **यत** (७३०) के निर्देश से सृष्टि की रचना होती है। जगत का विस्तार करने वाले स्वामी **तत** (७३१) हैं। श्रेष्ठ प्रभु **पदमनुत्तमम** (७३२) हैं। सब लोकों के स्वामी **लोकबंधु** (७३३) हैं। तीनों लोकों पर शासन करने वाले प्रभु **लोकनाथ** (७३४) हैं। मधु वंस (यादव वंस) के शिक्षक **माधव** (७३५) हैं। भक्तों से जिनका गहन सम्बन्ध है (अतः भक्तों को प्रेम करते हैं), वह **भक्तवत्सल** (७३६) हैं।*

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥९२॥

हरि की काया वर्ण कंचन । कहे जग सुवर्णवर्ण भगवन ।।
हैं अंग सुवर्ण अतः हेमांग । सुन्दर पावन तन हरि वरांग ।।

भुज बंध सुशोभित है चंदन। सुगन्धित है <u>चंदनांगदी</u> तन।।
किए वध असुर <u>वीरहा</u> भगवंत। हैं <u>विषम</u> विलक्षण सत नियंत।।
हैं विषय रहित हरि <u>शून्य</u>। दें वर अमोघ <u>घृताशी</u> पुन्य।।
हैं श्रेष्ठ चिर स्थायी <u>अचल</u>। है गति सम वायु प्रभु <u>चल</u>।। (९२)

भावार्थ: *स्वर्ण के समान (उज्जवल) जिनकी काया है, ऐसे प्रभु को संसार* ***सुवर्णवर्ण*** *(७३७) कहता है। कंचन समान अंग हैं, अतः* ***हेमांग*** *(७३८) हैं। सुन्दर पवित्र शरीर वाले प्रभु* ***वरांग*** *(७३९) हैं। चन्दन से विभूषित भुज बंध एवं सुगन्धित शरीर वाले* ***चंदनांगदी*** *(७४०) हैं। असुरों का वध करने वाले अनंत* ***वीरहा*** *(७४१) हैं। सत और विलक्षण होने के कारण प्रभु को* ***विषम*** *(७४२) कह कर पुकारा गया। विषयों में अरुचि के कारण प्रभु* ***शून्य*** *(७४३) हैं। पुण्य* ***घृताशी*** *(७४४) का वर अमोघ है। सदैव स्थिर रहने वाले श्रेष्ठ* ***अचल*** *(७४५) हैं। वायु वेग सम जिनकी गति है, वह भगवान्* ***चल*** *(७४६) हैं।*

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः॥९३॥

हैं दर्प रहित <u>अमानी</u> भगवन। करें मान <u>मानद</u> सुर भूजन।।
करे जग प्रभु <u>मान्या</u> पूजन। <u>लोकस्वामी</u> पति त्रिभुवन।।
<u>त्रिलोकध्रका</u> धारें वसुधा। अतिशय ज्ञानी प्रभु <u>सुमेधा</u>।।(
यज्ञ आहुति दें जब यजमान। होते प्रकट <u>मेधजा</u> भगवान।।
अनुवासिन् जीव जंतु भुवन। करें कृतार्थ <u>धन्य</u> भगवन।।
अमोघ <u>सत्यमेधा</u> स्वस्त्ययन। करें धारण <u>धराधर</u> भुवन।। (९३)

भावार्थ: *जिन्हें अभिमान नहीं है, ऐसे प्रभु* ***अमानी*** *(७४७) हैं। सभी देवता और प्राणी जिनका सम्मान करते हैं वह* ***मानद*** *(७४८) हैं। जग से पूजित प्रभु* ***मान्या*** *(७४९) हैं। तीनों लोकों के स्वामी* ***लोकस्वामी*** *(७५०)हैं। पृथ्वी को धारण करने वाले* ***त्रिलोकध्रका*** *(७५१) है। अत्यंत ज्ञानी प्रभु* ***सुमेधा*** *(७५२) हैं। यजमान जब यज्ञ आहुति देते हैं तब प्रभु* ***मेधजा*** *(७५३) प्रकट होते हैं। भूमि में वास करने वाले जीव जंतुओं को* ***धन्य*** *(७५४) प्रभु कृतार्थ करते हैं।* ***सत्यमेधा*** *(७५५) का आशीर्वाद अमोघ है। पृथ्वी को धारण करने वाले* ***धराधर*** *(७५६) हैं।*

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः ॥९४॥

सूर्य सम हैं जो तेजोवत् । करें <u>तेजोवृष</u> कर्म पुण्यवत ।।
अति प्रभाशाली जिनका तन । हैं वह श्री <u>द्युतिधर</u> भगवन ।।
प्रभु <u>सर्वशस्त्रभृतांवर</u> । हैं शस्त्र सुशोभित शूरवर ।।
करें स्वीकार पुष्प भगवन । दें शांति <u>प्रग्रह</u> सब भूजन ।।
करते वश में संत और सुर । करते वध हरि <u>निग्रह</u> असुर ।।
हो <u>व्यग्र</u> हरि का जन्म न अंत । रूप वृषभ <u>नैकश्रन्ग</u> नियंत ।।
हैं गद भाई कृष्ण भगवन । हैं वह संत रुप अनुज महन ।।
हैं आयु में कृष्ण अग्रज । अतः कहें उन्हें जग <u>गदाग्रज</u> ।। (९४)

भावार्थ: *सूर्य समान तेज वाले, शुभ कर्म करने वाले* ***तेजोवृष*** *(७५७) हैं। जिनका शरीर अत्यंत प्रभाशाली है, उन प्रभु को* ***द्युतिधर*** *(७५८) नाम से पुकारते हैं। शस्त्र सुशोभित अत्यंत शूरवीर प्रभु* ***सर्वशस्त्रभृतांवर*** *(७५९) है। (भक्तों द्वारा दिए गए) पुष्पों को स्वीकार कर सब प्राणियों को शांति देने वाले* ***प्रग्रह*** *(७६०) हैं। प्रभु* ***निग्रह*** *((७६१) संतों और देवताओं को अपने वश में करते हैं, असुरों का वध करते हैं। प्रभु* ***व्यग्र*** *(७६२) का न जन्म होता है और न मृत्यु (अमर अजर हैं)। वृषभ रूप (चार सींग वाले रूप) में भगवान्* ***नैकश्रन्ग*** *(७६३) हैं। कृष्ण भगवान के भाई गद हैं। वह (प्रभु के) संत स्वरूप महात्मा अनुज हैं। आयु में अधिक होने के कारण कृष्ण को जग* ***गदाग्रज*** *(७६४) कहता है।*

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥९५॥

प्रसिद्ध जग हरि हैं चतुर्वर्पन् । अव्याकृत विराट तुरीयन ।।
सूत्रात्म करें ग्रन्थ विवरन । अतः हैं <u>चतुर्मूर्ति</u> भगवन ।।
हैं चार भुजा धारी नियंत । <u>चतुर्बाहु</u> सुमिरैं सब संत ।।
हैं चार व्यूह पति भगवन । छंद वेद महापुरुष और तन ।।
पाएं विजय इन्द्रिय भूजन । करें <u>चतुर्व्यूह</u> का पूजन ।।
करें ग्रन्थ वर्णन चार वर्ण । करें <u>चतुर्गति</u> वृद्धि इन वर्ण ।।

चित्त बुद्धि अवलेप और मन । रहित चतुरात्मा इन अवगुन ।।
है ग्रन्थ और वेद वर्णित । भाव चार प्रकार विद्यति ।।
अर्थ धर्म काम और मोक्षा । होते प्रगट चतुर्भाव इच्छा ।।
अथर्व यजुर साम ऋगवेद । हैं चतुर्वेदवित स्वयंभू वेद ।।
व्यापक जगत एक ही ईश्वर । हैं वही एकपात देवेश्वर ।। (९५)

भावार्थ: *भगवान् की चार मूर्तियां विश्व में प्रसिद्ध हैं, अव्याकृत, विराट, सूत्रात्मा एवं तुरीय, ऐसा ग्रन्थ वर्णन करते हैं, अतः वह हरि **चतुर्मूर्ति** (७६५) हैं। सभी संतों द्वारा सुमरित चार भुजा धारी प्रभु को **चतुर्बाहु** (७६६) कहा गया है। भगवान् चार व्यूहों के स्वामी हैं - छंद, वेद, तन और महापुरुष। **चतुर्व्यूह** (७६७) भगवान् के पूजन से प्राणियों को इन्द्रियों पर विजय प्राप्त होती है। ग्रंथों में चार वर्णों का उल्लेख किया गया है (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और कर्मी)। इन वर्णों की वृद्धि **चतुर्गति** (७६८) करते हैं (इन वर्णों का विकास करते हैं)। मन, बुद्धि, अहंकार और चित्त, **चतुरात्मा** (७६९) इन अवगुणों से रहित हैं। शास्त्रों में चार भावों का उल्लेख है - अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष, यह चारों भाव प्रभु की इच्छा से ही प्रगट होते हैं, अतः भगवान् **चतुर्भाव** (७७०) हैं। चार वेद हैं- अथर्व, यजुर, साम और ऋगवेद। प्रभु स्वयं ही वेद हैं, अतः **चतुर्वेदवित** (७७१) हैं। देवताओं के स्वामी **एकपात** (७७२) एक ही ईश्वर हैं।*

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥९६॥

हैं ज्ञानी विश्व चक्र भगवन । करें समावर्त माया हरन ।।
सर्वभूत सर्वव्यापक आत्मा । विषयहीन अनिवृतात्मा ।।
हैं अमर अजर हरि दुर्जया । भय दुरतिक्रम न करें अवज्ञा ।।
घोर तप से हों हरि दर्शन । दुर्लभ नाम विख्यात भुवन ।।
दुर्गम हरि सब दुःख हर्ता । दें दर्शन दुर्ग कठिनता ।।
बसते हिय अति दुष्कर योगी । दुरावास हैं असाध्य भोगी ।।
दुरारिहा करें वध असुर । हरि विरुद्ध सभी आडम्बर ।।(९६)

भावार्थ: *संसार चक्र के ज्ञानी भगवान् **समावर्त** (७७३) (भक्तों की) माया का हरण कर लेते हैं। सर्वभूत, सर्वव्यापक, विषयहीन आत्मा **अनिवृतात्मा** (७७४) हैं। भगवान्*

*अमर, अजर एवं अजेय है, अतः **दुर्जया** (७७५) है। जिनके भय से (देवता भी) कोई अवज्ञा का साहस नहीं कर सकता, ऐसे प्रभु को **दुरतिक्रम** (७७६) नाम से सम्बोधित किया गया है। घोर तप से (दुर्लभता से) प्रभु के दर्शन होते हैं, अतः विश्व उन्हें **दुर्लभ** नाम से पुकारता है। सब दुःखों को हरने वाले भगवान् **दुर्गम** (७७८) हैं। प्रभु का दर्शन अत्यंत कठिन है (घोर तप से ही भगवान की प्राप्ति होती है), अतः उन्हें **दुर्ग** (७७९) कह कर सम्बोद्धित किया जाता है। जो योगियों के हृदय में भी कठिनता से बसते हैं (योगियों को भी उन्हें प्राप्त करने के लिए घोर तप करना पड़ता है) तथा भोगियों के लिए असाध्य हैं, वह प्रभु **दुरावास** (७८०) हैं। आडम्बरों के विरुद्ध, एवं असुरों का संहार करने वाले भगवान् **दुरारिहा** (७८१) हैं।*

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥९७॥

सुन्दर अति भगवंत स्वरूप । हैं शुभांग कामदेव अनुरूप ।।
लोकसारन्गा सार विश्व के । सुतन्तु नियंत तंतु इस जग के ।।
हैं तन्तुवर्धना जग पालक । हैं इन्द्रकर्मा धर्म रक्षक ।।
करें भव्य कार्य महाकर्मा । धर्म कर्म करें कृतकर्मा ।।
हैं रचयिता प्रभु चतुर्वेद । समाहित कृतागम सब वेद ।। (९७)

भावार्थः *भगवान् का स्वरुप कामदेव के समान सुन्दर है, अतः वह **शुभांग** (७८२) हैं। विश्व के सार होने के कारण प्रभु को **लोकसारन्गा** (७८३) कहा गया है। इस जगत के हरि तंतु हैं (आधार हैं), अतः **सुतन्तु** (७८४) हैं। जगत के पालनहार हैं, अतः **तन्तुवर्धना** (७८५) हैं। धर्म के रक्षक हैं, अतः **इन्द्रकर्मा** (७८६) हैं। महान कार्यों के कर्ता **महाकर्मा** (७८७) हैं। धर्मरूप कर्म करते हैं, इसलिए उन्हें **कृतकर्मा** (७८८) कहा गया है। भगवान् ही चारों वेद के रचयिता हैं, अतः वेद उन्हीं में समाहित होने के कारण उन्हें **कृतागम** (७८९) नाम से जाना गया है।*

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः श्रृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥९८॥
लें जन्म प्रभु सदैव स्व-इच्छा । कारण जन्म उद्भव सत रक्षा ।।
सुन्दर सम नहीं कोई रूप । हैं सुन्द हरि शोभन स्वरुप ।।

है रत्न जड़ित नाभि नियंत।<u>रत्ननाभ</u> हैं कृपालु अनंत।।
मंजुल नैन नाम <u>सुलोचन</u>।<u>अर्क</u> सभी के संकट मोचन।।
हैं अन्नपूर्णा हरि <u>वाजसन</u>।लिए रूप मत्स्य <u>श्रृंगी</u> भगवन।।
जीतें रिपु हरि <u>जयंत</u> सदा।<u>सर्वविज्जयी</u> विजयी सर्वदा।। (९८)

भावार्थ: *सत्य की रक्षा के लिए प्रभु स्वयं की इच्छा से ही अवतरित होते हैं, इसलिए उन्हें **उद्भव** (७९०) नाम से सम्बोद्धित किया गया है। प्रभु के सुंदरता की तुलना नहीं की जा सकती, अतः वह **सुन्दर** (७९१) हैं। शोभन रूप वाले भगवान् **सुन्द** (७९२) हैं। जिनकी नाभि रत्न जड़ित है, ऐसे कृपालु भगवान् को **रत्ननाभ** (७९३) नाम से जाना गया है। सुन्दर नेत्र वाले प्रभु **सुलोचन** (७९४) हैं। सभी के संकट हरने वाले भगवान् **अर्क** (७९५) हैं। अन्नपूर्णा प्रभु **वाजसन** (७९६) हैं। मत्स्य रूप में अवतार लेने वाले भगवान् **श्रृंगी** (७९७) हैं। शत्रुओं को सदैव जीतते हैं (अर्थात शत्रुओं को जीतने के हेतु हैं), अतः **जयंत** (७९८) हैं। प्रभु की विजय सदैव होती है अतः **सर्वविज्जयी** (७९९) हैं।*

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥९९॥

हैं सम कंचन नख से शिख अंग।<u>सुवर्णबिन्दु</u> हरि अति शुभंग।।
हैं रहित राग द्वेष भगवन।करें दूर <u>अक्षोभ्य</u> असूयन।।
सुर असुर भूजन के ईश्वर।नाम <u>सर्ववागीश्वरेश्वर</u>।।
है महान सम सरोवर हृदय।दें निर्वाण <u>महाहृद</u> दिव्य।।
है कठिन समझना विस्मापन।<u>महागर्त</u> महारथी भगवन।।
नहीं है सम्बन्ध किसी काल।भूत वर्तमान भविष्य काल।।
करें नाश तम जो प्रभु भूजन।कहें उन्हें <u>महाभूत</u> भगवन।।
बसें हरि माँ श्री के हृदय।हैं <u>महानिधि</u> दिव्य पूज्य।।(९९)

भावार्थ: *नख से शिख तक सम्पूर्ण अंग अति शुभ स्वर्ण निर्मित हैं, इसलिए **सुवर्णबिन्दु** (८००) हैं। राग द्वेष से रहित तथा ईर्षा (भाव) दूर करने वाले **अक्षोभ्य** (८०१) हैं। सुर, असुर, भूजन के स्वामी **सर्ववागीश्वरेश्वर** (८०२) हैं। निर्वाण देने वाले दिव्य प्रभु का हृदय सरोवर के समान वृहद है, अतः वह **महाहृद** (८०३) हैं। महारथी*

*प्रभु **महागर्त** (८०४) की माया समझना दुस्तर है। तीनों काल (भूत वर्तमान भविष्य) से असंबंधित), प्राणियों का अंधकार दूर करने वाले प्रभु को **महाभूत** (८०५) नाम से जाना जाता है। माँ श्री (लक्ष्मी) के हृदय में बसने वाले पूज्य दिव्य भगवान् को **महानिधि** (८०६) पुकारा गया।*

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः ।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥१००॥

मन मोहक किए भू भार मुक्त । करें <u>कुमुद</u> संत अनुमोदित ।।
किए वध हिरण्डयाक्ष अघकर । हैं सम पुष्प सुन्दर <u>कुंदर</u> ।।
दिए दान कश्यप ऋषि भुवन । दें मंगल आयु <u>कुन्द</u> भगवन ।।
जब वर्षा तब हो भू शीतल । करें <u>प्रजन्य</u> संत हिय शीतल ।।
है प्रभु दिव्य नाम <u>पावन</u> । सहज मिलें <u>अनिल</u> भगवन ।।
मिली सुधा जब सिंधु मन्थन । करें <u>अमृताश</u> अमृत वितरन ।।
हैं अमर अजर सुन्दर भगवन । हरें <u>अमृतवपु</u> विपत्ति जन ।।
हैं <u>सर्वज्ञ</u> सर्ववित नारायन । <u>सर्वतोमुख</u> के सर्वत्र आनन् ।।(१००)

भावार्थ: *मन को मोहने वाले भगवान् ने संतों को प्रसन्न करने एवं पृथ्वी को भार मुक्त (असंतों से) करने के लिए **कुमुद** (८०७) रूप में जन्म लिया। (वराह अवतार में) पापी हिरण्डयाक्ष को विदीर्ण करने वाले प्रभु का **कुंदर** (८०८) स्वरूप (कुंद) पुष्प के समान सुन्दर है। कश्यप ऋषि को पृथ्वी दान देने वाले प्रभु जो मंगल और आयु देने वाले हैं वह प्रभु **कुंद** (८०९) हैं। जिस प्रकार वर्षा से भू शीतल होती है, उसी प्रकार **पर्जन्य** (८१०) संतों के हृदय को शीतलता देते हैं (शांति प्रदान करते हैं)। प्रभु दिव्य हैं, अतः **पावन** (८११) हैं। (संतों को) सहजता से मिलते हैं, अतः **अनिल** (८१२) हैं। समुन्द्र मंथन में मिले अमृत को (देवों में) वितरण करने वाले प्रभु **अमृताश** (८१३) हैं। प्राणियों की विपदाओं का हरण करने वाले प्रभु अजर, अमर एवं सुन्दर हैं, अतः वह **अमृतवपु** (८१४) हैं। प्रभु सर्ववित (सब कुछ जानने वाले) हैं, इसलिए **सर्वज्ञ** (८१५) हैं। भगवान् के मुख सब ओर (सर्वव्यापी) हैं, अतः **सर्वतोमुख** (८१६) हैं।*

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥१०१॥

मिलें <u>सुलभ</u> भक्त निष्ठावान् । हैं अभोक्त <u>सुव्रत</u> भगवान् ।।
करें कार्य <u>सिद्ध</u> स्व-क्षमता । जीतें वैरी सहज <u>शत्रुजिता</u> ।।
कांपें रिपु सुन नाम कृष्न । दें दुःख असुर <u>शत्रुतापन</u> ।।
हरते माया भक्त स्व-इच्छा । लिए जन्म <u>न्यग्रोध</u> संत रक्षा ।।
अन्नपूर्णा रूप दें जीवन । <u>उदुम्बर</u> हैं श्रेष्ठ भगवन ।।
हैं अविनासी साकार प्रत्यक्ष । <u>अश्वत्थ</u> हैं समान वृहद वृक्ष ।।
किए असुर चाणूर वध भगवन । कहे जग <u>चाणूरांधृनिषूदन</u> ।। (१०१)

भावार्थः *निष्ठावान भक्त को (प्रभु)* ***सुलभ*** *(८१७) मिलते हैं। अभोक्त हैं, इसलिए भगवान्* ***सुव्रत*** *(८१८) हैं। सर्व कार्य अपनी ही क्षमता से करते हैं (अर्थात किसी पर भी निर्भर नहीं हैं), अतः* ***सिद्ध*** *(८१९) हैं। शत्रुओं को सहजता से ही जीत लेते हैं, इसलिए* ***शत्रुजिता*** *(८२०) हैं। जिनका कृष्ण नाम सुनते ही शत्रु कांपने लगते हैं और जो असुरों को पीड़ा देने वाले है (अर्थात उनका संहार करने वाले हैं), उन प्रभु को* ***शत्रुतापन*** *(८२१) नाम से सम्बोधित किया गया है। जो संतों की रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं तथा अपनी इच्छा से भक्तों की माया को हर लेते हैं, वह भगवान्* ***न्यग्रोध*** *(८२२) हैं। श्रेष्ठ भगवान् जो अन्नपूर्णा रूप में जीवन दान (अन्न दान) देते हैं, वह प्रभु* ***उदुम्बर*** *(८२३) हैं। प्रत्यक्ष रूप में साकार एक बड़े वृक्ष के सामान अविनासी प्रभु* ***अश्वत्थ*** *(८२४) हैं। जिन्होंने चाणूर असुर का वध किया, उन्हें जग* ***चाणूरांधृनिषूदन*** *(८२५) कहता है।*

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥१०२॥

ओज समान सहस्त्र सूर्य । नाम <u>सहस्रार्चि</u> हरि दिव्य ।।
काली कराली सुलोहिता । मनोज सुधुम्र विश्वरुचिता ।।
स्फुलिंगनी हैं यह सप्त जिह्वय । हिय संत करें रमण <u>सप्तजिव्ह</u> ।।
सप्त दीप्ति और सप्त समिधा । हैं मंत्र वर्ण वाचित <u>सप्तैधा</u> ।।
सप्त अभिधा न हैं हरि वाहन । श्रुति कहे हरि <u>सप्तवाहन</u> ।।
हैं आकार-रहित जगाधार । <u>अमूर्ति</u> करें दमन प्रतिकार ।।
हैं निष्पाप <u>अनघ</u> परमेश्वर । प्रपंचहीन <u>अचिन्त्य</u> ईश्वर ।।
हों भीर असुर सुन <u>भयकृदा</u> । <u>भयनाशन</u> दूर करें आपदा ।। (१०२)

***भावार्थः** जिन दिव्य प्रभु का ओज सहस्त्र सूर्यों के समान है, वह **सहस्रार्चि** (८२६) हैं। काली, कराली, सुलोहिता, मनोज, सुधुम्र, विश्वरुचिता एवं स्फुलिंगनी, यह (शास्त्र वर्णित) सात जिह्वय हैं। इन (सात जिह्वय के स्वामी) संतों के हृदय में रमण करने वाले **सप्तजिव्ह** (८२७) हैं। मंत्र वर्ण (ग्रन्थ) के अनुसार भगवान् की सप्त दीप्ति (शक्ति, ज्ञान, दया, सौंदर्य, प्रेम, शांति और आनंद) एवं सप्त समिधा (विभिन्न देवताओं के यज्ञ हवन में प्रयोग होने वाली सप्त समिधा को भगवान् की सप्त समिधा कहा जाता है। सूर्य की समिधाः मदार की लकड़ी, चन्द्रमा की समिधाः पलाश की लकड़ी, मंगल की समिधाः खैर की लकड़ी, बुध की समिधाः चिड़चिडा की लकड़ी, बृहस्पति की समिधाः पीपल की लकड़ी, शुक्र की समिधाः गूलर की लकड़ी, शनि की समिधाः शमी की लकड़ी) हैं, अतः उन्हें **सप्तैधा** (८२८) कहकर पुकारा जाता है। भगवान् के वाहन की सात उपाधियाँ (गरुड़, विष्णु वाहन, पक्षीराज, गरुडाः, विशालकायः, सूर्यपुत्रः, अमृतः) हैं, इसलिए श्रुति उन्हें **सप्तवाहन** (८२९) कहकर उच्चारित करती है। आकार रहित (निराकार) प्रभु जो प्रतिकार (की भावना) का दमन करते हैं, उन्हें **अमूर्ति** (८३०) नाम से बुलाया गया है। निष्पाप प्रभु **अनघ** (८३१) हैं। प्रपंचहीन होने के कारण उन्हें **अचिन्त्य** (८३२) नाम दिया गया है। **भयकृदा** (८३३) नाम सुनते ही असुर भयभीत हो जाते हैं। **भयनाशन** (८३४) (भक्तों के) कष्टों को दूर करते हैं।*

अनुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः ॥१०३॥

अति सूक्ष्म <u>अणु</u> परमात्मा । ब्रह्म रुप है <u>बृहत</u> आत्मा ।।
करें दूर क्रश भौतिकता । दें स्थूल हरि असीम दिव्यता ।।
सत रज तम त्रिगुण नियंत्रक । हैं गुणभृत विश्व के शासक ।।
हैं <u>निर्गुण</u> द्वेषहीन भगवंत । <u>महान</u> सर्वगत परम नियंत ।।
है नहीं आधार <u>अधृत</u> जनन । रहें <u>सुधृत</u> सदैव प्रसन्न ।।
वेद रचयिता <u>स्वास्य</u> भगवन । <u>प्राग्वंश</u> आदि जन्म निरूपन ।।
लिए जन्म हरि स्वैच्छा भूतल । <u>वंशवर्धन</u> करें पोषित थल ।।(१०३)

***भावार्थः** परमात्मा का आकार अति सूक्ष्म है, अतः वह **अणु** (८३५) हैं। ब्रह्म स्वरुप होने के कारण ईश्वर को **बृहत** (८३६) कहा गया है। सांसारिकता को दूर करने वाले (अतः निर्वाण की और ले जाने वाले) प्रभु **क्रश** (८३७) हैं। सर्वात्मक दिव्यत्ता को देने*

*वाले भगवान् **स्थूल** (८३८) हैं। सत, रज और तम त्रिगुणों के अधिष्ठाता विश्व के शासक **गुणभृत** (८३९) हैं। द्वेषहीन होने के कारण प्रभु को **निर्गुण** (८४०) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। सर्वगत पवित्र भगवान् **महान** (८४१) हैं। जिनके जन्म का कोई आधार नहीं है (अतः स्वेक्षा से जन्म लेते हैं), वह हरि **अधृत** (८४२) हैं। भगवान् **सुधृत** (८४३) सदैव प्रसन्न रहते हैं हैं। वेद को रचने वाले प्रभु **स्वास्य** (८४४) हैं। भगवान् आदि जन्म के स्वरुप हैं (उनके जन्म का समय कोई नहीं जानता), अतः उन्हें **प्राग्वंश** (८४५) कह कर पुकारा गया। स्वेक्षा से पृथ्वी पर अवतार लेने वाले भगवान् भूतल जीवों को पोषित करते हैं, इसलिए उन्हें **वंशवर्धन** (८४६) नाम से सम्बोधित किया गया है।*

भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः ।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सु पर्णो वायुवाहनः ॥१०४॥

भू भार धरें रूप शेषनाग । जपत भारभृत जागें सुभाग ।।
गावें ग्रंथ गुण भगवान । कथित हरि हैं अति बुद्धिमान ।।
है वेद ग्रन्थ योग का ज्ञान । योगी ऋषि कपिल समान ।।
स्थिर समाधी शांत चित्त । हैं योगीश दृढ़ प्रत्येक सत्त ।।
करें पूर्ण कामना अनंता । करें सर्वकामद नाश चिंता ।।
नर नारी भटकें भव सागर । आश्रम दें विश्रांति निरंतर ।।
श्रमण करें असंत बिभीषक । हों लीन क्षाम प्रलय जीवक ।।
दें शीतलता सम वृक्ष भगवन । सुपर्ण पूर्ण करें सब मन्मन् ।।
नियंत करें प्रवाहित वायु । दें हरि वायुवाहन आयु ।। (१०४)

भावार्थ: *शेषनाग रूप में पृथ्वी का भार धारण करने वाले **भारभृत** (८४७) का नाम जपने से सौभाग्य की प्राप्ति होती है। जिन प्रभु की ग्रन्थ प्रशंसा करते हैं और जो अति बुद्धिमान हैं, उन भगवान् को **कथित** (८४८) नाम से बुलाया जाता है। ऋषि कपिल के समान वेद, ग्रन्थ, योग आदि के ज्ञाता प्रभु **योगी** (८४९) हैं। जिनका मन सदैव शांत और समाधी में स्थित रहता है और हर परस्थिति में दृढ़ रहते हैं, उन प्रभु को **योगीश** (८५०) कह कर सम्बोद्धित किया गया है। जो चिंताओं का नाश करते हैं और कामनाएं पूर्ण करते हैं, वह **सर्वकामद** (८५१) हैं। इस भवसागर में भटके हुए नर नारियों को जो शांति प्रदान करते हैं, वह **आश्रम** (८५२) हैं। **श्रमण** (८५३) दुष्टों को*

*भयभीत करते हैं। प्रलय में सब जीव **क्षाम** (८५४) में लीन हो जाते हैं। वृक्ष की छाया के समान शीतलता प्रदान करते हुए **सुपर्ण** (८५५) (संसार वृक्ष रूप परमात्मा के सुन्दर पत्ते) (भक्तों की) सब इच्छाएं पूर्ण करते हैं। वायु को प्रवाहित कर प्रभु **वायुवाहन** (८५६) (जीवों को) आयु प्रदान करते हैं।*

धनुर्धरो धनुर्वेदो   दण्डो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियन्तानियमोऽयमः ॥१०५॥

धनु सोहित <u>धनुर्धर</u> शरीर । लिए जन्म राम रूप हरि धीर ।।
दशरथ नन्दन धनुर्विज्ञानी । <u>धनुर्वेद</u> प्रभु पूजें ज्ञानी ।।
प्रभु <u>दण्ड</u> दें दंड दुर्जन । करें <u>दमयिता</u> व्यग्रता दमन ।।
हैं न्यायाधीश <u>दम</u> भगवन । दें फल पापी हरि इस वर्पन् ।।
अजय प्रभु <u>अपराजित</u> नाम । सक्षम <u>सर्वसह</u> सम्पूर्ण काम ।।
हैं हरि <u>नियंत</u> विश्व शासक । हैं वह <u>नियम</u> सूत्र संचालक ।।
अजर अमर अमिट हैं भगवंत । अ<u>यम</u> अनश्वर रहित आदि अंत ।। (१०५)

भावार्थः *राम रूप में अवतरित धैर्यवान प्रभु के शरीर पर धनुष शोभायमान है, इसलिए उन्हें **धनुर्धर** (८५७) कह कर सम्बोद्धित किया गया है। दशरथ के पुत्र (श्री राम) जिनकी ज्ञानी पूजा करते हैं, वह धनुर्विज्ञान में निपुण हैं, अतः **धनुर्वेद** (८५८) हैं। असुरों को दण्डित करने वाले भगवान् **दण्ड** (८५९) हैं। **दमयिता** (८६०) व्यग्रता का दमन करते हैं। दुष्टों को न्यायाधीश के रूप में जो दण्डित करते हैं, वह प्रभु **दम** (८६१) हैं। भगवान् को कोई पराजित नहीं कर सकता, वह अजेय हैं, अतः **अपराजित** (८६२) नाम से जाने जाते हैं। सब कार्यों में सक्षम भगवान् **सर्वसह** (८६३) हैं। भगवान् विश्व के शासक हैं, अतः **नियंत** (८६४) हैं। (प्रकृति के) नियमों के सूत्र संचालित करते हैं, अतः **नियम** (८६५) हैं। अजर, अमर, अमिट, अनश्वर प्रभु **अयम** (८६६) हैं, जिनका कोई आदि और अंत नहीं है।*

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः ।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः ॥१०६॥

हैं सतधर्म समृद्ध सत्यवान । हैं सात्विक सत प्रिय भगवान ।।
हैं सत्य सर्वोत्तम शिक्षक । सत्यधर्मपरायण धर्म पालक ।।
लक्ष्य मोक्ष जिन काल प्रलय । हरि अभिप्राय उन संत पूज्य ।।
करें पूर्ण प्रभु अभिलाषा । हरि प्रियार भक्त की आशा ।।
करें अर्चन पूजन नमस्कार । हरि अर्ह समर्पित संसार ।।
करें नर भजन अर्चन पूजन । दें प्रियकृत फल शुभ भूजन ।।
लिए जन्म हरि हेतु स्नेह सुजन । प्रीतिवर्धन हैं प्रसिद्ध भुवन ।। (१०६)

भावार्थ: *समृद्ध सत्यधर्मी भगवान्* ***सत्यवान*** *(८६७) हैं। सत्य ही जिनको प्रिय है, वह हरि* ***सात्विक*** *(८६८) हैं। सत्य के सर्वोत्तम शिक्षक प्रभु* ***सत्य*** *(८६९) हैं। धर्म का पालन करने वाले* ***सत्यधर्मपरायण*** *(८७०) हैं। अंत समय में मोक्ष को लक्ष्य बनाने वाले संतों के पूज्य प्रभु* ***अभिप्राय*** *(८७१) हैं। भक्तों की आशा* ***प्रियार*** *(८७२) भगवान् उनकी इच्छाओं को पूर्ण करते हैं। भगवान्* ***अर्ह*** *(८७३) को संसार समर्पित है अतः उनका पूजन, भजन, अर्चन करें। जिनकी स्तुति, भजन एवं जप करने से प्राणियों को शुभ फल की प्राप्ति होती है, वह प्रभु* ***प्रियकृत*** *(८७४) हैं। संतों से प्रेम के कारण प्रभु अवतरित होते हैं इस कारण विश्व उन्हें* ***प्रीतिवर्धन*** *(८७५) कह कर पुकारता है।*

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥१०७॥

हरि हिय है समान आकाश । विहायसगति संत की आस ।।
हैं नारायण ज्ञान स्वरूप । हैं हरि ज्योति रवि अनुरूप ।।
सुरुचि हैं सुभग रूचि प्रज्ञ । हुतभुक भोगें आहुति यज्ञ ।।
सब नर सुर प्रिय विभु भगवन । रवि करें रस सम सूर्य ग्रहन ।।
सर्वत्र शोभित हरि विरोचन । देते सूर्य श्री दिव्य जनन ।।
दें हरि सवित जन्म भूजन । नैन सम सूर्य रविलोचन ।। (१०७)

भावार्थ: *सत्पुरुषों की आशा भगवान्* ***विहायसगति*** *(८७६) का हृदय अत्यंत विशाल है। (अर्थात वह संतों के अवगुण नहीं देखते)। सूर्य के समान परम ज्ञानी ज्योतिस्वरूप प्रभु* ***ज्योति*** *(८७७) हैं। सुन्दर रूचि (दीप्ति) वाले अति बुद्धिमान हरि* ***सुरुचि*** *(८७८) हैं। यज्ञ की आहुति स्वीकार करने वाले भगवान्* ***हुतभुक*** *(८७९) हैं। (यज्ञ आहुति*

*स्वीकार कर मनोवांछित फल देते हैं)। देवताओं के प्रिय सर्वव्यापी प्रभु **विभु** (८८०) हैं। आदित्य के समान रस ग्रहण करने वाले प्रभु को **रवि** (८८१) कह कर बुलाया गया है। सर्वत्र शोभायमान भगवान् **विरोचन** (८८२) हैं। शोभित श्री (लक्ष्मी/ धन धान्य) को जन्म देने वाले **सूर्य** (८८३) हैं। भू जीवों को उत्पन्न करने वाले प्रभु **सवित** (८८४) हैं। सूर्य के समान नेत्र वाले भगवान् **रविलोचन** (८८५) हैं।*

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः ।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥१०८॥

नित्य सर्वगत <u>अनन्त</u> प्रिय । करें <u>हुतभुग</u> भोग यज्ञ हव्य ।।
करें <u>भोक्ता</u> त्रिलोक पालन । करें <u>सुखद</u> शोक मुक्त जन ।।
हेतु रक्षा संत जन्मे कई बार । <u>नैकज</u> करें दुष्टों पर वार ।।
हैं आदि रूप <u>अग्रज</u> भगवान । हैं शांत <u>अनिर्विन्द्य</u> विचक्षन ।।
क्षमाशील <u>सदामश्री</u> इष्ट । आश्रित जग हरि <u>लोकधिष्ठ</u> ।।
करें विचित्र कर्म <u>अद्भुत</u> । होते आश्चर्य चकित प्रमत ।। (१०८)

भावार्थ: *प्रिय, पावन तथा सर्वव्यापी **अनंत** (८८६) हैं। यज्ञ हवि को भोगने (स्वीकार करने) वाले **हुतभुग** (८८७) हैं। तीनों लोकों का पालन करने वाले **भोक्ता** (८८८) नाम से जाने जाते हैं। संतों को शोक मुक्त करने वाले **सुखद** (८८९) हैं। संतों की रक्षा के लिए बार बार पृथ्वी पर जन्म लेने वाले हरि **नैकज** (८९०) हैं। भगवान् आदि रूप हैं, इसलिए **अग्रज** (८९१) हैं। शांत रहते हैं, इसलिए बुद्धिमान **अनिर्विन्द्य** (८९२) नाम से जाने जाते हैं। क्षमाशील प्रभु **सदामश्री** (८९३) हैं। विश्व जिन पर आधारित (आश्रयी)है, वह प्रभु **लोकधिष्ठ** (८९४) हैं। प्रभु की कार्य करने की प्रणाली विचित्र है (भगवान् के स्वरुप, शक्ति, व्यापार और कार्य अद्भुत हैं), अतः वह **अद्भुत** (८९५) हैं। बुध्दिमान भी आश्चर्य चकित होते हैं।*

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः ।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥१०९॥

है काल विकल्प <u>सनात</u> अनंत । अनंत काल स्वरूप भगवत ।।
है वय अधिक श्री नाभिजन्म । हैं अनादि हरि <u>सनातनतम</u> ।।

हैं सम बड़वानल <u>कपिल</u> ईश । हैं <u>कपि</u> श्रेष्ठ समान तपीश ।।
हो लीन जग हरि प्रलय काल । <u>अप्ययः</u> करें नाश त्रिकाल ।।
हैं हरि सुख मंगलदाता । <u>स्वस्तिद</u> प्रभु आनंददाता ।।
जब जपें अनंत पाएं आनंद । हैं <u>स्वस्तिकृत</u> अवतार सुनंद ।।
हो अति आनन्द जिनके जपन । हैं वह श्री <u>स्वस्ति</u> भगवन ।।
हैं रक्षक संत मंगल दायक । <u>स्वस्तिभुक</u> हैं अमृत दायक ।।
करे स्मरण नाम हो कल्यान । हैं वह <u>स्वस्तिदक्षिण</u> भगवान् ।। (१०९)

भावार्थ: *काल प्रभु का ही विकल्प है, भगवान् का स्वरुप अनंत काल तक है।, इसलिए वह **सनात** (८९६) (चिरकाल वाची निपात) हैं। जिनका न कोई आदि है न अंत, और ब्रह्मा से भी अधिक आयु के हैं, वह हरि **सनातनतम** (८९७) (अत्यंत प्राचीन) हैं। बड़वानल का कपिल वर्ण होता है) बड़वानल रूप होने के कारण प्रभु को **कपिल** (८९८) कहा गया है। सूर्य (तपीश) के समान श्रेष्ठ है, अतः **कपि** (८९९) हैं। (श्रुति में वराह को कपि कहा गया है क्योंकि भगवान् ने वराह रूप में अवतार लिया था, इसलिए वह कपि कहलाये)। प्रलय काल में त्रिलोक नष्ट होकर प्रभु में समा जाता है, अतः भगवान् **अप्ययः** (९००) हैं। सुख, मंगल और आनंद प्रदान करने वाले प्रभु **स्वस्तिद** (९०१) हैं। जिनके भजने से आनंद की अनुभूति होती है, ऐसे सुहाने (सुनन्द) अवतार को **स्वस्तिकृत** (९०२) नाम से पुकारा गया है। प्रभु **स्वस्ति** (९०३) के जपने से अति आनंद मिलता है। अमृत वितरित करने वाले, संतो की रक्षा कर उन्हें मंगल प्रदान करने वाले प्रभु को **स्वस्तिभुक** (९०४) पुकारा जाता है। जिनके नाम के स्मरण से कल्याण होता है, उन प्रभु को **स्वस्तिदक्षिण** (९०५) नाम से जग जानता है।*

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥११०॥

हैं कर्म रोग कोप त्रिरौद्र । रहित त्रिरौद्र हैं <u>अरौद्र</u> ।।
किए धारण भू शेष अवतार । हैं हरि <u>कुंडली</u> भू आधार ।।
है कर सुदर्शन हेतु जन रक्षा । करें <u>चक्री</u> वध असुर स्व-इच्छा ।।
हैं शूरवीर विलक्षण भगवंत । करें वध <u>विक्रमी</u> रिपु तुरंत ।।
<u>ऊर्जितशासन</u> विधि प्रमत । कर अनुसरण हों सुखी संत ।।
असंभव कर सकें गुण वर्णन । हैं <u>शब्दातिग</u> शुभ भगवन ।।

गाएं चरित्र वेद और ग्रंथा।हैं <u>शब्दसह</u> प्रभु धर्म संस्था।।
हरि शीतल समान चन्द्रमा। बसें <u>शिशिर</u> सन्त आत्मा।।
करें नाश तम करें प्रकाश। <u>शर्वरीकर</u> सम रवि आकाश।।(११०)

भावार्थः *कर्म, रोग और कोप, ये तीन रौद्र हैं, इन रौद्रों से रहित* ***अरौद्र*** *(१०६) हैं। शेष रूप अवतार में पृथ्वी धारण करने के कारण प्रभु मही के आधार बने, अतः उन्हें* ***कुंडली*** *(१०७) नाम से पुकारा गया। लोक रक्षा के लिए सुदर्शन चक्र धारी भगवान् अपनी इच्छा से दुष्टों का वध करते हैं, वह* ***चक्री*** *(१०८) नाम से जाने गए। अति विलक्षण शूरवीर प्रभु जो शत्रुओं का वध अल्प समय में कर देते हैं,* ***विक्रमी*** *(१०९) नाम से जाने जाते हैं। (प्रकृति के) नियमों के ज्ञानी हैं, जिनका अनुसरण कर साधु सुख को प्राप्त होते हैं, उन्हें भगवान्* ***ऊर्जितशासन*** *(११०) के नाम से पुकारा जाता है। प्रभु के गुणों का वर्णन करना असंभव हैं, ऐसे शुभ भगवान्* ***शब्दातिग*** *(१११) हैं। समस्त वेद और ग्रन्थ जिनका चित्रण करते हैं, धर्म का पाठ पढ़ाने वाले प्रभु को* ***शब्दसह*** *(११२) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। चंद्र के समान शीतलता देने वाले* ***शिशिर*** *(११३) प्रभु संतों की आत्मा में बसते हैं। आकाश स्थित सूर्य के समान अंधकार दूर कर प्रकाश करने वाले भगवान्* ***शर्वरीकर*** *(११४) हैं।*

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥१११॥

कोप रहित हितकर भगवंत। <u>अक्रूर</u> विषय रहित नियंत।।
पावन कर्म तन मन वानी। <u>पेशल</u> सुमर तरें सब ज्ञानी।।
हैं <u>दक्ष</u> हरि सर्व कर्म निपुण। <u>दक्षिण</u> करें नियंत्रित सब गुण।।
हैं क्षमाशील भगवन हितकर। करें धारण भू <u>क्षमिनामवर</u>।।
ज्ञानी वेद परम पावन भगवन। <u>विद्वित्तं</u> बसते हृदय सुजन।।
हैं निडर भगवान <u>वीतभय</u>।सुमर नाम हरि हो नाश भय।।
है पावन परम प्रभु चरित्र। <u>पुण्यश्रवणकीर्तन</u> संत मित्र।। (१११)

भावार्थः *क्रोध एवं विषयों (अवगुणों) से रहित हित करने वाले प्रभु* ***अक्रूर*** *(११५) हैं। जो तन, मन वाणी और कर्म से पवित्र हैं एवं जिनका नाम स्मरण से ज्ञानी (भवसागर) तर जाते हैं, उनको* ***पेशल*** *(११६) नाम से जाना जाता है। सर्व कर्म निपुण प्रभु* ***दक्ष***

*(११७) हैं। (जीवों के) सब गुण का कारण भगवान् **दक्षिण** (११८) हैं। मही को धारण करने वाले हितकर एवं क्षमाशील **क्षमिनामवर** (११९) हैं। संतों के हृदय में वास करने वाले वेदों के ज्ञाता परम पवित्र प्रभु **विद्वित्तं** (१२०) हैं। निडर भगवान् जो स्मरण करने वालों के लिए भयनाशना (भय को नाश करने वाले) हैं, वह हरि **वीतभय** (१२१) हैं। संतों के मित्र, परम पवित्र चरित्र वाले प्रभु **पुण्यश्रवणकीर्तन** (१२२) हैं।*

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥११२॥

तारें भवसागर सम नाविक । <u>उत्तारण</u> अलंकृत सम राविक ।।
करें अंत <u>दुष्कृतिहा</u> दैत्य । <u>पुण्य</u> सुमर हो हृदय नित्य ।।
करें नाश अनर्थ सूचक स्वप्न । <u>दुःस्वप्ननाशन</u> हैं सम सुमन ।।
दें मुक्ति हरि करें पाप हरन । हैं <u>वीरहा</u> भव सागर तारन ।।
युक्त सगुण <u>रक्षण</u> संत रक्षक । हैं <u>संत</u> प्रभु भूजन पालक ।।
<u>जीवन</u> प्राण रूप जगदीश । <u>पर्यवस्थित</u> सर्ववित ईश ।। (११२)

भावार्थः *नाविक समान (भव) सागर पार कराने वाले सूर्य की किरणों की तरह अलंकृत भगवान् **उत्तारण** (१२३) हैं। दुष्टों का वध करने वाले प्रभु **दुष्कृतिहा** (१२४) नाम से जाने जाते हैं। जिनके स्मरण से हृदय पवित्र हो जाता है, वह भगवान् **पुण्य** (१२५) हैं। अनर्थ सूचक स्वप्नों को जो नष्ट कर देते हैं (अतः दुःस्वप्नों का प्रभाव नष्ट कर देते हैं), वह पुष्प समान **दुःस्वप्ननाशन** (१२६) हैं। भवसागर को खेवने वाले (पार लगाने वाले) एवं पाप हरने वाले मुक्ति दाता प्रभु को **वीरहा** (१२७) नाम से पुकारा जाता है। सत्य गुण समाहित संतों की रक्षा करने वाले भगवान् **रक्षण** (१२८) हैं। प्राणियों के पालक हरि **संत** (१२९) हैं। प्रभु प्राण रूप हैं (प्राणियों को जीवन देते हैं), अतः **जीवन** (१३०) हैं। सर्वव्यापी हैं, इसलिए **पर्यवस्थित** (१३१) हैं।*

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥११३॥

लिए जन्म धर अनेक रूप भुवन । <u>अनन्तरूप</u> हरि भक्त तारन ।।
हैं पराशक्ति दिव्य नियंत । <u>अनंतश्री</u> के भण्डार अनंत ।।

हैं जितमन्यु अक्रोध भगवन । दें अभय दान भयापह जन ।।
देते फल जन कर्मानुसार । चतुरश्र सम पञ्च न्यायकार ।।
है अपरम्पार चरित्र भगवन । रहें लीन गभीरात्मा चिंतन ।।
विदिश दिशाओं के स्वामी । हैं देव व्यादिश अनुगामी ।।
न्याय करते कर्म अनुकूल । हैं दिश वेद ग्रंथ के मूल ।। (११३)

भावार्थः *भक्तों को (भव सागर) तारने के लिए अनेक रूप धारण कर पृथ्वी पर अवतार लिया, इस कारण प्रभु को* ***अनन्तरूप*** *(९३२) कहा गया। अपरिमित शक्ति वाले दिव्य प्रभु जिनका भण्डार अनंत (कभी न समाप्त होने वाला है) है, वह* ***अनंतश्री*** *(९३३) हैं। क्रोध (मन्यु) से रहित हैं (क्रोध को जीत लिया है), इस कारण उन्हें* ***जितमन्यु*** *(९३४) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। जीवों को अभय दान देने वाले भगवान्* ***भयापह*** *(९३५) हैं। पंचों के समान न्यायाधीश प्राणियों को उनके उनके कर्मानुसार फल देते हैं, अतः* ***चतुरश्र*** *(९३६) हैं। हरि चरित्र अपरम्पार है और वह चिंतन (साधना) में लीन रहते हैं, अतः* ***गभीरात्मा*** *(९३७) हैं। (सर्व) दिशाओं के स्वामी* ***विदिश*** *(९३८) हैं। देव जिनका अनुसरण करते हैं, वह प्रभु* ***व्यादिश*** *(९३९) हैं। वेद ग्रंथों के मूल* ***दिश*** *(९४०) भगवान् कर्मों के अनुसार न्याय करते हैं।*

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥११४॥

असंभव जान सकें आदि अनंत । हैं प्रसिद्ध भू अनादि भगवन ।।
जग आधार भूर्भवः ईश्वर । लक्ष्मी धन धान्य महीश्वर ।।
सुमरन से हो हिय शुभ कम्पन । हरि सुवीर हैं विश्वनंदन ।।
ईश भुजबंध करें कल्यान । रुचिरांगद पावन भगवान् ।।
करें उद्गम जीव हरि जनन । हैं जनजन्मादि हेतु जन्म जन ।।
हैं वरण्डक वज्र से युक्त । भीम करें रिपु जीवन मुक्त ।।
दे हरि नाम भय दुष्कर्मा । भीमपराक्रम हरि सुकर्मा ।। (११४)

भावार्थः *प्रभु का आदि और अनंत का जानना असंभव है, अतः वह भगवान्* ***अनादि*** *(९४१) नाम से पृथ्वी पर प्रसिद्ध हैं। समस्त जगत (जीवों) के आधार (भू) भगवान्* ***भूर्भवः*** *(९४२) हैं। पृथ्वी एवं धन धान्य के स्वामी होने के कारण, उन्हें* ***लक्ष्मी*** *(९४३)*

*नाम से जाना जाता है। जिनके स्मरण से हृदय में शुभ कम्पन होती है, ऐसे विश्व के स्वामी **सुवीर** (९४४) नाम से विख्यात हैं। भगवान् के भुजबंध अति कल्याणकारी हैं, अतः पवित्र भगवान् **रुचिरांगद** (९४५) हैं। जीवों में जीव (प्राण) उद्गम (स्रोत) करने वाले प्रभु **जनन** (९४६) हैं। जीवों के जन्म का कारण भगवान् **जनजन्मादि** (९४७) हैं। शत्रुओं का जीवन मुक्त करने वाले भय रूप वज्र से सुशोभित हरि **भीम** (९४८) हैं। दुष्कर्मियों को भयभीत और सुकर्म करने वाले प्रभु **भीमपराक्रम** (९४९) हैं।*

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥**११५**॥

हैं पंचभूत भूपति भगवन । <u>आधारनिलय</u> आधार भुवन ।।
करें काल प्रलय धयन जन । दें प्रभु <u>अधात</u> निर्मोचन ।।
हैं पुष्प पुंज समान अनन्त । करें <u>पुष्पहास</u> नमन सब संत ।।
है प्रकर्ष दिव्य भगवद्स्वरूप । <u>प्रजागर</u> प्रबुद्ध प्रारूप ।।
हैं हरि <u>ऊध्र्वग</u> स्वशासक । हैं सत पालक <u>सत्पथाचारक</u> ।।
समर्थ दें जीवन बाद मरन । दिए <u>प्राणद</u> परीक्षित जीवन ।।
ओंकार नाम <u>प्रणव</u> आत्मा । करें पुण्यकर्म <u>पण</u> परमात्मा ।। (११५)

भावार्थः *पृथ्वी और पंच भूतों के स्वामी जो संसार का आधार हैं, वह भगवान् **आधारनिलय** (९५०) हैं। प्रलय में जीवों का धयन (पान) कर उन्हें मोक्ष देने वाले प्रभु **अधात** (९५१) हैं। खिले हुए पुष्प के समान सौजन्यता प्रदान करने वाले भगवान् **पुष्पहास** (९५२) हैं जिन्हें सभी संत नमन करते हैं। बुद्धिमान नियमित प्रभु का स्वरुप अत्यंत आकर्षक है, अतः वह **प्रजागर** (९५३) हैं। स्वशासक (जिनका कोई शासक नहीं) भगवान् **ऊध्र्वग** (९५४) हैं। सत्य का पालन करने वाले (सत्य पथ पर चलने वाले) हरि **सत्पथाचारक** (९५५) हैं। मृतक जीवों को जीवन देने में समर्थ, जिन्होंने परीक्षित को जीवन दान दिया (भगवान कृष्ण ने माँ उत्तरा के गर्भ में अश्वथामा के वज्र से रक्षा की), ऐसे प्रभु को **प्राणद** (९५६) कहकर सम्बोद्धित किया गया है। प्रभु के वाचक ओंकार का नाम **प्रणव** (९५७) है। पुन्यकर्मी प्रभु **पण** (९५८) हैं।*

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ।
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥116॥

निर्मल ज्ञानी परमार्थी । प्रमाण सुवित हैं वेदार्थी ।।
आश्रयदाता परम पुरुष । हैं प्राणनिलय अन्तः अरुष ।।
अन्नपूर्णा पोषण कर्ता । प्राणभृत निर्वाहन कर्ता ।।
है समीर जीवन आधार । दें प्राणजीवन उपहार ।।
हैं हरि सत्यरूप ब्रह्म शिक्षक । तत्व हैं रूप सत परमार्थक ।।
जल नभ थल अग्नि वात तत्व । हैं तत्ववित्त ज्ञाता पंच तत्व ।।
एक रूप प्रभु एक आत्मा । एकात्मा पूज्य परमात्मा ।।
हैं नियंत्रक जन्म और अंत । जन्ममृत्युजरातिग नियंत ।। (११६)

भावार्थ: *पवित्र, ज्ञानी, परमार्थी, वेदों के ज्ञाता एवं सुबुद्धि भगवान् को* ***प्रमाण*** *(९५९) कह कर सम्बोद्धित किया गया है। श्रेष्ठ पुरुषों के आश्रयदाता प्रभु जिनका अन्तः करण अति स्पष्ट है, वह प्रभु* ***प्राणनिलय*** *(९६०) हैं। जीविका चलाने वाले अन्नपूर्णा हैं, जोजीवों को जीविका देते हैं (निर्वाहन करने वाले) उन्हें* ***प्राणभृत*** *(९६१) कहा गया है। वायु जीवन का आधार है, इसको (जीवों के लिए) उपहार स्वरुप देने वाले प्रभु* ***प्राणजीवन*** *(९६२) हैं। ब्रह्म की शिक्षा देने वाले* ***तत्व*** *(९६३) भगवान् सत्य और परमार्थ के स्वरुप हैं। जल, नभ, थल, अग्नि एवं वायु, ये पंच तत्व हैं, इनके ज्ञाता प्रभु* ***तत्ववित्त*** *(९६४) हैं। परम पूज्य प्रभु का एक ही रूप और एक ही आत्मा है, अतः वह* ***एकात्मा*** *(९६५) हैं। जन्म और मृत्यु को नियंत्रित करने वाले भगवान् को* ***जन्ममृत्युजरातिग*** *(९६६) नाम से पुकारा गया है।*

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥११७॥

भू भुव स्व चतुर्वेद के मूल । हरें भूर्भुवःस्वस्तरु शूल ।।
निर्मोचक भव सागर तारक । तार हरि हैं शान्ति दायक ।।
दें सविता जन्म भू आत्मा । प्रपितामह पूर्वज ब्रह्मा ।।
हैं यज्ञ समर्पित हवि यज्ञ । हैं यज्ञपति यज्ञ पालक प्रज्ञ ।।
दें फल शुभ यज्ञ यज्वा शुभांग । हैं अंग यज्ञ हवि आदि यज्ञांग ।।
दें वरदान हों पूर्ण मन्मन् । करें कल्याण हरि यज्ञवाहन ।।(११७)

***भावार्थः** चारों वेदों के सार, भू, भुव एवं स्व (ये तीन शब्द), और दुःखों को दूर करने वाले **भूर्भुवःस्वस्तरु** (९६७) हैं। भव सागर पार कर मोक्ष एवं शान्ति देने वाले भगवान् **तार** (९६८) हैं। भू जीवों को उत्पन्न करने वाले **सविता** (९६९) हैं। ब्रहदेव के (भी) पूर्वज **प्रपितामह** (९७०) हैं। (उनकी आयु कोई नहीं जानता, अति पुरातन हैं)। **यज्ञ** (९७१) (अग्नि को) यज्ञ को समर्पित हवि हैं। बुद्धिमान यज्ञ पालक प्रभु **यज्ञपति** (९७२) हैं। यज्ञ का शुभ फल देने वाले सुन्दर अंग वाले **यज्वा** (९७३) हैं। यज्ञ के अंग हवि आदि **यज्ञांग** (९७४) हैं। **यज्ञवाहन** (९७५) प्रभु कल्याण करते हैं और वरदान देकर कामनाओं को पूर्ण करते हैं।*

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥११८॥

हैं यज्ञ रक्षक हरि <u>यज्ञभृत</u> । स्वीकारें हवि यज्ञ <u>यज्ञकृत</u> ।।
होते समाप्त समस्त यज्ञ जिन । हैं <u>यज्ञी</u> वह पुण्य भगवन ।।
लें यज्ञ हव्य <u>यज्ञभुक</u> आहुति । <u>यज्ञसाधन</u> हैं पथ हरि प्राप्ति ।।
यज्ञ अंतहरि शुभ फल दाता । हरि <u>यज्ञान्तकृत</u> मुक्ति दाता ।।
<u>यज्ञगुह्य</u> गुप्त ज्ञान के ज्ञाता । <u>अन्न</u> प्रभु हैं जीवन दाता ।।
भोगें अन्न <u>अन्नाद</u> हरि दिव्य । देते भूजन फल कर्म पुण्य ।। (११८)

*भावार्थः यज्ञ की रक्षा करते हैं, अतः **यज्ञभृत** (९७६) नाम से जाने जाते हैं। यज्ञ अग्नि आहुति को अंगीकार करने वाले भगवान् **यज्ञकृत** (९७७) हैं। जिनमें समस्त यज्ञ समाप्त हो जाते हैं, वह पुण्य **यज्ञी** (७९८) भगवन हैं। यज्ञ आहुति स्वीकार करने वाले प्रभु को **यज्ञभुक** (९७९) नाम से भी जाना जाता है। प्रभु की प्राप्ति के पथ (यज्ञ) को **यज्ञसाधन** (९८०) नाम से सम्बोद्धित किया जाता है। यज्ञ के समापन पर जो शुभ फल देकर मुक्ति प्रदान करते हैं, वह प्रभु **यज्ञान्तकृत** (९८१) हैं। गुप्त ज्ञान (ब्रह्म ज्ञान) के गुरु **यज्ञगुह्य** (९८२) हैं। जीवों के आधार भगवान् को **अन्न** (९८३) नाम से जग ने पुकारा है। अन्न का भोग करने वाले, प्राणियों को पुण्य कर्मों के फल देने वाले, दिव्य प्रभु **अन्नाद** (९८४) हैं।*

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥११९॥

वेद ज्ञानी <u>आत्मयोनि</u> अव्यय । योनि स्वरुप न कोई अन्य ।।
लेते जन्म <u>स्वयंजात</u> स्व- मन्मन् । करें लीन प्रलय <u>वैखान</u> जन ।।
शांतिदूत ईश त्रिलोक । <u>सामगायन</u> हरि वेद गायक ।।
सुत देवकी <u>देवकीनंदन</u> । रचें विश्व <u>स्त्रष्टा</u> भगवन ।।
भूपति <u>क्षितीश</u> राम भगवन । करें नाश अघ <u>पापनाशन</u> ।। (११९)

भावार्थः *जिनके योनि स्वरुप कोई अन्य नहीं है, वेद ज्ञानी भगवान्* ***आत्मयोनि*** *(९८५) हैं। स्व-इच्छा से जन्म लेने वाले* ***स्वयंजात*** *(९८६) हैं। प्रलय में प्राणियों को (स्वयं में) लीन करने वाले* ***वैखान*** *(९८७) हैं। त्रिलोक स्वामी शांतिदूत प्रभु वेदों का गान करते हैं, अतः* ***सामगायन*** *(९८८) हैं। देवकी के पुत्र* ***देवकीनंदन*** *(९८९) विश्व के रचने वाले प्रभु* ***स्त्रष्टा*** *(९९०) हैं। पृथ्वी के स्वामी राम* ***क्षितीश*** *(९९१) हैं। प्रभु* ***पापनाशन*** *(९९२) पापों का अंत करते हैं।*

शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१२०॥

करें पाञ्चजन्य शंख धारन । हैं <u>शङ्खभृत</u> प्रसिद्ध भुवन ।।
<u>नन्दकी</u> नन्दक कृप धारी । मोक्ष दाता <u>चक्री</u> अघहारी ।।
हैं <u>शार्ङ्गधन्वा</u> धनुषधारी । हैं <u>गदाधर</u> कौमोदकधारी ।।
धारी रथाङ्ग चक्र सदा । <u>रथाङ्गपानी</u> हरें आपदा ।।
<u>अक्षोभ्य</u> अभयी रिपु अस्त्र । <u>सर्वप्रहरणायुध</u> शस्त्रेश ।।(१२०)

भावार्थः *पाञ्चजन्य शंख धारी भगवान् को जग* ***शङ्खभृत*** *(९९३) पुकारता है। नन्दक नाम की तलवार को धारण करने वाले भगवान्* ***नन्दकी*** *(९९४) हैं। पाप हरण कर मोक्ष देने वाले* ***चक्री*** *(९९५) हैं (सुदर्शन चक्रधारी होने के कारण भी उन्हें चक्री सम्बोधित किया जाता है)। धनुष (शार्ङ्ग) धारी होने के कारण उन्हें* ***शार्ङ्गधन्वा*** *(९९६) कहा जाता है। कौमोदकी नामक गदा को धारण करने वाले हरि* ***गदाधर*** *(९९७) हैं। रथाङ्ग चक्र को सदैव धारण करने वाले प्रभु* ***रथाङ्गपानी*** *(९९८) (भक्तों के) समस्त कष्ट दूर करते हैं। शत्रुओं के शस्त्रों से जो अभयी हैं (शत्रुओं के शस्त्रों से जिन्हें डर नहीं लगता), वह भगवान्* ***अक्षोभ्य*** *(९९९) हैं। (सब प्रकार के) शस्त्रों के स्वामी प्रभु* ***सर्वप्रहरणायुध*** *(१०००) हैं।*

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति ॥

करें पुनः हूति हेतु समापन। सर्वप्रहरणायुध नाम भगवन ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥१२१॥

इस प्रकार सहस्त्र नाम दिव्य । महात्मा केशव पूजन योग्य ।।
किए यहां पूर्ण रूप वर्णन । करें जप पाएं निर्मोचन ।। (१२१)

भावार्थ: *इस प्रकार यहां पूजन के योग्य महात्मा केशव के दिव्य एक सहस्त्र नामों का पूर्ण रूप से वर्णन किया गया, जिसका जप करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।*

श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् में उल्लेखित भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों की व्याख्या समाप्त हुई।

।। फल श्रुति ।।

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः ॥१२२॥

करे विष्णुसहस्त्रनाम जो जन । सदैव श्रवण कीर्तन पठन ।।
इह या परलोक उस भूजन । नहीं हो कभी अशुभदर्शन ।। (१२२)

भावार्थ: *जो मनुष्य विष्णु सहस्रनाम का सदा कीर्तन, श्रवण, पठन करता है, उसका इस लोक में तथा परलोक में कहीं भी कुछ अशुभ नहीं होता।*

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥१२३॥

करें यदि ब्राह्मण श्रवण पठन । विष्णु सहस्रनाम पावन ।।
हो कर वेदांत ग्रन्थ निपुण । पा सकें परब्रह्म निरूपण ।।
पा सकें विजय क्षत्रिय रन । पाएं व्यापार में वैश्य धन ।।
भांति भांति पा सुख भुवन । हो धन्य धन्य शूद्र का जीवन ।। (१२३)

भावार्थ: *पवित्र विष्णु सहस्रनाम का श्रवण, पठन करने से ब्राह्मण वेदान्त पारगामी हो जाता है और परब्रह्म स्वरुप को पा लेता है। क्षत्रिय युद्ध में विजय पाता है, वैश्य व्यापार में धन पाता है और शूद्र इस लोक में सुख पाता हुआ अपने जीवन को धन्य धन्य करता है।*

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम् ॥१२४॥

बढ़े धर्म हेतु धर्मार्थी । बढ़े धन हेतु इच्छा अर्थी ।।
पाए वीत विषय भोग भक्षक । पाए प्रजा इच्छुक रक्षक ।। (१२४)

भावार्थ: धर्म की इच्छा वाला धर्म पाता है। अर्थ की इच्छा वाला धन पाता है। भोगों की इच्छा वाला भोग पाता है। प्रजा की रक्षा करने वाला प्रजा पाता है । धर्म की इच्छा वाला धर्म पाता है। अर्थ की इच्छा वाला धन पाता है। भोगों की इच्छा वाला भोग पाता है। प्रजा की रक्षा करने वाला प्रजा पाता है।

भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥१२५॥
यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च ।
अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥१२६॥
न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः ॥१२७॥

करे जो भक्तिमान कर मनन । वासुदेव सहस्त्रनाम पठन ।।
जग ब्रह्म मुहूर्त हो पावन । कर स्नान नित्य क्रिया भूजन ।। (१२५)
पाए यश महान करे जो भूजन । हो वृद्धि महत्व उस भक्तजन ।।
हो सफल पाता संपत्ति धन । हो शुभ सब प्रकार उस जन ।। (१२६)
नहीं सताये भय उस भूजन । पाए वीर्य तेज हो अरोगन ।।
पाए कान्ति बल सुन्दर तन । हो इहलोक सर्वगुण संपन्न ।। (१२७)

भावार्थ: *जो भक्तिमान पुरुष प्रातःकाल में उठ कर स्नान आदि नित्य क्रिया कर पवित्र हो ध्यान करता हुआ वासुदेव सहस्रनाम का पाठ करता है, उस प्राणी को महान यश मिलता है, (जाति में) महत्व की वृद्धि होती है, सफल हो अचल सम्पत्ति पाता है और अति उत्तम कल्याण पाता है। उसको संसार का भय नहीं सताता । वह वीर्य और तेज को पाता है तथा आरोग्यवान, कान्तिमान, बलवान, रूपवान और सर्वगुण सम्पन्न हो जाता है।*

रोगार्तो मुच्यते रोगाद् बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः ॥१२८॥

हो मुक्त रोग वह रुग्णजन । हो मुक्त सब लौकिक बंधन ।।
हो दूर भय यदि ग्रस्त भयन । हों दूर सब कष्ट उस भूजन ।। (१२८)

भावार्थ: *रोगातुर पुरुष रोग से छूट जाता है, बन्धन में पड़ा हुआ पुरुष बन्धन से छूट जाता है, भयभीत भय से छूट जाता है और आपत्ति में पड़ा हुआ आपत्ति से छूट जाता है।*

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥१२९॥

करे जो युक्त श्रद्धा मनन । प्रतिदिन सहस्त्रनाम भगवन ।।
हो पार शीघ्र सब भव खेदन । हो बिन क्लेश बिताए जीवन ।। (१२९)

भावार्थ: *जो भक्ति सम्पन्न होकर इस भगवद सहस्रनाम की प्रतिदिन स्तुति करता है, वह शीघ्र ही समस्त सांसारिक संकटों से पार हो जाता है और क्लेश के बिना जीवन बिताता है।*

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥१३०॥

जो आश्रित परायण भगवन । हो मुक्त अघ वह बने पावन ।।
हो तब युक्त शुद्ध अंतःकरन । पा सके परब्रह्म सनातन ।। (१३०)

भावार्थ: *जो मनुष्य भगवान् के आश्रित और परायण है, वह समस्त पापों से मुक्त हो पवित्र बनाता है। वह शुद्ध अन्तःकरण वाला हो सनातन परब्रह्म को पा सकता है।*

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥१३१॥

न हो अशुभ कभी उस भूजन । जो भक्त वासुदेव श्री भगवन ।।
नहीं रहता कभी भय उस जन । वृद्धायु व्याधि जन्म मरन ।। (१३१)

भावार्थ: *वासुदेव भगवान् के भक्तों का कहीं भी अशुभ नहीं होता है। उनको जन्म, मृत्यु, जरा और व्याधि का भय नहीं रहता है।*

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥१३२॥

करे जो श्रद्धा युक्त पठन । इस विष्णु सहस्त्रनाम पावन ।।
पाए आत्मसुख क्षमा सहन । स्मृति यश वह जन इस भुवन ।। (१३२)

भावार्थः *जो पुरुष श्रद्धापूर्वक भक्ति भाव से इस पवित्र विष्णु सहस्रनाम का पाठ करता है, वह संसार में आत्मसुख, क्षमा, लक्ष्मी, धैर्य, स्मृति और कीर्ति को पाता है।*

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१३३॥

जो भक्त पुरुषोत्तम भगवन । न हो बुद्धि उनकी अपावन ।।
नहीं हों भाव कभी उत्पन्न । क्रोध लोभ और असूयन ।। (१३३)

भावार्थः *पुरुषोत्तम भगवान् के भक्तों को कभी क्रोध नहीं आता, ईर्ष्या उत्पन्न नहीं होती, लोभ नहीं होता और उनकी बुद्धि कभी अशुद्ध नहीं होती।*

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥१३४॥

संग रवि सोम नक्षत्र व्योमन् । दस दिशाएँ भू सागर गगन ।।
हुईं सब हेतु वीर्य उत्पन्न । महात्मा वासुदेव भगवन ।। (१३४)

भावार्थः *स्वर्ग, सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्र सहित आकाश, दस दिशाएँ, पृथ्वी और महासागर, यह सब महात्मा वासुदेव के वीर्य से उत्पन्न हुईं हैं।*

ससुरासुरगन्धर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥१३५॥

देव दैत्य गन्धर्व विषानन । यक्ष असुर सब स्थिर चल जीवन ।।
हो अधीन श्री कृष्ण भगवन । यथा योग्य बरतते स्व-जीवन ।। (१३५)

भावार्थ: *देवता, दैत्य, गन्धर्व, यक्ष, सर्प और राक्षस सहित यह स्थावर-जंगम रूप सम्पूर्ण जगत श्रीकृष्ण के अधीन रह कर अपन जीवन यथा योग्य बरतते हैं।*

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥१३६॥

इन्द्रियाँ बुद्धि सत्व तेज मन । शक्ति धीरज दैह्य और तन ।।
हैं यह रुप वासुदेव भगवन । है यह श्रुति और वेद कथन ।। (१३६)

भावार्थ: *इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, सत्त्व, तेज, बल, धीरज, शरीर (क्षेत्र) और आत्मा (क्षेत्रज्ञ), यह सब वासुदेव भगवान् के रूप हैं, ऐसा श्रुति और वेद कहते हैं।*

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१३७॥

है ऐसा शास्त्रों का कथन । है प्रमुख नैतिक आचरन ।।
आचार से हो धर्म उत्पन्न । हैं ईश धर्म अच्युत भगवन ।। (१३७)

भावार्थ: *सब शास्त्रों में नैतिक आचरण (आचार) प्रमुख माना जाता है। आचार से धर्म की उत्पत्ति होती है और धर्म के स्वामी भगवान अच्युत हैं।*

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः ।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥१३८॥

ऋषि पितर पञ्चमहाभूत । देव धातु स्थिर चल सब भुवन ।।
होते हेतु नारायण उत्पन्न । है यह श्रुति और वेद कथन ।। (१३८)

भावार्थः *ऋषि, पितर, देवता, पंच महाभूत, धातुएँ और स्थावर-जंगम सम्पूर्ण जगत नारायण से ही उत्पन्न होते हैं, ऐसा श्रुति और वेद कहते हैं।*

योगो ज्ञानं तथा सांख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥१३९॥

कर्म समान योग ज्ञान वेदन । सांख्य शिल्प आदि इस भुवन ।।
वेद शास्त्र विज्ञान वयुन । होते उत्पन्न हेतु नारायन ।। (१३९)

भावार्थः *योग, ज्ञान, सांख्य, विद्याएँ, शिल्प आदि कर्म, वेद, शास्त्र और विज्ञान, यह सब विष्णु से उत्पन्न होते हैं।*

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोकान्व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥१४०॥

अव्यय भोक्ता समस्त भुवन । समझो उचित विष्णु भगवन ।।
यद्यपि करें अनेक रूप धारण । हो विभक्त भूत भिन्न भिन्न ।।
पर होकर व्याप्त त्रिभुवन । भोग रहे समस्त भोग भगवन ।। (१४०)

भावार्थः *समस्त विश्व के भोक्ता और अविनाशी विष्णु भगवान् को भली भांति समझो। वह अनेक रूप धारण करते हुए, भिन्न भिन्न भूत में विभक्त होकर, त्रिलोकी में व्याप्त होकर, समस्त भोग भोग रहे हैं।*

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्य इच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥१४१॥

यदि इच्छुक परम सुख भूजन । करे अनुसरण वेद व्यास कथन ।।
युक्त श्रद्धा सदैव करे पठन । विष्णु सहस्त्रनाम पावन ।। (१४१)

भावार्थः *यदि पुरुष परम सुख पाना चाहता है तो वह वेद व्यास के कथन का अनुसरण करे। श्रद्धा युक्त सदैव पवित्र विष्णु सहस्त्रनाम का पठन करे।*

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥१४२॥

हैं जो ईश विश्व हेतु उत्पन्न । करते पालन संहार त्रिभुवन ।।
जन्म रहित विष्णु कमल लोचन । हों मुक्त कष्ट करें हरि भजन ।। (१४२)

भावार्थः *जो विश्व के ईश्वर, उत्पत्ति के कारण, पालन और संहार करने वाले जन्म रहित कमल लोचन भगवान विष्णु का भजन करते हैं, उन्हें कष्टों से मुक्ति मिलती है।*

महर्षि भगवान् श्री वेद व्यास जी द्वारा मूल संस्कृत ग्रन्थ
श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् का हिंदी काव्य सम्पूर्ण ।।

हरिः ॐ तत्सत ! हरिः ॐ तत्सत ! हरिः ॐ तत्सत !

श्री सीता सहस्त्रनाम हिंदी काव्य

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित
‘श्री अद्भुत रामायण’ से उद्धृत

श्री सीता सहस्त्रनाम

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित ‘श्री अद्भुत रामायण’ से उद्धृत

ब्रह्मणो वचनं श्रुत्वा रामः कमललोचनः ।
प्रोन्मील्य शनकैरक्षी वेपमानो महाभुजः ॥१॥
प्रणम्य शिरसा भूमौ तेजसा चापि विह्वलः ।
भीतः कृताञ्जलिपुटः प्रोवाच परमेश्वरीम् ॥२॥

सुन वचन ब्रह्मदेव खोले धीरे धीरे नयन रघुनन्दन ।
थे आश्चर्यचकित पर भय रहित तब श्री राम भगवन ।। (१)
जड़वत किए प्रणाम झुका शीश भू जानकी यशस्विन् ।
करबद्ध करने लगे स्तुति कर परमेश्वरी सम्बोधन ।।
युक्त गुण भग परम दिव्यदिव्या करें आप जग संरक्षन ।। (२)

भावार्थ: ब्रह्मदेव के वचन सुन धीरे धीर तब उन्होंने कमल समान नेत्र खोले। श्री राम आश्चर्यचकित परन्तु भय से रहित थे। जड़वत पृथ्वी पर शीश झुका उन्होंने प्रभावान जानकी को प्रणाम किया। उन्हें परमेश्वरी सम्बोधित करते हुए करबद्ध उनकी स्तुति करने लगे। हे भग (ईश्वरीय) गुणों से युक्त परम दिव्य देवी आप विश्व का संरक्षण करती हैं।

का त्वं देवि विशालाक्षि शशाङ्कावयवाङ्किते ।
न जाने त्वां महादेवि यथावद्ब्रूहि पृच्छते ॥३॥

दो परिचय चंद्र खंड से अंकित युक्त विशाल लोचन ।
महादेवी विस्मित हैं इच्छुक जानें आपका वर्णन ।। (३)

भावार्थ: अर्ध चंद्र से अंकित विशाल नेत्रों वाली अपना परिचय दो। हे महादेवी, हम आश्चर्यचकित हैं। आपका वर्णन जानने के इच्छुक हैं।

रामस्य वचनं श्रुत्वा ततः सा परमेश्वरी ।
व्याजहार रघुव्याघ्रं योगिनामभयप्रदा ॥४॥

सुन अभय दायी यतिन श्री रघुनाथ के मधुर वचन ।
बोलीं तब परमेश्वरी साधिकार स्वर सुनो भगवन ।। (४)

भावार्थः योगियों को अभय देने वाले श्री राम के वचन सुन तब परमेश्वरी साधिकार स्वर में बोलीं, 'हे भगवान् सुनो।'

मां विद्धि परमां शक्तिं महेश्वरसमाश्रयाम् ।
अनन्यामव्ययामेकां यां पश्यन्ति मुमुक्षवः ॥५॥

हूँ मैं अनन्य अविनाशी परम शक्ति संहारक जतिन ।
करूँ विनाश अधर्मी देती दर्शन केवल मुमुक्षजन ।। (५)

भावार्थः मैं संहारक महादेव की अनन्य, अविनाशी परम शक्ति हूँ। अधर्मीयों का विनाश करती हूँ। केवल मुमुक्षजन (मोक्ष प्राप्ति की इच्छा वालों) को दर्शन देती हूँ।

अहं वै सर्वभावानामात्मा सर्वान्तरा शिवा ।
शाश्वती   सर्वविज्ञाना   सर्वमूर्तिप्रवर्तिका ॥६॥

समझो मुझे सार आत्मा स्थित रूप शिवा अंतर्मन ।
मैं ही ज्ञान विज्ञान प्रमत बुद्धि कौशल प्रबोधन ।। (६)

भावार्थः मुझे अंतर्मन में स्थित कल्याणकारी आत्मिक तत्व समझो। मैं ही ज्ञान, विज्ञान, प्रमत, बुद्धि, कौशल, प्रबोधन हूँ।

अनन्तानन्तमहिमा   संसारार्णवतारिणी ।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे पदमैश्वरम् ॥७॥

हूँ मैं अमर अधिपति अनंत महिमा और मोक्षदायिन ।
देखो मेरा रूप ईश्वरीय देती तुमको दिव्य नयन ।। (७)

भावार्थ: मैं अमर अनंत महिमा वाली और मोक्ष दाता हूँ। मेरा ईश्वरीय रूप देखो। तुम्हें दिव्य नेत्र देती हूँ।

इत्युक्त्वा विररामैषा रामोऽपश्यच्च तत्पदम् ।
कोटिसूर्यप्रतीकाशं विश्वक्तेजोनिराकुलम् ॥८॥

हुईं मौन वह दिव्य निरूपण दे दिव्य नैन रघुनंदन ।
देखे रूप राम जानकी परिपूर्ण सम कोटि द्युवन् ।। (८)

भावार्थ: श्री राम को दिव्य नेत्र देकर तब वह दिव्य रूपा मौन हो गईं। तब राम ने जानकी का रूप देखा जो करोड़ों सूर्य समान परिपूर्ण था (उज्वलित हो रहा था)।

ज्वालावलीसहस्राढ्यं कालानलशतोपमम् ।
दंष्ट्राकरालं दुर्धर्षं जटामण्डलमण्डितम् ॥९॥

व्याप्त सहस्त्रों समूह ज्वाला अवरोधित दुर्ग दहन ।
मंडित जटा केश प्रकाशित शीश करता अंधक नयन ।। (९)

भावार्थ: सहस्त्रों ज्वाला के समूह समान व्याप्त, अग्नि के घेरे में घिरा हुआ, नेत्रों को चकाचौंध करने वाला, उज्ज्वल शीश केश की जटाओं से मंडित था।

त्रिशूलवरहस्तं च घोररूपं भयावहम् ।
प्रशाम्यत्सौम्यवदनमनन्तैश्वर्यसंयुतम् ॥१०॥

लिए त्रिशूल हस्त लग रहा रूप अति भयानक उद्वेजन ।
समकाल लगा सौम्य युक्त अनंत ऐश्वर्य रूप वदन ।। (१०)

भावार्थ: हाथ में त्रिशूल लिए उनका रूप अत्यंत उग्र भयानक लग रहा था। परन्तु उसी समय उनका मुख सौम्य और अनंत ऐश्वर्य से युक्त लगा।

चन्द्रावयवलक्ष्माढ्यं चन्द्रकोटिसमप्रभम् ।
किरीटिनं गदाहस्तं नूपुरैरुपशोभितम् ॥११॥

ललाट स्थित अर्ध चंद्र था प्रतिनिधि शिवा महन ।
भव्य रम्य मुख दर्शा रहा रूप श्री नारि नारायन ।।
कोटि सोम एकत्रित नहीं सम मुख माँ उज्ज्वलन ।।
था दिव्य मुकुट शीश गदा हस्त पग नूपुर आभूषण ।। (११)

भावार्थ: ललाट पर स्थित अर्ध चंद्र महादेव (कल्याणकारी प्रभु) का प्रतिनिधित्व कर रहा था। मुख की भव्यता और गौरवता भगवान् विष्णु की पत्नी श्री को दर्शा रही थी। करोड़ों चन्द्रमा के समूह भी माँ के मुख की प्रभा की समानता नहीं कर सकते। शीश पर दिव्य मुकुट, हाथ में गदा और पैरों में नूपुर आभूषण पहने थीं।

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् ।
शङ्खचक्रकरं काम्यं त्रिनेत्रं कृत्तिवाससम् ॥१२॥

दिव्यमाल थी कंठ तन पर दिव्य गंध का अनुलेपन ।
शंख चक्र अन्य हस्त युक्त त्रिनेत्र सिंह चर्म आवरन ।। (१२)

भावार्थ: गले में दिव्य माला और शरीर पर दिव्य गंध का लेप किए थीं। अन्य हाथों में शंख चक्र थे। त्रिनेत्री थीं। सिंह की खाल का वस्त्र पहने थीं।

अन्तःस्थं चाण्डबाह्यस्थं बाह्याभ्यन्तरतःपरम् ।
सर्वशक्तिमयं शान्तं सर्वाकारं सनातनम् ॥१३॥

स्थित अन्तः बाह्य सरिर सर्वव्यापी महा ओजस्विन ।
थीं शांत सर्वाकार सर्वशक्तिमान और सनातन ।। (१३)

भावार्थः ब्रह्माण्ड के अंत बाह्य में स्थित, सर्वव्यापक, महा ओजस्वी, शांत, सर्वाकार, सर्वशक्तिमान और सनातन थीं।

ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रयोगीन्द्रैरीड्यमानपदाम्बुजम् ।
सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥१४॥

पूजित ब्रह्मदेव सुरेंद्र सुर थे उनके सम पद्म चरन ।
देखें राम थे युक्त अंग सब तन शीश मुख और नयन ।। (१४)

भावार्थः उनके कमल समान पग ब्रह्मा, इंद्र और देवताओं से पूजित थे। राम ने देखा कि उनके शरीर के सभी अंग शीश, मुख और नेत्रों से युक्त थे।

सर्वमावृत्य तिष्ठन्तं ददर्श पदमैश्वरम् ।
दृष्ट्वा च तादृशं रूपं दिव्यं माहेश्वरं पदम् ॥१५॥
तथैव च समाविष्टः स रामो हृतमानसः ।
आत्मन्याधाय चात्मानमोङ्कारं समनुस्मरन् ॥१६॥

था दर्श दिव्या समान करें दर्शन ईश्वरीय महन ।
देख यह रूप महेश्वर हुआ हृदय गदगद भगवन ।। (१५)
हो प्रसन्न युक्त भक्ति हिय देख उनमें ब्रह्म वर्पन् ।
कर नियंत्रित स्वात्मा करने लगे वह ॐ उच्चारन ।। (१६)

भावार्थः दिव्या का दर्शन महान ईश्वर के दर्शन के समान था। महेश्वर का यह रूप देख भगवान् (श्री राम) का हृदय गदगद हो गया। प्रसन्न हो, हृदय में भक्ति से युक्त, उनमें ब्रह्म रूप देख, अपनी आत्मा को नियंत्रण में कर वह ॐ का उच्चारण करने लगे।

नाम्नामष्टसहस्रेण तुष्टाव परमेश्वरीम् ।
ॐ सीतोमा परमा शक्तिरनन्ता निष्कलामला ॥१७॥

करने लगे स्तुति उन दिव्या सह एक सहस्त्र अष्ट नामन ।
सीता उमा परमा शक्ति अनंता निष्कला अमल-पावन ।। (१७)

भावार्थ: १००८ नाम से उन दिव्या की स्तुति करने लगे। सीता (१), उमा (२), परमा (३), शक्ति (४), अनंता (५), निष्कला (६), पवित्र अमल/ अमला (७)।

शान्ता माहेश्वरी चैव शाश्वती परमाक्षरा।
अचिन्त्या केवलानन्ता शिवात्मा परमात्मिका ॥१८॥

शांता माहेश्वरी शाश्वती परमाक्षरा अचिन्त्यन।
केवला अनंता परमात्मिका सुर-पूजित-शिवात्मन ।। (१८)

भावार्थ: शांता (८), माहेश्वरी (९), शाश्वती (१०), परमाक्षरा (११), अचिन्त्यन/ अचिन्त्या (१२), केवला (१३), अनंता (१४), परमात्मिका (१५), सुर-पूजित-शिवात्मन/ शिवात्मा (१६)।

अनादिरव्यया शुद्धा देवात्मा सर्वगोचरा।
एकानेकविभागस्था मायातीता सुनिर्मला ॥१९॥

अनादि अव्यया देवी-शुद्धा देवात्मा सर्वगोचरन।
एकानेक सर्वस्थित निर्मल मायाविहीन-हरिजन ।। (१९)

भावार्थ: अनादि (१७), अव्यया (१८) देवी-शुद्धा (१९), देवात्मा (२०), सर्वगोचरन/ सर्वगोचरा (२१), एकानेक (२२), सर्वस्थित (२३), निर्मल (२४), हरि भक्त मायाविहीन (२५)।

महामाहेश्वरी शक्ता महादेवी निरञ्जना।
काष्ठा सर्वान्तरस्था च चिच्छक्तिरतिलालसा ॥२०॥

महामाहेश्वरी शक्त महादेवी काष्ठा निरंजन।
सर्वातरस्था चिछक्ति रति-लालसा-लुब्ध-मोहन ।। (२०)

भावार्थ: महामाहेश्वरी (२६), शक्त (२७), महादेवी (२८), काष्ठा (२९), निरंजन/ निरंजना (३०), सर्वातरस्था (३१), चिछक्ति (३२), आनंद-लुब्ध-रति-लालसा (३३)।

जानकी मिथिलानन्दा राक्षसान्तविधायिनी ।
रावणान्तरकरी रम्या रामवक्षःस्थलालया ॥२१॥

जानकी असुर-विनासिनी मारक-सहस्रमुख-रावन ।
राम-मनहर-वक्ष-विहारिणी सुख-दायिनी-मिथिलाजन ।। (२१)

भावार्थ: जानकी (३४), असुर-विनासिनी (३५), मारक-सहस्रमुख-रावण (३६), राम-मनोहर-वक्ष-विहारिणी (३७), मिथिलाजन- सुख-दायिनी (३८)।

उमा सर्वात्मिका विद्या ज्योतिरूपायुताक्षरा ।
शान्तिः प्रतिष्ठा सर्वेषां निवृत्तिरमृतप्रदा ॥२२॥

उमा-रूपा सर्वात्मिका विद्या शान्ति ज्योति-वर्पन् ।
अयुताक्षरी सर्व-प्रतिष्ठा निवृत्ति अमृत-दायिन ।। (२२)

भावार्थ: उमा-रूपा (३९), सर्वात्मिका (४०), विद्या (४१), शान्ति (४२), ज्योति-स्वरूपा (४३), अयुताक्षरी (४४), सर्व-प्रतिष्ठा (४५), निवृत्ति (४६), अमृत-दाता (४७)।

व्योममूर्तिर्व्योममयी व्योमधाराऽच्युता लता ।
अनादिनिधना योषा कारणात्मा कलाकुला ॥२३॥

व्योममूर्ति व्योममयी व्योमाधारा अच्युतन ।
लता आदि-अनंत-रहिता योषा-सुंदरी-त्रिभुवन ।।
असुर-रिपु-कुलाकुला मायावी-कारणात्मन ।। (२३)

भावार्थ: व्योममूर्ति (४८), व्योममयी (४९), व्योमाधारा (५०), अच्युतन/ अच्युता (५१), लता (५२), आदि-अनंत-रहिता (५३), सुंदरी-त्रिभुवन-योषा (५४), असुर-रिपु-कुलाकुला (५५), मायावी-कारणात्मन/ कारणात्मा (५६)।

नन्दप्रथमजा नाभिरमृतस्यान्तसंश्रया ।
प्राणेश्वरप्रिया मातामही महिषवाहना ॥२४॥

ब्रह्मा-वरक-दशानन-नाभि-अमृत-आश्रय-दायिन ।
प्रथमज-नन्द नारायण-प्राणेश्वर प्रिया-रघुनन्दन ।।
मातामही नियंत्रक-मृत्यु-दाता-महिषवाहन ।। (२४)

भावार्थ: ब्रह्मा-वरक-दशानन-नाभि-अमृत-आश्रय-दायिन (ब्रह्मदेव के वर से लंकापति रावण की नाभि में अमृत का आश्रय देने वाली) (५७), प्रथमज-नन्द (५८), नारायण-प्राणेश्वर (५९), प्रिया-रघुनन्दन (६०), मातामही (६१), नियंत्रक-मृत्यु-दाता-महिषवाहन (यम) (६२)।

प्राणेश्वरी प्राणरूपा प्रधानपुरुषेश्वरी ।
सर्वशक्तिः कला काष्ठा ज्योत्स्नेन्दोर्महिमाऽऽस्पदा ॥२५॥

प्राणेश्वरी महिमा सर्वशक्ति प्राणदाता-भुवन ।
प्रधान पुरुषेश्वरी कला काष्ठा चंद्र-ज्योत्सन ।। (२५)

भावार्थ: प्राणेश्वरी (६३), महिमा (६४), सर्वशक्ति (६५), प्राणदाता-भुवन (६६), प्रधान (६७), पुरुषेश्वरी (६८), कला (६९), काष्ठा (७०), चंद्र-ज्योत्सन/ चंद्र ज्योत्सना (७१)।

सर्वकार्यनियन्त्री च सर्वभूतेश्वरेश्वरी ।
अनादिरव्यक्तगुणा महानन्दा सनातनी ॥२६॥

नियंत्रक-सर्व-कार्य अनादि सर्व-भूतेश्वर-स्वामिन ।
ईश्वरी अव्यक्तगुण महानन्दा ब्रह्माण्ड-सर्व-सनातन ।। (२६)

भावार्थ: नियंत्रक-सर्व-कार्य (७२), अनादि (७३), सर्व-भूतेश्वर-स्वामिन (७४), ईश्वरी (७५), अव्यक्तगुण (७६), महानन्दा (७७), ब्रह्माण्ड-सर्व-सनातन (७८)।

आकाशयोनिर्योगस्था सर्वयोगेश्वरेश्वरी ।
शवासना चितान्तःस्था महेशी वृषवाहना ॥२७॥

योग-स्थित-योगेश्वर-स्वामिनी उज्जवल-जन्मित-गगन ।
चितान्त-स्थित-कालिका महेशी वृषवाहनी शवासन ।। (२७)

भावार्थ: योग-स्थित-योगेश्वर-स्वामिनी (७९), उज्जवल-जन्मित-गगन (८०), चितान्त-स्थित-कालिका (८१), महेशी (८२), वृषवाहनी (८३), शवासन (८४)।

बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा ।
महामाया सुदुष्पूरा मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥२८॥

बालिका तरुणी वृद्धा जरातुरा माता-चिरंतन ।
महामाया सुदुष्पुर देवीका मूल-प्रकृति-जनन ।। (२८)

भावार्थ: बालिका (८५), तरुणी (८६), वृद्धा (८७), जरातुरा (वृद्ध आयु से परे) (८८), माता-चिरंतन (पुरातन माँ) (८९), महामाया (९०), सुदुष्पुर (दूर देश में रहने वाली, अर्थात स्वर्ग में रहने वाली) (९१), देवीका (९२), मूल-प्रकृति-जनन (मूल प्रकृति की जननी) (९३)।

संसारयोनिः सकला सर्वशक्तिसमुद्भवा ।
संसारसारा दुर्वारा दुर्निरीक्ष्या दुरासदा ॥२९॥

संसार-योनि सकला सर्व-शक्ति-उत्पत्तित सार-भुवन ।
परे-कपट-दुर्वाला दुरालोका दुरासद-सनातन ।। (२९)

भावार्थ: संसार-योनि (९४), सकला (सर्वव्यापी) (९५), सर्व-शक्ति-उत्पत्तित (सर्व शक्ति से उत्पन्न) (९६), सार-भुवन ((संसार तत्व) (९७), परे-कपट-दुर्वाला (९८), दुरालोका (कठिन दर्शन) (९९), दुरासद-सनातन (अनंत और पुरातन) (१००)।

प्राणशक्तिः प्राणविद्या योगिनी परमा कला ।
महाविभूतिर्दुर्धर्षा मूलप्रकृतिसम्भवा ॥३०॥

प्राणशक्ति प्राणविद्या परम-कला महायोगिन ।
महाविभूति दुर्धर्षा प्रकृति-मूल-उत्पत्तित-गुन ।। (३०)

भावार्थ: प्राणशक्ति (१०१), प्राणविद्या (१०२), परम-कला (१०३), महायोगिन (१०४), महाविभूति (१०५), दुर्धर्षा (अटल) (१०६), प्रकृति-मूल-उत्पत्तित-गुन/ गुण (मूल प्रकृति से उत्पन्न गुण) (१०७)।

अनाद्यनन्तविभवा   परात्मा पुरुषो बली ।
सर्गस्थित्यन्तकरणी सुदुर्वाच्या दुरत्यया ॥३१॥

अनादि-अनंत-ऐश्वर्या   विराट-पुरुष-परमात्मन ।
महाबली सृष्टि-पालक-संहारक अव्यक्ता अकलंकन ।। (३१)

भावार्थ: अनादि-अनंत-ऐश्वर्या (न समाप्त होने वाले ऐश्वर्य से युक्त) (१०८), विराट-पुरुष-परमात्मन/ परमात्मा(१०९), महाबली (११०), सृष्टि-पालक-संहारक (१११), अव्यक्ता (११२), अकलंकन (कलंक हीन) (११३)।

शब्दयोनिश्शब्दमयी नादाख्या नादविग्रहा ।
प्रधानपुरुषातीता   प्रधानपुरुषात्मिका ॥३२॥

दिव्य-शब्द-उत्पन्ना दिव्य-ॐ-शब्दमयी नाद-नामन ।
नाद-मूर्ति   परे-प्रधान-पुरुष   पुरुषात्मिकन ।। (३२)

भावार्थ: दिव्य-शब्द-उत्पन्ना (दिव्य शब्द ॐ से उत्पन्न) (११४), दिव्य-ॐ-शब्दमयी (स्वयमे दिव्य शब्द ॐ) (११५) , नाद-नामन (ॐ नामक) (११६), नाद-मूर्ति (ॐ स्वरुप) (११७), परे-प्रधान-पुरुष (११८), पुरुषात्मिकन (चेतन पुरुष स्वरुप) (११९)।

पुराणी चिन्मयी पुंसामादिः पुरुषरूपिणी ।
भूतान्तरात्मा कूटस्था महापुरुषसंज्ञिता ॥३३॥

पुराणी चिन्मयी उत्कृष्ट-आदि-पुरुष-निरूपन ।
भूतान्तरात्मा प्रकृति-माँ-उत्पन्न-उपम-चेतन ।। (३३)

भावार्थः पुराणी (१२०), चिन्मयी (१२१), उत्कृष्ट-आदि-पुरुष-निरूपन/ निरूपण (१२२), भूतान्तरात्मा (१२३), प्रकृति-माँ-उत्पन्न-उपम-चेतन (१२४)।

जन्ममृत्युजरातीता सर्वशक्तिसमन्विता ।
व्यापिनी चानवच्छिन्ना प्रधाना सुप्रवेशिनी ॥३४॥

परे-जन्म परे-मरण परे-वृद्धायु सर्व-शक्ति-संपन्न ।
व्यापिनी देवी-अनवच्छिन्न प्रधान-सुप्रेविशिन ।। (३४)

भावार्थः परे-जन्म (१२५), परे-मरण (१२६), परे-वृद्धायु (१२७) ,सर्व-शक्ति-संपन्न (१२८), व्यापिनी (१२९), देवी-अनवच्छन्न (अखंडित देवी) (१३०), प्रधान-सुप्रेविशिन (भगवान् के कक्ष में प्रवेश करने योग्य) (१३१)।

क्षेत्रज्ञा शक्तिरव्यक्तलक्षणा मलवर्जिता ।
अनादिमायासम्भिन्ना त्रितत्त्वा प्रकृतिर्गुणः ॥३५॥

क्षेत्र-ज्ञानी शक्ति-धारिणी अव्यक्त शुभ-लक्षन ।
शुद्ध अनादि माया-भिन्न त्रितत्वा धर्म-गुण-संपन्न ।। (३५)

भावार्थः क्षेत्र-ज्ञानी (समस्त ज्ञान विज्ञान ज्ञाता) (१३२), शक्ति-धारिणी (१३३), अव्यक्त (१३४), शुभ-लक्षन/लक्षण (१३५), शुद्ध (१३६), अनादि (१३७), माया-भिन्न (माया से पृथक) (१३८), त्रितत्वा (तीनों तत्व - सत, रजस, तमस की ज्ञाता) (१३९), धर्म-गुण-संपन्न (१४०)।

महामाया समुत्पन्ना तामसी पौरुषं ध्रुवा ।
व्यक्ताव्यक्तात्मिका कृष्णा रक्तशुक्लाप्रसूतिका ॥३६॥

अद्भुत-मायावी विश्व-उत्पन्ना तामसी-जग-सहभागिन ।
ध्रुव पुरुषार्थी अदृष्टा कृष्ण-वर्ण रक्ता शुक्र-भावन ।। (३६)

भावार्थ: अद्भुत-मायावी (१४१), विश्व-उत्पन्ना (१४२), तामसी-जग-सहभागिन (संसार में लिप्त होने के कारण तामसी) (१४३), ध्रुव (१४४), पुरुषार्थी (१४५), अदृष्टा (१४६), कृष्ण-वर्ण (१४७), रक्ता (रक्त जननी) (१४८), शुक्र-भावन (वीर्य देने वाली) (१४९)।

स्वकार्या कार्यजननी ब्रह्मास्या ब्रह्मसंश्रया ।
व्यक्ता प्रथमजा ब्राह्मी महती ज्ञानरूपिणी ॥ ३७॥

कार्य-जननी ब्रह्म-आश्रय-भूत प्रथम-उत्पन्न ।
स्वकार्या ब्राह्मी प्रगट महती ज्ञान-निरूपन ।। (३७)

भावार्थ: कार्य-जननी (१५०), ब्रह्म-आश्रय-भूत (ब्रह्म आश्रित) (१५१), प्रथम-उत्पन्न (१५२), स्वकार्या (१५३), ब्राह्मी (१५४), प्रगट (१५५), महती (१५६), ज्ञान-निरूपन/निरूपण(ज्ञान-स्वरूपा) (१५७)।

वैराग्यैश्वर्यधर्मात्मा ब्रह्ममूर्तिर्हृदिस्थिता ।
जयदा जित्वरी जैत्री जयश्रीर्जयशालिनी ॥३८॥

ऐश्वर्य धर्मात्मा ब्रह्म-मूर्ति हृदय-निवसन् ।
वैरागी जय-दाता शीघ्र-विजय-दात्री जय-सहगमन ।।
युद्ध-विजेता-जैत्री जय-लक्ष्मी-नारि-नारायन ।। (३८)

भाववार्थ: ऐश्वर्य (१५८), धर्मात्मा (१५९), ब्रह्म-मूर्ति (१६०), हृदय-निवसन् (१६१), वैरागी (१६२), जय-दाता (१६३), शीघ्र-विजय-दात्री (१६४), जय-सहगमन (१६५), युद्ध-विजेता-जैत्री (१६६), जय-लक्ष्मी-नारि-नारायन (१६७)।

सुखदा शुभदा सत्या शुभा सङ्क्षोभकारिणी ।
अपां योनिः स्वयम्भूतिर्मानसी तत्त्वसम्भवा ॥३९॥

सुखदायक शुभदायक शुभा जल-योनि संक्षोभ-नाशन ।
स्वयंभूति मानसी तत्वसम्भवा-दात्री-आश्वासन ।। (३९)

भावार्थ: सुखदायक (१६८), शुभदायक (१६९), शुभा (१७०), जल-योनि (१७१), संक्षोभ-नाशन (१७२), स्वयंभूति (१७३), मानसी (१७४), तत्वसम्भवा-दात्री-आश्वासन (आश्वासन देने वाली तत्वसम्भवा देवी) (१७५)।

ईश्वराणी च सर्वाणी शङ्कराद्धशरीरिणी ।
भवानी चैव रुद्राणी महालक्ष्मीरथाम्बिका ॥४०॥

ईश्वराणी शर्वाणी अर्धनारीश्वर-रूप-जतिन ।
भवानी रुद्राणी अम्बिका महालक्ष्मी-दात्री-धन ।। (४०)

भावार्थ: ईश्वराणी (१७६), शर्वाणी (१७७), अर्धनारीश्वर-रूप-जतिन (माहदेव का स्वरुप अर्धनारीश्वर) (१७८), भवानी (१७९), रुद्राणी (१८०), अम्बिका (१८१), महालक्ष्मी-दात्री-धन (१८२)।

माहेश्वरी समुत्पन्ना भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।
सर्वेश्वरी सर्ववर्णा नित्या मुदितमानसा ॥४१॥

माहेश्वरी स्व-प्रगटा देवी-भुक्ति-मुक्ति-फल-दायिन ।
सर्वेश्वरी नित्या मुदिता कोमलांगी-युक्त-स्वर्न ।। (४१)

भावार्थ: माहेश्वरी (१८३), स्व-प्रगटा (१८४), देवी-भुक्ति-मुक्ति-फल-दायिन (१८५), सर्वेश्वरी (१८६), नित्या (१८७), मुदिता (१८८), कोमलांगी-युक्त-स्वर्न/ स्वर्ण (स्वर्ण से युक्त कोमल अंग) (१८९)।

ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्रनमिता शङ्करेच्छानुवर्तिनी ।
ईश्वरार्द्धासनगता रघूत्तमपतिव्रता ॥४२॥

महादेव-सेविका निमित्त-इंद्र-उपेंद्र-चतुरानन ।
पतिव्रता-श्री-रघुनन्दन स्थित-ईश्वर-अर्धासन ।। (४२)

भावार्थ: महादेव-सेविका (१९०), निमित्त-इंद्र-उपेंद्र-चतुरानन (इंद्र, उपेंद्र, ब्रह्मदेव की पसंद) (१९१), पतिव्रता-श्री-रघुनन्दन (१९२), स्थित-ईश्वर-अर्धासन (१९३)।

सकृद्विभाविता सर्वा समुद्रपरिशोषिणी ।
पार्वती हिमवत्पुत्री परमानन्ददायिनी ॥४३॥

सर्व-मंगल-कामिनी सुता-हिमालय-धरणीधरन ।
पार्वती दात्री-परमानंद सक्षम-महासागर-शोषन ।। (४३)

भावार्थ: सर्व-मंगल-कामिनी (१९४), सुता-हिमालय-धरणीधरन (१९५), पार्वती (१९६), दात्री-परमानंद (१९७), सक्षम-महासागर-शोषन/ शोषण (१९८)।

गुणाढ्या योगदा योग्या ज्ञानमूर्तिर्विकासिनी ।
सावित्री कमला लक्ष्मी श्रीरनन्तोरसि स्थिता ॥४४॥

योग-दायक ज्ञानमूर्ति-विकासक-देवी-विचक्षन ।
योग्या कमला भृगु-सुता-श्री उत्तम-गुणवत्तन ।।
सावित्री अनंत-हिय-वासी लक्ष्मी-नारि-नारायन ।। (४४)

भावार्थ: योग-दायक (१९९), ज्ञानमूर्ति-विकासक-देवी-विचक्षन/ विचक्षण (ज्ञान मूर्ति विकास करने वाली बुद्धिमान देवी) (२००), योग्या (२०१), कमला (२०२), भृगु-सुता-श्री (२०३), उत्तम-गुणवत्तन (२०४), सावित्री (२०५), अनंत-हिय-वासी (२०६), लक्ष्मी-नारि-नारायन/ नारायण (२०७)।

सरोजनिलया शुभ्रा योगनिद्रा सुदर्शना ।
सरस्वती सर्वविद्या जगज्ज्येष्ठा सुमङ्गला ॥४५॥

स्थित-कमल शुभ्र योगनिद्रा सरस्वती सुदर्शन ।
सर्व-विद्या जग-ज्येष्ठा सुमंगल-कारक-सुर-भूजन ।। (४५)

भावार्थः स्थित-कमल (२०८), शुभ्र (२०९), योगनिद्रा (२१०), सरस्वती (२११), सुदर्शन (२१२), सर्व-विद्या (२१३), जग-ज्येष्ठा (२१४), सुमंगल-कारक-सुर-भूजन (२१५)।

वासवी वरदा वाच्या कीर्तिः सर्वार्थसाधिका ।
वागीश्वरी सर्वविद्या महाविद्या सुशोभना ॥४६॥

वासवी वर-दात्री वाच्या सक्षम-सर्वार्थ-साधन ।
कीर्ति वागीश्वरी महाविद्या सर्वविद्या सुशोभन ।। (४६)

भावार्थः वासवी (२१६), वर-दात्री (२१७), वाच्या (२१८), सक्षम-सर्वार्थ-साधन (२१९), कीर्ति (२२०), वागीश्वरी (२२१), महाविद्या (२२२), सर्वविद्या (२२३), सुशोभन (२२४)।

गुह्यविद्याऽत्मविद्या च सर्वविद्याऽत्मभाविता ।
स्वाहा विश्वम्भरी सिद्धिः स्वधा मेधा धृतिः श्रुतिः ॥४७॥

गुह्यविद्या आत्मविद्या सर्वात्मा स्वाहा सर्वभावन ।
विश्वम्भरी स्वधा मेधा धृति श्रुति सिद्धि-दायन ।। (४७)

भावार्थः गुह्यविद्या (२२५), आत्मविद्या (२२६), सर्वात्मा (२२७), स्वाहा (२२८), सर्वभावन (२२९), विश्वम्भरी (२३०), स्वधा (२३१), मेधा (२३२), धृति (२३३), श्रुति (२३४), सिद्धि-दायन (२३५)।

नाभिः सुनाभिः सुकृतिर्माधवी नरवाहिनी ।
पूजा विभावरी सौम्या भगिनी भोगदायिनी ॥४८॥

नाभि सुनाभि सुकृति माधवी देवी-नरवाहिन ।
पूज्या विभावरी सौम्या भगिनी भोग-फल-दायिन ।। (४८)

भावार्थ: नाभि (२३६), सुनाभि (२३७), सुकृति (२३८), माधवी (२३९), देवी-नरवाहिन (२४०), पूज्या (२४१), विभावरी (२४२), सौम्या (२४३), भगिनी (२४४), भोग-फल-दायिन (भोगों/ कर्मों का फल देने वाली) (२४५)।

शोभा वंशकरी लीला मानिनी परमेष्ठिनी ।
त्रैलोक्यसुन्दरी रम्या सुन्दरी कामचारिणी ॥४९॥

शोभा वंशकरी लीला मानिनी रम्या परमेष्ठिन ।
त्रैलोक्यसुंदरी कामचारिणी अति-शोभन ।। (४९)

भावार्थ: शोभा (२४६), वंशकरी (शक्ति देवी) (२४७), लीला (२४८), मानिनी (२४९), रम्या (२५०), परमेष्ठिन (२५१), त्रैलोक्यसुंदरी (२५२), कामचारिणी (२५३), अति-शोभन (२५४)।

महानुभावमध्यस्था महामहिषमर्दिनी ।
पद्ममाला पापहरा विचित्रमुकुटानना ॥५०॥

देवी-स्थित-मध्य-महानुभाव मारक-महामहिष-दुर्जन ।
पद्ममाला धारणी-मुखमुकुट-विलक्षण पाप-हरन ।। (५०)

भावार्थ: देवी-स्थित-मध्य-महानुभाव (२५५), मारक-महामहिष-दुर्जन (२५६), पद्ममाला (२५७), धारणी-मुखमुकुट-विलक्षण (२५८), पाप-हरण (२५९)।

कान्ता चित्राम्बरधरा दिव्याभरणभूषिता ।
हंसाख्या व्योमनिलया जगत्सृष्टिविवर्द्धिनी ॥५१॥

धारिणी-रञ्जित-परिधान सरोवर-दिव्य-हंस-वासिन ।
कान्ता व्योमी भूषित-दिव्य-आभूषण जग-विस्तारन ।। (५१)

भावार्थ: धारिणी-रञ्जित-परिधान (२६०), सरोवर-दिव्य-हंस-वासिन (दिव्य हंस के सरोवर में वास करने वाली) (२६१), कान्ता (२६२), व्योमी (आकाश वासी) (२६३), भूषित-दिव्य-आभूषण (२६४), जग-विस्तारन (संसार का विस्तार करने वाली) (२६५)।

निर्यन्त्रा मन्त्रवाहस्था नन्दिनी भद्रकालिका ।
आदित्यवर्णा कौमारी मयूरवरवाहिनी ॥५२॥

नियंत्रण-कर्ता मन्त्र-श्रेष्ठतर उपम-मयूर-आरोहिन ।
नंदिनी भद्रकाली कौमारी उदिति-आदित्यवर्न ।। (५२)

भावार्थ: नियंत्रण-कर्ता (२६६), मन्त्र-श्रेष्ठतर (२६७), उपम-मयूर-आरोहिन (सर्वश्रेष्ठ मयूर पर सवार) (२६८), नंदिनी (२६९), भद्रकाली (२७०), कौमारी (२७१), उदिति-आदित्यवर्न (उगते सूर्य के समान वर्ण) (२७२)।

वृषासनगता गौरी महाकाली सुरार्चिता ।
अदितिर्नियता रौद्री पद्मगर्भा विवाहना ॥५३॥

गौरी महाकाली पूजित-सुरगण स्थित-वृष-आसन ।
माँ-अदिति निर्यता रौद्री पद्मगर्भा विवाहन ।। (५३)

भावार्थ: गौरी (२७३), महाकाली (२७४), पूजित-सुरगण (२७५), स्थित-वृष-आसन (२७६), माँ-अदिति (२७७), निर्यता (२७८), रौद्री (२७९), पद्मगर्भा (२८०), विवाहन (२८१)।

विरूपाक्षी लेलिहाना महासुरविनाशिनी ।
महाफलानवद्याङ्गी कामपूरा विभावरी ॥ ५४॥

विरूपाक्षी महासुर-मर्दिनी जिह्वा-ओष्ठ-स्वदन ।
वर-दायिनी कामधरण विभावरी रहित-आलोचन ।। (५४)

भावार्थ: विरूपाक्षी (त्रिनेत्र देवी) (२८२), महासुर-मर्दिनी (२८३), जिह्वा-ओष्ठ-स्वदन (२८४), वर-दायिनी (२८५), कामधरण (इच्छा पूर्ण करने वाले देवी) (२८६), विभावरी (पीत वर्ण) (२८७), रहित-आलोचन (२८८)।

विचित्ररत्नमुकुटा प्रणतरधिविवर्धिनी ।
कौशिकी कर्षिणी रात्रिस्त्रिदशार्त्तिविनाशनी ॥५५॥

अद्भुत-मुकुट-धारिणी कौशिकी भक्त-रिद्धि-वर्धन ।
कर्षिणी कृष्ण-वर्ण-सम-रात्रि सुर-दुःख-नाशन ।। (५५)

भावार्थ: अद्भुत-मुकुट-धारिणी (२८९), कौशिकी (२९०), भक्त-रिद्धि-वर्धन (२९१), कर्षिणी (मनमोहक) (२९२), कृष्ण-वर्ण-सम-रात्रि (२९३), सुर-दुःख-नाशन (२९४)।

विरूपा च सरूपा च भीमा मोक्षप्रदायिनी ।
भक्तार्त्तिनाशिनी भव्या भवभावविनाशिनी ॥५६॥

विरूपा सुरूपा अति-बलशाली-भीमा मोक्ष-दायिन ।
भक्त-दुःख-नाशनी प्रतापी-भव्या माया-विनाशन ।। (५६)

भावार्थ: विरूपा (२९५), सुरूपा (२९६), अति-बलशाली-भीमा (२९७), मोक्ष-दायिन (२९८), भक्त-दुःख-नाशनी (२९९), प्रतापी भव्या (३००), माया-विनाशन (३०१)।

निर्गुणा नित्यविभवा निःसारा निरपत्रपा ।
यशस्विनी सामगीतिर्भावाङ्गनिलयालया ॥५७॥

निर्गुणा नित्य-महन-विभवा निःसारा-हीन-प्रपञ्चन ।
निरपत्रपा यशस्विनी सामगीति जन्म-मरण-मोचन ।। (५७)

भावार्थ: निर्गुणा (३०२), नित्य-महन-विभवा (३०३), निःसारा-हीन-प्रपञ्चन (३०४), निरपत्रपा (निर-अहंकारी) (३०५), यशस्विनी (३०६), सामगीति (साम वेद मन्त्र

गायिका) (३०७), जन्म-मरण-मोचन (जान-मरण के चक्र से छुटकारा देने वाली) (३०८)।

दीक्षा विद्याधरी दीप्ता महेन्द्रविनिपातिनी ।
सर्वातिशायिनी विद्या सर्वशक्तिप्रदायिनी ॥५८॥

दीक्षा विद्याधरी दीप्ता महेंद्र-शक्ति-विनिपातिन ।
सर्व-विद्या-दायिनी सर्व-शक्ति-देव शक्ति-भूजन ।। (५८)

भावार्थ: दीक्षा (३०९), विद्याधरी (३१०), दीप्ता (३११), महेंद्र-शक्ति-विनिपातिन (इंद्रदेव को शक्ति देने वाली) (३१२), सर्व-विद्या-दायिनी (३१३), सर्व-शक्ति-देव (३१४), शक्ति-भूजन (३१५)।

सर्वेश्वरप्रिया तार्क्ष्यी समुद्रान्तरवासिनी ।
अकलङ्का निराधारा नित्यसिद्धा निरामया ॥५९॥

प्रिया-सर्वेश्वर औषध-तार्क्ष्यी निराधारा अकलंकन ।
नित्य-सिद्ध-देवी निरामया सागर-गर्भ-निवासिन ।। (५९)

भावार्थ: प्रिया-सर्वेश्वर (३१६), औषध-तार्क्ष्यी (तार्क्ष्यी नामक पौधे से बनी औषधि) (३१७), निराधारा (३१८), अकलंकन (३१९), नित्य-सिद्ध-देवी (३२०), निरामया (३२१), सागर-गर्भ-निवासिन (३२२)।

कामधेनुर्वेदगर्भा धीमती मोहनाशिनी ।
निःसङ्कल्पा निरातङ्का विनया विनयप्रदा ॥ ६०॥

कामधेनु वेद-गर्भा प्रमत-धीमती भक्त-मोह-नाशन ।
निःसंकल्पा विनया विनय-प्रदा देवी-निः-आतंकन ।। (६०)

भावार्थ: कामधेनु (३२३), वेद-गर्भा (३२४), प्रमत-धीमती (३२५), भक्त-मोह-नाशन (३२६), निःसंकल्पा (३२७), विनया (३२८), विनय-प्रदा (३२९), देवी-निः-आतंकन (३३०)।

ज्वालामालासहस्राढ्या देवदेवी मनोन्मनी ।
उर्वी गुर्वी गुरुः श्रेष्ठा सगुणा षड्गुणात्मिका ॥६१॥

देवदेवी सगुणा धारणी-सहस्त्र-ज्वाला-अवतंसन ।
मनोन्मनी उर्वी गुर्वी गुरु श्रेष्ठ षड-गुण-आत्मिकन ।। (६१)

भावार्थ: देवदेवी (३३१), सगुणा (३३२), धारणी-सहस्त्र-ज्वाला-अवतंसन (एक सहस्त्र ज्वालाकी माला धारणी) (३३३), मनोन्मनी (३३४), उर्वी (३३५), गुर्वी (३३६), गुरु (३३७), श्रेष्ठ (३३८), षड-गुण-आत्मिकन (३३९)।

महाभगवती भव्या वसुदेवसमुद्भवा ।
महेन्द्रोपेन्द्रभगिनी भक्तिगम्यपरायणा ॥६२॥

देवी-भव्या जननी-अष्ट-वसु-रक्षक-श्री-नारायन ।
महाभगवती भगिनी-इंद्र-उपेंद्र भक्त-परायन ।। (६२)

भावार्थ: देवी-भव्या (३४०), जननी-अष्ट-वसु-रक्षक-श्री-नारायन (३४१), महाभगवती (३४२),भगिनी-इंद्र-उपेंद्र (३४३), भक्त-परायन/ परायण (३४४)।

ज्ञानज्ञेया जरातीता वेदान्तविषया गतिः ।
दक्षिणा दहना बाह्या सर्वभूतनमस्कृता ॥६३॥

ज्ञान ज्ञेया जरातीता दक्षिणा गति-सुर-असुर-भूजन ।
वेदांत-विषयक-निपुण वामा सर्व-भूत-पूजित दहन ।। (६३)

भावार्थ: ज्ञान (३४५), ज्ञेया (३४६), जरातीता (परे-आयु) (३४७), दक्षिणा (दक्षिण में स्थित) (३४८), गति-सुर-असुर-भूजन (सुर, असुर और प्राणियों की अंतिम गति)

(३४९), वेदांत-विषयक-निपुण (३५०), वामा (वाम में स्थित) (३५१), सर्व-भूत-पूजित (३५२), दहन (अग्नि) (३५३)।

योगमाया विभावज्ञा महामोहा महीयसी ।
सत्या सर्वसमुद्भूतिर्ब्रह्मवृक्षाश्रया मतिः ॥६४॥

योगमाया-मूर्ति विभावज्ञा कर्ता-ब्रह्माण्ड-सृजन ।
महामोहा महीयसी मति सत्या ब्रह्म-वृक्ष-पावन ।। (६४)

भावार्थः योगमाया-मूर्ति (३५४), विभावज्ञा (सर्व-ज्ञाता) (३५५), कर्ता-ब्रह्माण्ड-सृजन (३५६), महामोहा (३५७), महीयसी (३५८), मति (३५९), सत्या (३६०), ब्रह्म-वृक्ष-पावन (३६१)।

बीजाङ्कुरसमुद्भूतिर्महाशक्तिर्महामतिः ।
ख्यातिः प्रतिज्ञा चित्संविन्महायोगेन्द्रशायिनी ॥६५॥

महाशक्ति ख्याति प्रतिज्ञा अंकुर-जग-बीज-प्रभवन ।
चित्त-चेतना महामति शांता महा-योगेंद्र-शायिन ।। (६५)

भावार्थः महाशक्ति (३६२), ख्याति (३६३), प्रतिज्ञा (३६४), अंकुर-जग-बीज-प्रभवन (संसार के बीज के अंकुर की उत्पत्ति) (३६५), चित्त-चेतना (३६६), महामति (३६७), शांता (३६८), महा-योगेंद्र-शायिन (महा योगेंद्र निद्रा में स्थित) (३६९)।

विकृतिः शङ्करी शास्त्री गन्धर्वा यक्षसेविता ।
वैश्वानरी महाशाला देवसेना गुहप्रिया ॥६६॥

रूप-विकृति शांकरी शास्त्री गन्धर्वा यक्ष-अर्चितन ।
वैश्वानरी महाशाला गृह-प्रिया प्रवर-देवसेन ।। (६६)

भावार्थ: रूप-विकृति (३७०), शांकरी (३७१), शास्त्री (३७२), गन्धर्वा (३७३), यक्ष-अर्चितन (यक्षों सेपूजित) (३७४), वैश्वानरी (अग्निकोण) (३७५), महाशाला (स्वामिन साकेत) (३७६), गृह-प्रिया (३७७), प्रवर-देवसेन (देवों की सेना प्रमुख) (३७८)।

महारात्री शिवानन्दा शची दुःस्वप्ननाशिनी ।
पूज्यापूज्या जगद्धात्री दुर्विज्ञेयस्वरूपिणी ॥६७॥

महारात्रि शची शिवानंदा दुःस्वप्ननाशिनी पूज्यन ।
अपूज्या जगद्धात्री दुरत्यय-दुर्विज्ञेयस्वरूपन ।। (६७)

भावार्थ: महारात्रि (३७९), शची (३८०), शिवानंदा (३८१), दुःस्वप्ननाशिनी (३८२), पूज्यन (३८३), अपूज्या (ब्रह्माण्ड में विरोधाभास)(३८४), जगद्धात्री (३८५), दुरत्यय-दुर्विज्ञेयस्वरूपन (समझने में कठिन दुर्विज्ञेयस्वरूपा) (३८६)।

गुहाम्बिका गुहोत्पत्तिर्महापीठा मरुत्सुता ।
हव्यवाहान्तरा गार्गी हव्यवाहसमुद्भवा ॥६८॥

गुहाम्बिका गुहोतपत्ति महापीठा सुता-पवन ।
यज्ञ-हव्य-वाहान्तरा मार्गी हव्य-वाह-समुद्भवन ।। (६८)

भावार्थ: गुहाम्बिका (३८७), गुहोतपत्ति (३८८), महापीठा (३८९), सुता-पवन (३९०), यज्ञ-हव्य-वाहान्तरा (यज्ञ-हव्य के बाहर और अंदर) (३९१), मार्गी (३९२), हव्य-वाह-समुद्भवन (समुद्र के समान हव्य) (३९३)।

जगद्योनिर्जगन्माता जगन्मृत्युर्जरातिगा ।
बुद्धिर्माता बुद्धिमती पुरुषान्तरवासिनी ॥६९॥

वृद्धायु-नियंत्रक बुद्धि जगद्योनि-गर्भ-जग-प्रसवन ।
जगतांत जनित्री बुद्धिमती पुरुषांतरवासिन ।। (६९)

भावार्थः वृद्धायु-नियंत्रक (३९४), बुद्धि (३९५), जगद्योनि-गर्भ-जग-प्रसवन (जग को अपने गर्भ से उत्पन्न करने वाली जगद्योनि) (३९६), जगतांत (३९७), जनित्री (३९८), बुद्धिमती (३९९), पुरुषांतरवासिन (प्रभु के अंतर में वास करने वाली) (४००)।

तपस्विनी समाधिस्था त्रिनेत्रा दिविसंस्थिता ।
सर्वेन्द्रियमनोमाता सर्वभूतहृदिस्थिता ॥७०॥

तपस्विनी समाधिस्था त्रिनेत्रा स्थित-स्वर्ण माँ-मन ।
सम्पूर्ण-इन्द्रिय-नियंत्रक स्थित-हिय-सर्व-भूजन ।। (७०)

भावार्थः तपस्विनी (४०१), समाधिस्था (४०२), त्रिनेत्रा (४०३), स्थित-स्वर्ण (४०४), माँ-मन (४०५), सम्पूर्ण-इन्द्रिय-नियंत्रक (४०६), स्थित-हिय-सर्व-भूजन (४०७)।

संसारतारिणी विद्या ब्रह्मवादिमनोलया ।
ब्रह्माणी बृहती ब्राह्मी ब्रह्मभूता भयावनी ॥७१॥

जग-तारिणी विद्या मनोलया वृहती ब्रह्मवादिन ।
ब्रह्माणी ब्रह्मभूता कालिका-रूपी-भयावन ।। (७१)

भावार्थः जग-तारिणी (४०८), विद्या (४०९), मनोलया (४१०), वृहती (४११), ब्रह्मवादिन (४१२), ब्रह्माणी (४१३), ब्रह्मभूता (४१४), कालिका-रूपी-भयावन (४१५)।

हिरण्यमयी महारात्रिः संसारपरिवर्तिका ।
सुमालिनी सुरूपा च तारिणी भाविनी प्रभा ॥७२॥

हिरण्यमयी महारात्रि जग-परिवर्तक सुमालिन ।
भव-सागर-तारिणी प्रभा सुरूपा-अति-शोभन ।। (७२)

भावार्थः हिरण्यमयी (४१६), महारात्रि (४१७), जग-परिवर्तक (४१८), सुमालिन (४१९), भव-सागर-तारिणी (४२०), प्रभा (४२१), सुरूपा-अति-शोभन (४२२)।

उन्मीलनी सर्वसहा सर्वप्रत्ययसाक्षिणी ।
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणी धरा ॥७३॥

सर्वसहा सर्व-दृश्य-साक्षिणी तपिनी दुःख-उन्मूलन ।
तापिनी विश्व-रूपा देवी-भोगदा धरा-धारिन ।। (७३)

भावार्थः सर्वसहा (४२३), सर्व-दृश्य-साक्षिणी (४२४), तपिनी (४२५), दुःख-उन्मूलन (४२६), तापिनी (४२७), विश्व-रूपा (४२८), देवी-भोगदा (४२९), धरा-धारिन (४३०)।

सुसौम्या चन्द्रवदना ताण्डवासक्तमानसा ।
सत्त्वशुद्धिकरी शुद्धिर्मलत्रयविनाशिनी ॥७४॥

सुसौम्या चन्द्रवंदना शुद्धि तांडव-नृत्य-आसक्तन ।
सत्त्वशुद्धकारिणी जग-त्रि-पीड़ा-विनाश-कारिन ।। (७४)

भावार्थः सुसौम्या (४३१), चन्द्रवंदना (४३२), शुद्धि (४३३), तांडव-नृत्य-आसक्तन (४३४), सत्त्वशुद्धकारिणी (सत्यवादी एवं सब को शुद्ध करने वाली) (४३५), जग-त्रि-पीड़ा-विनाश-कारिन (संसार की तीन पीड़ाएं, अधिभौतिक, अधिदैविक, अधिदैहिक का विनाश करने वाली) (४३६)।

जगत्प्रिया जगन्मूर्तिस्त्रिमूर्तिरमृताश्रया ।
निराश्रया निराहारा निरङ्कुशरणोद्भवा ॥७५॥

अमृताश्रया जगत-मूर्ति त्रिमूर्ति जगत्प्रियन ।
निराश्रया निराहारा निरंकुश-रणोद्भवन ।। (७५)

भावार्थः अमृताश्रया (४३७), जगत-मूर्ति (४३८), त्रिमूर्ति (४३९), जगत्प्रियन (४४०), निराश्रया (४४१), निराहारा (४४२), निरंकुश-रणोद्भवन (रण क्षेत्र में निरंकुश) (४४३) ।

चक्रहस्ता विचित्राङ्गी स्रग्विणी पद्मधारिणी ।
परापरविधानज्ञा महापुरुषपूर्वजा ॥७६॥

चक्रहस्ता विचित्रांगी स्त्रिग्वणी पद्म-धारिन ।
परा-ज्ञानी-पर-विधान पूर्वज-सर्व-पुरुष-महन ।। (७६)

भावार्थ: चक्रहस्ता (४४४), विचित्रांगी (४४५), स्त्रिग्वणी (संस्कृत काव्य) (४४६), पद्म-धारिन (४४७), परा-ज्ञानी-पर-विधान (४४८), पूर्वज-सर्व-पुरुष-महन (सब महान पुरुषों की पूर्वज) (४४९)।

विद्येश्वरप्रियाऽविद्या विदुज्जिह्वा जितश्रमा ।
विद्यामयी सहस्राक्षी सहस्रश्रवणात्मजा ॥७७॥

विश्वेश्वर-प्रिया विद्यामयी अविद्या विद्युत्-सम-रसन ।
श्रम-रहिता सुता-धारी-सहस्त्र-कर्ण सहस्त्र-नयन ।। (७७)

भावार्थ: विश्वेश्वर-प्रिया (४५०), विद्यामयी (४५१), अविद्या (अज्ञान की ज्ञाता) (४५२), विद्युत्-सम-रसन (विद्युत् समान जिह्वा) (४५३), श्रम-रहिता (४५४), सुता-धारी-सहस्त्र-कर्ण (विराट पुरुष जिनके सहस्त्र कर्ण हैं, उनकी पुत्री) (४५५), सहस्त्र-नयन (४५६) ।

सहस्ररश्मि पद्मस्था महेश्वरपदाश्रया ।
ज्वालिनी सद्मना व्याप्ता तैजसी पद्मरोधिका ॥ ७८॥

समान-सहस्त्र-रश्मि पद्मस्था महेश्वरपदाश्रयन ।
सद्मना व्याप्ता तैजसी पद्मरोधिका ज्वालिन ।। (७८)

भावार्थ: समान-सहस्त्र-रश्मि (४५७), पद्मस्था (४५८),महेश्वरपदाश्रयन (४५९), सद्मना (कल्याणकारी चित्त वाली) (४६०), व्याप्ता (४६१) तैजसी (४६२), पद्मरोधिका (४६३), ज्वालिन (४६४)।

महादेवाश्रया मान्या महादेवमनोरमा ।
व्योमलक्ष्मीश्च सिंहस्था चेकितान्यमितप्रभा ॥७९॥

महादेवाश्रया देवी-मान्या महादेवमनोरम-मन ।
व्योमलक्ष्मी सिंहरथा अमितप्रभा-प्रमत-चेकितन ।। (७९)

भावार्थः महादेवाश्रया (४६५), देवी-मान्या (४६६), महादेवमनोरम-मन (महादेव के मन की प्रसन्नता) (४६७), व्योमलक्ष्मी (स्वर्ग की श्री) (४६८), सिंहरथा (सिंह रथ पर सवार) (४६९), अमितप्रभा-प्रमत-चेकितन (अति बुद्धिमान प्रभाशाली) (४७०)।

विश्वेश्वरी विमानस्था विशोका शोकनाशिनी ।
अनाहता कुण्डलिनी नलिनी पद्मवासिनी ॥८०॥

आरूढ़-विमान नलिनी शोक-नाशिनी विश्व-स्वामिन ।
विशोका पद्म-वासिनी देवी-कुण्डलिनी-अभिषेचन ।। (८०)

भावार्थः आरूढ़-विमान (पुष्पक विमान पर आरूढ़) (४७१), नलिनी (४७२), शोक-नाशिनी (४७३), विश्व-स्वामिन (४७४), विशोका (४७५), पद्म-वासिनी (४७६), देवी-कुण्डलिनी-अभिषेचन (कुण्डलिनी जाग्रत करने वाली देवी) (४७७)।

शतानन्दा सतां कीर्तिः सर्वभूताशयस्थिता ।
वाग्देवता ब्रह्मकला कलातीता कलावती ॥८१॥

अनाहिता शतानंदा वाग्देवता कीर्ति-सत-भूजन ।
ब्रह्मकला कलातीता कलावती स्थित-आशय-जन ।। (८१)

भावार्थः अनाहिता (मित्र) (४७८), शतानंदा (४७९), वाग्देवता (वाणी की देवी) (४८०), कीर्ति-सत-भूजन (सत्पुरुषों की कीर्ति) (४८१), ब्रह्मकला (४८२), कलातीता (४८३), कलावती (४८४), स्थित-आशय-जन (प्राणियों के मनोभाव में स्थित) (४८५)।

ब्रह्मर्षिर्ब्रह्महृदया   ब्रह्मविष्णुशिवप्रिया ।
व्योमशक्तिः क्रियाशक्तिर्जनशक्तिः परागतिः ॥८२॥

ब्रह्मऋषि ब्रह्महृदया ब्रह्मा शिव-प्रिय नारायन ।
व्योमशक्ति क्रियाशक्ति जनशक्ति परम-गति-दायन ।। (८२)

भावार्थः ब्रह्मऋषि (४८६), ब्रह्महृदया (४८७), ब्रह्मा (४८८), शिव-प्रिय (४८९), नारायन/ नारायण (४९०), व्योमशक्ति (४९१), क्रियाशक्ति (४९२), जनशक्ति (४९३), परम-गति-दायन (४९४)।

क्षोभिका रौद्रिका भेद्या भेदाभेदविवर्जिता ।
अभिन्ना भिन्नसंस्थाना वंशिनी वंशहारिणी ॥८३॥

क्षोभिका रौद्रिका भेद्या रहित-भेद-अभेद अभिन्न ।
पूजित-भिन्न-संस्थाना कुल-वंशिनी वंश-हारिन् ।। (८३)

भावार्थः क्षोभिका (हलचल मचाने वाली) (४९५), रौद्रिका (रौद्र रूप) (४९६), भेद्या (दृश्यरतिक) (४९७), रहित-भेद-अभेद (४९८), अभिन्न (४९९), पूजित-भिन्न-संस्थाना (५००), कुल-वंशिनी (५०१), वंश-हारिन् (वंश को बढ़ाने वाली) (५०२)।

गुह्यशक्तिर्गुणातीता सर्वदा सर्वतोमुखी ।
भगिनी भगवत्पत्नीं सकला कालकारिणी ॥८४॥

गुह्यशक्ति गुणातीता सर्वदा सर्वतोमुखन ।
शिव-भगिनी भगवत्पत्नी सकला देवी-काल-कारिन ।। (८४)

भावार्थः गुह्यशक्ति (५०३), गुणातीता (५०४), सर्वदा (५०५), सर्वतोमुखन (५०६), शिव-भगिनी (५०७), भगवत्पत्नी (५०८), सकला (५०९), देवी-काल-कारिन (प्रलय की देवी) (५१०)।

सर्ववित्सर्वतोभद्रा गुह्यातीता गुहाबलिः ।
प्रक्रिया योगमाता च गन्धा विश्वेश्वरेश्वरी ॥८५॥

सर्वज्ञ सर्व-मंगल गुहाबलि प्रक्रिया गुह्य-वेत्तन ।
योगमाता गंधा विश्वेश्वरेश्वरी-पूजित-भूजन ।। (८५)

भावार्थः सर्वज्ञ (५११), सर्व-मंगल (५१२), गुहाबलि (एकांत गुफा में रहने वाली) (५१३), प्रक्रिया (योग क्रिया) (५१४), गुह्य-वेत्तन (गुप्त ज्ञान ज्ञाता) (५१५), योगमाता (५१६) गंधा (सुगन्धित) (५१७), विश्वेश्वरेश्वरी-पूजित-भूजन (प्राणियों से पूजित विश्व की स्वामिन) (५१८)।

कपिला कपिलाकान्ता कनकाभा कलान्तरा ।
पुण्या पुष्करिणी भोक्त्री पुरन्दरपुरःसरा ॥८६॥

कपिला कपिलाकान्ता कनकाभा भोक्त्री पुण्यन ।
कलान्तरा पुरंदर-पुरस्सरा पुष्करिणी-वार्ययन ।। (८६)

भावार्थः कपिला (इच्छा पूर्ण करने वाली गौमाता) (५१९), कपिलाकान्ता (कपिला गौमाता समान कांति वाली) (५२०), कनकाभा (स्वर्ण समान आभा) (५२१), भोक्त्री (आनंदित) (५२२), पुण्यन (पवित्र) (५२३), कलान्तरा (समय अंतराल) (५२४), पुरंदर-पुरस्सरा (सर्वेंद्र (५२५)), पुष्करिणी-वार्ययन (पुष्करिणी सरोवर) (५२६)।

पोषणी परमैश्वर्यभूतिदा भूतिभूषणा ।
पञ्चब्रह्मसमुत्पत्तिः परमात्मात्ऽमविग्रहा ॥८७॥

पोषणी परम-ऐश्वर्य-भूतिदा विभूति-विभूषन ।
सर्वोच्च-परमात्म-विग्रहा देवी-पञ्च-ब्रह्म-उत्पन्न ।। (८७)

भावार्थः पोषणी (पालनहारी) (५२७), परम-ऐश्वर्य-भूतिदा (परम ऐश्वर्य देने वाली) (५२८), विभूति-विभूषन/ विभूषण (५२९), सर्वोच्च-परमात्म-विग्रहा (सर्वोच्च परमात्म-तत्व) (५३०), देवी-पञ्च-ब्रह्म-उत्पन्न (५३१)।

नर्मोदया भानुमती योगिज्ञेया मनोजवा ।
बीजरूपा रजोरूपा वशिनी योगरूपिणी ॥८८॥

सम-उमा-लक्ष्मी-नर्मोदया भानुमति योगि-ज्ञेयन ।
श्री-मनोजवा वाणी-वशिनी देवी-योग-निरूपन ।। (८८)

भावार्थः सम-उमा-लक्ष्मी-नर्मोदया (५३२), भानुमति (सूर्य समान) (५३३), योगि-ज्ञेयन (योग से जानी जाने वाली) (५३४), श्री-मनोजवा (विष्णु पत्नी श्री) (५३५), वाणी-वशिनी (वाणी की देवी) (५३६), देवी-योग-निरूपन (योग मूर्ति देवी) (५३७)।

सुमन्त्रा मन्त्रिणी पूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी ।
मनोहरिर्मनोरक्षी तापसी वेदरूपिणी ॥८९॥

सुमंत्रा मंत्रिणी पूर्णा आनंद-दायिनी-ह्लादिन ।
मनोहारी मनोरक्षी तापसी वेद-रूपा क्लेशनाशिन ।। (८९)

भावार्थः सुमंत्रा (मन्त्र ज्ञाता) (५३८), मंत्रिणी (५३९), पूर्णा (५४०), आनंद-दायिनी-ह्लादिन (५४१), मनोहारी (५४२), मनोरक्षी (मन-नियंत्रक) (५४३), तापसी (५४४), वेद-रूपा (५४५), क्लेशनाशिन (५४६)।

वेदशक्तिर्वेदमाता वेदविद्याप्रकाशिनी ।
योगेश्वरेश्वरी माला महाशक्तिर्मनोमयी ॥ ९०॥

वेद-शक्ति वेद-माता माला कर्ता-वेद-विद्या-उज्जवन ।
योगेश्वर-ईश्वरी महाशक्ति मनोमयी-नियंत्रक-मन ।। (९०)

भावार्थः वेद-शक्ति (५४७), वेद-माता (५४८), माला (५४९), कर्ता-वेद-विद्या-उज्जवन (५५०), योगेश्वर-ईश्वरी (५५१), महाशक्ति (५५२), मनोमयी-नियंत्रक-मन (५५३)।

विश्वावस्था वीरमुक्तिर्विद्युन्माला विहायसी ।
पीवरी सुरभी वन्द्या नन्दिनी नन्दवल्लभा ॥९१॥

विश्वास्था विद्युन्माला विहायसी वीरमुक्ति -दायन ।
तरुण-पीवरी सुगन्धित-सुरभि वन्द्या-देव-प्ररोचन ।। (९१)

भावार्थ: विश्वास्था (विश्व की आस्था) (५५४), विद्युन्माला (विद्युत् समूह) (५५५), विहायसी (मधुर मुस्कान वाली) (५५६), वीरमुक्ति -दायन (वीरों को मुक्ति देने वाली) (५५७), तरुण-पीवरी (५५८), सुगन्धित-सुरभि (५५९), वन्द्या-देव-प्ररोचन (देवताओं से अर्चित वन्द्या) (५६०)।

भारती परमानन्दा परापरविभेदिका ।
सर्वप्रहरणोपेता काम्या कामेश्वरेश्वरी ॥ ९२॥

नंदिनी नंदवल्लभा परमानंदा पर-अपर-भेद-वेदन ।
भारती काम्या कामेश्वर-ईश्वरी सर्व-काल-इदन्तन ।। (९२)

भावार्थ: नंदिनी (प्रसन्नता देने वाली) (५६१), नंदवल्लभा (सच्चिदानंद की प्रियतम) (५६२), परमानंदा (५६३), पर-अपर-भेद-वेदन (पर-अपर भेद ज्ञाता) (५६४), भारती (वाणी देवी) (५६५), काम्या (आकर्षित) (५६६), कामेश्वर-ईश्वरी (५६७), सर्व-काल-इदन्तन (सदैव विद्यमान) (५६८)।

अचिन्त्याचिन्त्यमहिमा दुर्लेखा कनकप्रभा ।
कूष्माण्डी धनरत्नाढ्या सुगन्धा गन्धदायिनी ॥९३॥

अचिन्त्या अचिन्त्य-महिमा दुर्लेखा युक्त-रत्न-धन ।
कनकप्रभा कूष्माण्डी सुगंधा दिव्य-गंध-परिगमन ।। (९३)

भावार्थ: अचिन्त्या (जानने में असंभव) (५६९), अचिन्त्य-महिमा (अकल्पनीय महिमा) (५७०), दुर्लेखा (उद्धारक) (५७१), युक्त-रत्न-धन (५७२), कनकप्रभा (५७३),

कूष्माण्डी (कद्दू मिष्टान) (५७४), सुगंधा (५७५), दिव्य-गंध-परिगमन (दिव्य गंध प्रसारक) (५७६)।

त्रिविक्रमपदोद्भूता धनुष्पाणिः शिरोहया ।
सुदुर्लभा धनाध्यक्षा धन्या पिङ्गललोचना ॥९४॥

त्रिविक्रम-पद-उत्पत्ति धनुष्पाणि सुदुर्लभा-भूजन ।
शिरोहया धनाध्यक्षा धात्री-धन्या पिंगल-लोचन ।। (९४)

भावार्थ: त्रिविक्रम-पद-उत्पत्ति (भगवान् वामन के पद से उत्पन्न) (५७७), धनुष्पाणि (धनुष धारिणी) (५७८), सुदुर्लभा-भूजन (प्राणियों को दुर्लभ (५७९)), शिरोहया (लज्जाशील) (५८०), धनाध्यक्षा (५८१), धात्री-धन्या (माता धन्या) (५८२), पिंगल-लोचन (पीत नेत्र) (५८३)।

भ्रान्तिः प्रभावती दीप्तिः पङ्कजायतलोचना ।
आद्या हृत्कमलोद्भूता परामाता रणप्रिया ॥९५॥

भ्रान्ति प्रभावती दीप्ति आद्या पंकजायत-लोचन ।
उत्पन्न-हृदय-कमल सृष्टि-परम-परामाता प्रिय-रन ।। (९५)

भावार्थ: भ्रान्ति (माया जनक) (५८४) , प्रभावती (५८५), दीप्ति (५८६), आद्या (आदि देवी) (५८७), पंकजायत-लोचन (कमल समान नेत्र) (५८८) उत्पन्न-हृदय-कमल (५८९) सृष्टि-परम-परामाता(५९०), प्रिय-रन (युद्ध प्रेमी) (५९१)।

सत्क्रिया गिरिजा नित्यशुद्धा पुष्पनिरन्तरा ।
दुर्गा कात्यायनी चण्डी चर्चिका शान्तविग्रहा ॥९६॥

सत्क्रिया गिरिजा नित्यशुद्धा दुर्गा पुष्प-अविघ्न ।
कात्यानी चंडी शान्ति-विग्रहा चर्चिका-अघ-छेदन ।। (९६)

भावार्थ: सत्क्रिया (सात-कर्म करने वाली) (५९२), गिरिजा (५९३), नित्यशुद्धा (५९४), दुर्गा (५९५), पुष्प-अविघ्न (सदैव पुष्प रूपी) (५९६), कात्यानी (५९७), चंडी (५९८), शान्ति-विग्रहा (शान्ति रूप) (५९९), चर्चिका-अघ-छेदन (पाप विनाशिनी चर्चिका) (६००) ।

हिरण्यवर्णा रजनी जगन्मन्त्रप्रवर्तिका ।
मन्दराद्रिनिवासा च शारदा स्वर्णमालिनी ॥९७॥

रजनी जग-मन्त्र-प्रवर्तिका शारदा हिरण्यवर्न ।
मंदर-गिरि-निवासिनी कंठ-शोभित-स्वर्ण-मालिन ।। (९७)

भावार्थ: रजनी (कृष्ण वर्ण) (६०१), जग-मन्त्र-प्रवर्तिका (विश्व दिव्य मंत्रदाता) (६०२), शारदा (विद्या देवी)(६०३), हिरण्यवर्न (हिरण के सामान वर्ण) (६०४), मंदर-गिरि-निवासिनी (६०५), कंठ-शोभित-स्वर्ण-मालिन (६०६)।

रत्नमाला रत्नगर्भा पृथ्वी विश्वप्रमाथिनी ।
पद्मासना पद्मनिभा नित्यतुष्टामृतोद्भवा ॥९८॥

रत्नमाला अमूल्य-रत्नगर्भा विश्व-प्रमाथिनी भुवन ।
नित्यतुष्टा अमृतोद्भवा पद्मनिभा आरूढ़-पद्मासन ।। (९८)

भावार्थ: रत्नमाला (६०७), अमूल्य-रत्नगर्भा (अमूल्य रत्नों की उत्पत्ति करता) (६०८), विश्व-प्रमाथिनी (विश्व जननी) (६०९), भुवन (पृथ्वी) (६१०), नित्यतुष्टा (६११), अमृतोद्भवा (अमृत जननी) (६१२), पद्मनिभा (लक्ष्मी) (६१३), आरूढ़-पद्मासन (६१४)।

धुन्वती दुष्प्रकम्पा च सूर्यमाता दृषद्वती ।
महेन्द्रभगिनी माया वरेण्या वरदर्पिता ॥९९॥

धुन्वती दुष्प्रकंपा महेंद्र-भगिनी माता-द्युवन् ।
दृषद्वती माया वरेण्या वरदर्पिता-युक्त-सगुणन ।। (९९)

भावार्थ: धुन्वती (संकल्प की दृढ़ देवी) (६१५), दुष्प्रकंपा (दुष्टों को कम्पन देने वाली) (६१६), महेंद्र-भगिनी (इंद्र की बहन) (६१७), माता-द्युवन् (सूर्यदेव की माता अदिति) (६१८), दृषद्वती (सूर्य का प्रकाश) (६१९), माया (६२०), वरेण्या (परम देवी) (६२१), वरदर्पिता-युक्त-सगुणन (सगुणों से युक्त यशस्विनी) (६२२)।

कल्याणी कमला रामा पञ्चभूतवरप्रदा ।
वाच्या वरेश्वरी नन्द्या दुर्जया दुरतिक्रमा ॥१००॥

कल्याणी कमला रामा देवी-रूप-पञ्च-भूत-वरन ।
वाच्या वरेश्वरी नंद्या दुर्जया दुरतिक्रमा-अखिन्न ।। (१००)

भावार्थ: कल्याणी (६२३), कमला (६२४), रामा (६२५), देवी-रूप-पञ्च-भूत-वरन (पांच भूत - वायु, आकाश, जल, अग्नि और पृथ्वी, रूपी देवी) (६२६), वाच्या (वाक देवी) (६२७), वरेश्वरी (वर देने वाली देवी) (६२८), नंद्या (इच्छा पूर्ण करने वाली नंदिनी गौमाता) (६२९) दुर्जया (अजेय) (६३०), दुरतिक्रमा-अखिन्न (कभी न थकने वाली देवी) (६३१)।

कालरात्रिर्महावेगा   वीरभद्रहितप्रिया ।
भद्रकाली जगन्माता भक्तानां भद्रदायिनी ॥१०१॥

कालरात्रि महावेगा हितकारी-प्रिय-वीरभद्र-भगवन ।
भद्रकाली देवी-भक्त-आनंद-दायक   जननी-भुवन ।। (१०१)

भावार्थ: कालरात्रि (६३२), महावेगा (६३३), हितकारी-प्रिय-वीरभद्र-भगवन (६३४), भद्रकाली (६३५), देवी-भक्त-आनंद-दायक (६३६), जननी-भुवन (६३७)।

कराला पिङ्गलाकारा नामवेदा महानदा ।
तपस्विनी यशोदा च यथाध्वपरिवर्तिनी ॥१०२॥

कराला पिंगलाकारा नामवेदा महनदा तपस्विन ।
यशोदा   परिदान-परिवर्तन-यथाध्वपरिवर्तिन ।। (१०२)

भावार्थ: कराला (भयंकर) (६३८), पिंगलाकारा (गेहुआं वर्ण) (६३९), नामवेदा (वेदों से सम्मानित) (६४०), महनदा (दिव्य नदी) (६४१), तपस्विन (६४२), यशोदा (६४३), परिदान-परिवर्तन-यथाध्वपरिवर्तिन (परिवर्तन लाने वाली देवी, यथाध्वपरिवर्तिन) (६४४)।

शङ्खिनी पद्मिनी साङ्ख्या साङ्ख्ययोगप्रवर्तिका ।
चैत्री संवत्सरा रुद्रा जगत्सम्पूरणीन्द्रजा ॥१०३॥

शंखिनी पद्मिनी सांख्या सांख्ययोग-कर्ता-उपायन ।
चैत्री संवत्सरा रुद्रा इन्द्रजा जगत-सम्पूरन ।। (१०३)

भावार्थ: शंखिनी (दिव्य श्नख समान स्वर) (६४५), पद्मिनी (कमल समान सुन्दर) (६४६), सांख्या (सांख्ययोगी) (६४७), सांख्ययोग-कर्ता-उपायन (सांख्ययोग को प्रारम्भ करने वाली सांख्या) (६४८), चैत्री (वर्ष का प्रथम मास) (६४९), संवत्सरा (वर्ष) (६५०), रुद्रा (रूद्र भगवान् की संगिनी) (६५१), इन्द्रजा (इंद्र से उत्पन्न) (६५२), जगत-सम्पूरन (सम्पूर्ण जगत) (६५३)।

शुम्भारिः खेचरी खस्था कम्बुग्रीवा कलिप्रिया ।
खरध्वजा खरारूढा पराध्र्या परमालिनी ॥१०४॥

शुम्भारि कम्बुग्रीवा खेचरी-निवासिनी-गगन ।
कलिप्रिय खरध्वजा खरारूढ़ा पराध्र्या परमालिन ।। (१०४)

भावार्थ: शुम्भारि (शुम्भ असुर वध कर्ता) (६५४), खेचरी-निवासिनी-गगन (आकाश निवासिनी) (६५५), कम्बुग्रीवा (शंख सक़मान कंठ) (६५६), कलिप्रिय (युद्ध प्रेमी) (६५७), खरध्वजा (खर का ध्वज धारण करने वाली) (६५८), खरारूढ़ा (खर पर आरूढ़) (६५९), पराध्र्या (स्वतंत्र) (६६०), परमालिन (पवित्र) (६६१)।

ऐश्वर्यरत्ननिलया विरक्ता गरुडासना ।
जयन्ती हृद्गुहा रम्या सत्त्ववेगा गणाग्रणीः ॥१०५॥

ऐश्वर्य-रत्न-निधि देवी-विरक्त आरूढ़-गरुड़ासन ।
जयन्ती हृद्गुहा रम्या सत्त्ववेगा सर्व-गण-महन ।। (१०५)

भावार्थः ऐश्वर्य-रत्न-निधि (६६२), देवी-विरक्त (६६३), आरूढ़-गरुड़ासन (६६४), जयन्ती (६६५), हृद्गुहा (भक्तों के गुहा स्वरुप हृदय में समाहित) (६६६), रम्या (६६७), सत्त्ववेगा (सत्य की संगिनी) (६६८), सर्व-गण-महन (सर्व कृतियों में श्रेष्ठ) (६६९)।

सङ्कल्पसिद्धा साम्यस्था सर्वविज्ञानदायिनी ।
कलिकल्मषहन्त्री च गुह्योपनिषदुत्तमा ॥१०६॥

संकल्पसिद्धा स्थित-सदा-साम्य प्रमत-विज्ञान-वेदन ।
कलिकल्मषहन्त्री गुह्य-उपनिषद्-रूपिणी अतिशयिन् ।। (१०६)

भावार्थः संकल्पसिद्धा (६७०), स्थित-सदा-साम्य (सदा सम अवस्था में स्थित (६७१)), प्रमत-विज्ञान-वेदन (विज्ञान ज्ञान प्रमत) (६७२), कलिकल्मषहन्त्री (पाप विनाशिनी) (६७३), गुह्य-उपनिषद्-रूपिणी (गुप्त उपनिषद रूपिणी) (६७४),अतिशयिन् (उत्तम) (६७५)।

नित्यदृष्टिः स्मृतिर्व्याप्तिः पुष्टिस्तुष्टिः क्रियावती ।
विश्वामरेश्वरेशाना भुक्तिर्मुक्तिः शिवामृता ॥१०७॥

नित्यदृष्टि व्याप्ति स्मृति क्रियावती-कर्ता-कर्मन् ।
पुष्टि तुष्टि विश्वा ईश्वरी-अमरत्व-प्राप्त-सुर-पावन ।।
भुक्ति मुक्ति शिवा-रूपिणी अमृत-शाश्वत-वर्पन् ।। (१०७)

भावार्थः नित्यदृष्टि (अंतर्दृष्टि देवी) (६७६), व्याप्ति (सर्व व्यापक) (६७७), स्मृति (६७८), क्रियावती-कर्ता-कर्मन् (कर्म कर्ता क्रियावती) (६७९), पुष्टि (बलशाली) (६८०), तुष्टि (सदैव संतुष्ट) (६८१), विश्वा (विश्व मूर्ति) (६८२), ईश्वरी-अमरत्व-प्राप्त-सुर-पावन (पवित्र अमरत्व प्राप्त देवताओं की स्वामिन) (६८३), भुक्ति (जग आनंद भोक्त्री) (६८४), मुक्ति (निर्वाण दात्री) (६८५), शिवा-रूपिणी (६८६), अमृत-शाश्वत-वर्पन् (पुण्यवत अमृत रूपिणी) (६८७)।

लोहिता सर्वमाता च भीषणा वनमालिनी ।
अनन्तशयनानाद्या नरनारायणोद्भवा ॥१०८॥

लोहिता सर्वमाता भीषणा अनन्तशयना वनमालिन ।
आदि-अंत-हीन-अनाद्या हेतु-उद्भव-नर-नारायन ।। (१०८)

भावार्थ: लोहिता (मंगल गृह समान लाल वर्ण) (६८८), सर्वमाता (६८९), भीषणा (भयंकर) (६९०), अनन्तशयना (योगनिद्रा) (६९१), वनमालिन (वनमाली अर्थात भगवान् की संगिनी) (६९२), आदि-अंत-हीन-अनाद्या (६९३), हेतु-उद्भव-नर-नारायन/ नारायण (६९४)।

नृसिंही दैत्यमथिनी शङ्खचक्रगदाधरा ।
सङ्कर्षणसमुत्पत्तिरम्बिकोपात्तसंश्रया ॥१०९॥

नृसिंही दैत्यमन्थिनी अम्बिका शंख-चक्र-गदा-धारिन ।
जननी-बाहुबली-संकर्षणसमुत्पत्ति पातसंश्रयन ।। (१०९)

भावार्थ: नृसिंही (नृसिंह अवतार की शक्ति) (६९५), दैत्यमन्थिनी (असुर मर्दिनी) (६९६), अम्बिका (६९७), शंख-चक्र-गदा-धारिन (६९८), जननी-बाहुबली-संकर्षणसमुत्पत्ति (अत्यंत बलशाली संकर्षण की जननी) (६९९), पातसंश्रयन (भक्तों के समीप रहने वाली) (७००)।

महाज्वाला महामूर्तिः सुमूर्तिः सर्वकामधुक् ।
सुप्रभा सुतरां गौरी धर्मकामार्थमोक्षदा ॥११०॥

महाज्वाला महामूर्ति सुमुर्ति वर-प्रदायिन ।
सुप्रभा-रम्य-गौरी धर्म-काम-अर्थ-मोक्ष दायिन ।। (११०)

भावार्थ: महाज्वाला (७०१), महामूर्ति (७०२), सुमुर्ति (७०३), वर-प्रदायिन (७०४), सुप्रभा-रम्य-गौरी (उज्जवलित आनंदमयी गौरी) (७०५), धर्म-काम-अर्थ-मोक्ष दायिन (७०६)।

भ्रूमध्यनिलयाऽपूर्वा प्रधानपुरुषा बली ।
महाविभूतिदा मध्या सरोजनयनासना ॥१११॥

स्थित-मध्य-भृकुटि-अपूर्वा प्रथम-नारि-पत्नी-भगवन ।
बली महाविभूति-दात्री मध्या आसना-कमलनयन ।। (१११)

भावार्थः स्थित-मध्य-भृकुटि-अपूर्वा (७०७), प्रथम-नारि-पत्नी-भगवन (७०८), बली (७०९), महाविभूति-दात्री (७१०), मध्या (सम दृष्टि देवी) (७११), आसना-कमलनयन (कमल-नेत्र समान योग आसन में बैठी हुई) (७१२)।

अष्टादशभुजा नाट्या नीलोत्पलदलप्रभा ।
सर्वशक्ता समारूढा धर्माधर्मानुवर्जिता ॥११२॥

अष्टादशभुजाधारी कान्ति-सम-नील-वनशोभन ।
नाट्या सर्व-शक्ति समारूढ़ा धर्म-अधर्म-विपुन ।। (११२)

भावार्थः अष्टादशभुजाधारी (१८ भुजा वाली) (७१३), कान्ति-सम-नील-वनशोभन (नील कमल के समान कान्ति) (७१४), नाट्या (७१५), सर्व-शक्ति, समारूढ़ा (समभाव) (७१६), धर्म-अधर्म-विपुन (धर्म-अधर्म से परे) (७१७)।

वैराग्यज्ञाननिरता निरालोका निरिन्द्रिया ।
विचित्रगहना धीरा शाश्वतस्थानवासिनी ॥११३॥

निरत-ज्ञान-वैराग्य निरन्द्रिया विचित्रगहन ।
निरालोका धीरा साकेत-शाश्वत-धाम-निवासिन ।। (११३)

भावार्थः निरत-ज्ञान-वैराग्य (७१८), निरन्द्रिया (इन्द्रियों से अप्रभावित) (७१९), विचित्रगहन (विचित्र आभूषण धारी) (७२०), निरालोका (अदृष्या) (७२१), धीरा (धैर्य वाली) (७२२), साकेत-शाश्वत-धाम-निवासिन (शाश्वत साकेत धाम वासी) (७२३)।

स्थानेश्वरी निरानन्दा त्रिशूलवरधारिणी ।
अशेषदेवतामूर्तिर्देवता परदेवता ॥११४॥

स्थानेश्वरी निरानंदा श्रेष्ठ-त्रिशूल-धारी-पावन ।
सम्पूर्ण-सुर-मूर्ति देव-स्वरूपा पर-देव-निरूपन ।। (११४)

भावार्थ: स्थानेश्वरी (सृष्टि स्वामिनी) (७२४), निरानंदा (सदैव आनंद में मग्न) (७२५), श्रेष्ठ-त्रिशूल-धारी-पावन (७२६), सम्पूर्ण-सुर-मूर्ति (७२७), देव-स्वरूपा (७२८), पर-देव-निरूपन/ निरूपण (७२९)।

गणात्मिका गिरेः पुत्री निशुम्भविनिपातिनि ।
अवर्णा वर्णरहिता निर्वर्णा बीजसम्भवा ॥११५॥

गणात्मिका सुता-पर्वतराज निशुम्भ-हन्ता अवर्णन ।
वर्ण-रहिता बीज-सम्भवा देवी-निर्वाण-दायिन ।। (११५)

भावार्थ: गणात्मिका (भक्तों की आत्मा) (७३०), सुता-पर्वतराज (७३१), निशुम्भ-हन्ता (निशुम्भ असुर की मारक) (७३२), अवर्णन (अवर्णित) (७३३) वर्ण-रहिता (सम-द्रष्टा) (७३४), बीज-सम्भवा (नव जीवन हेतु बीज) (७३५), देवी-निर्वाण-दायिन (मोक्ष देने वाली देवी) (७३६)।

अनन्तवर्णानन्यस्था शङ्करी शान्तमानसा ।
अगोत्रा गोमती गोप्त्री गुह्यरूपा गुणान्तरा ॥११६॥

अनंतवर्णा स्थित-अनन्य शंकरी रक्षक देवी-शांत-मन ।
अगोत्रा गोमती गुह्यरूपा गुणान्तरा-विलक्षन ।। (११६)

भावार्थ: अनंतवर्णा (अनंत रंग युक्त) (७३७), स्थित-अनन्य (सम्पूर्ण स्थिति) (७३८), शंकरी (७३९), रक्षक (७४०), देवी-शांत-मन (७४१), अगोत्रा (वंश-रहित) (७४२), गोमती (७४३), गुह्यरूपा (७४४), गुणान्तरा-विलक्षन/ विलक्षण (विलक्षण गुणों से युक्त) (७४५)।

गोश्रीर्गव्यप्रिया गौरी गणेश्वरनमस्कृता ।
सत्यमात्रा सत्यसन्धा त्रिसन्ध्या सन्धिवर्जिता ॥११७॥

गौ-श्री गौ-दुग्ध-घृत-प्रिया गौरी गणेश-पूज्यन ।
सत्यमात्रा सत्यसंधा त्रिसंध्या संधि-रहित-निरंजन ।। (११७)

भावार्थः गौ-श्री (गौ माता) (७४६), गौ-दुग्ध-घृत-प्रिया (७४७), गौरी (७४८), गणेश-पूज्यन (गणेश की पूज्या) (७४९), सत्यमात्रा (निरपेक्ष सत्य) (७५०), सत्यसंधा (सत-मूर्ति) (७५१), त्रिसंध्या (तीनों समय, सुबह, दोपहर, सांय काल पूजा) (७५२), संधि-रहित-निरंजन (निःसंदेह पूर्ण संधि-रहित पवित्र देवी) (७५३)।

सर्ववादाश्रया साङ्ख्या साङ्ख्ययोगसमुद्भवा ।
असङ्ख्येयाप्रमेयाख्या शून्या शुद्धकुलोद्भवा ॥११८॥

सर्व-वादाश्रया अनंता सांख्य-योग-द्वारा-उत्पन्न ।
सांख्य-युक्त अप्रमेय शून्या शुद्ध-कुल-जनन ।। (११८)

भावार्थः सर्व-वादाश्रया (सर्व दर्शन ज्ञान ज्ञाता) (७५४), अनंता (७५५), सांख्य-योग-द्वारा-उत्पन्न (७५६), सांख्य-युक्त (७५७), अप्रमेय (७५८), शून्या (७५९), शुद्ध-कुल-जनन (शुद्ध कुल में जन्मित) (७६०)।

बिन्दुनादसमुत्पत्तिः शम्भुवामा शशिप्रभा ।
विसङ्गा भेदरहिता मनोज्ञा मधुसूदनी ॥११९॥

शंभुवामा कांति-समान-सोम विन्दुनाद-उत्पन्न ।
सङ्गवर्जित भेदरहित मनोहरा श्री-मधुसूदन ।। (११९)

भावार्थः शंभुवामा (भगवान् के वाम भाग में स्थित) (७६१), कांति-समान-सोम (७६२), विन्दुनाद-उत्पन्न (दिव्य नाद से उत्पन्न) (७६३), सङ्गवर्जित (एकांत पसंद) (७६४), भेदरहित (सम भावा) (७६५), मनोहरा (७६६), श्री-मधुसूदन (मधुसूदन भगवान् की श्री) (७६७)।

महाश्रीः श्रीसमुत्पत्ति स्तमःपारे प्रतिष्ठिता ।
त्रितत्त्वमाता त्रिविधा सुसूक्ष्मपदसंश्रया ॥१२०॥

महाश्री श्री-उत्पत्ति-केंद्र परे-तम धन-दायिन ।
त्रितत्वमाता त्रिविधा-देवी सुसूक्ष्मपद-निवासिन ।। (१२०)

भावार्थ: महाश्री (धन-धान्य की महा देवी) (७६८), श्री-उत्पत्ति-केंद्र (धन-धान्य का उत्पत्ति केंद्र) (७६९), परे-तम (अंधकार से दूर) (७७०), धन-दायिन (७७१), त्रितत्वमाता (पृथ्वी, जल, आकाश, तीन मुख्य तत्वों की माता) (७७२), त्रिविधा-देवी (तीनों अवस्थाएं - जाग्रत, स्वप्न और सुप्त की देवी) (७७३), सुसूक्ष्मपद-निवासिन (अति सूक्ष्म रूप में वास करने वाली) (७७४)।

शान्त्यातीता मलातीता निर्विकारा निराश्रया ।
शिवाख्या चित्रनिलया शिवज्ञानस्वरूपिणी ॥१२१॥

शान्त्यातीता मलातीता निर्विकारा निराश्रयन ।
उपाधि-शिवाख्या चित्रनिलया शिव-ज्ञान-निरुपन ।। (१२१)

भावार्थ: शान्त्यातीता (आंतरिक शांत) (७७५), मलातीता (दोषों से रहित) (७७६), निर्विकारा (७७७), निराश्रयन (स्वतंत्र) (७७८), उपाधि-शिवाख्या (शिवा की उपाधि से युक्त) (७७९), चित्रनिलया (बहुविध विश्वरूप) (७८०), शिव-ज्ञान-निरुपन (शिव ज्ञान रूप) (७८१)।

दैत्यदानवनिर्मात्री काश्यपी कालकर्णिका ।
शास्त्रयोनिः क्रियामूर्तिश्चतुर्वर्गप्रदर्शिका ॥१२२॥

दैत्य-दानव-निर्मात्री काश्यपी कालकर्णिकन ।
शास्त्र-जन्म-दात्री क्रियामूर्ति चार-वर्ग-दर्शिन् ।। (१२२)

भावार्थ: दैत्य-दानव-निर्मात्री (७८२), काश्यपी (दिव्य कश्यप नारि) (७८३), कालकर्णिकन (काल - जन्म, मर्त्यु आदि निर्धारक) (७८४), शास्त्र-जन्म-दात्री

(७८५), क्रियामूर्ति (ककर्य करना वाली) (७८६), चार-वर्ग-दर्शिन् (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चार वर्गों को दिखाने वाली) (७८७)।

नारायणी नवोद्भूता कौमुदी लिङ्गधारिणी ।
कामुकी ललिता तारा परापरविभूतिदा ॥१२३॥

नवोद्भूता कौमिदी लिंग-धारिणी नारि-नारायन ।
कामुकी ललिता तारा पर-अपर-विभूति-दायिन ।। (१२३)

भावार्थः नवोद्भूता (सदैव नव-रूप) (७८८), कौमिदी (संस्कृत व्याकरण ज्ञान) (७८९), लिंग-धारिणी (प्रकृति माँ) (७९०), नारि-नारायन/ नारायण (लक्ष्मी) (७९१), कामुकी (इच्छा मूर्ति) (७९२), ललिता (अति सुन्दर) (७९३), तारा (७९४), पर-अपर-विभूति-दायिन (लौकिक एवं पारलौकिक ऐश्वर्य दात्री) (७९५)।

परान्तजातमहिमा वाडवा वामलोचना ।
सुभद्रा देवकी सीता वेदवेदाङ्गपारगा ॥१२४॥

महामहिमा वडवा सुभद्रा देवकी वामलोचन ।
सीता ज्ञाता-वेद-वेदांग-सम्पूर्ण-ग्रन्थ-सनातन ।। (१२४)

भावार्थः महामहिमा (७९६), वडवा (वन-अग्नि) (७९७), सुभद्रा (७९८), देवकी (७९९), वामलोचन (क्रोधित नेत्र वाली) (८००), सीता (८०१)।, ज्ञाता-वेद-वेदांग-सम्पूर्ण-ग्रन्थ-सनातन (८०२)।

मनस्विनी मन्युमाता महामन्युसमुद्भवा ।
अमृत्युरमृतास्वादा पुरुहूता पुरुप्लुता ॥१२५॥

मनस्विनी मन्युमाता महाकाली-सम-क्रोधित वदन ।
मृत्यु-रहित पुरुहूता पुरुलुपता अमृत-सम-रसन ।। (१२५)

भावार्थ: मनस्विनी (मनु समान बुद्धिमान) (८०३), मन्युमाता (मनु की माता) (८०४), महाकाली-सम-क्रोधित वदन (महाकाली के समान मुख पर क्रोध) (८०५), मृत्यु-रहित (अमर) (८०६), पुरुहूता (देवताओं की ईश्वरी) (८०७), पुरुलुपता (अदृश्यनीय) (८०८), अमृत-सम-रसन (अमृत के समान जिह्वा) (८०९)।

अशोच्या भिन्नविषया हिरण्यरजतप्रिया ।
हिरण्या राजती हैमी हेमाभरणभूषिता ॥१२६॥

भिन्न-विषय-विचारिणी प्रिया-रजत रुचिकर-स्वर्न ।
अशोच्या युक्त-विविध-स्वर्ण-आभूषण-सम्पूर्ण-तन ।।
उज्जवलित-समान-रजत युक्त-स्वर्ण-समान-धामन ।। (१२६)

भावार्थ: भिन्न-विषय-विचारिणी (भिन्न विषयों की ज्ञाता) (८१०), प्रिया-रजत (चांदी प्रिय) (८११), रुचिकर-स्वर्न (स्वर्ण पसंद करने वाली) (८१२), अशोच्या (चिंता-रहित) (८१३), युक्त-विविध-स्वर्ण-आभूषण-सम्पूर्ण-तन (८१४), उज्जवलित-समान-रजत (८१५), युक्त-स्वर्ण-समान-धामन (स्वर्ण के समान आभा से युक्त) ८१६)।

विभ्राजमाना दुर्ज्ञेया ज्योतिष्टोमफलप्रदा ।
महानिद्रा समुद्भूतिर्बलीन्द्रा सत्यदेवता ॥१२७॥

विशेष-वैभव-युक्त महानिद्रा यज्ञ-फल-दायिन ।
दुर्ज्ञेया समुद्भव-देवी सत श्रेष्ठ-मध्य-युद्धिवन ।। (१२७)

भावार्थ: विशेष-वैभव-युक्त (८१७), महानिद्रा (८१८), यज्ञ-फल-दायिन (८१९), दुर्ज्ञेया (समझने में कठिन) (८२०), समुद्भव-देवी (ऊर्जा, शक्ति, पराक्रम, जीवन आदि की देवी) (८२१), सत (सत्या) (८२२), श्रेष्ठ-मध्य-युद्धिवन (योद्धाओं में श्रेष्ठ) (८२३)।

दीर्घा ककुद्मिनी विद्या शान्तिदा शान्तिवर्द्धिनी ।
लक्ष्म्यादिशक्तिजननी शक्तिचक्रप्रवर्तिका ॥१२८॥

दीर्घिका कुकुद्यमिनी शान्तिदा-शान्ति-वर्धिन ।
विद्या श्री-शक्ति-मूल देवी-शक्ति-चक्र-प्रवर्त्तन ।। (१२८)

भावार्थ: दीर्घिका (दीर्घ काल तक प्रभाव रखने वाली) (८२४), कुकुद्यमिनी (आकर्षित, प्रसिद्ध, प्रिय, पावन देवी) (८२५), शान्तिदा-शान्ति-वर्धिन (शान्ति बढ़ा अति शान्ति देनी वाली देवी) (८२६), विद्या (८२७), श्री-शक्ति-मूल (लक्ष्मी की शक्ति का केन्द्र) (८२८), देवी-शक्ति-चक्र-प्रवर्त्तन (शक्ति चक्र प्रवर्त्तन करने वाली देवी) (८२९)।

त्रिशक्तिजननी जन्या षडूर्मिपरिवर्जिता ।
स्वाहा च कर्मकरणी युगान्तदलनात्मिका ॥१२९॥

त्रिशक्तिजननी जन्या रहित-षड-उर्मि-सम-आचरन ।
कर्ता-कर्म स्वाहा संहार-रूप-देवी-युगांत-दलन ।। (१२९)

भावार्थ: त्रिशक्तिजननी (तीन शक्तियां - इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति की जननी) (८३०), जन्या (सब की माता) (८३१), रहित-षड-उर्मि-सम-आचरण (षड उर्मि- जन्मने का भय, जीविका अर्जित करने का भय, भ्रमित होने का भय, विकास का भय, क्षय होने का भय और मृत्यु भय, से रहित देवी) (८३२), कर्ता-कर्म (८३३), स्वाहा (अग्नि देव समान) (८३४), संहार-रूप-देवी-युगांत-दलन (युग का अंत करने वाली संहार रूप) (८३५)।

सङ्कर्षणा जगद्धात्री कामयोनिः किरीटिनी ।
ऐन्द्री त्रैलोक्यनमिता वैष्णवी परमेश्वरी ॥१३०॥

जगजननी विषम-लिंग-काम-वृद्धिन कर्ता-सङ्कर्षन ।
शीश-स्वर्ण-मुकुट-धारिणी वैष्णवी-नारि-नारायन ।।
सुर-ऐन्द्रीशक्ति   परमेश्वरी   नमस्कृत-त्रिभुवन ।। (१३०)

भावार्थ: जगजननी (८३६), विषम-लिंग-काम-वृद्धिन (८३७), कर्ता-सङ्कर्षन (आकर्षित करने वाली) (८३८), शीश-स्वर्ण-मुकुट-धारिणी (८३९), वैष्णवी-नारि-

नारायण (८४०),सुर-ऐन्द्रीशक्ति (देवताओं की इन्द्रियों का बल (८४१), परमेश्वरी (८४२), नमस्कृत-त्रिभुवन (८४३)।

प्रद्युम्नदयिता दान्ता युग्मदृष्टिस्त्रिलोचना ।
महोत्कटा हंसगतिः प्रचण्डा चण्डविक्रमा ॥१३१॥

प्रद्युम्न-प्रिया दान्ता युक्त-युग्म-दृष्टि त्रिलोचन ।
महोउत्कटा प्रचंडा सम-चण्ड-विक्रमा हंसगामिन ।। (१३१)

भावार्थः प्रद्युम्न-प्रिया (प्राणियों को रति-कृति प्रदान करने वाली) (८४४), दान्ता (दया और आशीष की देवी) (८४५), युक्त-युग्म-दृष्टि (पुरुष और नारी, दोनों को समान दृष्टि सेदेखने वाली) (८४६), त्रिलोचन (८४७), महोउत्कटा (भक्तों की इच्छा पूर्ण करने वाली देवी) (८४८), प्रचंडा (८४९), सम-चण्ड-विक्रमा (८५०), हंसगामिन (हंस की गति से चलने वाली) (८५१)।

वृषावेशा वियन्मात्रा विन्ध्यपर्वतवासिनी ।
हिमवन्मेरुनिलया कैलासगिरिवासिनी ॥१३२॥

वृषावेशा विंध्य-पर्वत-वासिनी आकार-सम-गगन ।
हिमालय-निलया मेरु-पर्वत-स्थित कैलाश-वासिन ।। (१३२)

भावार्थः वृषावेशा (वृष समान शक्ति) (८५२), विंध्य-पर्वत-वासिनी (८५३), आकार-सम-गगन (८५४), हिमालय-निलया (८५५), मेरु-पर्वत-स्थित (८५६), कैलाश-वासिन (८५७)।

चाणूरहन्त्री तनया नीतिज्ञा कामरूपिणी ।
वेदविद्या व्रतरता धर्मशीलानिलाशना ॥१३३॥

चाणूर-मारक काम-रूपिणी तनया-नीति-निपुन ।
वेदविद्या-व्रतरता धर्मशीला ग्रहणा-अग्नि-भोजन ।। (१३३)

भावार्थ: चाणूर-मारक (८५८), काम-रूपिणी (८५९), तनया-नीति-निपुन (नीति में निपुण तरुणा) (८६०), वेदविद्या-व्रतरता (वेद विद्या पढ़ने में रत) (८६१), धर्मशीला (८६२), ग्रहणा-अग्नि-भोजन (८६३)।

अयोध्यानिलया वीरा महाकालसमुद्भवा ।
विद्याधरक्रिया सिद्धा विद्याधरनिराकृतिः ॥१३४॥

अयोध्या-वासिनी महा-काल-जननी वीर-युद्धिवन ।
विद्याधर-क्रिया सिद्धा निर्गुण-विद्याधर-निरूपन ।। (१३४)

भावार्थ: अयोध्या-वासिनी (८६४), महा-काल-जननी (८६५), वीर-युद्धिवन (८६६), विद्याधर-क्रिया (विद्याधर दैव्य देव सामान कार्य करने वाली) (८६७), सिद्धा (८६८), निर्गुण-विद्याधर-निरूपन (निर्गुण विद्याधर दैव्य देव समान रूपिणी) (८६९)।

आप्यायन्ती वहन्ती च पावनी पोषणी खिला ।
मातृका मन्मथोद्भूता वारिजा वाहनप्रिया ॥१३५॥

संतुष्टि-दायिनी वहन्ती सम-खिला-चावल-पावन ।
भूजन-पोषणी मातृका कामदेव-जननी-दिव्यन ।।
जल-उत्पन्ना-देवी-लक्ष्मी-निरूपण प्रिया-वाहन ।। (१३५)

भावार्थ: संतुष्टि-दायिनी (८७०), वहन्ती (सहिष्णु) (८७१), सम-खिला-चावल-पावन (खिले चावल के समान पवित्र) (८७२), भूजन-पोषणी (८७३), मातृका (दिव्य माँ) (८७४), कामदेव-जननी-दिव्यन (कामदेव की दिव्य जननी) (८७५), जल-उत्पन्ना-देवी-लक्ष्मी-निरूपण (जल से उत्पन्न लक्ष्मी देवी रूपिणी) (८७६), प्रिया-वाहन (८७७)।

करीषिणी स्वधा वाणी वीणावादनतत्परा ।
सेविता सेविका सेवा सिनीवाली गरुत्मती ॥१३६॥

करीषिणी स्वधा वाणी सेविता तत्पर-वीणा-वाद्यन ।
सेविका सेवा वैदिक-देवी गरुत्मती-प्रमत-गहन ।। (१३६)

भावार्थ: करीषिणी (अग्नि प्रज्ज्वलित कर्ता) (८७८), स्वधा (यज्ञ प्रसाद) (८७९), वाणी (८८०), सेविता (सुर और प्राणियों द्वारा सेवित) (८८१), तत्पर-वीणा-वाद्यन (वीणा वाद्य को तत्पर) (८८२), सेविका (सब की सेविका अर्थात इच्छापूर्ण करने वाली देवी) (८८३), सेवा (सेवा करने का उदाहरण) (८८४), वैदिक-देवी (८८५), गरुत्मती-प्रमत-गहन (गहन बुद्धिमान गरुत्मती) (८८६)।

अरुन्धती हिरण्याक्षी मणिदा श्रीवसुप्रदा ।
वसुमती वसोर्धारा वसुन्धरासमुद्भवा ॥१३७॥

अरुंधती हिरण्याक्षी मणिदा श्री-वसु-दायिन ।
वसुमती वसोर्धारा विभिन्न-वसु-जननी भुवन ।। (१३७)

भावार्थ: अरुंधती (८८७), हिरण्याक्षी (हिरण के समान नेत्र (८८८), मणिदा (रत्नों की स्वामिनी) (८८९), श्री-वसु-दायिन (धन और मान देने वाली) (८९०), वसुमती (वसु समान) (८९१), वसोर्धारा (जिनमें वसु विचरित करते हैं) (८९२), विभिन्न-वसु-जननी (विभिन्न वसुओं की जननी) (८९३), भुवन (पृथ्वी) (८९४)।

वरारोहा वरार्हा च वपुःसङ्गसमुद्भवा ।
श्रीफली श्रीमती श्रीशा श्रीनिवासा हरिप्रिया ॥१३८॥

वरारोहा संयोग-विराटपुरुष-प्रकृत्ति-उत्पन्न ।
युक्त-श्रेष्ठ-गुण अलंकृत-श्रीफली-अधिकरन ।।
श्रीमती-श्रीशा श्रीनिवासा प्रिया-नारायन ।। (१३८)

भावार्थ: वरारोहा (सुमुखि) (८९५), संयोग-विराटपुरुष-प्रकृत्ति-उत्पन्न (विराटपुरुष और प्रकृति केसंयोग से जन्मित) (८९६), युक्त-श्रेष्ठ-गुण (८९७), अलंकृत-श्रीफली-अधिकरन (श्रीफली उपाधि सेसुशोभित) (८९८), श्रीमती-श्रीशा (श्रीमती नारायणी)

(८९९), श्रीनिवासा (श्री का निवास) (९००), प्रिया-नारायन (नारायण की प्रिया) (९०१)।

श्रीधरी श्रीकरी कम्पा श्रीधरा ईशवीरणी ।
अनन्तदृष्टिरक्षुद्रा धात्रीशा धनदप्रिया ॥१३९॥

श्रीधरी श्रीकरी कंपा अक्षुधित देवी-श्री-धारन ।
ईशवीरणी अनंत-दृष्टि धात्रीशा धनद-वृषन् ।। (१३९)

भावार्थ: श्रीधरी (धन-धारिणी) (९०२), श्रीकरी (धन-दायिनी) (९०३), कंपा (सगुण युक्त) (९०४), अक्षुधित (क्षुधा हीन) (९०५), देवी-श्री-धारन(श्री धारण करने वाली देवी) (९०६), ईशवीरणी (अत्यंत शक्तिशाली देवी) (९०७), अनंत-दृष्टि (अन्तर्यामी) (९०८), धात्रीशा (पोषक) (९०९), धनद-वृषन् (कुबेर की स्वामिन) (९१०)।

निहन्त्री दैत्यसिंहानां सिंहिका सिंहवाहिनी ।
सुसेना चन्द्रनिलया सुकीर्तिश्छिन्नसंशया ॥१४०॥

महादैत्य-निषूदक सिंह-आरूढ़ सिहं-निरूपन ।
सुसेना चंद्र-निलया सुकीर्ति संदेह-रहित-महन ।। (१४०)

भावार्थ: महादैत्य-निषूदक (महादैत्यों को मारने वाली) (९११), सिंह-आरूढ़ (९१२), सिहं-निरूपन (सिंह रूप) (९१३), सुसेना(सुन्दर/ वीर सेना वाली)(९१४), चंद्र-निलया (चंद्र-निवासिनी) (९१५), सुकीर्ति (९१६), संदेह-रहित-महन (संदेह-रहित महान देवी) (९१७)।

बलज्ञा बलदा वामा लेलिहानामृताश्रवा ।
नित्योदिता स्वयञ्ज्योतिरुत्सुकामृतजीविनी ॥१४१॥

बलज्ञा बलदा लेलिहाना वामा जिह्वा-अमृत-स्यन्दन ।
नित्योदिता स्वयं-ज्योति उत्सुका दाता-अमृत-जीवन ।। (१४१)

भावार्थः बलज्ञा (बल की समझ वाली) (९१८), बलदा (बल देने वाली) (९१९), लेलिहाना (रिपु रक्त युक्त जिह्वा) (९२०), वामा (क्रोधित) (९२१), जिह्वा-अमृत-स्यन्दन (अमृत टपकाने वाली जिह्वा) (९२२), नित्योदिता (शाश्वत) (९२३), स्वयं-ज्योति(९२४), उत्सुका (कल्याण करने को तत्पर) (९२५), दाता-अमृत-जीवन (अमृत/आनंदमय जीवन देने वाली) (९२६)।

वज्रदंष्ट्रा वज्रजिह्वा वैदेही वज्रविग्रहा।
मङ्गल्या मङ्गला माला मलिना मलहारिणी ॥१४२॥

वज्रदंष्ट्रा वज्रजिह्वा वैदेही वज्र-समान-तन।
मंगल्या मंगला माला मलहरिणी वर्ण-मलिन ।। (१४२)

भावार्थः वज्रदंष्ट्रा (वज्र समान दांत) (९२७), वज्रजिह्वा (वज्र समान जीभ) (९२८), वैदेही (जनक पुत्री) (९२९), वज्र-समान-तन (९३०), मंगल्या(सद्गुण मूर्ति) (९३१), मंगला (कल्याण करने वाली) (९३२), माला (९३३), मलहरिणी (पाप-विनाशिनी) (९३४), वर्ण-मलिन (कृष्ण वर्ण) (९३५)।

गान्धर्वी गारुडी चान्द्री कम्बलाश्वतरप्रिया।
सौदामिनी जनानन्दा भ्रुकुटीकुटिलानना ॥१४३॥

गान्धर्वी गारुडी प्रिया-कम्बल-अश्वतर-विशानन।
चांद्री सौदामिनी जनानंदा कुटिल-भृकुटि-आनन ।। (१४३)

भावार्थः गान्धर्वी (संगीत देवी) (९३६), गारुडी (गरुड़ पर आरूढ़) (९३७), प्रिया-कम्बल-अश्वतर-विशानन (कंबल पर्वत वासी अश्वतर सर्प सम्राट की प्रिया) (93), चांद्री (चन्द्र समान उज्वलित) (९३९), सौदामिनी (विद्युत् ऊर्जा युक्त) (९४०), जनानंदा (प्राणियों को आनंद देने वाली) (९४१), कुटिल-भृकुटि-आनन (असुरों के लिए कुटिल मुख और भृकुटि वाली) (९४२)।

कर्णिकारकरा कक्षा कंसप्राणापहारिणी।
युगन्धरा युगावर्त्ता त्रिसन्ध्याहर्षवर्धिनी ॥१४४॥

कर्णिकारका कक्षा युगन्धरा कंस-प्राण-हनन ।
युगावर्त्ता हर्ष-वर्धिनी देवी-त्रि-संध्य-निरूपन ।। (१४४)

भावार्थ: कर्णिकारका (हथेली कर्णिकार पौधे के समान वृहत) (१४३), कक्षा (ब्रह्माण्ड की परिधि) (१४४), युगन्धरा (युग का अंत करने वाली) (१४५), कंस-प्राण-हनन (कंस के प्राण हारने वाली) (१४६), युगावर्त्ता (युग प्रारम्भ करने वाली) (१४७), हर्ष-वर्धिनी (१४८), देवी-त्रि-संध्य-निरूपन (तीनों संध्याएं/ प्रार्थनी की रूपिणी) (१४९)।

प्रत्यक्षदेवता दिव्या दिव्यगन्धा दिवापरा ।
शक्रासनगता शाक्री साध्वी नारी शवासना ॥१४५॥

प्रत्यक्ष-देवी दिव्यगंधा दिवापरा गता-शक्रासन ।
दिव्या शाक्री साध्वी नारी क्रुद्ध-स्थित-शव-आसन ।। (१४५)

भावार्थ: प्रत्यक्ष-देवी (दिव्य देवी) (१५०), दिव्यगंधा (दिव्य सुगंध युक्त) (१५१), दिवापरा (सूर्य समान प्रकाश देने वाली) (१५२), गता-शक्रासन (इंद्र के आसन पर विराजमान) (१५३), दिव्या (१५४), शाक्री (इंद्र समान शक्ति) (१५५), साध्वी (१५६), नारी (सृष्टि देवी) (१५७), क्रुद्ध-स्थित-शव-आसन (क्रोधित हो शव आसन पर विराजमान) (१५८)।

इष्टा विशिष्टा शिष्टेष्टा शिष्टाशिष्टप्रपूजिता ।
शतरूपा शतावर्त्ता विनीता सुरभिः सुरा ॥१४६॥

इष्टा विशिष्टा शिष्टेष्टा शिष्ट-अशिष्ट-नमस्कृतन ।
शतरूपा शतावर्त्ता विनीता सुरभि सुरा-महन ।। (१४६)

भावार्थ: इष्टा (इष्ट देवी) (१५९), विशिष्टा (विशेष देवी) (१६०), शिष्टेष्टा (महात्माओं की देवी) (१६१), शिष्ट-अशिष्ट-नमस्कृतन (शिष्ट और अशिष्टसे पूजित (१६२), शतरूपा (सौ रूपिणी) (१६३), शतावर्त्ता (मूसल समान कठोर) (१६४), विनीता (१६५), सुरभि (इच्छा पूर्ण करने वाले गौमाता सुरभि) (१६६), सुरा-महन (महादेवी) (१६७)।

सुरेन्द्रमाता सुद्युम्ना सुषुम्ना सूर्यसंस्थिता ।
समीक्षा सत्प्रतिष्ठा च निर्वृत्तिर्ज्ञानपारगा ॥१४७॥

माता-सुरेंद्र सुद्युम्ना मनोहर सूर्य-लोक-आसन ।
सुषुम्ना समीक्षा सत्प्रतिष्ठा निवृत्ति ज्ञान-निपुन ।। (१४७)

भावार्थ: माता-सुरेंद्र (९६८), सुद्युम्ना (सूर्य समान ज्योति) (९६९), मनोहर (९७०), सूर्य-लोक-आसन (सूर्य लोक में आसन) (९७१), सुषुम्ना (सूर्य का प्रकाश) (९७२), समीक्षा (सब की समालोचना करने वाली) (९७३), सत्प्रतिष्ठा (सम्मानित आसन पर विराजमान) (९७४), निवृत्ति (मोक्ष दायिनी) (९७५), ज्ञान-निपुन (ज्ञान में निपुण) (९७६)।

धर्मशास्त्रार्थकुशला धर्मज्ञा धर्मवाहना ।
धर्माधर्मविनिर्मात्री धार्मिकाणां शिवप्रदा ॥१४८॥

धर्मशास्त्रार्थकुशला धर्मज्ञा देवी-धर्मवाहन ।
धर्म-अधर्म-निर्मात्री शिवप्रदा-धर्मात्मा-जन ।। (१४८)

भावार्थ: धर्मशास्त्रार्थकुशला (धर्म शास्त्र के अर्थों में निपुण) (९७७), धर्मज्ञा (धर्म ज्ञानी (९७८), देवी-धर्मवाहन (धर्म पर चलने वाली देवी) (९७९), धर्म-अधर्म-निर्मात्री (९८०), शिवप्रदा-धर्मात्मा-जन (धर्मात्माओं की शुभेच्छु) (९८१)।

धर्मशक्तिर्धर्ममयी विधर्मा विश्वधर्मिणी ।
धर्मान्तरा धर्ममध्या धर्मपूर्वी धनप्रिया ॥१४९॥

धर्मशक्ति धर्ममयी विधर्मा विश्व-धर्मिणी-पावन ।
धर्मान्तरा धर्म-मध्या देवी-आदि-धर्म प्रिया-धन ।। (१४९)

भावार्थ: धर्मशक्ति (दिव्य शक्ति) (९८२), धर्ममयी (दिव्य) (९८३), विधर्मा (विधर्मा क्योंकि आप ही धर्म और अधर्म दोनों की निर्मात्री हैं) (९८४), विश्व-धर्मिणी-पावन (विश्व में धर्म पालन करने वाली पवित्र देवी) (९८५), धर्मान्तरा (धर्म में अंतर न करने

वाली, अर्थात समद्रष्टा) (९८६), धर्म-मध्या (धर्म के प्रारम्भ और अंत के मध्य में स्थित) (९८७) देवी-आदि-धर्म (आदि धर्म देवी) (९८८), प्रिया-धन (श्री) (९८९) ।

धर्मोपदेशा धर्मात्मा धर्मलभ्या धराधरा ।
कपाली शाकलामूर्तिः कलाकलितविग्रहा ॥१५०॥

धर्मोपदेशा   धर्मात्मा   धर्मलभ्या   धारिणी-भुवन ।
कपाली काल-कलित-मूर्ति शाक्ला-ऋगवेद-निरूपन ।। (१५०)

भावार्थः धर्मोपदेशा (९९०), धर्मात्मा (९९१), धर्मलभ्या (धर्म क्ससे प्राप्त) (९९२), धारिणी-भुवन (पृथ्वी को धारण करने वाली) (९९३), कपाली (रिपु कपालधारिणी) (९९४) , काल-कलित-मूर्ति (सूक्ष्म दिव्य देवी रूप) (९९५), शाक्ला-ऋगवेद-निरूपन (ऋग्वेद की शाक्ला शाखा रूपी) (९९६)।

धर्मशक्तिविनिर्मुक्ता सर्वशक्त्याश्रया तथा ।
सर्वा सर्वेश्वरी सूक्ष्मा सुसूक्ष्मज्ञानरूपिणी ॥१५१॥

पृथक-अन्य-शक्ति सर्वा सर्व-शक्ति-आश्रय-दायिन ।
सर्वेश्वरी   देवी-सूक्ष्मा   धर्मसुसूक्ष्मज्ञानरूपन ।। (१५१)

भावार्थः पृथक-अन्य-शक्ति (अन्य शक्तियों से भिन्न) (९९७), सर्वा (परम देवी) (९९८), सर्व-शक्ति-आश्रय-दायिन (सब शक्तियों की आश्रयदाता) (९९९), सर्वेश्वरी (१,०००), देवी-सूक्ष्मा (सूक्ष्म रूप देवी) (१,००१), धर्मसुसूक्ष्मज्ञानरूपन (धर्म के सूक्ष्म ज्ञान की भी ज्ञाता) (१,००२)।

प्रधानपुरुषेशाना महापुरुषसाक्षिणी ।
सदाशिवा वियन्मूर्तिर्देवमूर्तिरमूर्तिका ॥१५२॥

प्रधान-पुरुष-ईशाना अस्तित्व-प्रमाण-महात्मन ।
सदाशिवा देव-मूर्ति   निराकार गगन-निरूपन ।।
हे पुण्या शक्तिशाली करें हम कोटि कोटि नमन ।। (१५२)

भावार्थः प्रधान-पुरुष-ईशाना (विराट पुरुष स्वरुप भगवती) (१,००३), अस्तित्व-प्रमाण-महात्मन (महात्माओं के अस्तित्व का प्रमाण)(१,००४), सदाशिवा (सदैव मंगलकारी) (१,००५), देव-मूर्ति (१,००६), निराकार (१,००७), गगन-निरूपन (गगन रूपिणी अर्थात सीमारहित) (१,००८)। हे पुण्या शक्तिशाली, हम कोटि कोटि नमन करते हैं।

एवं नाम्नां सहस्रेण तुष्टाव रघुनन्दनः ।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा सीतां हृष्टतनूरुहाम् ॥१५३॥

कर बद्ध प्रसन्न मन रोमांचित तन श्री रघुनन्दन ।
कर स्तुति जानकी किए क्रुद्ध महादेवी प्रसन्न ।। (१५३)

भावार्थः कर बद्ध, प्रसन्न मन और रोमांचित तन से श्री रघुनन्दन ने जानकी की स्तुति कर क्रुद्ध महादेवी को प्रसन्न किया।

भारद्वाज महाभाग यश्चैतस्तोत्रमद्भुतम् ।
शृणुयाद्वा पठेद्वापि स याति परमं पदम् ॥१५४॥

सुनो हे सुभग ब्राह्मण भारद्वाज मुनि श्रेष्ठ पावन ।
करे जो पठन पाठन यह सहस्त्रनाम पाए निर्मोचन ।। (१५४)

भावार्थः हे सौभाग्यशाली पवित्र श्रेष्ठ मुनि ब्राह्मण भारद्वाज सुनो। जो भी इस सहस्त्रनाम का पठन पाठन करता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

ब्रह्मक्षत्रियविड्योनिर्ब्रह्म प्राप्नोति शाश्वतम् ।
शूद्रः सद्गतिमाप्नोति धनधान्यविभूतयः ॥१५५॥

पाए गति शाश्वत ब्रह्म वैश्य क्षत्रिय और ब्राह्मन ।
पा सके शूद्र सद्गति धन-धान्य ऐश्वर्य इस भुवन ।। (१५५)

भावार्थ: वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण को शाश्वत (परम) ब्रह्म गति प्राप्त होती है। शूद्र को पृथ्वी लोक में सद्गति, धन-धान्य और ऐश्वर्य मिलता है।

भवन्ति स्तोत्रमहात्म्यादेतत्स्वस्त्ययनं महत् ।
मारीभये राजभये तथा चोराग्निजे भये ॥१५६॥

सहस्त्रनाम माँ जानकी समझो श्रोत आनंद पावन ।
करे दूर भय सम महामारी अग्नि और प्रशासन ।। (१५६)

भावार्थ: माँ जानकी के सहत्रनाम को पवित्र (परम) आनंद का श्रोत समझो। यह महामारी, अग्नि और प्रशासन (राजकीय) समान भय से दूर करता है।

व्याधीनां प्रभवे घोरे शत्रूत्थाने च सङ्कटे ।
अनावृष्टिभये विप्र सर्वशान्तिकरं परम् ॥१५७॥

दे शान्ति और करे करे भय-मुक्त इसका पठन पाठन ।
महाघोर व्याधि अनावृष्टि अथवा संकट हेतु द्विषन ।। (१५७)

भावार्थ: इसका पठन पाठन शान्ति देता है तथा महाघोर व्याधि, अनावृष्टि अथवा शत्रुओं द्वारा संकट से भय-मुक्त करता है।

यद्यदिष्टतमं यस्य तत्सर्वं स्तोत्रतो भवेत् ।
यत्रैतत्पठ्यते सम्यक् सीतानामसहस्रकम् ॥१५८॥

हैं सीता इष्ट केंद्र इस सहस्त्रनाम स्तोत्र पावन ।
हों पूर्ण इच्छा करे जो जन यह स्तोत्र पठन पाठन ।। (१५८)

भावार्थ: इस पवित्र सहस्त्रनाम स्तोत्र के केंद्र में सीता इष्ट हैं। जो भी प्राणी इस स्तोत्र का पठन पाठन करेगा, उसकी इच्छाएं पूर्ण होंगी।

रामेण सहिता देवी तत्र तिष्ठत्यसंशयम् ।
महापापातिपापानि विलयं यान्ति सुव्रत ॥१५९॥

हैं माँ सीता विद्यमान सदैव सहित श्री रघुनन्दन ।
हों नष्ट अघ घोर द्विज करें जब स्तोत्र श्रवण पठन ।। (१५९)

भावार्थ: हे ब्राह्मण, श्री राम के साथ सदैव माँ सीता विद्यमान हैं। इस स्तोत्र के पढ़ने और सुनने से महापाप नष्ट हो जाते हैं।

इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये अद्भुतोत्तरकाण्डे सीतासहस्रनामस्तोत्रकथनं नाम पञ्चविंशतितमः सर्गः ॥

इस प्रकार महर्षि वाल्मीकि कृति मूल महाकाव्य अद्भुत रामायण के उत्तर कांड में सीता सहस्रनाम स्त्रोत पाठ का पच्चीसवाँ अध्याय समाप्त हुआ।

श्री ललितासहस्त्रनाम हिंदी काव्य

प्रार्थना

श्रुति में ऐसा वर्णन है कि जब जगदम्बा ललिता-त्रिपुर-सुंदरी ने भण्डासुर का वध कर देवराज इंद्र पर कृपा की तथा समस्त देवताओं को भय मुक्त किया, तद्पश्चात महर्षि अगस्त्य ने माँ की प्रशंसा में श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् की रचना की। इस रचना को उन्होंने सर्व प्रथम भगवान् हयग्रीव (भगवान् विष्णु के रूप) के समक्ष प्रकट किया, इसी कारण इसे भगवान् हयग्रीव एवं महर्षि अगस्त्य के संवाद के रूप में भी दर्शाया गया है।

सनातन संस्कृति में श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का विशेष महत्व है। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् एक ऐसा पवित्र स्तोत्रम् है जिसमें देवी ललिता-त्रिपुर-सुंदरी (आकाश, भूमि व पाताल रुपी तीनों लोकों की सुंदर सर्वोच्च ऊर्जा) के सहस्र नाम सम्मिलित हैं। श्री विद्या पूजा प्रणाली के अनुसार देवी ललिता का निवास बिन्दु (श्री चक्र या महा मेरु का बीज चक्र) में है जो कि कुल लौकिक ऊर्जा के उपरिकेंद्र का प्रतीक है तथा जो सभी जीवों में विस्तारित होता है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार सर्वोच्च देवी के प्रतीकात्मक रूप महामेरु (त्रि-आयामी, श्री चक्र यंत्र का जयाशमतीय रूप) की पूजा करने से स्वास्थ्य, धन, समृद्धि, समग्र सफलता, मानसिक शांति, पारवारिक सुख आदि प्राप्त होता है तथा आस पास स्थित नकारात्मक ऊर्जा का शमन होकर इच्छाओं की पूर्ति होती है। माँ ललिता आत्मा की उल्लासपूर्ण, क्रियाशील और प्रकाशमय अभिव्यक्ति हैं। वह मुक्त चेतना हैं जिसमे कोई राग द्वेष नहीं। वह आत्मस्थित हैं। वह स्वतः ही उल्लासपूर्ण, उत्साह से भरी हुई हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् में हम देवी माँ के एक सहस्त्र नामों का उच्चारण करते हैं। हर नाम का अपना एक महत्त्व है। यदि हम चन्दन के पेड़ को स्मरण करते हैं तो हम उसके इत्र की स्मृति को भी स्मरण करते हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् में देवी के प्रत्येक नाम से देवी का कोई गुण या विशेषता बताई गई है। हमारे जीवन के विभिन्न पड़ावों में, बालपन से किशोरावस्था, किशोरावस्था से युवावस्था, और इसी प्रकार, हमारी आवश्यक्ताएं और इच्छाएं भी बदलती रहती हैं। इस सब के साथ हमारी चेतना की अवस्था में भी महत्वपूर्ण बदलाव होते रहते हैं। जब हम प्रत्येक नाम का उच्चारण करते हैं, तब वह गुण हमारी चेतना में जागृत होते हैं और जीवन में आवश्यक्तानुसार प्रकट होते हैं। माता श्री ललिताम्बा के नाम के पाठ से हम अपने भीतर विभिन्न गुणों को जागृत करके उन गुणों को अपने चारों ओर के संसार में प्रकट

होते देख और समझ पाने की शक्ति पाते हैं। हम प्राचीन ऋषियों के आभारी हैं जिन्होंने दिव्यता का आराधन उसके संपूर्ण वैविध्य गुणों के साथ किया। जिन्होंने हमारे जीवन को पूर्णता से जीने का मार्ग प्रशस्त किया। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ स्वयं में ही एक अनुष्ठानात्मक विधि है। ये मन को शुद्ध करके चेतना का उत्थान करता है। इस जप से हमारा चंचल मन शांत होता है। मन ईश्वर से एक रूप और उनके गुणों के प्रति एकाग्र होता है। मन का भटकना रुक जाता है। यह विश्राम का सामान्य रूप है।

श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् में भाषा का सौंदर्य अद्भुत है। भाषा अत्यंत मोहक है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् में सामान्य और गहरे अर्थ दोनों ही चित्ताकर्षक हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् पाठक को माँ के एक सहस्र नाम में वर्णित विभिन्न गुणों की पहचान कराकर उनके दोनों प्रकार के (गूढ़ और सामान्य) अर्थों की झलक देने के उद्देश्य को पूरा करती है। इस ग्रन्थ में माँ ललिताम्बा के विशिष्ट गुण के विभिन्न सन्दर्भ को अत्यंत सुंदर विधि से पिरोया गया है। हम मनुष्यों का जन्म इस धरा पर एक अत्यंत सुन्दर और महान लक्ष्य के लिए हुआ है। जब श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का श्रद्धा और विश्वास के साथ पाठ किया जाता है, तब माता ललिताम्बा हमारी चेतना को शुद्धि प्रदान कर सकारात्मकता, क्रियाशीलता और उल्लास का भंडार बना देती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् के पाठ करते हुए मन को अत्यंत शांति मिलती है। अवांछित चिंताओं और विचलित करने वाले विचारों से मुक्ति मिलती है। इससे मन में सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने और कुशलता सीखने की शक्ति प्राप्त होती है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् जीवन में बाधाओं को दूर करने का एक अद्भुत उपाय है। यह मनुष्य के जीवन में उपस्थित महत्वपूर्ण योजनाओं को शीघ्रता से और मार्ग में बाधाओं और चुनौतियों को दूर करने में सहायता करता है। बढ़ती ऊर्जा स्तर और आत्मविश्वास के साथ मनुष्य अपने जीवन के लक्ष्यों की ओर शीघ्रता पूर्वक और ऊर्जावान रूप से आगे बढ़ते हैं।

श्रुति में ऐसा उल्लेख है कि श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् के पाठ से इष्टदेवी प्रसन्न हो जाती हैं और उपासक की कामना को पूर्ण करती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् के जप से दुष्ट ग्रहों की बुरी दशा के कारण आ रही कठिनाईयों से विश्राम मिलता है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् से अभिमंत्रित भस्म को धारण करने से सभी ऋतुजनित रोग शान्त हो जाते हैं। इसी प्रकार श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् से अभिमंत्रित जल

से अभिषेक करने से दुःखी मनुष्यों की पीड़ा शांत हो जाती है। सुधासागर के मध्य में श्री ललिताम्बा का ध्यान कर पंचोपचार पूजन करके श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् पाठ करने या सुनने से आन्तरिक व्याधियों से विश्राम एवं सर्प आदि की विष पीड़ा भी शांत हो जाती है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् एवं श्री ललितासहस्रनामावली के पाठ से आकस्मिक मृत्यु और दुर्घटना का भय नहीं रहता है। श्री श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक को देखकर सभी लोग मुग्ध होने लगते है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक के शत्रुओं को पक्षीराज भगवान शरभेश्वर नष्ट कर देते हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक के विरुद्ध अभिचार करने वाले शत्रु को माँ प्रत्यंगिरा नष्ट कर देती हैं। साधक को क्रूर दृष्टि से देखने वाले वैरी को मार्तंड भैरव अंधा कर देते हैं। जो श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक की चोरी करता है उसे क्षेत्रपाल देवता दण्ड देते हैं। यदि कोई विद्वान विद्वता के गर्व में आकर श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक से शास्त्रार्थ करता है, तो माता उसका वाकस्तम्भन कर देती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने वाले साधक के शत्रु चाहे वह राजा ही क्यों न हो, माँ दण्डिनी उसे नष्ट कर देती हैं। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने से व्यक्ति यश एवं प्रसिद्धि को प्राप्त कर लेता है। व्यक्ति को जीवन की मूलभूत आवश्यक्ताओं के लिए दुःखी नहीं होना पड़ता। वन्ध्या (बाँझ) स्त्री को श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् से अभिमंत्रित माखन खिलाने से वह शीघ्र गर्भ धारण करती है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने से घर का वातावरण शुद्ध होता है। पाठ करने वाले व्यक्ति के शरीर का एक-एक कण अद्भुत ऊर्जा और ओज से भर जाता है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का निष्काम पाठ करने से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है, जिससे साधक आवागमन के बंधन से मुक्त हो जाता है। श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् का पाठ करने से धनकामी को धन, विद्यार्थी को विद्या एवं यशकामी को यश की प्राप्ति होती है।

माँ ललिता माहेश्वरी शक्ति स्वरुपिणी षोडशी सबसे मनोहर श्री विग्रह वाली सिद्ध देवी हैं। महाविद्याओं में भगवती षोडशी का चौथा स्थान है। षोडशी महाविद्या को श्रीविद्या भी कहा जाता है। षोडशी महाविद्या के ललिता, त्रिपुरा, राज-राजेश्वरी, महा-त्रिपुर-सुन्दरी, बालापञ्चदशी आदि अनेक नाम हैं। लक्ष्मी, सरस्वती, ब्रह्माणी-तीनों लोकों की सम्पत्ति एवं शोभा का ही नाम श्री है।

'त्रिपुरा' शब्द का अर्थ बताते हुए 'शक्तिमहिम्न स्तोत्रम्' में कहा गया है:

'तिसृभ्यो मूर्तिभ्यः पुरातनत्वात् त्रिपुरा ।

अर्थात: ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश, इन तीनों से जो पुरातन है, वही त्रिपुरा है।

'त्रिपुरार्णव' ग्रन्थ में कहा गया है:

नाडीत्रयं तु त्रिपुरा सुषुम्ना पिङ्गला विडा ।
मनो बुद्धिस्तथा चित्तं पुरत्रयमुदाहृतम् ।
तत्र तत्र वसत्येषा तस्मात् तु त्रिपुरा मता ।।

अर्थात: सुषुम्ना, पिंगला और इडा, ये तीन नाडियां हैं। मन, बुद्धि एवं चित्त, ये तीन पुर हैं। इनमें रहने के कारण इनका नाम त्रिपुरा है।

सोलह अक्षरों के मन्त्र वाली ललिता देवी की अङ्गकान्ति उदीयमान सूर्यमण्डल की आभा की भांति है। षोडशी माता चार भुजाएं एवं तीन नेत्र वाली हैं। ये शान्त मुद्रा में लेटे हुए सदाशिव पर स्थित कमल के आसन पर आसीन हैं। भगवती षोडशी के चारों हाथों में क्रमश: पाश, अङ्कुश, धनुष और बाण सुशोभित हैं। वर देने के लिये सदा-सर्वदा तत्पर भगवती षोडशी का श्रीविग्रह सौम्य और हृदय दया से आपूरित है।
प्रशान्त हिरण्यगर्भ ही शिव हैं और उन्हीं की शक्ति षोडशी हैं। तन्त्रशास्त्रों में महाविद्या षोडशी देवी को पञ्चवक्त्रा अर्थात् पाँच मुखों वाली बताया गया है। चारों दिशाओं में चार मुख, और एक ऊपर की ओर मुख होने से इन्हें पञ्चवक्त्रा भी कहा जाता है। देवी के पाँच मुख, तत्पुरुष, सद्योजात, वामदेव, अघोर और ईशान, शिव के पाँच रूपों के प्रतीक हैं। पाँचों दिशाओं के रंग क्रमशः हरित, रक्त, धूम्र, नील और पीत होने से ये मुख भी इन्हीं रंगों के हैं। देवी षोडशी के दस हाथों में क्रमश: अभय, टंक, शूल, वज्र, पाश, खड्ग, अंकुश, घण्टा, नाग और अग्नि हैं। षोडश कलाएँ पूर्णरूप से विकसित होने के कारण ये महाविद्या षोडशी कहलाती हैं।

भैरवयामल तथा शक्तिलहरी में षोडशी मां की उपासना का विस्तृत परिचय मिलता है। दुर्वासा ऋषि श्रीविद्या के परमाराधक हुए हैं। षोडशी महाविद्या की उपासना

श्रीचक्र में होती है। श्रीयन्त्र को यन्त्रराज की संज्ञा दी गई है इसमें दसों महाविद्याओं का अर्चन सम्पन्न हो जाता है। यदि पूजा के लिए कोई विग्रह उपलब्ध न हो तो मान्यता है कि शालग्राम, पारद शिवलिंग और श्रीयन्त्र इन तीनों में से कोई एक विग्रह भी उपलब्ध हो तो उसमें ही समस्त देवी-देवताओं की आराधना सम्पन्न की जा सकती है।

माँ ललिता से हम प्रार्थना करते हैं कि वह पाठकों की समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर उन्हें सुख, शान्ति, वैभव, धन-धान्य, आत्मिकता प्रदान करें एवं भव सागर से मुक्त करें।

श्रीललिता-महात्रिपुर-सुन्दरी: संक्षिप्त परिचय

हिंदू पौराणिक कथाओं (ब्रह्म-पुराण) में देवी त्रिपुर-सुंदरी के उत्पत्ति का रहस्य विस्तार पूर्वक बताया गया है।

माँ सती ने प्रजापति दक्ष के यज्ञ में भगवान महादेव का भाग न देखकर योगाग्नि से अपना शरीर त्याग दिया था। सती वियोग के पश्चात भगवान महादेव सर्वदा ध्यानमग्न रहते थे। उन्होंने अपने संपूर्ण कर्म का परित्याग कर दिया था जिसके कारण तीनों लोकों के संचालन में व्याधि उत्पन्न हो रही थी। उधर तारकासुर ने ब्रह्मदेव की अत्यंत कठिन साधना कर उनसे वर प्राप्त किया था कि उसकी मृत्यु भगवान महादेव के पुत्र द्वारा ही हो। वह एक प्रकार से अमर हो गया था। माँ सती के देह त्याग करने के पश्चात भगवान महादेव संसार से विरक्त हो घोर ध्यान में चले गए थे। उनकी अर्धांग्नी न होने से उनके पुत्र की संभावना भी नहीं थी। तारकासुर ने तीनों लोकों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर समस्त देवताओं को प्रताड़ित कर स्वर्ग से निकाल दिया। वह समस्त भोगों को स्वयं ही भोगने लगा था।

इसी समय माँ सती ने हिमालय के गृह में माँ पार्वती के रूप में पुनर्जन्म लिया तथा नारद जी के आवाह्न पर भगवान महादेव को पति रूप में पाने हेतु उन की कठोर साधना की।

सभी देवगण तारकासुर के अत्याचार से भयभीत हो अब चाहते थे कि भगवान् महादेव अपनी साधना से जागें और माँ पार्वती से विवाह करें ताकि उनके पुत्र इस असुर तारकासुर का वध कर सकें। देवताओं ने भगवान महादेव को ध्यान से जगाने हेतु कामदेव को कैलाश भेजा। कामदेव ने कुसुम-सर-नमक मोहिनी वाण से भगवान शिव शंकर पर प्रहार किया। परिणामस्वरूप भगवान महादेव का ध्यान भंग हो गया। भगवान् महादेव अपनी तपस्या के भंग होने से कामदेव पर अत्यंत क्रोधित हो गए। तब महादेव ने अपना तीसरा नेत्र खोल दिया। देखते ही देखते भगवान महादेव के तीसरे नेत्र से उत्पन्न क्रोध-अग्नि ने कामदेव को जला कर भस्म कर दिया। कामदेव की पत्नी रति द्वारा अत्यंत दारुण विलाप करने पर भगवान महादेव ने तब कामदेव को पुनः द्वापर युग में भगवान कृष्ण के पुत्र रूप में जन्म धारण करने का वरदान दिया। सभी देवताओं तथा रति के जाने के पश्चात भगवान महादेव के एक गण द्वारा कामदेव

की भस्म से एक मूर्ति निर्मित की गई। उस निर्मित मूर्ति से एक पुरुष का प्राकट्य हुआ। उस प्राकट्य पुरुष ने भगवान महादेव की अति उत्तम स्तुति की। स्तुति से प्रसन्न हो भगवान महादेव ने भण्ड (अच्छा)! भण्ड (अच्छा)! कहा। तदन्तर भगवान महादेव द्वारा उस पुरुष का नाम भण्ड रखा गया तथा उसे ६० हजार वर्षों तक राज करने का वरदान दिया। चूँकि भण्ड की उत्पत्ति भगवान महादेव के क्रोध द्वारा भाष्मित कामदेव की भस्म से हुई थी, अतः भण्ड पूर्ण रूप से तमोगुण सम्पन्न था। उसकी इस आसुरीय प्रकृति के कारण उसका नाम भण्डासुर पड़ गया।

भण्डासुर को भगवान महादेव द्वारा वरदान मिलने की बात कुछ ही क्षणों में सम्पूर्ण भुवनों में फैल गयी। दैत्य एवं दानव वंश के गुरु शुक्राचार्य यह समाचार पाकर भण्डासुर के पास सभी दैत्य एवं दानव वंश के समुदाय के साथ मिलने आए। गुरु शुक्राचार्य ने दानव मय के द्वारा शोणितपुर को फिर से सुसज्जित कराकर वहाँ भण्डासुर का अभिषेक कर दिया।

प्रारम्भ में भण्डासुर भगवान महादेव की अर्चना करता और उनके आदेश पर चलता था। उसके अनुयायी दैत्य वंश के अन्य सम्राट एवं प्रजा भी धर्म का अनुसरण करते थे। प्रत्येक घर वेदों की ध्वनि से गुंजित रहता था। घर घर में यज्ञ होता था। इस तरह सौभाग्यशाली भण्ड के सुख-समृद्धि के साठ हजार वर्ष देखते देखते बीत गये ।

भण्डासुर बाद में माया की चपेट में पड़ गया। अब चार पत्नियों से भी उसे संतोष न था। वह एक दिव्य वारांगना के मोह में पड़ गया। उसका अनुसरण करते हुए उसके मन्त्री आदि अनुयायी भी विलासी बनते चले गये। अब न किसी को भगवान महादेव याद आते, न पूजा-पाठ ही। यज्ञ और वेद के उच्चारण भी अब बंद हो गये थे।

वह शनैः शनैः तीनों लोकों पर भयंकर उत्पात मचाने लगा। देवराज इंद्र के स्वर्ग समान ही भण्डासुर ने अपने राज्य का निर्माण किया तथा राज करने लगा। वह अपने राज्य की सीमाएं बढ़ाने के लालच में पड़ गया। तदन्तर भण्डासुर ने स्वर्ग लोक पर आक्रमण कर देवराज इन्द्र तथा स्वर्ग राज्य को चारों ओर से घेर लिया। भयभीत इंद्र ब्रह्मऋषि नारद की शरण में गए तथा इस समस्या के निवारण हेतु उपाय पूछा। ब्रह्मऋषि नारद ने आदि-शक्ति की यथा विधि आराधना करने का परामर्श दिया। तब देवराज इंद्र ने

ब्रह्मऋषि नारद द्वारा बताये हुए साधना पथ का अनुसरण करते हुए देवी की आराधना प्रारम्भ की।

इधर गुरु शुक्राचार्य भण्डासुर के पास आये और उसे सावधान करते हुए उन्होंने कहा, 'हे भण्डासुर, देवता अपनी विजय के लिये हिमालय में आदि-शक्ति की उपासना कर रहे हैं। यदि आदि-शक्ति उनकी आराधना से प्रसन्न हो गईं तो तुम कहीं के न रह जाओगे। अतः तुम शीघ्र ही देवताओं की आराधना में विघ्न डालो।'

गुरु शुक्राचार्य के आदेश पर तब भण्डासुर ने दल-बल के साथ देवताओं पर चढ़ाई कर दी। आदि-शक्ति ने अपनी शरण में आये हुए देवताओं की रक्षा के लिये ज्योति की एक अलंघ्य दीवार खड़ी कर दी। भण्डासुर यह देखकर क्रोध से जल उठा। उसने दानवास्त्र चलाकर उसे तोड़ डाला। परंतु तत्क्षण ही वहाँ पुनः अलंघ्य दीवार खड़ी हो गयी। इस बार भण्डासुर ने वायव्यास्त्र से इसे तोड़ा। किंतु तत्क्षण भण्डासुर ने उसी दीवार को फिर से खड़ी देखा। दीवार तोड़ने में समय लगता था, किंतु खड़ी होने में समय नहीं लगता था। भण्डासुर ने अंततः अपनी हार स्वीकार कर ली और वह वापस अपनी राजधानी शोणितपुर लौट आया।

युद्ध से हारकर भण्डासुर लौट तो अवश्य गया था, किंतु उसके भय से देवताओं की दशा दयनीय हो गयी थी। वह सोचते थे कि जिस दिन दीवार नहीं रहेगी उस दिन उनका भण्डासुर से बच सकना कठिन हो जायगा। कहीं छिपकर रहना भी असंभव हो हो गया था। अन्त में देवताओं ने निर्णय लिया कि या तो आदि-शक्ति दर्शन दें और हमारी रक्षा करें अथवा यहीं भण्डासुर के हाथों मारे जायें। उन्होंने अपनी आराधना और बढ़ा दी। हृदय की पुकार थी। आदि-शक्ति प्रकट हो गयीं। उनके अद्भुत दर्शन पाकर देवता कृतकृत्य हो गये। गद्गद होकर देवताओं ने माँ आदि-शक्ति की स्तुति की। ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उस समय वहां आ गये।

आदि-शक्ति का स्वरूप श्रृंगार देवी के रूप में था। ब्रह्मा ने उन्हें ललिता महा सुंदरी नाम से सम्बोधित किया। यह देवी तो माँ सती का ही स्वरुप है, यह विचारकर ब्रह्मा ने इनका विवाह भगवान महादेव से कराने का संकल्प किया। संकल्प करते ही सौन्दर्यसार के स्वरूप में भगवान महादेव कुमार बनकर वहाँ प्रकट हो गये। यह देखकर सब देवगण आनन्द विभोर हो गये। ब्रह्मा ने तब भगवान महादेव का नाम

कामेश्वर रख दिया। जब कामेश्वर आदि-शक्ति के सामने आए तब दोनों एक दूसरे को देखकर मुग्ध हो गये। ब्रह्मा ने उन दोनों का तब तुरंत विवाह करा दिया और आदि-शक्ति को उस पुर की अधीश्वरी बना दिया। शक्ति और शक्तिमान् का मेल हो जाने से वहाँ अखण्ड आनन्द की वृष्टि होने लगी। बहुत दिनों तक उत्साह के साथ विवाहोत्सव मनाया गया।

उधर भण्डासुर ने सारे विश्व को त्रस्त कर रखा था। उसने अहंकार में आकर अपने जनक भगवान महादेव की भी घोर अवहेलना करना प्रारम्भ कर दिया था। विश्व की रक्षा के लिये भगवान महादेव के निर्देश पर तब देवी ललिताम्बा ने भण्डासुर के साथ युद्ध किया।

देवी ललिताम्बा के साथ युद्ध में भण्डासुर ने दैवीय अस्त्रों का प्रयोग किया। उस दुष्ट ने सर्व प्रथम 'पाषण्ड' नाम के दिव्य अस्त्र का प्रयोग किया। तब पराम्बा ने उसका प्रत्युत्तर 'गायत्री' नाम के अस्त्र से दिया और उसके प्रभाव को निरस्त किया। जब भण्डासुर ने 'स्मृतिनाश' अस्त्र का प्रयोग किया, तब माँ ने 'धारणा' अस्त्र द्वारा उसे नष्ट किया। जब भण्डासुर ने 'यक्ष्मा' आदि रोगरूप अस्त्रोंका प्रयोग किया, तब पराम्बा ने 'अच्युत, अनन्त, गोविन्द' (अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारण भेषजात्) नाम रूप मन्त्रों से उसका निवारण किया। इसके बाद भण्डासुर ने हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, रावण, कंस और महिषासुर को उत्पन्न किया। तब ललिताम्बा ने अपनी दसों अंगुलियों के नख से वराह, नृसिंह, राम, कृष्ण, दुर्गा आदि को उत्पन्न किया। युद्ध के अन्तिम भाग में पराम्बा ने भण्डासुर का उद्धार 'कामेश्वर' अस्त्र से किया। माता ललिताम्बा के अस्त्र-शस्त्र इक्षु दण्ड और पुष्प थे। कामेश्वर का अस्त्र भी काम–बीजरूप प्रेमतत्त्व ही था।

इस तरह माँ ने भण्डासुर का वध कर देवराज इंद्र पर कृपा की तथा समस्त देवताओं को भय मुक्त किया।

माँ श्रीललिता-त्रिपुर-सुंदरी ध्यान

माँ देवी ललिता का ध्यान बहुत ही उज्ज्वल व प्रकाशमान है। माँ ललिता देवी की पूजा से समृद्धि की प्राप्त होती है ।

माँ की पूजा तीन स्वरूपों में होती है:

१ . बाल सुंदरी: ८ वर्षीया कन्या रूप में।

अरुणकिरण-जालै रञ्जितासावकाशा ।
विधृतजप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता ॥
इतरकर-वराढ्या फुल्ल-कलार-संस्था ।
निवसतु हृदि बाला नित्य कल्याणरूपा ॥

देवी बाला त्रिपुर शोभन ।है सुन्दर अत्यंत आभा तन ।।
मंडल सूर्य सम अरुणोदय ।रक्त वर्ण अति हार्य हृदय ।।
हैं रंगी रंग लाल सब देशन ।अंतरिक्ष हेतु आभा किरन ।।
कर रूप कमल चार शोभन ।जपमाल ग्रन्थ मुद्रा तलन ।।
अभयदान और स्वस्त्ययन ।हैं विराजित माँ सम सुमन ।।
रक्त वर्ण पुष्पित पूर्ण पद्म ।करतीं हुईं संसार शुभम ।।
हे बाला सुंदरी सनातन ।करो निवास हिय सुखदायन ।।

भावार्थ: *भगवती श्री बाला-त्रिपुर-सुन्दरी के शरीर की आभा अरुणोदय काल के सूर्य-बिम्ब के समान रक्त-वर्ण की है। उस आभा की किरणों से सभी दिशाएँ एवं अन्तरिक्ष लाल रङ्ग से रँगे हुए हैं। चार कर-कमलों में जप-माला, पुस्तक, अभय और वर-मुद्राएँ हैं। पूर्ण खिले हुए रक्त कमल के पुष्प पर माँ विराजमान हैं। ऐसी श्री बाला जगत् का नित्य कल्याण करने वाली हैं। वे मेरे हृदय में निवास करें।*

2. षोडशी त्रिपुर सुंदरीः १६ वर्षीया सुंदरी।

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत् तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णलनचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।।

सम सिन्दूर अरुण निरूपन। माणिक्य जटित मुकुट द्योतन।।
शोभित सोम भाल त्रिनयन। खिलती मुस्कान मंडल आनन।।
स्थूल वक्ष पूरित एक हस्त। मधु कलश परिपूर्ण अमृत।।
द्वितीय कर लाल कमल धारन। रत्नमय घट पर स्थित चरन।।
पराम्बिका जो शम निरूपन। करो ध्यान उन देवी भूजन।।

भावार्थः *सिन्दूर के समान अरुण स्वरुप वाली, माणिक्य जटित प्रकाशमान मुकुट, चन्द्रमा से सुशोभित मस्तक वाली, तीन नेत्रों से सम्पन्न, मुख मण्डल पर खिलती हुई मुस्कान, स्थूल वक्ष वाली, जिनके एक हाथ में अमृत से परिपूर्ण मधु कलश तथा दूसरे हाथ में लाल कमल है, रत्नमय घट पर चरण सुशोभित हैं, ऐसी शान्त स्वरुप भगवती पराम्बिका का प्राणी ध्यान करें।*

३. ललिता त्रिपुर सुंदरीः युवा स्वरूप।

ध्यायेत्पद्मासनस्थां पद्मपत्रायताक्षी वराङ्गीम्।
सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानी विकसितवदनां हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां श्रीविद्यां शान्तमूर्ति सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम्॥

विराजमान जो पद्म आसन। मुख मंडल आभा अति प्रसन्न ।।
सदृश कमल दल महत नयन। स्वर्ण समान है आभा तन ।।
करतीं पीत वस्त्र धारण। स्वर्णिम पद्म हस्त सकरुण ।।
जिनके अति सुन्दर अंग तन। अलंकृत अंग नाना आभरन ।।
दें अभय दान सदा भक्तगण। रखें दया भाव प्रति सुजन ।।
शांत मूर्ति अर्चित देवगन। करें प्रदान धन-धान्य भूजन ।।
करो उन श्री विद्या निरूपण। ध्यान भवानी समस्त भूजन ।।

भावार्थ: *जो कमल के आसन पर विराजमान हैं, मुख मण्डल आभा अति प्रसन्न है, कमल-दल के सदृश विशाल नेत्र वाली हैं, स्वर्ण के समान शरीर की आभा है, पीतवर्ण वस्त्र धारित हैं, कोमल हाथ में स्वर्णिम कमल है, अति सुन्दर शरीर के अंग है।, नाना प्रकार के आभूषणों से अलंकृत हैं, भक्तों को सदा अभय दान देने वाली हैं, सज्जनों के प्रति कोमल स्वभाव रखने वाली हैं, शान्त मूर्ति, देवताओं से नमस्कृत तथा सम्पूर्ण सम्पदा प्रदान करने वाली हैं, उन श्री विद्या भवानी का हे प्राणी, ध्यान करो।*

माँ की दीक्षा और साधना भी इसी क्रम में की जाती है।

बृहन्नीला तंत्र के अनुसार काली के दो भेद कहे गए हैं, कृष्ण वर्ण और रक्त वर्ण। कृष्ण वर्ण काली दक्षिण कालिका स्वरुप है और रक्त वर्ण त्रिपुर सुंदरी। माँ ललिता त्रिपुर सुंदरी रक्त काली स्वरूपा मानी जाती हैं।

महा विद्याओं में कोई स्वरुप भोग देने में प्रधान है तो कोई स्वरूप मोक्ष देने में, परंतु ललिता त्रिपुर सुंदरी अपने साधक को दोनों ही देती हैं।

शुक्ल पक्ष के समय प्रात: काल माता की पूजा उपासना की जाती है। कालिका-पुराण के अनुसार देवी की दो भुजाएं हैं जो गौर वर्ण की रक्तिम कमल पर विराजित हैं।

ये श्री यंत्र की मूल अधिष्ठात्री देवी हैं। श्री यंत्र को पंचामृत से स्नान करवा कर यथोचित पूजन और श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम्, ललितात्रिशतिललितोपाख्यान और श्री सूक्त का पाठ करने से सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों ही लाभ होते हैं।

श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् - ध्यानम्

न्यासः

अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य । वशिन्यादिवाग्देवता ऋषयः। अनुष्टुप्छन्दः । श्रीललितापरमेश्वरी देवता । श्रीमद्वाग्भवकूटेति बीजम् । मध्यकूटेति शक्तिः । शक्तिकूटेति कीलकम् । श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी-प्रसादसिद्धिद्वारा चिन्तितफलावाप्त्यर्थे जपे विनियोगः ।

श्रीललिता देवी स्तोत्रम् । सहस्त्रनाम मन्त्र माल्यम् ।।
कथित वशिन्याजोदि देवगन । एवं अन्य ऋषि अति पावन ।।
अनुष्टुप छंद अति उत्कृष्टन । करूँ मैं इन परमेश्वरी नमन ।।
है यही माँ पंचदशी मन्त्र । ईश्वर रूप काव्य शक्ति तंत्र ।।
करे जो यह महामंत्र जपन । पाए वांछित फल इस भुवन ।।

भावार्थः *श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम् स्तोत्र माला-मन्त्र वशिन्यादि देवता एवं अन्य अति पावन ऋषियों द्वारा कथित एक उत्कृष्ट अनुष्टुप छंद है। मैं इन परमेश्वरी को नमन करता हूँ। यही माँ पंचदसी मन्त्र, श्री ईश्वर रूप, काव्य एवं शक्ति तंत्र है। जो इस महामंत्र का जपन करेगा, उसे इस संसार में वांछित फलों की प्राप्ति होगी।*

ध्यानम्

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

करें हम उन दिव्य माँ को नमन । चढ़ा लाल सिन्दूर जिनके तन ।।
युक्त त्रिनेत्र सिर मुकुटिन् । अर्घ्य स्वर्ण जड़ित मणिक रत्न ।।
समान आभा सोम द्योतन । है चपल स्मित जिनके आनन ।।

दयावान रूप अति सुन्दर तन । एक कर रत्न जड़ित कलश स्वर्न ।।
जो परिपूर्ण द्रव्य अमृत । है पुष्प पद्म द्वितीय हस्त ।।

भावार्थः *हम उन माँ का ध्यान करते हैं जिनके तन पर लाल सिन्दूर चढ़ा हुआ है, जिनके तीन नेत्र हैं, जो मष्तिष्क पर मणिक जड़ित ताज पहने हुए हैं, जो चन्द्रमा के आभामंडल के समान देदीप्यमान हैं, जिनके मुख पर चपल मुस्कुराहट है, जिनका दयावान रूप है, जिनके अंग अत्यंत सुन्दर हैं, जिनके एक हाथ में रत्न-जड़ित स्वर्ण कलश है जिसमें द्रव्य अमृत भरा हुआ है और दूसरे हाथ में कमल पुष्प है।*

अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशपुष्पबाणचापाम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयुखैः अहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

करूँ मैं उन देवी पूजन । विश्व साम्राज्ञी माँ महन ।।
जिनका सुन्दर लाल वर्ण तन । हैं करुणामय जिनके नयन ।।
सुशोभित जिनके कर बंधन । अंकुश धनुष और बाण सुमन ।।
युक्त बल आभामान दिव्य । जिनका ब्रह्म स्वरुप महात्मय ।।

भावार्थः *मैं उन महान विश्व-साम्राज्ञी माँ का पूजन करता हूँ जिनका वर्ण सुन्दर लाल है, जिनके नेत्रों में करुणा भरी है, जिनके हाथों में बंधन, अंकुश, धनुष एवं पुष्प-बाण सुशोभित हैं, जो आभामान शक्तियों से युक्त हैं तथा जिनका ब्रह्म स्वरुप महात्मय है।*

ध्यायेत्पद्मासनस्थां विकसितवदनां पद्मपत्रायताक्षीं
हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां वराङ्गीम् ।
सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानीं
श्रीविद्यां शान्तमूर्तिं सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम् ॥

करूँ मैं दिव्य माँ का पूजन । है जिनका कमल पत्र आसन ।।
स्वर्ण निर्मित है सिंहासन । पद्म पुष्प जिनके कर अभ्यर्चन ।।
करें दूर भय वह स्व-भक्तगण । शांति एवं विद्या निरूपण ।।
करें सब देव देवी अर्चन । करें प्रदान भक्त धान्य-धन ।।

भावार्थः *मैं दिव्य माँ का पूजन करता हूँ जो कमल-पत्र पर आसीन हैं, जिनका सिंहासन स्वर्ण से निर्मित है, जिनके हाथ में कमल पुष्प सुशोभित है, जो अपने भक्तों के भय को दूर करती हैं, जो स्वयं शांति एवं विद्या का स्वरुप हैं, जो सभी देवी-देवताओं द्वारा अर्चित हैं, जो अपने भक्तों को धन-धान्य प्रदान करती हैं।*

सकुङ्कुमविलेपनामलिकचुम्बिकस्तूरिकां
समन्दहसितेक्षणां सशरचापपाशाङ्कुशाम् ।
अशेषजनमोहिनीमरुणमाल्यभूषाम्बरां
जपाकुसुमभासुरां जपविधौ स्मरेदम्बिकाम् ॥

करूँ मैं दिव्य माँ का पूजन । सदैव स्मित जिनके आनन ।।
सुशोभित जिनके कर बंधन । अंकुश धनुष और बाण सुमन ।।
जिनके कंठ लाल रंग माल्यम् । सुशोभित विभिन्न आभरणम् ।।
है मष्तिष्क कुमकुम मण्डन । अति सुन्दर जिनका लाल तन ।।
सुशोभित सम पुष्प पूजन । है अति सुगन्धित जिनका तन ।।

भावार्थः *मैं दिव्य माँ का पूजन करता हूँ जो सदैव मुस्कुराती रहती हैं, जिनके हाथों में धनुष, बाण, बंधन एवं अंकुश सुशोभित हैं, जो लाल रंग की माला एवं विभिन्न आभूषणों से सुशोभित हो रहीं हैं, जिनके मस्तिष्क पर कुमकुम सुशोभित है, जिनका अति सुन्दर लाल रंग का शरीर है और जिनका तन जप-पुष्प के समान सुशोभित और अति सुगन्धित है।*

अथ श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रम् – भावार्थ सहित

श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी ।
चिदग्नि-कुण्ड-सम्भूता देवकार्य-समुद्यता ॥ १॥

१. ***श्रीमाता:*** *श्री (धन-धान्य एवं ऐश्वर्य) देने वाली पवित्र माँ*
२. ***श्रीमहाराज्ञी:*** *ब्रह्माण्ड की साम्राज्ञी माँ*
३. ***श्रीमत्-सिंहासनेश्वरी:*** *सिंह के सिंहासन पर विराजमान माँ*
४. ***चिदग्नि-कुण्ड-सम्भूता:*** *ज्ञान की अग्नि से उत्पन्न परम सत्य माँ*
५. ***देवकार्य-समुद्यता:*** *देवों के सदैव कार्य करने वाली माँ*

उद्यद्भानु-सहस्राभा चतुर्बाहु-समन्विता ।
रागस्वरूप-पाशाढ्या क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला ॥ २॥

६. ***उद्यद्भानु-सहस्राभा:*** *सहस्त्रों सूर्य सम आभा वाली माँ*
७. ***चतुर्बाहु-समन्विता:*** *चतुर्भुजी माँ*
८. ***रागस्वरूप-पाशाढ्या:*** *प्रेम की रस्सी से बंधी हुई (प्रेम-स्वरूपा) माँ*
९. ***क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला:*** *अति आभा वाली क्रोध की देवी माँ*

मनोरूपेक्षु-कोदण्डा पञ्चतन्मात्र-सायका ।
निजारुण-प्रभापूर-मज्जद्ब्रह्माण्ड-मण्डला ॥ ३॥

१०. ***मनोरूपेक्षु-कोदण्डा:*** *मष्तिस्क को निरूपित करने वाले गन्ने से निर्मित धनुष धारणी माँ*
११. ***पञ्चतन्मात्र-सायका:*** *स्पर्श, गंध, श्रवण, स्वाद एवं दृष्टि - पञ्च धनुष धारिणी माँ*
१२. ***निजारुण-प्रभापूर-मज्जद्ब्रह्माण्ड-मण्डला:*** *भोर सूर्य भांति समस्त ब्रह्माण्ड को लाल आभा में डुबाने वाली माँ (अर्थात तन एवं मन को दीप्ति प्रदान करने वाली माँ)*

चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्कचा ।
कुरुविन्दमणि-श्रेणी-कनत्कोटीर-मण्डिता ॥ ४॥

*१३. **चम्पकाशोक-पुन्नाग-सौगन्धिक-लसत्कचा:** चम्पक एवं पुन्नागा के पुष्प के सुगन्धित इत्र को अपने केशों में धारण करने वाली (नाग स्वामिनी) माँ*
*१४. **कुरुविन्दमणि-श्रेणी-कनत्कोटीर-मण्डिता:** कुरविन्द के समान बहु (मूल्य) रत्नों से जड़ित मुकुट धारण करने वाली (श्रोणी अर्थात पार्वती) माँ*

अष्टमीचन्द्र-विभ्राज-दलिकस्थल-शोभिता ।
मुखचन्द्र-कलङ्काभ-मृगनाभि-विशेषका ॥ ५॥

*१५. **अष्टमीचन्द्र-विभ्राज-दलिकस्थल-शोभिता:** मष्तिष्क पर शुक्ल पक्ष अष्टमी के चन्द्रमा की भांति अर्ध-चंद्र मुकुट धारिणी (दीप्तिमान) माँ*
*१६. **मुखचन्द्र-कलङ्काभ-मृगनाभि-विशेषका:** चन्द्रमा की काली छाया के समान चमकती हुई कस्तूरी बिंदी मस्तिष्क पर धारण करने वाली (रवि समान आभा युक्त) माँ*

वदनस्मर-माङ्गल्य-गृहतोरण-चिल्लिका ।
वक्त्रलक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचना ॥ ६॥

*१७. **वदनस्मर-माङ्गल्य-गृहतोरण-चिल्लिका:** कामदेव की पलकों के समान आभूषण जैसी प्रदर्शित आभा वाली सुन्दर पलकों वाली (अद्वितीय)माँ*
*१८. **वक्त्रलक्ष्मी-परीवाह-चलन्मीनाभ-लोचना:** तालाब में तैरती मछली के चमकते नेत्रों के समान आभित नयनों वाली (मंगल दायक) माँ*

नवचम्पक-पुष्पाभ-नासादण्ड-विराजिता ।
ताराकान्ति-तिरस्कारि-नासाभरण-भासुरा ॥ ७॥

*१९. **नवचम्पक-पुष्पाभ-नासादण्ड-विराजिता:** चम्पक के नव-पुष्पण पुष्प के समान सुन्दर नासिका वाली (प्रशंसनीय) माँ*

२०. ***ताराकान्ति-तिरस्कारि-नासाभरण-भासुरा:*** *नक्षत्रों (आकाश में) के समान शोभित नासिका आभूषण से अलंकृत (ईश्वरी) माँ*

कदम्बमञ्जरी-क्लृप्त-कर्णपूर-मनोहरा ।
ताटङ्क-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डला ॥ ८॥

२१. ***कदम्बमञ्जरी-क्लृप्त-कर्णपूर-मनोहरा:*** *कदम्ब पुष्प समान सुन्दर कर्ण आभूषण धारिता (अमृत समान) माँ*

२२. ***ताटङ्क-युगली-भूत-तपनोडुप-मण्डला:*** *चन्द्रमा एवं सूर्य को आभूषण की भांति अपने कर्णों में धारण करने वाली (पूर्ण) माँ*

पद्मराग-शिलादर्श-परिभावि-कपोलभूः ।
नवविद्रुम-बिम्बश्री-न्यक्कारि-रदनच्छदा ॥ ९॥

२३. ***पद्मराग-शिलादर्श-परिभावि-कपोलभूः*** *पद्मराग (रूबी रत्न) निर्मित दर्पण से भी अधिक उत्कृष्ट कपोल वाली (आदर्श) माँ*

२४. ***नवविद्रुम-बिम्बश्री-न्यक्कारि-रदनच्छदा:*** *मूंगा एवं कुंदरू के नव-छेदित फलों के समान प्रतिबिंबित आभामान होठों वाली (श्री) माँ*

शुद्ध-विद्याङ्कुराकार-द्विजपङ्क्ति-द्वयोज्ज्वला ।
कर्पूर-वीटिकामोद-समाकर्षि-दिगन्तरा ॥ १०॥

२५. ***शुद्ध-विद्याङ्कुराकार-द्विजपङ्क्ति-द्वयोज्ज्वला:*** *पवित्र ज्ञान के अंकुर के समान दीप्तिमान दांतों वाली (तत्व) माँ*

२६. ***कर्पूर-वीटिकामोद-समाकर्षि-दिगन्तरा:*** *कर्पूर से भरे पान-पर्ण को चबाती हुई जिसकी सुगंध समस्त दिशाओं में व्याप्त है, ऐसी (हर्षित) माँ*

निज-सल्लाप-माधुर्य-विनिर्भर्त्सित-कच्छपी ।
मन्दस्मित-प्रभापूर-मज्जत्कामेश-मानसा ॥ ११॥

२७. ***निज-सल्लाप-माधुर्य-विनिर्भर्त्सित-कच्छपी***: *माँ सरस्वती के वीणा वादन से भी अधिक मधुर एवं उत्कृष्ट संगीत-वादन करने वाली (दिव्य) माँ*

२८. ***मन्दस्मित-प्रभापूर-मज्जत्कामेश-मानसा:*** *अपनी मुस्कान की आभा से भगवान् शिव के मष्तिष्क को भी निमग्न करने वाली (दयालु) माँ*

अनाकलित-सादृश्य-चिबुकश्री-विराजिता ।
कामेश-बद्ध-माङ्गल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरा ॥ १२॥

२९. ***अनाकलित-सादृश्य-चिबुकश्री-विराजिता:*** *जिनकी ठोड़ी की अद्वितीय सुंदरता की उपमा करना संभव नहीं, ऐसी (दिव्य) (दिव्य) माँ*

३०. ***कामेश-बद्ध-माङ्गल्य-सूत्र-शोभित-कन्धरा:*** *जिनकी ग्रीवा भगवान् शंकर द्वारा दिए गए पवित्र धागे से सुशोभित है, ऐसी (अतुलनीय) माँ*

कनकाङ्गद-केयूर-कमनीय-भुजान्विता ।
रत्नग्रैवेय-चिन्ताक-लोल-मुक्ता-फलान्विता ॥ १३॥

३१. ***कनकाङ्गद-केयूर-कमनीय-भुजान्विता:*** *जिनकी भुजाएं स्वर्ण भुजबंध से सुशोभित हैं, ऐसी (दयालु) माँ*

३२. ***रत्नग्रैवेय-चिन्ताक-लोल-मुक्ता-फलान्विता:*** *जिनकी ग्रीवा मोती एवं मणि जड़ित हार से देदीप्यमान हैं, ऐसी (विश्व स्वामिनी) माँ*

कामेश्वर-प्रेमरत्न-मणि-प्रतिपण-स्तनी ।
नाभ्यालवाल-रोमालि-लता-फल-कुचद्वयी ॥ १४॥

३३. ***कामेश्वर-प्रेमरत्न-मणि-प्रतिपण-स्तनी:*** *जिनके स्तन भगवान् शिव शंकर के प्रेम रूपी रत्न को समर्पित हैं, ऐसी (रुद्राणि)माँ*

३४. ***नाभ्यालवाल-रोमालि-लता-फल-कुचद्वयी:*** *जिनके अति सुन्दर स्तन नाभि से ऊपर उदर की ओर लता के पुष्प समान विकसित हैं, ऐसी (भद्रकालि) माँ*

लक्ष्यरोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमा ।
स्तनभार-दलन्मध्य-पट्टबन्ध-वलित्रया ॥ १५॥

*३५. **लक्ष्यरोम-लताधारता-समुन्नेय-मध्यमा:** जिनके कटि के अस्तित्व का अनुमान लता-तंतु से विकसित रस्सी से लगाया जा सकता है, ऐसी (देवमाता) माँ (अर्थात जिनकी कटि लता-तंतु समान अत्यंत तनुक है, ऐसी माँ)*

३६. ***स्तनभार-दलन्मध्य-पट्टबन्ध-वलित्रया:** जिनके उदर की तीन धारियां उनके स्तन का भार सहन करने के लिए मेखला बनातीं हैं, ऐसी (शिव प्रिय दिव्या) माँ*

अरुणारुण-कौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-कटीतटी ।
रत्न-किङ्किणिका-रम्य-रशना-दाम-भूषिता ॥ १६॥

*३७. **अरुणारुण-कौसुम्भ-वस्त्र-भास्वत्-कटीतटी:** जिनके नितम्ब उगते लाल रंग के सूर्य समान इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं जैसे उन्हें सूर्यमुखी पुष्प के अर्क से रंगा गया हो, ऐसी (तंत्र की देवी)माँ*

*३८. **रत्न-किङ्किणिका-रम्य-रशना-दाम-भूषिता:** जिनकी करधनी अनगिनत मणि जड़ित घंटियों से सुशोभित है, ऐसी (अनन्य) माँ*

कामेश-ज्ञात-सौभाग्य-मार्दवोरु-द्वयान्विता ।
माणिक्य-मुकुटाकार-जानुद्वय-विराजिता ॥ १७॥

*३९. **कामेश-ज्ञात-सौभाग्य-मार्दवोरु-द्वयान्विता:** जिनके जाँघों की कोमलता एवं रमणीयता उनके पति भगवान् शंकर को ही ज्ञात है, ऐसी माँ*

*४०. **माणिक्य-मकुटाकार-जानुद्वय-विराजिता:** जिनके घुटने माणिक्य रूबी से निर्मित मुकुट के आकार के आभूषणों से सुशोभित हैं, ऐसी माँ*

इन्द्रगोप-परिक्षिप्त-स्मरतूणाभ-जङ्घिका ।
गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठ-जयिष्णु-प्रपदान्विता ॥ १८॥

*४१. **इन्द्रगोप-परिक्षिप्त-स्मरतूणाभ-जङ्घिका:** जिनकी जंघिका इंद्रदेव के गोप नामक तरकस के समान मणियों से युक्त अत्यंत सुशोभित है, ऐसी (अंकित) माँ*

*४२. **गूढगुल्फा:** जिनके टखने अदृश्य हैं, ऐसी माँ (अर्थात जिनकी पाद सुंदरता वक्री टखनों से प्रभावित नहीं है, ऐसी माँ)*

*४३. **कूर्मपृष्ठ-जयिष्णु-प्रपदान्विता:** जिनके चरण तोरण कछुवे की पीठ के समान सहज, चिकने एवं सुन्दर हैं, ऐसी (अत्यंत सहिष्णु) माँ*

नख-दीधिति-संछन्न-नमज्जन-तमोगुणा ।
पदद्वय-प्रभाजाल-पराकृत-सरोरुहा ॥ १९॥

*४४. **नख-दीधिति-संछन्न-नमज्जन-तमोगुणा:** जिनके चरणों को नमन करने पर उनके नखों की प्रभा भक्तों के अज्ञान को दूर कर देती है, ऐसी (पद्मिन) माँ*

*४५. **पदद्वय-प्रभाजाल-पराकृत-सरोरुहा:** जिनके चरणों की आभा कमल पुष्प की आभा को भी मलिन कर देती है, ऐसी (मोक्ष की इच्छा रखने वालों को मोक्ष देने वाली) माँ*

सिञ्जान-मणिमञ्जीर-मण्डित-श्री-पदाम्बुजा ।
मराली-मन्दगमना महालावण्य-शेवधिः ॥ २०॥

*४६. **सिञ्जान-मणिमञ्जीर-मण्डित-श्री-पदाम्बुजा:** जिनके (पुष्प)कमल रूपी चरण मणियों से जड़ित मधुर झंकार करती हुई पायल से सुशोभित हैं, ऐसी माँ*

*४७. **मराली-मन्दगमना:** जिनकी चाल हंस के समान धीमी एवं सौम्य है, ऐसी (दिव्य) माँ*

*४८. **महालावण्य-शेवधिः** जो सौंदर्य का परम भण्डार हैं, ऐसी (आराध्य) माँ*

सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी सर्वाभरण-भूषिता ।
शिव-कामेश्वराङ्कस्था शिवा स्वाधीन-वल्लभा ॥ २१॥

*४९. **सर्वारुणा:** जिनका वर्ण (तेजस्वी) लाल है, ऐसी माँ*
*५०. **अनवद्याङ्गी:** जिनका तन पूजन योग्य है, ऐसी माँ*
*५१. **सर्वाभरण-भूषिता:** जो हर प्रकार के आभूषणों से देदीप्यमान हैं, ऐसी माँ*
*५२. **शिवकामेश्वराङ्कस्था:** जो कामजित भगवान् शिव शंकर के अंक में विराजमान हैं, ऐसी माँ*
*५३. **शिवा:** जो शिव (कल्याण) प्रदान करती हैं, ऐसी माँ*
*५४. **स्वाधीन-वल्लभा:** जो आत्म-निर्भर हैं, पति भगवान् शिव शंकर की प्रिय हैं, जिनके विचारों का वह (शिव शंकर) सम्मान करते हैं, ऐसी माँ*

सुमेरु-मध्य-शृङ्गस्था श्रीमन्नगर-नायिका ।
चिन्तामणि-गृहान्तस्था पञ्च-ब्रह्मासन-स्थिता ॥ २२॥

*५५. **सुमेरु-मध्य-शृङ्गस्था:** जो सुमेरु पर्वत की मध्य श्रंखला में विराजमान हैं, ऐसी माँ*
*५६. **श्रीमन्नगर-नायिका:** जो समृद्धि की नायिका हैं, ऐसी माँ (अर्थात जो समृद्धि प्रदान करती हैं, ऐसी माँ)*
*५७. **चिन्तामणि-गृहान्तस्था:** जो चिंतामणि से सुसज्जित गृह में निवास करती हैं, ऐसी माँ*
*५८. **पञ्च-ब्रह्मासन-स्थिता:** जो पांच ब्रह्म (ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, एसाना एवं सदाशिव) समान आसन पर विराजमान हैं, ऐसी माँ (अर्थात जिनकी आभा पञ्च-ब्रह्म समान है, ऐसी माँ)*

महापद्माटवी-संस्था कदम्बवन-वासिनी ।
सुधासागर-मध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी ॥ २३॥

*५९. **महापद्माटवी-संस्था:** जो महान पद्म वन में निवास करती हैं, ऐसी (महात्म) माँ*
*६०. **कदम्बवन-वासिनी:** जिनका निवास कदम्ब वन में है, ऐसी (मन को मोहने वाली) माँ*
*६१. **सुधासागर-मध्यस्था:** जो सुधासागर के मध्य में निवास करती हैं, ऐसी (परम) माँ*

*६२. **कामाक्षी:** जो अपनी (सुन्दर कृपा) दृष्टि से (भक्तों के) मनोरथ पूर्ण करती हैं, ऐसी माँ*

*६३. **कामदायिनी:** समस्त मनोरथों को पूर्ण करने वाली (अत्यंत पवित्र) माँ*

देवर्षि-गण-संघात-स्तूयमानात्म-वैभवा ।
भण्डासुर-वधोद्युक्त-शक्तिसेना-समन्विता ॥ २४॥

*६४. **देवर्षि-गण-सङ्घात-स्तूयमानात्म-वैभवा:** जिनकी शक्ति की सभी संत एवं देवगण प्रशंसा करते हैं, ऐसी (दिव्य) माँ*

*६५. **भण्डासुर-वधोद्युक्त-शक्तिसेना-समन्विता:** जो भण्डासुर (असुर) का वध करने वाली सेना की शक्तिओ से संपन्न हैं, ऐसी (पूजनीय) माँ (अर्थात जिनमें भण्डासुर जैसे महाबलशाली असुर का वध करने की शक्ति है, ऐसी माँ)*

सम्पत्करी-समारूढ-सिन्धुर-व्रज-सेविता ।
अश्वारूढाधिष्ठिताश्व-कोटि-कोटिभिरावृता ॥ २५॥

*६६. **सम्पत्करी-समारूढ-सिन्धुर-व्रज-सेविता:** जो धन-धान्य प्रदान करने वाले गज समूह से सेवित हैं, ऐसी (अति मधुर) माँ (अर्थात उनकी स्वामिनी हैं)*

*६७. **अश्वारूढाधिष्ठिताश्व-कोटि-कोटिभिरावृता:** जिनके नेतृत्व में करोड़ों अश्वों के समूह अश्वरुधा नामक रक्षक (शक्ति) से नियंत्रित हैं, ऐसी (विश्व स्वामिनी) माँ*

चक्रराज-रथारूढ-सर्वायुध-परिष्कृता ।
गेयचक्र-रथारूढ-मन्त्रिणी-परिसेविता ॥ २६॥

*६८. **चक्रराज-रथारूढ-सर्वायुध-परिष्कृता:** जो सभी आयुधों से सुसज्जित चक्रराज रथ में विराजमान होकर सुशोभित हैं, ऐसी माँ*

*६९. **गेयचक्र-रथारूढ-मन्त्रिणी-परिसेविता:** जो गेयचक्र रथ पर आरूढ़ मंत्रिणी नामक शक्ति से सेवित हैं, ऐसी माँ*

किरिचक्र-रथारूढ-दण्डनाथा-पुरस्कृता ।
ज्वाला-मालिनिकाक्षिप्त-वह्निप्राकार-मध्यगा ॥ २७॥

*७०. **किरिचक्र-रथारूढ-दण्डनाथा-पुरस्कृता:** जो किरिचक्र रथ पर आरूढ़ दण्डनाथा शक्ति से रक्षित हैं, ऐसी माँ*

*७१. **ज्वाला-मालिनिकाक्षिप्त-वह्निप्राकार-मध्यगा:** जो ज्वाला-मालिन नामक देवी द्वारा सृजित अग्नि दुर्ग के मध्य में विराजमान हैं, ऐसी माँ*

भण्डसैन्य-वधोद्युक्त-शक्ति-विक्रम-हर्षिता ।
नित्या-पराक्रमाटोप-निरीक्षण-समुत्सुका ॥ २८॥

*७२. **भण्डसैन्य-वधोद्युक्त-शक्ति-विक्रम-हर्षिता:** भण्डासुर असुर की शक्तियों को नष्ट करने में वीरत्व से आनंदित माँ*

*७३. **नित्या-पराक्रमाटोप-निरीक्षण-समुत्सुका:** 'नित्या' स्वरूप में प्रतिष्ठित पराक्रमी एवं गौरवशाली देवी की अनुभूति करने वाली माँ*

भण्डपुत्र-वधोद्युक्त-बाला-विक्रम-नन्दिता ।
मन्त्रिण्यम्बा-विरचित-विषङ्ग-वध-तोषिता ॥ २९॥

*७४. **भण्डपुत्र-वधोद्युक्त-बाला-विक्रम-नन्दिता:** भण्डासुर के पुत्रों को नष्ट करने वाली देवी 'बाला' स्वरुप की अनुभूति में प्रतिष्ठित माँ*

*७५. **मन्त्रिण्यम्बा-विरचित—विषङ्ग-वध-तोषिता:** मंत्रिणी शक्ति द्वारा रण में विषंग असुर के वध करने पर आनंदित होने वाली माँ*

विशुक्र-प्राणहरण-वाराही-वीर्य-नन्दिता ।
कामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-श्रीगणेश्वरा ॥ ३०॥

*७६. **विशुक्र-प्राणहरण-वाराही-वीर्य-नन्दिता:** विशुक्र असुर के प्राण हरने पर 'वाराही' स्वरुप में आनंदित होने वाली माँ*

*७७. **कामेश्वर-मुखालोक-कल्पित-श्रीगणेश्वरा:** कामेश्वर प्रभु के मुख*

अवलोकन से गणेश (भगवान्) की जन्मदात्री माँ

महागणेश-निर्भिन्न-विघ्नयन्त्र-प्रहर्षिता ।
भण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-प्रत्यस्त्र-वर्षिणी ॥ ३१॥

७८. **महागणेश-निर्भिन्न-विघ्नयन्त्र-प्रहर्षिता**: गणेश (भगवान्) द्वारा विघ्न हरण करने पर आनंदित होने वाली माँ
७९. **भण्डासुरेन्द्र-निर्मुक्त-शस्त्र-प्रत्यस्त्र-वर्षिणी:** भण्डासुर द्वारा छोड़े हुए प्रत्येक शस्त्र का प्रत्युत्तर देने वाली माँ

कराङ्गुलि-नखोत्पन्न-नारायण-दशाकृतिः ।
महा-पाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-सैनिका ॥ ३२॥

*८०. **कराङ्गुलि-नखोत्पन्न-नारायण-दशाकृतिः** अपने नखों द्वारा विष्णु के दशावतारों को प्रगट करने वाली माँ*
*८१. **महा-पाशुपतास्त्राग्नि-निर्दग्धासुर-सैनिका:** महा-पशुपति नामक अग्नि शस्त्र से शत्रुओं की सेना को नष्ट करने वाली माँ*

कामेश्वरास्त्र-निर्दग्ध-सभण्डासुर-शून्यका ।
ब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-संस्तुत-वैभवा ॥ ३३॥

*८२. **कामेश्वरास्त्र-निर्दग्ध-सभण्डासुर-शून्यका:** कामेश्वर नामक अग्नि शस्त्र से भण्डासुर एवं उसकी राजधानी शून्यका को भस्म करने वाली माँ*
*८३. **ब्रह्मोपेन्द्र-महेन्द्रादि-देव-संस्तुत-वैभवा:** ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं अन्य सभी देवतागण जिनकी शक्ति का गुणगान करते हैं, ऐसी माँ*

हर-नेत्राग्नि-संदग्ध-काम-सञ्जीवनौषधिः ।
श्रीमद्वाग्भव-कूटैक-स्वरूप-मुख-पङ्कजा ॥ ३४॥

*८४. **हर-नेत्राग्नि-सन्दग्ध-काम-सञ्जीवनौषधिः** कामदेव, जो भगवान् शिव शंकर के तीसरे नेत्र से उत्पन्न अग्नि द्वारा भस्मित हो गए थे, उन्हें*

संजीवनी औषधि द्वारा जीवन दान देने वाली माँ

*८५. **श्रीमद्वाग्भव-कूटैक-स्वरूप-मुख-पङ्कजा:** अपने कमल स्वरूपी मुख से पवित्र श्रीमद-भाग्भव (पंचदसी मन्त्र) का ज्ञान देने वाली माँ*

कण्ठाधः-कटि-पर्यन्त-मध्यकूट-स्वरूपिणी ।
शक्ति-कूटैकतापन्न-कट्यधोभाग-धारिणी ॥ ३५॥

*८६. **कण्ठाधः-कटि-पर्यन्त-मध्यकूट-स्वरूपिणी:** ग्रीवा से कटि तक मध्यकूट मन्त्र (पञ्चदशाक्षरी मन्त्र के मध्य के छै अक्षर) स्वरूपिणी माँ*

*८७. **शक्ति-कूटैकतापन्न-कट्यधोभाग-धारिणी:** कटि से नीचे शक्तिकूट मन्त्र (पञ्चदशाक्षरी मन्त्र के अंतिन चार अक्षर) धात्री माँ*

मूल-मन्त्रात्मिका मूलकूटत्रय-कलेबरा ।
कुलामृतैक-रसिका कुलसंकेत-पालिनी ॥ ३६॥

*८८. **मूल-मन्त्रात्मिका:** मूल मन्त्र (पञ्चदशाक्षरी मन्त्र) की जननी माँ*

*८९. **मूलकूटत्रय-कलेवरा:** जिनके तन में मूल मन्त्र (पञ्चदशाक्षरी मन्त्र) के तीन भाग समाहित हैं, ऐसी माँ*

*९०. **कुलामृतैक-रसिका:** कुल नामक अमृत की अनुरक्त माँ*

*९१. **कुलसङ्केत-पालिनी:** कुल नामक योग पथ के अनुष्ठान संहिता की रक्षिता माँ*

कुलाङ्गना कुलान्तस्था कौलिनी कुलयोगिनी ।
अकुला समयान्तस्था समयाचार-तत्परा ॥ ३७॥

*९२. **कुलाङ्गना:** उत्कृष्ट परिवारीय माँ*

*९३. **कुलान्तस्था:** कुल विद्या दात्री माँ*

*९४. **कौलिनी:** उच्च कुलीन माँ*

*९५. **कुलयोगिनी:** कुल देवी माँ*

*९६. **अकुला:** पारिवारिक मोह से विमुक्त माँ*

*९७. **समयान्तस्था:** समय को नियंत्रित करने वाली माँ*

*९८. **समयाचारतत्परा:** पूजन की समय विधि (समय जैसे प्रातः, उपराह्न, सांय, रात्रि इत्यादि से सम्बंधित विभिन्न पूजन विधि) से सलंग्नित माँ (विभिन्न समयानुसार पूजन विधि का ज्ञान देने वाली माँ)*

मूलाधारैक-निलया ब्रह्मग्रन्थि-विभेदिनी ।
मणि-पूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थि-विभेदिनी ॥ ३८॥

*९९. **मूलाधारैक-निलया:** मूलाधार (मूलाधार, चक्र तंत्र और योग साधना की चक्र संकल्पना का पहला चक्र है) जिनका प्रमुख निवास है, वह माँ*
*१००. **ब्रह्मग्रन्थि-विभेदिनी:** ब्रह्म-ग्रंथि (सत्य) को भेदने वाली माँ (अर्थात सत् गुण का ज्ञान कराने वाली माँ)*
*१०१. **मणि-पूरान्तरुदिता:** मणिपुर चक्र (मणिपुर चक्र, तंत्र और योग साधना की चक्र संकल्पना का तीसरा चक्र है) का ज्ञान देने वाली माँ*
*१०२. **विष्णुग्रन्थि-विभेदिनी:** विष्णु-ग्रंथि (रज गुण) का भेदन करने वाली माँ (अर्थात रज गुण का ज्ञान कराने वाली माँ)*

आज्ञा-चक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थि-विभेदिनी ।
सहस्राराम्बुजारूढा सुधा-साराभिवर्षिणी ॥ ३९॥

*१०३. **आज्ञा-चक्रान्तरालस्था:** आज्ञा-चक्र के मध्य में निवास करने वाली माँ (आज्ञा, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत और विशुद्ध, इन छै चक्रों का उपनिषद में वर्णन है। आज्ञा-चक्र भौंहों के बीच माथे के केंद्र में स्थित होता है।)*
*१०४. **रुद्रग्रन्थि-विभेदिनी:** रूद्र-ग्रंथि (तमस गुण) का भेदन करने वाली माँ (अर्थात तमस गुण का ज्ञान कराने वाली माँ)*
*१०५. **सहस्राराम्बुजारूढा:** सहस्त्र पंखुड़ी पद्म पर आरोहित माँ*
*१०६. **सुधासाराभिवर्षिणी:** अमृत धारा बहाने वाली माँ*

तडिल्लता-समरुचिः षट्चक्रोपरि-संस्थिता ।
महासक्तिः कुण्डलिनी बिसतन्तु-तनीयसी ॥ ४०॥

*१०७. **तडिल्लता-समरुचिः** बिजली की चमक समान आभावान माँ*
*१०८. **षट्चक्रोपरि-संस्थिता:** (आज्ञा, मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत और विशुद्ध) छै चक्रों पर आरूढ़ माँ*
*१०९. **महासक्तिः** शिव-शक्ति के पवित्र बंधन में बंधी माँ*
*११०. **कुण्डलिनी:** कुंडली स्वरुप में स्थित माँ*
*१११. **बिसतन्तु-तनीयसी:** कमल पुष्प के तंतु के समान कोमल एवं उत्कृष्ट माँ*

भवानी भावनागम्या भवारण्य-कुठारिका ।
भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर् भक्त-सौभाग्यदायिनी ॥ ४१॥

*११२. **भवानी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी माँ*
*११३. **भावनागम्या:** भावना से गम्य माँ (अर्थात माँ को शुद्ध भावना से प्राप्त किया जा सकता है)*
*११४. **भवारण्य-कुठारिका:** संसार रूपी वन के लिए कुल्हाड़ी स्वरुप माँ (अर्थात भव सागर से पार कराने वाली माँ)*
*११५. **भद्रप्रिया:** भद्रों (संतों) की प्रिया माँ*
*११६. **भद्रमूर्तिः** पवित्रता की मूर्ति माँ*
*११७. **भक्तसौभाग्यदायिनी:** भक्तों को सौभाग्य देने वाली माँ*

भक्तिप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा ।
शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी ॥ ४२॥

*११८. **भक्तिप्रिया:** भक्ति से प्रसन्न होने वाली माँ*
*११९. **भक्तिगम्या:** भक्ति से प्राप्त होने वाली माँ*
*१२०. **भक्तिवश्या:** भक्ति से वश में होने वाली माँ*
*१२१. **भयापहा:** भय हरण करने वाली माँ*
*१२२. **शाम्भवी:** भगवान् शम्भू की अर्धांगिनी*
*१२३. **शारदाराध्या:** देवी सरस्वती से आराधित माँ*
*१२४. **शर्वाणी:** शर्व (भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनीं माँ*
*१२५. **शर्मदायिनी:** आनंद देने वाली माँ*

शाङ्करी श्रीकरी साध्वी शरच्चन्द्र-निभानना ।
शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना ॥ ४३॥

*१२६. **शाङ्करी:** प्रसन्नता देने वाली माँ*
*१२७. **श्रीकरी:** धन-धान्य देने वाली माँ*
*१२८. **साध्वी:** पवित्र माँ*
*१२९. **शरच्चन्द्र-निभानना:** निर्मल आकाश में पूर्ण चंद्र समान आभित मुखाकृति वाली माँ*
*१३०. **शातोदरी:** सुमध्यमा (सुगठित उदर वाली) माँ*
*१३१. **शान्तिमती:** शांति प्रिय माँ*
*१३२. **निराधारा:** स्वतंत्र माँ*
*१३३. **निरञ्जना:** मोह माया से दूर स्वाधीन माँ*

निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला ।
निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा ॥ ४४॥

*१३४. **निर्लेपा:** कार्मिक अशुद्धियों से मुक्त माँ*
*१३५. **निर्मला:** पवित्र माँ*
*१३६. **नित्या:** शाश्वत माँ*
*१३७. **निराकरा:** निराकार माँ (अर्थात माँ का कोई आकार नहीं है, वह सर्व-व्याप्त हैं)*
*१३८. **निराकुला:** शांत माँ (अर्थात माँ को कभी आकुलता नहीं होती)*
*१३९. **निर्गुणा:** तीनों गुण - तमस, रजस एवं सत्त्व, से अप्रभावित माँ*
*१४०. **निष्कला:** शुद्ध माँ*
*१४१. **शान्ता:** शांत चित्त माँ*
*१४२. **निष्कामा:** इच्छा रहित माँ*
*१४३. **निरुपप्लवा:** अविनाशी माँ*

नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया ।
नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा ॥ ४५॥

*१४४. **नित्यमुक्ता:** सांसारिक बंधनों से सदैव मुक्त माँ*
*१४५. **निर्विकारा:** दोष रहित माँ*
*१४६. **निष्प्रपञ्चा:** निःस्वार्थी माँ*
*१४७. **निराश्रया:** स्वाधीन माँ (माँ किसी पर आश्रित नहीं हैं, स्वाधीन हैं)*
*१४८. **नित्यशुद्धा:** शाश्वत शुद्ध माँ*
*१४९. **नित्यबुद्धा:** अति बुद्धिमान माँ*
*१५०. **निरवद्या:** सदैव प्रशंसनीय माँ*
*१५१. **निरन्तरा:** सर्व-व्यापी माँ*

निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधिर् निरीश्वरा ।
नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी ॥ ४६॥

*१५२. **निष्कारणा:** स्वार्थ-रहित माँ*
*१५३. **निष्कलङ्का:** निष्कलंक (शुद्ध) माँ*
*१५४. **निरुपाधिर:** सीमा-रहित माँ (अर्थात माँ के कार्य-प्रणाली की कोई सीमा नहीं है)*
*१५५. **निरीश्वरा:** स्वयं ही ईश्वर स्वरुप माँ (अर्थात माँ से बड़ा कोई ईश्वर नहीं है)*
*१५६. **नीरागा:** इच्छा-रहित माँ*
*१५७. **रागमथनी:** जो (सांसारिक) इच्छाओं को ध्वस्त कर देती हैं, ऐसी माँ (अर्थात सांसारिक इच्छाओं को ध्वस्त कर आध्यात्मिकता का मार्ग प्रदर्शन करने वाली माँ)*
*१५८. **निर्मदा:** गर्व-रहित माँ*
*१५९. **मदनाशिनी:** (भक्तों को) गर्व रहित करने वाली माँ*

निश्चिन्ता निरहङ्कारा निर्मोहा मोहनाशिनी ।
निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी ॥ ४७॥

*१६०. **निश्चिन्ता:** चिंता-रहित (निश्चिंत) माँ*
*१६१. **निरहङ्कारा:** अहंकार-रहित माँ*
*१६२. **निर्मोहा:** माया-रहित माँ*

*१६३. **मोहनाशिनी:** (भक्तों के) मोह को नष्ट करने वाली माँ (अर्थात भक्तों के मोह को नष्ट कर उन्हें आध्यात्मिक एवं ईश्वरीय ज्ञान देने वाली माँ)*

*१६४. **निर्ममा:** निःस्वार्थी माँ*

*१६५. **ममताहन्त्री:** (भक्तों के सांसारिक) स्वार्थों का हरण करने वाली माँ (अर्थात भक्तों के व्यक्तिगत सांसारिक स्वार्थों का हरण कर उन्हें ईश्वरीय ज्ञान देने वाली माँ)*

*१६६. **निष्पापा:** पाप-रहित (शुद्ध) माँ*

*१६७. **पापनाशिनी:** (भक्तों के) पापों को नष्ट करने वाली माँ*

निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी ।
निःसंशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी ॥ ४८॥

*१६८. **निष्क्रोधा:** क्रोध रहित माँ*

*१६९. **क्रोधशमनी:** (भक्तों के) क्रोध को नष्ट करने वाली माँ*

*१७०. **निर्लोभा:** लोभ रहित माँ*

*१७१. **लोभनाशिनी:** (भक्तों के) लोभ का नाश करने वाली माँ (अर्थात भक्तों को सांसारिक लोभ से मुक्ति देकर ईश्वरता का ज्ञान देने वाली माँ)*

*१७२. **निःसंशया:** संदेह रहित माँ (अर्थात माँ को कोई कार्य पूर्ण करने में संदेह नहीं है)*

*१७३. **संशयघ्नी:** (भक्तो के) संशय दूर करने वाली माँ (अर्थात भक्तों में आत्मविश्वास बढ़ाने वाली माँ)*

*१७४. **निर्भवा:** अजन्मी माँ (माँ के जन्म के आदि, अंत का पता नहीं)*

*१७५. **भवनाशिनी:** (भक्तों को) भव-सागर से तारने वाली माँ (अर्थात भक्तों को जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति देने वाली माँ)*

निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी ।
निर्नाशा मृत्युमथनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा ॥ ४९॥

*१७६. **निर्विकल्पा:** अनिश्चयता अथवा संदेह से परे माँ*

*१७७. **निराबाधा:** बाधा रहित माँ (अर्थात माँ को कोई बाधा व्याप्त नहीं कर सकती)*

*१७८. **निर्भेदा:** भेद भावना से परे माँ (अर्थात माँ समदर्शी हैं, अपने भक्तों में लिंग आदि का भेद भाव नहीं करतीं)*
*१७९. **भेदनाशिनी:** (भक्तों के हृदय से) भेद भावनाओं को नष्ट करने वाली माँ*
*१८०. **निर्नाशा:** अविनाशी माँ*
*१८१. **मृत्युमथनी:** मृत्यु का मंथन करने वाली माँ (अर्थात भक्तों में मृत्यु के भय को हरने वाली माँ)*
*१८२. **निष्क्रिया:** निष्क्रिय माँ (अर्थात सांसारिक कार्य-कलापों से दूर रहने वाली माँ)*
*१८३. **निष्परिग्रहा:** सांसारिक वस्तुओं का अधिग्रहण न करने वाली माँ*

निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया ।
दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा ॥ ५०॥

*१८४. **निस्तुला:** अतुलनीय माँ*
*१८५. **नीलचिकुरा:** चमकते काले बालों वाली माँ*
*१८६. **निरपाया:** अविनाशी माँ*
*१८७. **निरत्यया:** जिनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं की जा सकती, ऐसी माँ*
*१८८. **दुर्लभा:** दुर्लभता से प्राप्त होने वाली माँ (अर्थात कठिन तप से ही जिनकी प्राप्ति होती है)*
*१८९. **दुर्गमा:** जिन्हें पाने के लिए कठिन प्रयास करने आवश्यक हैं, ऐसी माँ*
*१९०. **दुर्गा:** आदि-शक्ति माँ*
*१९१. **दुःखहन्त्री:** दुःखों का हरण करने वाली माँ*
*१९२. **सुखप्रदा:** आनंद दायिनी माँ*

दुष्टदूरा दुराचार-शमनी दोषवर्जिता ।
सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिक-वर्जिता ॥ ५१॥

*१९३. **दुष्टदूरा:** दुष्टों को अगम्य माँ*
*१९४. **दुराचार-शमनी:** दुराचारों को रोकने वाली माँ*
*१९५. **दोषवर्जिता:** दोषों से रहित (पवित्र) माँ*
*१९६. **सर्वज्ञा:** अन्तर्यामी माँ*

*१९७. **सान्द्रकरुणा:** संवेदनशील माँ*
*१९८. **समानाधिक-वर्जिता:** श्रेष्ठतम माँ (इस ब्रह्माण्ड में जिनके समान अथवा अधिक श्रेष्ठ कोई और नहीं, ऐसी माँ)*

सर्वशक्तिमयी सर्व-मङ्गला सद्गतिप्रदा ।
सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्र-स्वरूपिणी ॥ ५२॥

*१९९. **सर्वशक्तिमयी:** सर्व शक्ति संपन्न माँ*
*२००. **सर्व-मङ्गला:** सब का कल्याण करने वाली माँ*
*२०१. **सद्गतिप्रदा:** सबको उचित (सत्य) मार्ग दर्शाने वाली माँ*
*२०२. **सर्वेश्वरी:** सबकी स्वामिनी माँ*
*२०३. **सर्वमयी:** सब में व्याप्त माँ*
*२०४. **सर्वमन्त्र-स्वरूपिणी:** जो सभी (वैदिक) मन्त्रों का तत्व हैं, माँ*

सर्व-यन्त्रात्मिका सर्व-तन्त्ररूपा मनोन्मनी ।
माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर् मृडप्रिया ॥ ५३॥

*२०५. **सर्व-यन्त्रात्मिका:** सभी यंत्रों के आध्यात्मिक ज्ञान की ज्ञाता माँ*
*२०६. **सर्वतन्त्र-रूपा:** सभी तंत्रों की जननी, माँ*
*२०७. **मनोन्मनी:** योग साधना की अति उच्च स्थिति प्राप्त माँ (योग साधना की वह उच्च स्थिति जहां मन सारी चंचलता छोड़ पूर्ण रूप से शांत और स्थिर हो जाता है, ऐसी उच्च स्थिति को प्राप्त माँ)*
*२०८. **माहेश्वरी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी, माँ*
*२०९. **महादेवी:** महान देवी*
*२१०. **महालक्ष्मीर्:** धन-धान्य एवं ऐश्वर्य प्रदायिनी माँ*
*२११. **मृडप्रिया:** मृड (भगवान् शिव शंकर) की प्रिया, माँ*

महारूपा महापूज्या महापातक-नाशिनी ।
महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर् महारतिः ॥ ५४॥

*२१२. **महारूपा:** अति विशाल रूप वाली माँ*

*२१३. **महापूज्या:** अति पूज्नीय माँ*

*२१४. **महापातक-नाशिनी:** घोर पापों का भी नाश करने वाली माँ*

*२१५. **महामाया:** स्वयं माया माँ (अर्थात माया की स्वामिनी होने के कारण अपने भक्तों को सांसारिक माया से दूर रखने वाली माँ)*

*२१६. **महासत्त्वा:** सतगुण धारी माँ*

*२१७. **महाशक्तिर्:** अत्यंत बलशाली माँ*

*२१८. **महारतिः** सुख से परिपूर्ण माँ*

महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला ।
महाबुद्धिर् महासिद्धिर् महायोगेश्वरेश्वरी ॥ ५५॥

*२१९. **महाभोगा:** सर्पों की स्वामिनी माँ (इसका दूसरा अर्थ हो सकता है – सांसारिक भोगों की स्वामिनी अर्थात अपने भक्तों को सांसारिक भोगों से दूर रखने वाली माँ)*

*२२०. **महैश्वर्या:** सर्वोच्च सम्प्रभुता वाली माँ*

*२२१. **महावीर्या:** अत्यंत वीर माँ*

*२२२. **महाबला:** अत्यंत पराक्रमी माँ*

*२२३. **महाबुद्धिर्:** अत्यंत बुद्धिमान माँ*

*२२४. **महासिद्धिर्:** सिद्धियों की स्वामिनी माँ*

*२२५. **महायोगेश्वरेश्वरी:** महान योगियों से भी पूजित माँ*

महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना ।
महायाग-क्रमाराध्या महाभैरव-पूजिता ॥ ५६॥

*२२६. **महातन्त्रा:** महान तांत्रिकों द्वारा पूजित माँ*

*२२७. **महामन्त्रा:** स्वयं ही महा-मन्त्र, माँ*

*२२८. **महायन्त्रा:** स्वयं ही महा-यंत्र, माँ*

*२२९. **महासना:** उच्च स्थान पर विराजमान माँ*

*२३०. **महायाग-क्रमाराध्या:** महा-यज्ञों के धार्मिक संस्कारों में पूजित माँ*

*२३१. **महाभैरव-पूजिता:** महा-भैरव (भगवान् शिव शंकर) से भी पूजित माँ*

महेश्वर-महाकल्प-महाताण्डव-साक्षिणी ।
महाकामेश-महिषी महात्रिपुर-सुन्दरी ॥ ५७॥

*२३२. **महेश्वर-महाकल्प-महाताण्डव-साक्षिणी:** प्रलय के समय भगवान् शिव शंकर के महान तांडव नृत्य की साक्षी, माँ*
*२३३. **महाकामेश-महिषी:** भगवान् शिव शंकर की आदर्श अर्धांगिनी, माँ*
*२३४. **महात्रिपुर-सुन्दरी:** अकल्पनीय सुन्दर, धन, ऐश्वर्य, भोग और मोक्ष की अधिष्ठात्री देवी माँ*

चतुःषष्ट्युपचाराढ्या चतुःषष्टिकलामयी ।
महाचतुः-षष्टिकोटि-योगिनी-गणसेविता ॥ ५८॥

*२३५. **चतुष्षष्ट्युपचाराढ्या:** सनातन धर्म के ६४ कर्म-कांडों में पूजित माँ (वेदों के अनुसार सनातन धर्म में जन्म से लेकर मृत्यु तक ६४ कर्म-काण्ड होते हैं, उन सभी कर्म-कांडों की अधिष्ठात्री देवी माँ हैं)*
*२३६. **चतुष्षष्टिकलामयी:** सभी ६४ कलाओं की अधिष्ठात्री देवी माँ*
*२३७. **महाचतुः-षष्टिकोटि-योगिनी-गणसेविता:** ६४ करोड़ योगिनियों द्वारा सेवित माँ*

मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डल-मध्यगा ।
चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्र-कलाधरा ॥ ५९॥

*२३८. **मनुविद्या:** मनुविद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ*
*२३९. **चन्द्रविद्या:** चन्द्रविद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ*
*२४०. **चन्द्रमण्डल-मध्यगा:** चंद्र मंडल के मध्य में विराजमान माँ*
*२४१. **चारुरूपा:** स्थिर सुंदरता वाली माँ (अर्थात जिनकी सुंदरता कभी कम नहीं होती, ऐसी माँ)*
*२४२. **चारुहासा:** अति सुन्दर मुस्कान वाली माँ*
*२४३. **चारुचन्द्र-कलाधरा:** अत्यंत सुन्दर अर्ध-चंद्र को धारण करने वाली माँ*

चराचर-जगन्नाथा चक्रराज-निकेतना ।
पार्वती पद्मनयना पद्मराग-समप्रभा ॥ ६०॥

*२४४. **चराचर-जगन्नाथा:** समस्त चर एवं अचर जग की स्वामिनी माँ*
*२४५. **चक्रराज-निकेतना:** श्री चक्र में विराजित माँ*
*२४६. **पार्वती:** (हिमाचल) पर्वत की पुत्री माँ*
*२४७. **पद्मनयना:** कमल के समान सुन्दर नेत्रों वाली माँ*
*२४८. **पद्मराग-समप्रभा:** पद्मराग (रूबी) मणि के समान आभा वाली माँ*

पञ्च-प्रेतासनासीना पञ्चब्रह्म-स्वरूपिणी ।
चिन्मयी परमानन्दा विज्ञान-घनरूपिणी ॥ ६१॥

*२४९. **पञ्च-प्रेतासनासीना:** पञ्च-शव पीठासीन माँ (अर्थात पांच विकार – काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार का नाश करने वाली माँ)*
*२५०. **पञ्चब्रह्म-स्वरुपिणी:** पञ्च-ब्रह्म स्वरूपा माँ (अर्थात माँ स्वयं ही पञ्च-ब्रह्म उपनिषद् हैं)*
*२५१. **चिन्मयी:** स्व-चैतन्य स्वरुप माँ*
*२५२. **परमानन्दा:** सच्चिदानंद माँ*
*२५३. **विज्ञानघन-रूपिणी:** महा-वैज्ञानिक स्वरूपिणी माँ (अर्थात समस्त विज्ञान की ज्ञाता माँ)*

ध्यान-ध्यातृ-ध्येयरूपा धर्माधर्म-विवर्जिता ।
विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका ॥ ६२॥

*२५४. **ध्यान-ध्यातृ-ध्येयरूपा:** ध्यान, ध्यानी एवं ध्यान उद्देश्य स्वरूपिणी माँ (अर्थात जो स्वयं ही ध्यान, ध्यानी एवं ध्यान का उद्देश्य है, ऐसी माँ)*
*२५५. **धर्माधर्म-विवर्जिता:** गुणों और दोषों को नियंत्रित करने वाली माँ*
*२५६. **विश्वरुपा:** सर्व-भूत माँ (अर्थात सर्व-व्याप्त माँ)*
*२५७. **जागरिणी:** सदैव जाग्रत माँ (अर्थात जो भक्तों के हित के लिए सदैव तत्पर रहती हैं, ऐसी माँ)*

*२५८. **स्वपन्ती:** स्वप्त अवस्था में उपस्थित माँ (अर्थात भक्तों के स्वप्न में भी उनके हित के लिए उपस्थित माँ)*

*२५९. **तैजसात्मिका:** अत्यंत तेज से युक्त माँ (अर्थात महा-पराक्रमी माँ)*

सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्था-विवर्जिता ।
सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी ॥ ६३॥

*२६०. **सुप्ता:** गहन सुप्तावस्था में लीन माँ (अर्थात भक्तों के गहन सुप्तावस्था में लीन होने पर भी माँ उनका हित करतीं हैं)*

*२६१. **प्राज्ञात्मिका:** दक्षिता की आत्मा माँ (अर्थात बुद्धिमता की स्रोत माँ)*

*२६२. **तुर्या:** ब्रह्म-ज्ञान में लीन माँ (अर्थात ब्रह्म-ज्ञान की स्रोत माँ)*

*२६३. **सर्वावस्था-विवर्जिता:** सभी अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति) में उपस्थित माँ*

*२६४. **सृष्टिकर्त्री:** सृष्टि की निर्माता माँ*

*२६५. **ब्रह्मरूपा:** ब्रह्म-स्वरूपिणी माँ*

*२६६. **गोप्त्री:** रक्षक माँ*

*२६७. **गोविन्दरूपिणी:** गोविन्द-स्वरूपिणी माँ (अर्थात ब्रह्माण्ड की रक्षा हेतु जिन्होंने गोविन्द का रूप धारण किया, ऐसी माँ)*

संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधानकरी ईश्वरी ।
सदाशिवा अनुग्रहदा पञ्चकृत्य-परायणा ॥ ६४॥

*२६८. **संहारिणी:** (प्रलय से) ब्रह्माण्ड का नाश करने वाली माँ*

*२६९. **रुद्ररूपा:** (प्रलय के लिए) रूद्र रूप धारण करने वाली माँ*

*२७०. **तिरोधानकरी:** समस्त पदार्थों को विलुप्त करने वाली माँ (अर्थात प्रलय काल में सब पदार्थों को नष्ट करने वाली माँ)*

*२७१. **ईश्वरी:** दैवीय माँ*

*२७२. **सदाशिवा:** सदैव पवित्रता प्रदान करने वाली माँ*

*२७३. **अनुग्रहदा:** वरदान देने वाली माँ*

*२७४. **पञ्चकृत्य-परायणा:** पञ्च कृत्य (उत्पत्ति, सरंक्षण, संहार, विलोपन एवं पुनः-प्रकटन) में लीन माँ*

भानुमण्डल-मध्यस्था भैरवी भगमालिनी ।
पद्मासना भगवती पद्मनाभ-सहोदरी ॥ ६५॥

*२७५. **भानुमण्डल-मध्यस्था:** सूर्य चक्र के मध्य में निवास करने वाली माँ*

*२७६. **भैरवी:** भैरव (भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनी, माँ*
*२७७. **भगमालिनी:** छै शुभताओं (पवित्रता, प्रभुत्व, प्रसिद्धि, पराक्रम, निर्लिप्तता एवं ज्ञान) की माला पहनने वाली माँ (अर्थात माँ में सभी छै भग गुण - पवित्रता, प्रभुत्व, प्रसिद्धि, पराक्रम, निर्लिप्तता एवं ज्ञान, विद्यमान हैं)*
*२७८. **पद्मासना:** कमलासन पर विराजमान माँ*
*२७९. **भगवती:** रक्षक देवी माँ*
*२८०. **पद्मनाभ-सहोदरी:** भगवान् विष्णु की बहन, माँ*

उन्मेष-निमिषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावली ।
सहस्र-शीर्षवदना सहस्राक्षी सहस्रपात् ॥ ६६॥

*२८१. **उन्मेष-निमिषोत्पन्न-विपन्न-भुवनावली:** नेत्रों के खोलने और बंद करने मात्र से ब्रह्माण्ड को विलुप्त एवं पुनः प्रकट करने की सामर्थ्य रखने वाली माँ*
*२८२. **सहस्र-शीर्षवदना:** एक सहस्त्र शीश वाली माँ*
*२८३. **सहस्राक्षी:** एक सहस्त्र नेत्रों वाली माँ*
*२८४. **सहस्रपात्:** एक सहस्त्र पदों वाली माँ*

आब्रह्म-कीट-जननी वर्णाश्रम-विधायिनी ।
निजाज्ञारूप-निगमा पुण्यापुण्य-फलप्रदा ॥ ६७॥

*२८५. **आब्रह्म-कीट-जननी:** ब्रह्मा से तुच्छ कीट तक, सब की माँ*
*२८६. **वर्णाश्रम-विधायिनि:** वर्णाश्रम (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) के नियम निर्धारण करने वाली माँ*

*२८७. **निजाज्ञारूप-निगमा:** वेद मार्ग (सत्य मार्ग) प्रदर्शित करने वाली माँ*
*२८८. **पुण्यापुण्य-फलप्रदा:** शुभ एवं अशुभ कर्मों के फल देने वाली माँ*

श्रुति-सीमन्त-सिन्दूरी-कृत-पादाब्ज-धूलिका ।
सकलागम-सन्दोह-शुक्ति-सम्पुट-मौक्तिका ॥ ६८॥

*२८९. **श्रुति-सीमन्त-सिन्दूरी-कृतपादाब्ज-धूलिका:** जिनकी पग-धूलि बालों की विभाजन रेखा में सिंदूर के समान है (अर्थात जिनकी पग-धूलि विवाहिता स्त्रीओं के पतियों को दीर्घायु एवं सौभाग्य प्रदान करती है), ऐसी माँ*
*२९०. **सकलागम-सन्दोह-शुक्ति-सम्पुट-मौक्तिका:** समस्त धार्मिक ग्रंथों के कवच में वास करने वाली रत्न स्वरूपिणी माँ (अर्थात समस्त धार्मिक ग्रन्थ जिनकी जिह्वया पर हैं, ऐसी माँ)*

पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी ।
अम्बिका अनादि-निधना हरिब्रह्मेन्द्र-सेविता ॥ ६९॥

*२९१. **पुरुषार्थप्रदा:** जीवों को उनके लक्ष्य (अर्थ, काम, धर्म एवं मोक्ष) प्रदान करने वाली माँ*
*२९२. **पूर्णा:** पूर्ण माँ (अर्थात सम्पूर्ण रूप में सदैव स्थित, अक्षय माँ)*
*२९३. **भोगिनी:** आनंदमयी माँ*
*२९४. **भुवनेश्वरी:** ब्रह्माण्ड की साम्राज्ञी माँ*
*२९५. **अम्बिका:** ब्रह्माण्ड की माँ*
*२९६. **अनादि-निधना:** जिनका न प्रारम्भ है, न ही अंत, ऐसी माँ*
*२९७. **हरिब्रह्मेन्द्र-सेविता:** ब्रह्मदेव, विष्णुदेव एवं इंद्रदेव भी जिनकी सेवा करते हैं, ऐसी माँ*

नारायणी नादरूपा नामरूप-विवर्जिता ।
ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेय-वर्जिता ॥ ७०॥

*२९८. **नारायणी:** ईश्वर समकक्ष माँ*

*२९९. **नादरूपा:** स्वर स्वरूपिणी माँ (अर्थात स्वर को जन्म देने वाली माँ)*
*३००. **नामरूप-विवर्जिता:** अनाकार (निराकार) माँ*
*३०१. **ह्रींकारी:** 'ह्रीं' शब्दांश की जननी ,माँ*
*३०२. **ह्रीमती:** सुशील माँ*
*३०३. **हृद्या:** (भक्तों के) हृदय में रहने वाली माँ*
*३०४. **हेयोपादेय-वर्जिता:** स्वीकृति एवं अस्वीकृति से परे माँ (अर्थात सभी इच्छाओं से परे माँ)*

राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना ।
रञ्जनी रमणी रस्या रणत्किङ्किणि-मेखला ॥ ७१॥

*३०५. **राजराजार्चिता:** सम्राटों के सम्राट से भी वन्दित माँ*
*३०६. **राज्ञी:** (प्रलय के समय) संहार-कर्ता महादेव की अर्धांगिनी, माँ*
*३०७. **रम्या:** आनंददायी माँ*
*३०८. **राजीवलोचना:** कमल के समान नेत्र वाली माँ*
*३०९. **रञ्जनी:** सच्चिदानंद माँ*
*३१०. **रमणी:** आनंद दायिनी माँ*
*३११. **रस्या:** सभी रसों (११ प्रकार के रस - श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शांत, वात्सल्य एवं भक्ति रस) का आनंद लेने वाली माँ*
*३१२. **रणत्किङ्किणि-मेखला:** खनकती घंटियों की करधनी धारण करने वाली माँ*

रमा राकेन्दुवदना रतिरूपा रतिप्रिया ।
रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलम्पटा ॥ ७२॥

*३१३. **रमा:** सौभाग्यशाली माँ*
*३१४. **राकेन्दुवदना:** चंद्र-मुखी (अति सुन्दर) माँ*
*३१५. **रतिरूपा:** रति (कामदेव की पत्नी) स्वरूपिणी माँ (अर्थात रति जैसी अति सुन्दर माँ)*
*३१६. **रतिप्रिया:** रति की अति प्रिय, (स्वामिनी) माँ*

*३१७. **रक्षाकरी:** रक्षक माँ*
*३१८. **राक्षसघ्नी:** राक्षसों का संहार करने वाली माँ*
*३१९. **रामा:** प्रवीण माँ*
*३२०. **रमणलम्पटा:** अपने प्रिय पति भगवान् शिव शंकर को समर्पित, माँ*

काम्या कामकलारूपा कदम्ब-कुसुम-प्रिया ।
कल्याणी जगतीकन्दा करुणा-रस-सागरा ॥ ७३॥

*३२१. **काम्या:** सभी की वांछित माँ*
*३२२. **कामकलारूपा:** (रति, कामदेव की पत्नी समान) काम कला से पूर्ण माँ*
*३२३. **कदम्बकुसुमप्रिया:** कदम्ब (देव-वृक्ष) के पुष्पों की अनुरक्त माँ*
*३२४. **कल्याणी:** कल्याण करने वाली माँ*
*३२५. **जगतीकन्दा:** समस्त ब्रह्माण्ड का मूल, माँ*
*३२६. **करुणा-रस-सागरा:** करुणा का सागर, माँ*

कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरीप्रिया ।
वरदा वामनयना वारुणी-मद-विह्वला ॥ ७४॥

*३२७. **कलावती:** समस्त कलाओं में निपुण, माँ*
*३२८. **कलालापा:** मधुर संगीतमय वक्ता माँ*
*३२९. **कान्ता**: अति सुन्दर माँ*
*३३०. **कादम्बरीप्रिया:** मध्वासव की अनुरक्त माँ*
*३३१. **वरदा:** वर दायिनी माँ*
*३३२. **वामनयना:** अति सुन्दर नेत्रों वाली माँ*
*३३३. **वारुणी-मद-विह्वला:** अमृतमय पेय से मादक माँ*

विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचल-निवासिनी ।
विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी ॥ ७५॥

*३३४. **विश्वाधिका:** विश्व की स्वामिनी माँ*
*३३५. **वेदवेद्या:** वेदों की ज्ञाता माँ*

*३३६. **विन्ध्याचल-निवासिनी:** विंध्याचल (पर्वत) निवासिनी माँ*

*३३७. **विधात्री:** ब्रह्माण्ड की सर्जक माँ*

*३३८. **वेदजननी:** वेदों की सृजक माँ*

*३३९. **विष्णुमाया:** ईश्वर की मायावी शक्ति की स्वामिनी माँ*

*३४०. **विलासिनी:** आनंदित माँ*

क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिनी ।
क्षयवृद्धि-विनिर्मुक्ता क्षेत्रपाल-समर्चिता ॥ ७६॥

*३४१. **क्षेत्रस्वरूपा:** भू-मण्डल (पृथ्वी माँ) का प्रतिरूप माँ*

*३४२. **क्षेत्रेशी:** भू-मण्डल की स्वामिनी माँ (क्षेत्रेश भगवान् शिव शंकर को भी कहा जाता है जो भू-मंडल के स्वामी हैं, अर्थात क्षेत्रेशी को भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी भी समझा जा सकता है)*

*३४३. **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ-पालिनी:** भू-मंडल एवं भू-मण्डल के वासियों का पालन करने वाली माँ*

*३४४. **क्षयवृद्धि-विनिर्मुक्ता:** वृद्धि और क्षय से मुक्त माँ (अर्थात सदैव एक स्वरूप में स्थिर माँ)*

*३४५. **क्षेत्रपाल-समर्चिता:** भू-मंडल के व्यवस्थापकों (अर्थात भू-मंडल निवासी सभी वर्ण - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र के नेताओं) द्वारा पूजित माँ*

विजया विमला वन्द्या वन्दारु-जन-वत्सला ।
वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डल-वासिनी ॥ ७७॥

*३४६. **विजया:** सदैव विजयी माँ (अर्थात अपराजित माँ)*

*३४७. **विमला:** पवित्र माँ*

*३४८. **वन्द्या:** सर्व-पूजित माँ*

*३४९. **वन्दारु-जन-वत्सला:** भक्तों को मातृ-प्रेम देने वाली माँ (अर्थात भक्तों के लिए वात्सल्य से परिपूर्ण माँ)*

*३५०. **वाग्वादिनी:** माँ सरस्वती समान वादक माँ*

*३५१. **वामकेशी:** अति सुन्दर केशों वाली माँ*

*३५२. **वह्निमण्डल-वासिनी:** अग्नि-चक्र के मध्य में निवास करने वाली माँ*

भक्तिमत्-कल्पलतिका पशुपाश-विमोचिनी ।
संहृताशेष-पाषण्डा सदाचार-प्रवर्तिका ॥ ७८॥

*३५३. **भक्तिमत्-कल्पलतिका:** भक्तों की इच्छा पूर्ण करने वाली लता स्वरुप माँ (जिस प्रकार लताएं मनचाहे पुष्प एवं फल देती हैं, उसी प्रकार माँ भक्तों को उनकी इच्छानुसार फल देती हैं)*
*३५४. **पशुपाश-विमोचिनी:** अज्ञानियों को अज्ञान से मुक्ति देने वाली माँ*
*३५५. **संहृताशेष-पाषण्डा:** विधर्मियों का नाश करने वाली माँ*
*३५६. **सदाचार-प्रवर्तिका:** सत्य मार्ग प्रदर्शित करने वाली माँ*

तापत्रयाग्नि-सन्तप्त-समाह्लादन-चन्द्रिका ।
तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा ॥ ७९॥

*३५७. **तापत्रयाग्नि-सन्तप्त-समाह्लादन-चन्द्रिका:** दुःख की त्रिगुण अग्नि (तीन तत्व - जल, अग्नि एवं वायु से सम्बंधित रोग) से जलते हुए भक्तों को चन्द्रमा के समान शीतलता देने वाली माँ*
*३५८. **तरुणी:** सदैव यौवना माँ*
*३५९. **तापसाराध्या:** योगियों द्वारा पूजित माँ*
*३६०. **तनुमध्या:** अस्थूल-कटि वाली माँ*
*३६१. **तमोऽपहा:** तमोगुण को निर्मूल करने वाली माँ*

चितिः तत्पद-लक्ष्यार्था चिदेकरस-रूपिणी ।
स्वात्मानन्द-लवीभूत-ब्रह्माद्यानन्द-सन्ततिः ॥ ८०॥

*३६२. **चितिः** शुद्ध बुद्धि माँ*
*३६३. **तत्पद-लक्ष्यार्था:** सत्य की अभिव्यक्ति माँ*
*३६४. **चिदेकरस-रूपिणी:** ज्ञान स्वरूपिणी माँ*
*३६५. **स्वात्मानन्द-लवीभूत-ब्रह्माद्यानन्द-सन्ततिः** समस्त प्राणियों को ब्रह्मदेव एवं अन्य देवों के वर से भी अधिक आनंद देने वाले वर देने वाली*

माँ

परा प्रत्यक्चितीरूपा पश्यन्ती परदेवता ।
मध्यमा वैखरीरूपा भक्त-मानस-हंसिका ॥ ८१॥

*३६६. **परा:** सर्वश्रेष्ठ माँ*
*३६७. **प्रत्यक्चितीरूपा:** अवयक्त चेतना स्वरुप माँ*
*३६८. **पश्यन्ती:** पश्यन्ति ध्वनि (एक प्रकार की सूक्ष्म ध्वनि जो वाक को उत्पन्न करने वाली वायु के मूलाधार से हटकर नाभि में पहुँचने पर होती है) उत्पन्न करने वाली माँ*
*३६९. **परदेवता:** सर्वश्रेष्ठ देवी माँ*
*३७०. **मध्यमा:** कमल के कर्णिका (हृदय) में निवास करने वाली माँ*
*३७१. **वैखरीरूपा:** माँ सरस्वती की भांति कंठ से विशेष स्वर वैखरी उच्चारण करने में समर्थ माँ*
*३७२. **भक्त-मानस-हंसिका:** भक्तों के मस्तिष्क में हंस स्वरूपी माँ*

कामेश्वर-प्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता ।
शृङ्गार-रस-सम्पूर्णा जया जालन्धर-स्थिता ॥ ८२॥

*३७३. **कामेश्वर-प्राणनाडी:** (पति) भगवान् शिव शंकर के प्राण स्वरूपा, माँ*
*३७४. **कृतज्ञा:** प्राणियों के (शुभ-अशुभ) कर्मों की ज्ञाता, माँ*
*३७५. **कामपूजिता:** कामदेव से पूजित माँ*
*३७६. **शृङ्गार-रस-सम्पूर्णा:** शृङ्गार-रस सार से सम्पूर्ण माँ*
*३७७. **जया:** सदैव विजयी माँ*
*३७८. **जालन्धर-स्थिता:** जालंधर (एक योग मुद्रा) मुद्रा में स्थित माँ*

ओड्याणपीठ-निलया बिन्दु-मण्डलवासिनी ।
रहोयाग-क्रमाराध्या रहस्तर्पण-तर्पिता ॥ ८३॥

*३७९. **ओड्याणपीठ-निलया:** चित्तमय ओड्याण पीठ के मध्य में स्थित माँ (ओड्याण पीठ चित्त की वृत्ति के प्रतिरूप पर लिंग की स्थिति के सन्दर्भ*

में वर्णित है)

*३८०. **बिन्दु-मण्डलवासिनी:** बिंदु-मंडल (श्री-चक्र) में निवास करने वाली माँ*

*३८१. **रहोयाग-क्रमाराध्या:** (बलि) कर्म-काण्ड संस्कारों में गुप्त रूप से पूजित माँ*

*३८२. **रहस्तर्पण-तर्पिता:** रहस्यमय पूजन विधि से प्रसन्न होने वाली माँ (कुछ कर्म-कांडों में जैसे बलि-कर्म-काण्ड, माँ की स्तुति रहस्यमय अथवा गुप्त विधि से की जाती है, जिससे माँ प्रसन्न होतीं हैं)*

सद्यःप्रसादिनी विश्व-साक्षिणी साक्षिवर्जिता ।
षडङ्गदेवता-युक्ता षाड्गुण्य-परिपूरिता ॥ ८४॥

*३८३. **सद्यःप्रसादिनी:** (श्रद्धा से पूजन करने पर) तुरंत कृपा प्रदान करने वाली माँ*

*३८४. **विश्व-साक्षिणी:** विश्व की साक्षी माँ (अर्थात विश्व की घटनाओं की साक्षी माँ)*

*३८५. **साक्षिवर्जिता:** माँ के अतिरिक्त कोई और (विश्व की घटनाओं का) विश्वसनीय साक्षी नहीं*

*३८६. **षडङ्गदेवता-युक्ता:** छै अंग (हृदय, मष्तिस्क, केश, नेत्र, कवच एवं शस्त्र) वाले देवताओं के सहगत माँ*

*३८७. **षाड्गुण्य-परिपूरिता:** छै गुण (समृद्धता, वीरता, विरागता, प्रसिद्धि, धन-धान्य एवं बुद्धिमता) से परिपूर्ण माँ*

नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाण-सुख-दायिनी ।
नित्या-षोडशिका-रूपा श्रीकण्ठार्ध-शरीरिणी ॥ ८५॥

*३८८. **नित्यक्लिन्ना:** सदैव करुणामयी माँ*

*३८९. **निरुपमा:** अतुलनीय माँ*

*३९०. **निर्वाण-सुखदायिनी:** मोक्ष सुख देने वाली माँ*

*३९१. **नित्या-षोडशिका-रूपा:** सोलह पवित्र देवी स्वरूपिणी माँ (कामेश्वरी, भगमालिनी, नित्यक्लिन्ना, भेरुण्डा, वाहिनिवासिनी, महावज्रेश्वरी, शिवदूती, त्वरिता, कुलसुंदरी, नित्या, नीलपटाकिनी, विजया, सर्वमंगला,*

ज्वालामालिनी, चित्रा एवं त्रिपुर-सुंदरी)

*३९२. **श्रीकण्ठार्ध-शरीरिणी:** अर्ध-नारीश्वर स्वरूपिणी माँ*

प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी ।
मूलप्रकृतिर् अव्यक्ता व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपिणी ॥ ८६॥

*३९३. **प्रभावती:** दीप्तिमान माँ*

*३९४. प्र**भारूपा:** उज्जवल किरण रुपी माँ*

*३९५. **प्रसिद्धा:** यशस्वी माँ*

*३९६. **परमेश्वरी:** सर्वोच्च संप्रभुता वाली माँ*

*३९७. **मूलप्रकृतिर्:** समस्त ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का मूल कारण, माँ*

*३९८. **अव्यक्ता:** अव्यक्त ब्रह्म माँ*

*३९९. **व्यक्ताव्यक्त-स्वरूपीणि:** व्यक्त एवं अव्यक्त, दोनों ही रूप में स्थित माँ*

व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्या-स्वरूपिणी ।
महाकामेश-नयन-कुमुदाह्लाद-कौमुदी ॥ ८७॥

*४००. **व्यापिनी:** सर्व-व्यापी माँ*

*४०१. **विविधाकारा:** अनेक आकारों वाली माँ*

*४०२. **विद्याऽविद्या-स्वरूपिणी:** अज्ञान एवं ज्ञान (अर्थात तमस एवं सत), दोनों ही स्वरुप में स्थित माँ*

*४०३. **महाकामेश-नयन-कुमुदाह्लाद-कौमुदी:** भगवान् शिव शंकर के जल-कुमुदिनी समान नेत्रों में चंद्र प्रकाश (चांदनी) की तरह चमकती माँ*

भक्त-हार्द-तमोभेद-भानुमद्भानु-सन्ततिः ।
शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवङ्करी ॥ ८८॥

*४०४. **भक्त-हार्द-तमोभेद-भानुमद्भानु-सन्ततिः** भक्तों के हृदय से अंधकार दूर करने वाली सूर्य की किरण समान माँ*

*४०५. **शिवदूती:** भगवान् शिव शंकर का प्रतिनिधित्व करने वाली माँ*

*४०६. **शिवाराध्याः** भगवान् शिव शंकर से भी आराध्य, माँ*
*४०७. **शिवमूर्तिः** भगवान् शिव शंकर की प्रतिरूप माँ*
*४०८. **शिवङ्करीः** मंगलता प्रदान करने वाली माँ*

शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता ।
अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा ॥ ८९॥

*४०९. **शिवप्रियाः** भगवान् शिव शंकर की प्रिया, माँ*
*४१०. **शिवपराः (**अपने पति) भगवान् शिव शंकर को पूर्णतः समर्पित, माँ*
*४११. **शिष्टेष्टाः** सत्य-मार्गी प्राणियों की प्रियतम माँ*
*४१२. **शिष्टपूजिताः** सत्य-मार्गी प्राणियों द्वारा पूजित माँ*
*४१३. **अप्रमेयाः** अनंत माँ*
*४१४. **स्वप्रकाशाः** स्वतःदीप्त माँ*
*४१५. **मनोवाचामगोचराः** अकल्पनित माँ (माँ का आंकलन बुद्धि, वाणी इत्यादि से नहीं किया जा सकता)*

चिच्छक्तिश् चेतनारूपा जडशक्तिर् जडात्मिका ।
गायत्री व्याहृतिः सन्ध्या द्विजबृन्द-निषेविता ॥ ९०॥

*४१६. **चिच्छक्तिश्ः** चेतना की शक्ति माँ*
*४१७. **चेतनारूपाः** शुद्ध चेतना स्वरुप माँ*
*४१८. **जडशक्तिर्ः** सृजन-शक्ति की स्वामिनी माँ*
*४१९. **जडात्मिकाः** ब्रह्माण्ड की आत्मा माँ*
*४२०. **गायत्रीः** गायत्री मन्त्र दायिनी माँ (ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। अर्थात - हम पृथ्वीलोक, भुवर्लोक और स्वर्लोक में व्याप्त उस सृष्टिकर्ता प्रकाशमान परमात्मा के तेज का ध्यान करते हैं। हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर ले चलने के लिए परमात्मा का तेज हमें प्रेरित करे, ऐसा ज्ञान देने वाली माँ)*
*४२१. **व्याहृतिः** वाक्य देवी माँ*
*४२२. **सन्ध्याः** गोधूलि स्वरूपा माँ (पूजा-पाठ और मांगलिक कार्यों के लिए गोधूलि बेला अत्यंत शुभ मानी जाती है, अतः इस पावन समय का*

प्रतिनिधित्व करने वाली माँ)

*४२३. **द्विजवृन्द-निषेविता:** द्विज प्राणियों द्वारा पूजित माँ (गृहस्थ आश्रम से जब प्राणी आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होता है तो उसे द्विज कहा जाता है)*

तत्त्वासना तत् त्वं अयी पञ्च-कोशान्तर-स्थिता ।
निःसीम-महिमा नित्य-यौवना मदशालिनी ॥ ९१॥

*४२४. **तत्त्वासना:** तत्व (आकाश, अग्नि, जल, थल एवं पवन) में वास करने वाली माँ*

*४२५. **तत्:** सर्वोच्च सत्य (ब्रह्म) माँ*

*४२६. **त्वं:** आदर के साथ 'आप' सम्बोधित माँ*

*४२७. **अयी:** पोषण करने वाली माँ*

*४२८. **पञ्च-कोशान्तर-स्थिता:** पांचो कोश (अन्नमय कोष, प्रणम्य कोष, मनोमय कोष, विज्ञानमय कोष एवं आनंदमय कोष) में विद्यमान माँ*

*४२९. **निःसीम-महिमा:** अपरिमित महिमा वाली माँ*

*४३०. **नित्य-यौवना:** सदैव युवती माँ*

*४३१. **मदशालिनी:** मदमस्त माँ*

मदघूर्णित-रक्ताक्षी मदपाटल-गण्डभूः ।
चन्दन-द्रव-दिग्धाङ्गी चाम्पेय-कुसुम-प्रिया ॥ ९२॥

*४३२. **मदघूर्णित-रक्ताक्षी:** रक्त समान लाल आकर्षित मदमस्त नेत्रों वाली माँ*

*४३३. **मदपाटल-गण्डभूः** गुलाबी आकर्षक कपोल वाली माँ*

*४३४. **चन्दन-द्रव-दिग्धाङ्गी:** चन्दन के लेप से लिप्त शरीर वाली माँ*

*४३५. **चाम्पेय-कुसुम-प्रिया:** चम्पक के पुष्पों को पसंद करने वाली माँ*

कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी ।
कुलकुण्डालया कौल-मार्ग-तत्पर-सेविता ॥ ९३॥

*४३६. **कुशला:** अति निपुण माँ*

*४३७. **कोमलाका:** कोमल अंगों वाली अति सुन्दर माँ*
*४३८. **कुरुकुल्ला:** उत्पति एवं संहार करने वाली माँ*
*४३९. **कुलेश्वरी:** कुल देवी माँ*
*४४०. **कुलकुण्डालया:** मूलाधार चक्र (तंत्र और योग साधना की चक्र संकल्पना का पहला चक्र) में स्थित माँ*
*४४१. **कौल-मार्ग-तत्पर-सेविता:** कौलाचार परम्परा का अनुसरण करने वाले प्राणियों द्वारा पूजित माँ (वेदाचार, वैष्णवाचार, शैवाचार, दक्षिणाचार, वामाचार, सिद्धांताचार एवं कौलाचार, ये भावत्रय से संबद्ध सात आचार हैं)*

कुमार-गणनाथाम्बा तुष्टिः पुष्टिर् मतिर् धृतिः ।
शान्तिः स्वस्तिमती कान्तिर् नन्दिनी विघ्ननाशिनी ॥ ९४॥

*४४२. **कुमार-गणनाथाम्बा:** कुमार सुब्रह्मण्य (कार्तिकेय) एवं गणपति की जननी माँ*
*४४३. **तुष्टिः** सदैव संतुष्ट माँ*
*४४४. **पुष्टिर्:** पोषिता माँ*
*४४५. **मतिर्:** बुद्धिमान माँ*
*४४६. **धृतिः** धैर्यवान माँ*
*४४७. **शान्तिः** शांतिप्रिय माँ*
*४४८. **स्वस्तिमती:** परम सत्य माँ*
*४४९. **कान्तिर्:** आभामयी माँ*
*४५०. **नन्दिनी:** आनंद दायिनी माँ*
*४५१. **विघ्ननाशिनी:** विघ्न-हर्ता माँ*

तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी-कामरूपिणी ।
मालिनी हंसिनी माता मलयाचल-वासिनी ॥ ९५॥

*४५२. **तेजोवती:** प्रभावान माँ*
*४५३. **त्रिनयना:** तीन नेत्रों वाली माँ (सूर्य, चंद्र एवं अग्नि, यह माँ के तीन नेत्र माने जाते हैं)*

*४५४. **लोलाक्षी-कामरूपिणी:** चंचल नेत्रों वाली एवं स्व-इच्छा से विभिन्न रूप धारण करने वाली माँ*
*४५५. **मालिनी:** (पुष्पों की) माला धारण करने वाली माँ*
*४५६. **हंसिनी:** हंस पर विराजमान माँ*
*४५७. **माता:** जननी, माँ*
*४५८. **मलयाचल-वासि:** मलय पर्वत पर निवास करने वाली माँ*

सुमुखी नलिनी सुभ्रूः शोभना सुरनायिका ।
कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी ॥ ९६॥

*४५९. **सुमुखी:** अत्यंत सुन्दर मुख वाली माँ*
*४६०. **नलिनी:** कोमल कमल-पत्र समान शरीर वाली माँ*
*४६१. **सुभ्रूः** अत्यंत सुन्दर भौहें वाली माँ*
*४६२. **शोभना:** सदैव दीप्तिमान माँ*
*४६३. **सुरनायिका:** देवों की नायिका माँ*
*४६४. **कालकण्ठी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी माँ*
*४६५. **कान्तिमती:** आभामयी माँ*
*४६६. **क्षोभिणी:** निषाद स्वर की दो श्रुतियों में अंतिम श्रुति की ज्ञाता माँ (अर्थात संगीतज्ञ माँ)*
*४६७. **सूक्ष्मरूपिणी**: सूक्ष्म रूप में सदैव उपस्थित माँ (सूक्ष्म रूप जिसे ज्ञानेन्द्रियों से सांसारिकता में अनुभव न किया जा सके, लेकिन जो आध्यात्मिक रूप में उपस्थित हो)*

वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्था-विवर्जिता ।
सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी ॥ ९७॥

*४६८. **वज्रेश्वरी:** वज्र तांत्रिक अनुष्ठान की देवी माँ (एक प्रकार का तान्त्रिक अनुष्ठान, वज्रवाहनिका, जिसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए वज्र बनाकर मन्त्रों द्वारा अभिषेक, पूजन और हवन के द्वारा किया जाता, उसकी स्वामिनी देवी माँ)*
*४६९. **वामदेवी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी*

*४७०. **वयोऽवस्था-विवर्जिता:** आयु (अथवा समय) का जिन पर कोई प्रभाव न हो, ऐसी माँ (अर्थात सदैव यौवना माँ)*

*४७१. **सिद्धेश्वरी:** सिद्ध प्राणियों द्वारा पूजित माँ*

*४७२. **सिद्धविद्या:** सिद्धि देने वाले पंद्रह अक्षर काली मन्त्र (ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अद्य कालिका परम् ईश्वरी स्वाहा) की स्वामिनी माँ*

*४७३. **सिद्धमाता:** सिद्ध प्राणियों की माँ*

*४७४. **यशस्विनी:** प्रसिद्द माँ*

विशुद्धिचक्र-निलया आरक्तवर्णा त्रिलोचना ।
खट्वाङ्गादि-प्रहरणा वदनैक-समन्विता ॥ ९८॥

*४७५. **विशुद्धिचक्र-निलया:** विशुद्धि चक्र में निवास करने वाली माँ (हमारे शरीर में सात चक्र होते हैं जिसमे से पांचवां चक्र है, विशुद्धि चक्र। इसे कंठ चक्र भी कहा जाता है। विशुद्धि चक्र आध्यात्म से जुड़ा हुआ माना जाता है। इसे आत्मा की शुद्धि का प्रतीक भी माना जाता है। इसलिए इस चक्र को जाग्रत करने से मन व आत्मा की शुद्धि होती है।)*

*४७६. **आरक्तवर्णा:** हल्के लाल वर्ण वाली (अत्यंत सुन्दर) माँ*

*४७७. **त्रिलोचना:** तीन नेत्रों वाली माँ (सूर्य, चंद्र एवं अग्नि, यह माँ के तीन नेत्र माने जाते हैं)*

*४७८. **खट्वाङ्गादि-प्रहरणा:** गदा आदि अस्त्रों से सुसज्जित माँ*

*४७९. **वदनैक-समन्विता:** एक-मुखी माँ*

पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोक-भयङ्करी ।
अमृतादि-महाशक्ति-संवृता डाकिनीश्वरी ॥ ९९॥

*४८०. **पायसान्नप्रिया:** मीठे चावल की अनुरक्त माँ*

*४८१. **त्वक्स्था:** स्पर्श अनुभूति की देवी माँ*

*४८२. **पशुलोक-भयङ्करी:** पशुलोक वासिओं के हृदय में भय भरने वाली माँ (अर्थात दुष्ट लोगों के हृदय को भयभीत करने वाली माँ)*

*४८३. **अमृतादि-महाशक्ति-संवृता:** अमृत एवं अन्य शक्तिओं को धारण करने वाली माँ*

*४८४. **डाकिनीश्वरी:** डाकिनी (माँ की एक अनुचरी) की स्वामिनी माँ*

अनाहताब्ज-निलया श्यामाभा वदनद्वया ।
दंष्ट्रोज्ज्वला अक्ष-मालादि-धरा रुधिरसंस्थिता ॥ १००॥

*४८५. **अनाहताब्ज-निलया:** दर्द दूर करने वाले स्थानों (चिकित्सालयों) में निवास करने वाली माँ (अर्थात चिकित्सालयों में रोगियों को रोग-मुक्त करने वाली माँ)*

*४८६. **श्यामाभा:** श्याम वर्ण की कांतिमान माँ*

*४८७. **वदनद्वया:** द्वि-शरीर वाली माँ*

*४८८. **दंष्ट्रोज्ज्वला:** उज्जवल दांतों वाली माँ*

*४८९. **अक्ष-मालादि-धरा:** रुद्राक्ष मनका की माला धारण करने वाली माँ*

*४९०. **रुधिरसंस्थिता:** रक्त को नियन्त्र करने वाली माँ (अर्थात जीवन दान देने वाली माँ)*

कालरात्र्यादि-शक्त्यौघ-वृता स्निग्धौदनप्रिया ।
महावीरेन्द्र-वरदा राकिण्यम्बा-स्वरूपिणी ॥ १०१॥

*४९१. **कालरात्र्यादि-शक्त्यौघ-वृता:** कालरात्रि शक्ति की स्वामिनी माँ (माँ की सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती हैं)*

*४९२. **स्निग्धौदनप्रिया:** गौ घी एवं मक्खन से निर्मित खाद्य पदार्थों की अनुरक्त माँ*

*४९३. **महावीरेन्द्र-वरदा:** महावीरों को वरदान देने वाली माँ*

*४९४. **राकिण्यम्बा-स्वरूपिणी:** राकिनी स्वरूपिणी माँ (राकिनी एक तंत्र देवी का नाम है)*

मणिपूराब्ज-निलया वदनत्रय-संयुता ।
वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता ॥ १०२॥

*४९५. **मणिपूराब्ज-निलया:** दस-पत्री कमल के मणिपूरक चक्र में निवास करने वाली माँ*

*४९६. **वदनत्रय-संयुता:** त्रि-मुख आकृति वाली माँ*
*४९७. **वज्रादिकायुधोपेता:** वज्र (बिजली जैसी चमक वाला अस्त्र) जैसे घातक अस्त्रों को धारण करने वाली माँ*
*४९८. **डामर्यादिभिरावृता:** डिम्ब (मादा प्राणी के गर्भ की आरंभिक अवस्था) को नियंत्रित करने वाली माँ (अर्थात जननी, माँ)*

रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्न-प्रीत-मानसा ।
समस्तभक्त-सुखदा लाकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ॥ १०३॥

*४९९. **रक्तवर्णा:** रक्त (लाल) वर्ण वाली अत्यंत सुन्दर माँ*
*५००. **मांसनिष्ठा:** मांस-पेशियों को नियंत्रण करने वाली माँ (अर्थात शरीर में शक्ति देने वाली माँ)*
*५०१. **गुडान्न-प्रीत-मानसा:** गुड़ से निर्मित मीठे चावल पसंद करने वाली माँ*
*५०२. **समस्तभक्त-सुखदा:** समस्त भक्तों को सुख देने वाली माँ*
*५०३. **लाकिन्यम्बा-स्वरूपिणी:** लाकिनी देवी (एक तांत्रिक दिव्य देवी) स्वरूपिणी माँ*

स्वाधिष्ठानाम्बुज-गता चतुर्वक्त्र-मनोहरा ।
शूलाद्यायुध-सम्पन्ना पीतवर्णा अतिगर्विता ॥ १०४॥

*५०४. **स्वाधिष्ठानाम्बुज-गता:** स्वाधिष्ठान योग में कमल पत्र पर अधिष्ठापित माँ (स्वाधिष्ठान योग, हठयोग का ही भाग माना जाता है। शरीर के आठ चक्रों में से शिश्न मूल रूप (मूलाधार चक्र और मणिपूरक चक्र के मध्य) एवं स्वाधिष्ठान रूप का श्रुति में उल्लेख है। यह छह पत्रों वाले कमल में अधिष्ठापित माँ का ही स्वरुप है। मान्यता है कि इस चक्र से यौवन शक्ति का विकास होता है।)*
*५०५. **चतुर्वक्त्र-मनोहरा:** अत्यंत सुन्दर चार मुखाकृति वाली माँ*
*५०६. **शूलाद्यायुध-सम्पन्ना:** त्रिशूल एवं अन्य घातक अस्त्रों को धारण करने वाली माँ*
*५०७. **पीतवर्णा:** पीत वर्ण में अति सुन्दर माँ*
*५०८. **अतिगर्विता:** गौरवशाली माँ*

मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादि-समन्विता ।
दध्यन्नासक्त-हृदया काकिनी-रूप-धारिणी ॥ १०५॥

*५०९. **मेदोनिष्ठा:** प्राणियों के स्थूल शरीर में निवास करने वाली माँ*
*५१०. **मधुप्रीता:** मधु (शहद) पान की प्रिया माँ*
*५११. **बन्धिन्यादि-समन्विता:** बंधिनी (वीर) एवं अन्य शक्तियों को प्रदान करने वाली माँ*
*५१२. **दध्यन्नासक्तहृ-दया:** दही द्वारा निर्मित प्रसाद की प्रिया माँ*
*५१३. **काकिनी-रूप-धारिणी:** काकिनी योगिनी (तंत्र विद्या की एक देवी) स्वरूपिणी माँ*

मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्च-वक्त्रा अस्थि-संस्थिता ।
अङ्कुशादि-प्रहरणा वरदादि-निषेविता ॥ १०६॥

*५१४. **मूलाधाराम्बुजारूढा:** मूलाधार योग में कमल पत्र पर स्थित माँ (मूलाधार योग हठयोग के षट्चक्रों में से एक है)*
*५१५. **पञ्च-वक्त्रा:** पञ्च-मुखी आकृति वाली माँ*
*५१६. **अस्थि-संस्थिता:** प्राणियों की अस्थि में निवास करने वाली माँ*
*५१७. **अङ्कुशादि-प्रहरणा:** अंकुश एवं अन्य घातक अस्त्रों को धारण करने वाली माँ*
*५१८. **वरदादि-निषेविता:** वरदा (एक देवी) एवं अन्य देवीयों द्वारा सेवित माँ*

मुद्गौदनासक्त-चित्ता साकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ।
आज्ञा-चक्राब्ज-निलया शुक्लवर्णा षडानना ॥ १०७॥

*५१९. **मुद्गौदनासक्त-चित्ता:** मुद्गा (एक प्रकार की दाल) द्वारा निर्मित प्रसाद की प्रिया माँ*
*५२०. **साकिन्यम्बा-स्वरूपिणी:** साकिनी योगिनी (तंत्र की एक देवी) स्वरूपिणी माँ*
*५२१. **आज्ञा-चक्राब्ज-निलया:** आज्ञा चक्र में कमल के द्वि-पत्र में स्थित माँ (आज्ञा चक्र एक प्रकार का हठयोग है। इस के साधन से वाक्-सिद्धि*

प्राप्त होती है)

*५२२. **शुक्लवर्णा:** श्वेत वर्ण में अति सुन्दर माँ*

*५२३. **षडानना:** छै मुखाकृति वाली माँ*

मज्जासंस्था हंसवती-मुख्य-शक्ति-समन्विता ।
हरिद्रान्नैक-रसिका हाकिनी-रूप-धारिणी ॥ १०८॥

*५२४. **मज्जासंस्था:** अस्थि-मज्जा को नियंत्रित करने वाली माँ (अर्थात प्राणियों को जीवन दान देने वाली माँ)*

*५२५. **हंसवती-मुख्य-शक्ति-समन्विता:** हंसवति एवं क्षमावति (तंत्र साधना की दो देवियों) के साथ कमल के द्वि-पत्र में निवास करने वाली माँ*

*५२६. **हरिद्रान्नैक-रसिका:** हल्दी (मसाला) से बनाए गए द्रव्य की प्रिया माँ*

*५२७. **हाकिनी-रूप-धारिणी:** हाकिनी देवी (तंत्र विद्या की एक देवी) स्वरूपिणी माँ*

सहस्रदल-पद्मस्था सर्व-वर्णोप-शोभिता ।
सर्वायुधधरा शुक्ल-संस्थिता सर्वतोमुखी ॥ १०९॥

*५२८. **सहस्रदल-पद्मस्था:** सहस्त्र-पत्रों वाले कमल में निवास करने वाली माँ*

*५२९. **सर्व-वर्णोप-शोभिता:** सभी वर्णों में आभामयी माँ*

*५३०. **सर्वायुधधरा:** सभी प्रकार के घातक अस्त्रों को धारण करने वाली माँ*

*५३१. **शुक्ल-संस्थिता:** शुक्ल (वीर्य) की स्वामिनी माँ (अर्थात जन्म-दाता माँ)*

*५३२. **सर्वतोमुखी:** सभी दिशाओं में देखने वाली माँ (माँ हर समय ब्रह्माण्ड के प्रत्येक भाग को देख सकती हैं)*

सर्वौदन-प्रीतचित्ता याकिन्यम्बा-स्वरूपिणी ।
स्वाहा स्वधा अमतिर् मेधा श्रुतिः स्मृतिर् अनुत्तमा ॥ ११०॥

*५३३. **सर्वौदन-प्रीतचित्ता:** किसी भी प्रकार के प्रसाद (पत्र, पुष्प, नैवैद्य इत्यादि) अर्पण से प्रसन्न होने वाली माँ*

*५३४. **याकिन्यम्बा-स्वरूपिणी:** याकिनी योगिनी (तंत्र विद्या की एक देवी)*

स्वरूपिणी माँ

*५३५. **स्वाहा:** यज्ञ-मन्त्र उच्चारण की स्वामिनी माँ (जब यज्ञ-मन्त्र के अंत में माँ के 'स्वाहा' उच्चारण के साथ अग्नि को आहुति अर्पित की जाती है, तो अग्नि देव प्रसन्न हो आहुति स्वीकार करते हैं)*

*५३६. **स्वधा:** यज्ञ आहुति में अन्न-दान की स्वामिनी माँ ('स्वधा' माँ का स्वरुप है जिसके यज्ञ-मन्त्र में उच्चारण से देवता पितरों को दी गई हवि स्वीकार करते हैं)*

*५३७. **अमतिर्:** अनभिज्ञता की स्वामिनी माँ (अर्थात चूँकि माँ अनभिज्ञता की स्वामिनी हैं, माँ के भक्तों को अज्ञानता नहीं सताती)*

*५३८. **मेधा:** बुद्धिमान माँ*

*५३९. **श्रुतिः** स्वयं ही धर्म-शास्त्र माँ*

*५४०. **स्मृतिः** स्वयं ही स्मृति (वेदों का मूल आधार) माँ*

*५४१. **अनुत्तमा:** असामान्य माँ (जिनके समान कोई न हो, ऐसी माँ)*

पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवण-कीर्तना ।
पुलोमजार्चिता बन्ध-मोचनी बन्धुरालका ॥ १११॥

*५४२. **पुण्यकीर्तिः** यशस्वी माँ*

*५४३. **पुण्यलभ्या:** पुण्य आत्माओं को प्राप्त माँ*

*५४४. **पुण्यश्रवण-कीर्तना:** (माँ की) पुण्य कीर्ति गाने वाले भक्तों को शुभ फल देने वाली माँ*

*५४५. **पुलोमजार्चिता:** पुलोम की पुत्री (शची - इंद्राणी) से आराध्य माँ*

*५४६. **बन्ध-मोचनी:** बंधनों से मुक्ति देनी वाली माँ*

*५४७. **बर्बरालका:** घुंघराले बालों वाली माँ*

विमर्शरूपिणी विद्या वियदादि-जगत्प्रसूः ।
सर्वव्याधि-प्रशमनी सर्वमृत्यु-निवारिणी ॥ ११२॥

*५४८. **विमर्शरूपिणी:** गुण-दोषों की विवेचना करने वाली माँ*

*५४९. **विद्या:** स्वयं ही ज्ञान स्वरूपिणी माँ*

*५५०. **वियदादि-जगत्प्रसूः** समस्त तत्व की स्वामिनी जगद्जननी माँ*

*५५१. **सर्वव्याधि-प्रशमनी:** समस्त दुःखों और रोगों को दूर करने वाली माँ*
*५५२. **सर्वमृत्यु-निवारिणी:** भक्तों में मृत्यु-भय का निवारण करने वाली माँ*

अग्रगण्या अचिन्त्यरूपा कलिकल्मष-नाशिनी ।
कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्ष-निषेविता ॥ ११३॥

*५५३. **अग्रगण्या:** सर्वश्रेष्ठ माँ*
*५५४. **अचिन्त्यरूपा:** विचारों से परे माँ (अर्थात अकल्पनीय माँ)*
*५५५. **कलिकल्मष-नाशिनी:** कलियुग के पापों को नष्ट करने वाली माँ*
*५५६. **कात्यायनी:** महर्षि कात्यायन की पुत्री, माँ (महर्षि कत नामक एक प्रसिद्ध महर्षि थे। उनके पुत्र महर्षि कात्य हुए। इन्हीं कात्य के गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन उत्पन्न हुए थे। इन्होंने भगवती पराम्बा की उपासना करते हुए अनेक वर्षों तक कठिन तपस्या की थी। उनकी इच्छा थी माँ भगवती उनके घर पुत्री के रूप में जन्म लें। माँ भगवती ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और उनके गृह में पुत्री बन कर जन्म लिया। इस जन्म में माँ, कात्यानी कहलाईं।)*
*५५७. **कालहन्त्री:** काल को टालने वाली माँ (अर्थात अमरत्व का वर देने वाली माँ)*
*५५८. **कमलाक्ष-निषेविता:** भगवान् विष्णु को शरण देने वाली माँ*

ताम्बूल-पूरित-मुखी दाडिमी-कुसुम-प्रभा ।
मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी ॥ ११४॥

*५५९. **ताम्बूल-पूरित-मुखी:** मुख में पान चबाती हुई माँ*
*५६०. **दाडिमी-कुसुम-प्रभा:** अनार के पुष्प के सामान आभा वाली माँ*
*५६१. **मृगाक्षी:** मृग के समान (बड़े बड़े सुन्दर) नेत्रों वाली माँ*
*५६२. **मोहिनी:** सम्मोहक माँ*
*५६३. **मुख्या:** प्रमुख माँ*
*५६४. **मृडानी:** भगवान् शिव शंकर की पत्नी, माँ*
*५६५. **मित्ररूपिणी:** सभी प्राणियों की मित्र माँ*

नित्यतृप्ता भक्तनिधिर् नियन्त्री निखिलेश्वरी ।
मैत्र्यादि-वासनालभ्या महाप्रलय-साक्षिणी ॥ ११५॥

*५६६. **नित्यतृप्ता:** सदैव तृप्त माँ*
*५६७. **भक्तनिधिर्:** भक्तों के लिए कोष रुपी माँ*
*५६८. **नियन्त्री:** भक्तों को सत्य मार्ग पर चलने का निर्देश देने वाली माँ*
*५६९. **निखिलेश्वरी:** समस्त ब्रह्माण्ड की साम्राज्ञी माँ*
*५७०. **मैत्र्यादि-वासनालभ्या:** प्रेम एवं नैतिक स्वभाव से प्राप्त होने वाली माँ*
*५७१. **महाप्रलय-साक्षिणी:** प्रलय की साक्षी माँ*

पराशक्तिः परानिष्ठा प्रज्ञानघन-रूपिणी ।
माध्वीपानालसा मत्ता मातृका-वर्ण-रूपिणी ॥ ११६॥

*५७२. **पराशक्तिः** सर्वोच्च शक्ति माँ*
*५७३. **परानिष्ठा:** परम विश्वासपात्र एवं हितकारी माँ*
*५७४. **प्रज्ञानघन-रुपिणी:** प्रत्यक्ष ज्ञान स्वरूपिणी माँ (अर्थात्त स्वयं ही ज्ञान माँ)*
*५७५. **माध्वीपानालसा:** माध्वी नदी (शास्त्रों में उल्लेखित एक पवित्र नदी) के जल की प्रिया माँ (माध्वी नदी के जल को अमृत-तुल्य माना गया है)*
*५७६. **मत्ता:** मदमस्त माँ*
*५७७. **मातृका-वर्ण-रूपिणी**: सरस्वती स्वरूपिणी माँ*

महाकैलास-निलया मृणाल-मृदु-दोर्लता ।
महनीया दयामूर्तिर् महासाम्राज्य-शालिनी ॥ ११७॥

*५७८. **महाकैलास-निलया:** महा-कैलाश पर्वत निवासिनी माँ*
*५७९. **मृणाल-मृदु-दोर्लता:** कमल डंठल के समान कोमल एवं मृदु भुजाओं वाली माँ*
*५८०. **महनीया:** आराध्य माँ*
*५८१. **दयामूर्तिर्:** दया-मूर्ति माँ*
*५८२. **महासाम्राज्य-शालिनी:** महान साम्राज्य (त्रि-लोक) की साम्राज्ञी माँ*

आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता ।
श्री-षोडशाक्षरी-विद्या त्रिकूटा कामकोटिका ॥ ११८॥

*५८३. **आत्मविद्या:** स्वयं ही ज्ञान माँ*
*५८४. **महाविद्या:** उत्कृष्ट ज्ञान की पीठ माँ*
*५८५. **श्रीविद्या:** श्री विद्या मन्त्र की जननी माँ (श्री विद्या मन्त्र - 'कामो योनिः कमला वज्रपाणि र्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूश्च्यैशा विश्वमातादिविद्योम', की साधना साधक के अज्ञान को दूर कर आत्म-तत्त्व को प्रकाशित करती है)*
*५८६. **कामसेविता:** कामदेव की आराध्य माँ*
*५८७. **श्री-षोडशाक्षरी-विद्या:** सोलह अक्षर मन्त्र की जननी माँ (महा-षोडशी मन्त्र 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुर सुंदरीयै नमः' की जननी माँ। षोडशी-मन्त्र के जाप से सुंदर रूप की प्राप्ति होती है एवं वैवाहिक जीवन सुखमय बीतता है। कुंवारी स्त्रियों को इसके जाप से अच्छे जीवनसाथी की प्राप्ति होती है। इसके जाप से हृदय की चंचलता समाप्त हो जाती है और मन नियंत्रण में रहता है। यह मन्त्र मन को वश में करके उसे तृप्त करता है)*
*५८८. **त्रिकूटा:** तीन श्रंगियों वाले पर्वत पर निवास करने वाली माँ (वह पर्वत जिस पर लंका बसी हुई है 'गिरि त्रिकूट एक सिंधु मँझारी । विधि निर्मित दुर्गम अति भारी - 'श्री राम चारिस मानस')*
*५८९. **कामकोटिका:** करोडों काम समान सुंदरता वाली माँ*

कटाक्ष-किङ्करी-भूत-कमला-कोटि-सेविता ।
शिरःस्थिता चन्द्रनिभा भालस्था इन्द्रधनु-प्रभा ॥ ११९॥

*५९०. **कटाक्ष-किङ्करी-भुत-कमला-कोटि-सेविता:** करोड़ों देवीओं द्वारा आराध्य माँ जिनकी एक दृष्टि से सभी वशीभूत हो जाते हैं*
*५९१. **शिरःस्थिता:** शिर निवासित माँ (अर्थात उच्च स्थान पर निवास करने वाली)*
*५९२. **चन्द्रनिभा:** चन्द्रमा के समान देदीप्यमान माँ*
*५९३. **भालस्था:** मस्तिष्क में निवास करने वाली माँ*
*५९४. **इन्द्रधनु-प्रभा:** इंद्र-धनुष समान देदीप्यमान माँ*

हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तर-दीपिका ।
दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञ-विनाशिनी ॥ १२०॥

*५९५. **हृदयस्थाः** (भक्तों के) हृदय में निवास करने वाली माँ*
*५९६. **रविप्रख्याः** सूर्य समान दीप्तिमान माँ*
*५९७. **त्रिकोणान्तर-दीपिकाः** त्रिभुजन श्रृंखला में दीप्तिमान माँ (त्रिभुजन श्रृंखला ब्रह्माण्ड का एक बड़ा क्षेत्र है जिसके बीच एक बिंदु को मूलबिंदु चुनकर उसके देशांतर, अंक्षाश और उससे जानेवाली एक रेखा का दिगंश तथा भू-गोलाभ से संबद्ध दो मापें स्वेच्छया से चुन ली जाती हैं)*
*५९८. **दाक्षायणीः** (प्रजापति) दक्ष की पुत्री, माँ (यहां माँ को सतीदेवी के रूप में प्रस्तुत किया गया है)*
*५९९. **दैत्यहन्त्रीः** दैत्यों का संहार करने वाली माँ*
*६००. **दक्षयज्ञ-विनाशिनीः** (प्रजापति) दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने वाली माँ (प्रजापति दक्ष के यज्ञ में भगवान् शिव शंकर का अपमान सहन न कर पाने के कारण माँ ने अपने आपको योगाग्नि में भस्म कर दिया था एवं यज्ञ को विध्वंस कर दिया था, तदापि बाद में महर्षि भृगु ने यज्ञ की रक्षा की थी)*

दरान्दोलित-दीर्घाक्षी दर-हासोज्ज्वलन्-मुखी ।
गुरुमूर्तिर् गुणनिधिर् गोमाता गुहजन्मभूः ॥ १२१॥

*६०१. **दरान्दोलित-दीर्घाक्षीः** (दुष्टों के लिए) बड़े बड़े भयानक नेत्रों वाली माँ*
*६०२. **दर- हासोज्ज्वलन्-मुखीः** मुस्कुराती दीप्तिमान मुख वाली माँ*
*६०३. **गुरुमूर्तिरः** गुरु माँ*
*६०४. **गुणनिधिरः** उत्तम गुणों की कोष माँ*
*६०५. **गोमाताः** (इच्छा-पूर्ति करने वाली सुरभि गौ समान) गौ माता माँ*
*६०६. **गुहजन्मभूः** गुहा (सुब्रमण्या) की जननी, माँ*

देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाश-रूपिणी ।
प्रतिपन्मुख्य-राकान्त-तिथि-मण्डल-पूजिता ॥ १२२॥

*६०७. **देवेशी:** देवों की रक्षक माँ*
*६०८. **दण्डनीतिस्था:** विधि पालन-कर्ता माँ*
*६०९. **दहराकाशरूपिणी:** ईश्वर स्वरूपिणी माँ*
*६१०. **प्रतिपन्मुख्य-राकान्त-तिथि-मण्डल-पूजिता:** मास के प्रत्येक दिन, (कृष्णपक्ष की) प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक, आराध्य माँ*

कलात्मिका कलानाथा काव्यालाप-विनोदिनी ।
सचामर-रमा-वाणी-सव्य-दक्षिण-सेविता ॥१२३॥

*६११. **कलात्मिका:** कला कौशल में निपुण माँ*
*६१२. **कलानाथा:** कला-कौशल की स्वामिनी माँ*
*६१२. **काव्यालाप-विनोदिनी:** काव्य सुनने में रूचि रखने वाली माँ*
*६१४. **सचामर-रमा-वाणी-सव्य-दक्षिण-सेविता:** जिनके बाईं ओर धन की देवी एवं दाहिनी ओर विद्या की देवी पंखा झलते हुए आराधना करती हों, ऐसी माँ*

आदिशक्तिर् अमेया आत्मा परमा पावनाकृतिः ।
अनेककोटि-ब्रह्माण्ड-जननी दिव्यविग्रहा ॥१२४॥

*६१५. **आदिशक्तिर्:** मौलिक शक्ति वाली माँ*
*६१६. **अमेया:** जिन्हें मापा न जा सके, ऐसी माँ*
*६१७. **आत्मा:** शाश्वत तत्त्व माँ*
*६१८. **परमा:** सर्वश्रेष्ठ माँ*
*६१९. **पावनाकृतिः** अत्यंत पवित्र माँ*
*६२०. **अनेककोटि-ब्रह्माण्ड-जननी:** करोड़ों ब्रह्माण्ड की जननी, माँ*
*६२१. **दिव्यविग्रहा:** दिव्य शरीर वाली माँ*

क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्य-पददायिनी ।
त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस् त्रिदशेश्वरी ॥१२५॥

*६२२. **क्लीङ्कारी:** 'क्लीं' अक्षर की जननी, माँ ('क्लीं' अक्षर के उच्चारण से*

दुर्गति-नाशिनी महाकाली को प्रसन्न कर शत्रुओं का नाश किया जा सकता है)

*६२३. **केवला:** परम, पूर्ण एवं स्वतंत्र माँ*
*६२४. **गुह्या:** सभी गुप्त भेदों को जानने वाली माँ*
*६२५. **कैवल्य-पददायिनी:** मोक्ष-दायिनी माँ*
*६२६. **त्रिपुरा:** त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) से भी अधिक पुरातन माँ*
*६२७. **त्रिजगद्वन्द्या:** तीनों लोकों के वासियों द्वारा आराध्य माँ*
*६२८. **त्रिमूर्तिस्:** त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) की मूर्ति स्वरूपिणी माँ*
*६२९. **त्रिदशेश्वरी:** त्रिलोक (स्वर्ग, पृथ्वी एवं पाताल) में आराध्य माँ*

त्र्यक्षरी दिव्य-गन्धाढ्या सिन्दूर-तिलकाञ्चिता ।
उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्व-सेविता ॥१२६॥

*६३०. **त्र्यक्षरि:** ॐ (त्रि-अक्षर) की जननी, माँ*
*६३१. **दिव्य-गन्धाढ्या:** दिव्य सुगंध से सुगन्धित माँ*
*६३२. **सिन्दूर-तिलकाञ्चिता:** माथे पर सिन्दूर तिलक से सुशोभित माँ*
*६३३. **उमा:** वैभवशाली माँ*
*६३४. **शैलेन्द्रतनया:** पर्वतराज (हिमालय) की पुत्री, माँ*
*६३५. **गौरी:** गौर वर्ण की माँ*
*६३६. **गन्धर्व-सेविता:** गंधर्वों की आराध्य माँ*

विश्वगर्भा स्वर्णगर्भा अवरदा वागधीश्वरी ।
ध्यानगम्या अपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा ॥१२७॥

*६३७. **विश्वगर्भा:** विश्व को अपने गर्भ में धारण करने वाली माँ (अर्थात विश्व-जननी, माँ)*
*६३८. **स्वर्णगर्भा:** ब्रह्माण्ड का हेतु माँ (अर्थात ब्रह्माण्ड का अस्तित्व माँ से ही है)*
*६३९. **अवरदा:** दुष्टों का नाश करने वाली माँ*
*६४०. **वागधीश्वरी:** वाक्शक्ति माँ*
*६४१. **ध्यानगम्या:** साधना से प्राप्त होने वाली माँ*

*६४२. **अपरिच्छेद्या:** अपरिमेय माँ*
*६४३. **ज्ञानदा:** (आत्म) ज्ञान देने वाली माँ*
*६४४. **ज्ञानविग्रहा:** (आत्म) ज्ञानावतार माँ (अर्थात आत्म-ज्ञान की उत्पत्ति माँ से ही हुई है)*

सर्ववेदान्त-संवेद्या सत्यानन्द-स्वरूपिणी ।
लोपामुद्रार्चिता लीला-क्लृप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डला ॥१२८॥

*६४५. **सर्ववेदान्त-संवेद्या:** समस्त वेद-वेदान्तों की ज्ञानी माँ*
*६४६. **सत्यानन्दस्व-रूपिणी:** सच्चिदानंद स्वरूपिणी माँ*
*६४७. **लोपामुद्रार्चिता:** लोपामुद्रा (महर्षि अगस्त्य जी की अर्धांगिनीं) द्वारा आराध्य माँ*
*६४८. **लीला-क्लृप्त-ब्रह्माण्ड-मण्डला:** ब्रह्माण्ड का खेल खेल में ही सृजन और पोषण करने वाली माँ*

अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता ।
योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा ॥१२९॥

*६४९. **अदृश्या:** सांसारिक नेत्रों से अदृश्य रहने वाली माँ (अर्थात माँ के दर्शन के लिए दिव्य-चक्षु चाहिए जो माँ की साधना से ही प्राप्त किए जा सकते हैं)*
*६५०. **दृश्यरहिता:** माँ के लिए कुछ भी अदृश्य नहीं (अर्थात सर्व-व्यापी माँ)*
*६५१. **विज्ञात्री:** भौतिक ब्रह्माण्ड के सत्य से भिज्ञ माँ*
*६५२. **वेद्यवर्जिता:** ऐसा ब्रह्माण्ड में कुछ नहीं, जिसका ज्ञान माँ को न हो*
*६५३. **योगिनी:** योग शक्ति की स्वामिनी माँ*
*६५४. **योगदा:** योग ज्ञान देने वाली माँ*
*६५५. **योग्या:** हर प्रकार से योग्य माँ (अर्थात सम्पूर्ण माँ)*
*६५६. **योगानन्दा:** योग द्वारा प्राप्त सच्चिदानंद माँ*
*६५७. **युगन्धरा:** अनंत माँ*

इच्छाशक्ति-ज्ञानशक्ति-क्रियाशक्ति-स्वरूपिणी ।
सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूप-धारिणी ॥१३०॥

*६५८. **इच्छाशक्ति-ज्ञानशक्ति-क्रियाशक्ति-स्वरूपिणी:** संकल्प-शक्ति, ज्ञान-शक्ति एवं क्रिया-शक्ति की देवी माँ (अर्थात माँ के प्रसाद से ही प्राणियों में इच्छा-शक्ति, आत्म-ज्ञान एवं शुभ-कर्म की प्रवृति जाग्रत होती है)*

*६५९. **सर्वाधारा:** सभी प्राणियों का आधार माँ*

*६६०. **सुप्रतिष्ठा:** दृढ़ता से स्थापित माँ (अर्थात माँ को कोई विचलित नहीं कर सकता)*

*६६१. **सदसद्रूप-धारिणी:** चर एवं अचर (दोनों ही रूप) स्वरूपिणी माँ*

अष्टमूर्तिर् अजाजैत्री लोकयात्रा-विधायिनी ।
एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता ॥१३१॥

*६६२. **अष्टमूर्तिर्:** आठों अवस्थाओं में विद्यमान माँ (अर्थात अष्टमूर्ति - क्षिति, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, अर्क एवं चंद्र में विद्यमान माँ)*

*६६३. **अजाजैत्री:** अज्ञान दूर करने वाली माँ*

*६६४. **लोकयात्रा-विधायिनी:** संसार में रहकर प्राणियों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, उसे निर्धारित करने वाली माँ*

*६६५. **एकाकिनी:** एकता का पाठ पढ़ाने वाली माँ*

*६६६. **भूमरूपा:** समस्त पृथ्वी के समूहों की स्वामिनी माँ*

*६६७. **निर्द्वैता:** अद्वैतवादी माँ (अद्वैतवाद - सनातन धर्म का सिद्धांत जिसमें मात्र ब्रह्म को परमार्थिक सत्ता माना जाता है एवं जीव-जगत की सत्ता अवास्तविक या असत्य मानी जाती है)*

*६६८. **द्वैतवर्जिता:** द्वैतवाद से परे माँ (द्वैतवाद - अद्वैतवाद से भिन्न एवं उसका विरोध करनेवाला सिद्धांत, जीव एवं आत्मा में भेद मानने वाला सिद्धांत, आत्मा-परमात्मा में भेद दर्शाने वाला सिद्धांत)*

अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिणी ।
बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया ॥१३२॥

*६६९. **अन्नदा:** प्राणियों का पोषण करने वाली माँ*
*६७०. **वसुदा:** धन-धान्य देने वाली माँ*
*६७१. **वृद्धा:** सनातन माँ*
*६७२. **ब्रह्मात्मैक्य-स्वरूपिणी:** ब्रह्मात्मा स्वरूपिणी माँ (माँ ही ब्रह्म एवं आत्मा हैं)*
*६७३. **बृहती:** विशाल माँ*
*६७४. **ब्राह्मणी:** ब्रह्म-ज्ञानी माँ*
*६७५. **ब्राह्मी:** वाक् देवी माँ*
*६७६. **ब्रह्मानन्दा:** ब्रह्मानंद में लिप्त माँ*
*६७७. **बलिप्रिया:** यज्ञ-प्रसाद की प्रिया माँ*

भाषारूपा बृहत्सेना भावाभाव-विवर्जिता ।
सुखाराध्या शुभकरी शोभना-सुलभा-गतिः ॥१३३॥

*६७८. **भाषारूपा:** सभी भाषाओं की ज्ञाता माँ*
*६७९. **बृहत्सेना:** एक बड़ी सेना का नेतृत्व करने वाली माँ*
*६८०. **भावाभाव-विवर्जिता:** भावनाओं से परे माँ (माँ एक न्यायाधीश हैं, अतः भावनाओं से परे होकर प्राणियों के शुभ एवं अशुभ कर्मों का न्याय करती हैं)*
*६८१. **सुखाराध्या:** माँ की आराधना से सुख की प्राप्ति होती है*
*६८२. **शुभकरी:** मंगल करने वाली माँ*
*६८३. **शोभना-सुलभा-गतिः** सुलभ एवं पवित्र साधना से प्राप्त होने वाली माँ*

राज-राजेश्वरी राज्य-दायिनी राज्य-वल्लभा ।
राजत्कृपा राजपीठ-निवेशित-निजाश्रिता ॥१३४॥

*६८४. **राज-राजेश्वरी:** सम्राटों की सम्राट माँ*
*६८५. **राज्य-दायिनी:** साम्राज्य देने वाली माँ*
*६८६. **राज्य-वल्लभा:** (अपने भक्तों के) साम्राज्यों की रक्षक माँ*
*६८७. **राजत्कृपा:** (अपने भक्त) सम्राटों पर कृपा करने वाली माँ*
*६८८. **राजपीठ-निवेशित-निजाश्रिता:** शरणागत सम्राटों को राज-सिंहासन*

पर बिठाने वाली माँ

राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरङ्ग-बलेश्वरी ।
साम्राज्य-दायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला ॥१३५॥

*६८९. **राज्यलक्ष्मी:** (सम्राटों के) राज्यों की लक्ष्मी माँ (अर्थात अपने भक्त सम्राटों के राज्यों को धन-धान्य एवं वैभव देने वाली माँ)*
*६९०. **कोशनाथा:** (अपने भक्त सम्राटों के राज्यों की) कोषाध्यक्ष माँ*
*६९१. **चतुरङ्ग-बलेश्वरी:** सेना के चार अंग- हस्ती, अश्व, रथ, पदाति, का नेतृत्व करने वाली माँ*
*६९२. **साम्राज्य-दायिनी:** (भक्त सम्राटों को) साम्राज्य देने वाली माँ*
*६९३. **सत्यसन्धा:** सत्य के प्रति समर्पित माँ*
*६९४. **सागरमेखला:** समुद्र को लपटने वाली माँ (अर्थात समुद्र को नियंत्रित करने वाली माँ)*

दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोक-वशङ्करी ।
सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्द-रूपिणी ॥१३६॥

*६९५. **दीक्षिता:** (गुरु) दीक्षा देने वाली माँ*
*६९६. **दैत्यशमनी:** दैत्यों का संहार करने वाली माँ*
*६९७. **सर्वलोक-वशङ्करी:** ब्रह्माण्ड को अपने नियंत्रण में रखने वाली माँ*
*६९८. **सर्वार्थदात्री:** (भक्तों की) इच्छा-पूर्ति हेतु वरदान देने वाली माँ*
*६९९. **सावित्री:** ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति करने वाली माँ*
*७००. **सच्चिदानन्द-रूपिणी:** सच्चिदानंद स्वरूपिणी माँ*

देश-कालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी ।
सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी ॥१३७॥

*७०१. **देश-कालापरिच्छिन्ना:** समय एवं क्षेत्र से अमापित माँ (अर्थात माँ किसी एक समय अथवा किसी एक क्षेत्र में निवासित नहीं हैं, वह हर समय एवं*

हर क्षेत्र में विद्यमान हैं)

*७०२. **सर्वगा:** सर्व-व्यापी माँ*

*७०३. **सर्वमोहिनी:** सभी को मोहित करने वाली माँ*

*७०४. **सरस्वती:** विद्या-दायिनी माँ (स्वयं सरस्वती स्वरूपिणी माँ)*

*७०५. **शास्त्रमयी:** स्वयं ही (धार्मिक) शास्त्र माँ*

*७०६. **गुहाम्बा:** गुह (सुब्रमण्य) की जननी, माँ*

*७०७. **गुह्यरूपिणी:** गुप्त रुप में विद्यमान माँ*

सर्वोपाधि-विनिर्मुक्ता सदाशिव-पतिव्रता ।
सम्प्रदायेश्वरी साधु ई गुरुमण्डल-रूपिणी ॥१३८॥

*७०८. **सर्वोपाधि-विनिर्मुक्ता:** सभी बंधनों से मुक्त माँ*

*७०९. **सदाशिव-पतिव्रता:** (अपने पति) भगवान् शिव शंकर को सदैव समर्पित माँ*

*७१०. **सम्प्रदायेश्वरी:** सम्प्रदायों की सरंक्षक माँ (अर्थात माँ सनातन सम्प्रदायों के पवित्र परम्पराओं की रक्षा करती हैं)*

*७११. **साधु:** सभी के प्रति सम-भाव रखने वाली माँ*

*७१२. **ई:** ईश्वर स्वरूपिणी माँ*

*७१३. **गुरूमण्डल-रूपिणी:** गुरु परम्परा में सर्वोच्च गुरु माँ*

कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही ।
गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया ॥१३९॥

*७१४. **कुलोत्तीर्णा:** कुल (भक्तों के वंश) को तारने वाली माँ*

*७१५. **भगाराध्या:** भग-गुण धारीओं (भग गुण - ज्ञान, वैराग्य, धर्म, यश, ऐश्वर्य एवं श्री) से आराध्य माँ*

*७१६. **माया:** स्वयं ही माया, माँ*

*७१७. **मधुमती:** शहद समान मधुर माँ*

*७१८. **मही:** पृथ्वी-लोक की स्वामिनी माँ*

*७१९. **गणाम्बा:** (भगवान् शिव शंकर के) गणों की जननी, माँ*

*७२०. **गुह्यकाराध्या:** गुह्यकाओं (गुफा में रहने वाले योगिओं) द्वारा आराध्य माँ*

*७२१. **कोमलाङ्गी:** कोमल अंगों वाली माँ*
*७२२. **गुरुप्रिया:** गुरु की प्रिया, माँ (भगवान् शिव शंकर ही माँ के गुरु हैं, अतः भगवान् शिव शंकर की प्रिया, माँ)*

स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्ति-रूपिणी ।
सनकादि-समाराध्या शिवज्ञान-प्रदायिनी ॥१४०॥

*७२३. **स्वतन्त्रा:** सभी बंधनों से स्वतंत्र माँ*
*७२४. **सर्वतन्त्रेशी:** सभी तांत्रिकों (एवं तंत्र मन्त्रों) की स्वामिनी माँ*
*७२५. **दक्षिणामूर्ति-रूपिणी:** कर्म-काण्ड, यज्ञ आदि में दक्षिणा (आहुति) को स्वीकार करने वाली देवी स्वरूपिणी माँ*
*७२६. **सनकादि-समाराध्या:** सनकादिक ऋषियों (ब्रह्मा के मानस पुत्रों) द्वारा आराध्य माँ*
*७२७. **शिवज्ञान-प्रदायिनी:** पवित्र (मंगल) ज्ञान दायिनी माँ*

चित्कला आनन्द-कलिका प्रेमरूपा प्रियङ्करी ।
नामपारायण-प्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी ॥१४१॥

*७२८. **चित्कला:** ब्रह्म-चेतना माँ*
*७२९. **आनन्दकलिका:** आनंद दायिनी माँ*
*७३०. **प्रेमरूपा:** प्रेम रूप माँ*
*७३१. **प्रियङ्करी:** (भक्तों की) प्रिय इच्छा को फलीभूत करने वाली माँ*
*७३२. **नामपारायण-प्रीता:** नाम-जाप करने वालों (भक्तों) से प्रसन्न होने वाली माँ*
*७३३. **नन्दिविद्या:** नंदी मन्त्र (ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, नन्दिकेश्वराय धीमहि, तन्नो वृषभरू प्रचोदयात्) की जननी, माँ*
*७३४. **नटेश्वरी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी, माँ*

मिथ्या-जगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी ।
लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता ॥१४२॥

*७३५. **मिथ्या-जगदधिष्ठाना:** मायावी ब्रह्माण्ड की अधिष्ठात्री देवी माँ*
*७३६. **मुक्तिदा:** मोक्ष दायिनी माँ*
*७३७. **मुक्तिरूपिणी:** मोक्ष स्वरूपिणी माँ (अर्थात मोक्ष दायिनी माँ)*
*७३८. **लास्यप्रिया:** लास्य नृत्य की प्रिया माँ (स्त्रियों का एक विशेष नृत्य जिसमें कोमल अंग भंगिमाओं के द्वारा मधुर भावों का प्रदर्शन होता है तथा जो श्रृंगार आदि कोमल रसों को उद्दीप्त करता है। इसमें गायन तथा वादन दोनों का योग रहता है)*
*७३९. **लयकरी:** (भक्ति-संगीत) लय में तन्मय करने वाली माँ*
*७४०. **लज्जा:** सुशील माँ*
*७४१. **रम्भादिवन्दिता:** रम्भा आदि (स्वर्ग की अप्सराओं) से आराध्य माँ*

भवदाव-सुधावृष्टिः पापारण्य-दवानला ।
दौर्भाग्य-तूलवातूला जराध्वान्त-रविप्रभा ॥ १४३॥

*७४२. **भवदाव-सुधावृष्टिः** वन-अग्नि में वर्षा समान (अपने भक्तों पर) अमृत की वर्षा करने वाली माँ*
*७४३. **पापारण्य-दवानला:** (भक्तों के) पापों को नष्ट करने के लिए वन-अग्नि के समान माँ*
*७४४. **दौर्भाग्य-तूलवातूला:** (भक्तों के) दुर्भाग्यों को भगाने के लिए (दूर करने के लिए) झंझावात समान माँ*
*७४५. **जराध्वान्त-रविप्रभा:** (भक्तों के) अज्ञान (अंधकार) को दूर करने के लिए सूर्य किरण समान माँ*

भाग्याब्धि-चन्द्रिका भक्त-चित्तकेकि-घनाघना ।
रोगपर्वत-दम्भोलिर् मृत्युदारु-कुठारिका ॥ १४४॥

*७४६. **भाग्याब्धि-चन्द्रिका:** (भक्तों का) सौभाग्य जगाने के लिए पूर्ण चन्द्रमा स्वरूपिणी माँ*
*७४७. **भक्त-चित्तकेकि-घनाघना:** जिस प्रकार बादल मोरों के हृदयों को आनंदित करता है, उसी प्रकार भक्तों के हृदयों को आनंदित करने वाली (बादल स्वरूपिणी) माँ*

*७४८. **रोगपर्वत-दम्भोलिर्:** असाध्य (कठिन) रोगों को वज्र की भांति दूर करने वाली माँ (अर्थात जिस प्रकार वज्र शत्रुओं का संहार करता है, उसी प्रकार माँ असाध्य रोगों को भी निर्मूल कर देतीं हैं)*

*७४९. **मृत्युदारु-कुठारिका:** काल को कुठारी भांति काटने वाली माँ (अर्थात मृत्यु को भी माँ उसी प्रकार काट डालती हैं, भगा देतीं हैं, जिस प्रकार कुठारी काष्ठ को काट डालती है)*

महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना ।
अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुर-निषूदिनी ॥१४५॥

*७५०. **महेश्वरी:** सर्वोच्च भगवती माँ*

*७५१. **महाकाली:** महाकाल स्वरूप भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी माँ (महाकाली स्वरुप में माँ के पाँच मुख और आठ भुजाएँ मानी जाती हैं)*

*७५२. **महाग्रासा:** (प्रलय के समय) सर्वोच्च भक्षक माँ*

*७५३. **महाशना:** (भक्ष्य, अभक्ष्य) सभी प्रकार के भोजन खाने वाली सर्वोच्च माँ (अग्नि देव की भांति माँ भी सभी भक्ष्य एवं अभक्ष्य भोजन खाने में समर्थ हैं)*

*७५४. **अपर्णा**: पत्र (पत्ते) तक खाना छोड़कर साधना करने वाली माँ (पार्वती के रूप में माँ ने भगवान् शिव शंकर को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या की, यहां तक की पत्तों को भी भोजन में खाना बंद कर दिया, तब उनका नाम अपर्णा पड़ा)*

*७५५. **चण्डिका:** असुरों पर क्रोधित माँ*

*७५६. **चण्डमुण्डासुर-निषूदिनी:** चंड एवं मुंड असुरों का संहार करने वाली माँ*

क्षराक्षरात्मिका सर्व-लोकेशी विश्वधारिणी ।
त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका ॥१४६॥

*७५७. **क्षराक्षरात्मिका:** क्षर एवं अक्षर (नाशवान एवं अविनाशी) दोनों ही प्राणियों में विद्यमान माँ*

*७५८. **सर्व-लोकेशी:** समस्त लोकों की स्वामिनी माँ*

*७५९. **विश्वधारिणी:** विश्व का आधार माँ*

*७६०. **त्रिवर्गदात्री:** जीवन के तीनों लक्ष्य को प्रदान करने वाली माँ (प्राणियों के जीवन लक्ष्यों को प्रमुखतः तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। **क.** अल्पकालीन लक्ष्य - यह लक्ष्य एकदम निकट भविष्य में किसी ध्येय, स्थिति अथवा वस्तु, जिसको हम प्राप्त करना चाहते हैं, उसका प्रतिनिधित्व करता है। इस लक्ष्य प्रबन्ध से निकट भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है। **ख.** मध्यवर्ती लक्ष्य – मध्यवर्ती लक्ष्य बहुधा किसी एक सामान्य ध्येय, स्थिति आदि के लिये समूह में कार्य करने का प्रतिनिधित्व करता है। यह लक्ष्य भविष्य की दिशा को निर्धारित करता है। समाज में प्राणी की भूमिका का ज्ञान कराता है। **ग.** दीर्घकालीन लक्ष्य – चुना गया व्यवसाय प्राप्त करना, विवाह करना, स्वयं का मकान बनवाना आदि दीर्घकालीन लक्ष्य के उदाहरण हैं। दीर्घकालीन लक्ष्यों की प्रगति का मापन समय के आधार पर होता है।)*

*७६१. **सुभगा:** सौभाग्य प्रदायिनी माँ*

*७६२. **त्र्यम्बका:** (सोम, सूर्य एवं अनल) तीन नेत्रों वाली माँ*

*७६३. **त्रिगुणात्मिका:** त्रिगुण (तमस, रजस एवं सत) की सार माँ*

स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्प-निभाकृतिः ।
ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता ॥१४७॥

*७६४. **स्वर्गापवर्गदा:** (मृत्यु पश्चात) स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदायिनी माँ*

*७६५. **शुद्धा:** पावन माँ*

*७६६. **जपापुष्प-निभाकृतिः** गुड़हल के पुष्प समान (सुन्दर) शरीर वाली माँ*

*७६७. **ओजोवती:** आभामयी माँ*

*७६८. **द्युतिधरा:** प्रकाश-आभा से भरपूर माँ*

*७६९. **यज्ञरूपा:** स्वयं ही यज्ञ माँ*

*७७०. **प्रियव्रता:** व्रत (उपवास) की अनुरक्त माँ (संकल्पों की अनुरक्त माँ)*

दुराराध्या दुराधर्षा पाटली-कुसुम-प्रिया ।
महती मेरुनिलया मन्दार-कुसुम-प्रिया ॥१४८॥

*७७१. **दुराराध्या:** कठिन तपस्या से प्राप्त होने वाली माँ*
*७७२. **दुराधर्षा:** (दुष्टों के प्रति) असहिष्णु माँ*
*७७३. **पाटली-कुसुम-प्रिया:** हलके लाल तुरही के पुष्पों की अनुरक्त माँ*
*७७४. **महती:** महान माँ*
*७७५. **मेरुनिलया:** मेरु पर्वत निवासिनी माँ*
*७७६. **मन्दार-कुसुम-प्रिया:** मन्दार (स्वर्ग का एक वृक्ष) पुष्प की अनुरक्त माँ*

वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी ।
प्रत्यग्रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी ॥१४९॥

*७७७. **वीराराध्या:** वीरों द्वारा आराध्य माँ*
*७७८. **विराड्रूपा:** ब्रह्माण्डीय माँ*
*७७९. **विरजा:** रजस तत्व विहीन माँ (अर्थात सत स्वरूपी माँ)*
*७८०. **विश्वतोमुखी:** सर्वत्र वासी विश्व प्रेमी माँ*
*७८१. **प्रत्यग्रूपा**: चैतन्य-मयी माँ*
*७८२. **पराकाशा:** ब्रह्माण्डीय एवं भू प्राणियों की हेतु माँ*
*७८३. **प्राणदा:** जीवन देने वाली माँ*
*७८४. **प्राणरूपिणी:** (प्राणियों में) प्राण स्वरूपिणी माँ*

मार्ताण्ड-भैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्त-राज्यधूः ।
त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा ॥१५०॥

*७८५. **मार्ताण्ड-भैरवाराध्या:** दुर्जेय सूर्य देव की आराध्य माँ*
*७८६. **मन्त्रिणीन्यस्त-राज्यधूः** राज्य-मंत्रियों को उत्तरदायित्व देने वाली माँ (अर्थात साम्राज्य प्रशासन चलाने वाली माँ)*
*७८७. **त्रिपुरेशी:** त्रिपुरा की साम्राज्ञी माँ (अर्थात कामाख्या मंदिर की अधिष्ठात्री देवी माँ)*
*७८८. **जयत्सेना:** सेना को विजय दिलाने वाली माँ*
*७८९. **निस्त्रैगुण्या:** त्रिगुणों (तमस, रजस एवं सत) से परे माँ*
*७९०. **परापरा:** परा एवं अपरा (यौगिक एवं आध्यात्मिक) दोनों ही अवस्था में विद्यमान माँ*

सत्य-ज्ञानानन्द-रूपा सामरस्य-परायणा ।
कपर्दिनी कलामाला कामधुक् कामरूपिणी ॥१५१॥

*७९१. **सत्य-ज्ञानानन्द-रूपा:** सत्य, ज्ञान एवं परमानंद स्वरूपिणी माँ*
*७९२. **सामरस्य-परायणा:** हर स्थिति में एक ही प्रकार की अनुभूति रखने वाली माँ*
*७९३. **कपर्दिनी:** भगवान् शिव शंकर (कपर्दी - जटाजूटधारी भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनी, माँ*
*७९४. **कलामाला:** (६४) कलाओं से युक्त माला पहनने वाली माँ*
*७९५. **कामधुक्:** (भक्तों की) सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाली माँ*
*७९६. **कामरूपिणी:** काम स्वरूपिणी माँ (अर्थात अत्यंत सुन्दर माँ)*

कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः ।
पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा ॥१५२॥

*७९७. **कलानिधिः** समस्त कलाओं में निपुण माँ*
*७९८. **काव्यकला:** काव्य (रचना) में निपुण माँ*
*७९९. **रसज्ञा:** अमृत धारिणी माँ*
*८००. **रसशेवधिः** अमृत का सेवन करने वाली माँ*
*८०१. **पुष्टा:** पोषण कराने वाली माँ*
*८०२. **पुरातना:** सनातन माँ*
*८०३. **पूज्या:** सभी की आराध्या माँ*
*८०४. **पुष्करा:** नील-कमल स्वरूपिणी माँ (अर्थात अत्यंत सुन्दर माँ)*
*८०५. **पुष्करेक्षणा:** कमल पत्र जैसे सुन्दर नेत्रों वाली माँ*

परंज्योतिः परंधाम परमाणुः परात्परा ।
पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्र-विभेदिनी ॥१५३॥

*८०६. **परंज्योतिः** परम प्रकाशमयी माँ*
*८०७. **परंधाम:** परम धाम (कैलाश पर्वत) निवासिनी माँ*
*८०८. **परमाणुः** सूक्ष्म रूप में विद्यमान माँ*

*८०९. **परात्परा:** परम सर्वोच्च माँ*
*८१०. **पाशहस्ता:** कमन्द-धारी माँ*
*८११. **पाशहन्त्री:** (सांसारिक) बंधनों से मुक्त करने वाली माँ*
*८१२. **परमन्त्र-विभेदिनी:** शत्रुओं के तांत्रिक (अशुभ) मन्त्रों के प्रभाव को नष्ट करने वाली माँ*

मूर्ता अमूर्ता अनित्यतृप्ता मुनिमानस-हंसिका ।
सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिनी सती ॥१५४॥

*८१३. **मूर्ता:** साकार माँ*
*८१४. **अमूर्ता:** निराकार माँ*
*८१५. **अनित्यतृप्ता:** प्रत्येक स्थिति (यहाँ तक कि अस्थिर स्थिति में भी) में संतुष्ट रहने वाली माँ*
*८१६. **मुनिमानस-हंसिका:** ऋषियों के हृदय में हंस की भांति स्थित माँ*
*८१७. **सत्यव्रता**: सत्य धर्म का पालन करने वाली माँ*
*८१८. **सत्यरूपा:** स्वयं ही सत्य स्वरूपिणी, माँ*
*८१९. **सर्वान्तर्यामिनी:** सभी (भक्तों) के हृदय में वास करने वाली माँ*
*८२०. **सती:** सत का पालन करने वाली माँ (अथवा दक्ष-पुत्री, माँ)*

ब्रह्माणी ब्रह्म जननी बहुरूपा बुधार्चिता ।
प्रसवित्री प्रचण्डा आज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः ॥१५५॥

*८२१. **ब्रह्माणी:** ब्रह्म ज्ञान को प्राप्त माँ*
*८२२. **ब्रह्म:** स्वयं ही ब्रह्म, माँ*
*८२३. **जननी:** जन्म देने वाली एवं पोषण करने वाली माँ*
*८२४. **बहुरूपा:** अनेक स्वरूपों में विद्यमान माँ*
*८२५. **बुधार्चिता:** बुद्धिमानों द्वारा आराध्य माँ*
*८२६. **प्रसवित्री:** ब्रह्माण्ड की जननी, माँ*
*८२७. **प्रचण्डा:** (असुरों के प्रति) विस्मयकारी क्रोध से पूर्ण माँ*
*८२८. **आज्ञा:** दिव्य धर्मादेश देने वाली माँ*
*८२९. **प्रतिष्ठा:** सम्माननीय माँ*

*८३०. **प्रकटाकृतिः** (भक्तों की साधना से) साकार रूप में प्रकट होने वाली माँ*

प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठ-रूपिणी ।
विशृङ्खला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः ॥ १५६॥

*८३१. **प्राणेश्वरी**: (पञ्च) प्राण की स्वामिनीं माँ (पञ्च-प्राण: प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान)*
*८३२. **प्राणदात्री:** जीवन दायिनी माँ*
*८३३. **पञ्चाशत्पीठ-रूपिणी:** सभी पचास प्रकारों की अर्चना की केंद्र माँ (३३ प्रकार के देवी-देवताओं की पूजा, १६ सनातन धर्म संस्कारों की पूजा एवं १ कुल देवी पूजा)*
*८३४. **विशृङ्खला:** स्वतंत्र माँ*
*८३५. **विविक्तस्था:** एकांत स्थानों में निवास करने वाली माँ*
*८३६. **वीरमाता:** वीरों की माँ*
*८३७. **वियत्प्रसूः** व्योम (अंतरिक्ष) में निवास करने वाली माँ*

मुकुन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रह-रूपिणी ।
भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्र-प्रवर्तिनी ॥ १५७॥

*८३८. **मुकुन्दा:** (सांसारिक) बंधनों से मुक्त करने वाली माँ*
*८३९. **मुक्तिनिलया:** मोक्ष देने वाली माँ*
*८४०. **मूलविग्रह-रूपिणी:** दिव्य मूर्ति के मूल भाग में स्थित माँ (मंदिर में प्रतिष्ठापित देवी देवता की मूर्ति के मध्य भाग को मूल विग्रह कहा जाता है)*
*८४१. **भावज्ञा:** (भक्तों के) समस्त भावों की ज्ञाता माँ*
*८४२. **भवरोगघ्नी:** भव-सागर के बंधनों को नष्ट करने वाली माँ (अर्थात जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा दिलाने वाली माँ)*
*८४३. **भवचक्र-प्रवर्तिनी:** जन्म-मृत्यु के चक्र (भव-चक्र) को पलटने वाली माँ*

छन्दःसारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी ।
उदारकीर्तिर् उद्दामवैभवा वर्णरूपिणी ॥ १५८॥

*८४४. **छन्दःसारा:** सभी वेद-वेदान्तों का सार, माँ*
*८४५. **शास्त्रसारा:** सभी शास्त्रों का सार, माँ*
*८४६. **मन्त्रसारा:** सभी मन्त्रों का सार, माँ*
*८४७. **तलोदरी:** अस्थूल कटि वाली माँ*
*८४८. **उदारकीर्तिर्:** अत्यधिक ख्याति प्राप्त माँ*
*८४९. **उद्दामवैभवा:** असीमित वैभव वाली माँ*
*८५०. **वर्णरूपिणी:** वर्ण-जननी (अक्षरों की जननी) माँ*

जन्ममृत्यु-जरातप्त-जनविश्रान्ति-दायिनी ।
सर्वोपनिष-दुद्-घुष्टा शान्त्यतीत-कलात्मिका ॥१५९॥

*८५१. **जन्म-मृत्यु-जरातप्त-जनविश्रान्ति-दायिनी:** जन्म-मृत्यु के चक्र एवं रोगों से पीड़ित प्राणियों को शान्ति एवं विश्राम देने वाली माँ (अर्थात रोगों से मुक्ति एवं मृत्यु के पश्चात मोक्ष दायिनी माँ)*
*८५२. **सर्वोपनिष-दुद्-घुष्टा:** उपनिषदों द्वारा महिमामंडन प्राप्त माँ*
*८५३. **शान्त्यतीत-कलात्मिका:** शांति दायिनी माँ*

गम्भीरा गगनान्तस्था गर्विता गानलोलुपा ।
कल्पना-रहिता काष्ठा अकान्ता कान्तार्ध-विग्रहा ॥१६०॥

*८५४. **गम्भीरा:** गूढ़ माँ*
*८५५. **गगनान्तस्था:** अंतरिक्ष निवासिनी माँ*
*८५६. **गर्विता:** गौरवशाली माँ*
*८५७. **गानलोलुपा:** संगीत की अनुरक्त माँ*
*८५८. **कल्पना-रहिता:** कल्पना से वंचित माँ*
*८५९. **काष्ठा:** (सत्य) मार्ग प्रदर्शित करने वाली माँ*
*८६०. **अकान्ता:** पाप एवं दुःख का अंत करने वाली माँ*
*८६१. **कान्तार्ध-विग्रहा:** अर्ध-नारीश्वर स्वरूपिणी माँ*

कार्यकारण-निर्मुक्ता कामकेलि-तरङ्गिता ।
कनत्कनकता-टङ्का लीला-विग्रह-धारिणी ॥१६१॥

*८६२. **कार्यकारण-निर्मुक्ता:** कारण, कर्म एवं बंधन से मुक्त माँ*
*८६३. **कामकेलि-तरङ्गिता:** कामेश्वर (भगवान् शिव शंकर) के साथ आनंदित माँ*
*८६४. **कनत्कनकता-टङ्का:** स्वर्ण से निर्मित कर्ण-फूल पहनने वाली माँ*
*८६५. **लीला-विग्रह-धारिणी:** लीला (खेल-खेल) से ही विविध रूप धारण करने वाली माँ*

अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्र-प्रसादिनी ।
अन्तर्मुख-समाराध्या बहिर्मुख-सुदुर्लभा ॥१६२॥

*८६६. **अजा:** जिनके जन्म समय का किसी को ज्ञान नहीं, अर्थात अजन्मा माँ*
*८६७. **क्षयविनिर्मुक्ता:** क्षय से मुक्त माँ (अर्थात अविनाशी माँ)*
*८६८. **मुग्धा:** अपनी सुंदरता से मुग्ध कर देनी वाली माँ*
*८६९. **क्षिप्र-प्रसादिनी:** (साधना से) शीघ्र ही प्रसन्न होने वाली माँ*
*८७०. **अन्तर्मुख-समाराध्या:** मष्तिष्क द्वारा अन्तर्मन से आराध्य माँ*
*८७१. **बहिर्मुख-सुदुर्लभा:** सांसारिक प्रवृति वाले प्राणियों को दुर्लभता से प्राप्त होने वाली माँ*

त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी ।
निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधासृतिः ॥१६३॥

*८७२. **त्रयी:** स्वयं ही त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश) माँ*
*८७३. **त्रिवर्गनिलया:** प्राणियों के जीवन के तीनों दुःख (आध्यात्मिक, आधिभौतिक और अधिदैविक) से मुक्ति देने वाली माँ*
*८७४. **त्रिस्था:** त्रि-लोक वासिनी माँ (अर्थात सर्व-व्यापी माँ)*
*८७५. **त्रिपुरमालिनी:** तीनों लोकों को सुशोभित करने वाली माँ*
*८७६. **निरामया:** सभी प्रकार की व्याधियों से परे माँ (अर्थात माँ को कोई व्याधि नहीं सता सकती)*
*८७७. **निरालम्बा:** किसी पर आधारित नहीं, ऐसी माँ (अर्थात स्वतंत्र माँ)*
*८७८. **स्वात्मारामा:** अपने में ही आनंदित रहने वाली माँ*
*८७९. **सुधासृतिः** अमृत की श्रोत माँ*

संसारपङ्क-निर्मग्न-समुद्धरण-पण्डिता ।
यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमान-स्वरूपिणी ॥१६४॥

*८८०. **संसारपङ्क-निर्मग्न-समुद्धरण-पण्डिता:** सांसारिक कर्मों (अथवा जन्म-मरण चक्र) के दलदल में फंसे प्राणियों को इन कर्मों से मुक्ति दिलाने वाली कला में निपुण माँ*

*८८१. **यज्ञप्रिया:** यज्ञ की अनुरक्त माँ (अर्थात माँ को यज्ञ अति प्रिय हैं)*

*८८२. **यज्ञकर्त्री:** यज्ञ करने वाली माँ (अर्थात जो प्राणी यज्ञ करने की इच्छा रखते हैं, उनके यज्ञ सम्पूर्ण करने वाली माँ)*

*८८३. **यजमान-स्वरूपिणी:** यज्ञ में यजमान स्वरूपिणी माँ (अर्थात अपने भक्तों को यजमान स्वरुप में यज्ञ सम्पूर्ण करने की प्रेरणा देने वाली माँ)*

धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्य-विवर्धिनी ।
विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमण-कारिणी ॥१६५॥

*८८४. **धर्माधारा:** धर्म का आधार माँ*

*८८५. **धनाध्यक्षा:** धन-धान्य की स्वामिनी माँ*

*८८६. **धनधान्य-विवर्धिनी:** (अपने भक्तों के) धन-धान्य की वृद्धि करने वाली माँ*

*८८७. **विप्रप्रिया:** ब्राह्मणों (विद्वानों) की प्रिय माँ*

*८८८. **विप्ररूपा:** स्वयं ही ब्राह्मण (विद्वान्) स्वरूप माँ*

*८८९. **विश्वभ्रमण-कारिणी:** (ज्ञान प्राप्ति के लिए) देशाटन की प्रेरणा देने वाली माँ*

विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी ।
अयोनिर् योनिनिलया कूटस्था कुलरूपिणी ॥१६६॥

*८९०. **विश्वग्रासा:** (प्रलय के समय) विश्व को निगलने वाली माँ*

*८९१. **विद्रुमाभा:** अति सुन्दर मूंगे की भांति लाल वर्ण से प्रकाशित माँ*

*८९२. **वैष्णवी:** स्वयं ही विष्णु स्वरुप में माँ*

*८९३. **विष्णुरूपिणी:** विष्णु रूप में विश्व का पालन करने वाली माँ*

*८९४. **अयोनिर्:** अजन्मी माँ (माँ के जन्म-स्रोत को कोई नहीं जानता)*
*८९५. **योनिनिलया:** (ब्रह्माण्ड की) उत्पत्ति की कारण माँ*
*८९६. **कूटस्था:** सर्वोपरि माँ*
*८९७. **कुलरूपिणी:** कुल देवी स्वरूपिणी माँ*

वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी ।
विज्ञानकलना कल्या विदग्धा बैन्दवासना ॥१६७॥

*८९८. **वीरगोष्ठीप्रिया:** वीरों की सभा की अनुरक्त माँ*
*८९९. **वीरा:** पराक्रमी माँ*
*९००. **नैष्कर्म्या:** कार्यों से विरत माँ*
*९०१. **नादरूपिणी:** ध्वनि की जननी, माँ*
*९०२. **विज्ञानकलना:** वैज्ञानिक माँ (ब्रह्म-ज्ञाता माँ)*
*९०३. **कल्या:** सृजन कर्ता माँ*
*९०४. **विदग्धा:** सर्व गुण संपन्न माँ*
*९०५. **बैन्दवासना:** बैन्दव चक्र (भोहों के मध्य स्थान) में स्थित माँ*

तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी ।
सामगानप्रिया सौम्या सदाशिव-कुटुम्बिनी ॥१६८॥

*९०६. **तत्त्वाधिका:** दिव्य ब्रह्मज्ञानी माँ*
*९०७. **तत्त्वमयी:** स्वयं ही ब्रह्म माँ*
*९०८. **तत्त्वमर्थ-स्वरूपिणी:** तत एवं त्वम् स्वरूपिणी माँ (माँ ही ब्रह्म एवं आत्मा हैं)*
*९०९. **सामगानप्रिया:** साम-वेद गायन की अनुरक्त माँ*
*९१०. **सौम्या:** मृदु एवं भद्र माँ*
*९११. **सदाशिव-कुटुम्बिनी:** सदा शिव (दयालु एवं कल्याणकारी भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनीं, माँ*

सव्यापसव्य-मार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी ।
स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता ॥१६९॥

*११२. **सव्यापसव्य-मार्गस्था:** साधना के प्रत्येक मार्ग द्वारा प्राप्त माँ (माँ तांत्रिक मार्ग जिसे बाम-पंथ साधना कहा जाता है, अथवा सात्विक यौगिक साधना जिसे दक्षिण-पंथ साधना कहा जाता है, दोनों ही मार्ग से प्राप्त होतीं हैं)*
*११३. **सर्वापद्विनिवारिणी:** हर संकट का निवारण करने वाली माँ*
*११४. **स्वस्था:** समस्त वेदनाओं से रहित स्वस्थ माँ*
*११५. **स्वभावमधुरा:** मधुर स्वभाव वाली माँ*
*११६. **धीरा:** बुद्धि देने वाली माँ*
*११७. **धीरसमर्चिता:** विद्वानों द्वारा पूजित माँ*

चैतन्यार्घ्य-समाराध्या चैतन्य-कुसुमप्रिया ।
सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्य-पाटला ॥१७०॥

*११८. **चैतन्यार्घ्य-समाराध्या:** चेतन भाव (जैसे यज्ञ आदि) से पूजित माँ*
*११९. **चैतन्य-कुसुमप्रिया:** पुष्प सुगंध (अथवा उसके भाव) की अनुरक्त माँ*
*१२०. **सदोदिता:** सदैव देदीप्यमान माँ*
*१२१. **सदातुष्टा:** सदैव संतुष्ट रहने वाली माँ*
*१२२. **तरुणादित्य-पाटला:** प्रभात के सूर्य समान उज्जवलित माँ*

दक्षिणा-दक्षिणाराध्या दरस्मेर-मुखाम्बुजा ।
कौलिनी-केवला अनर्घ्य-कैवल्य-पददायिनी ॥१७१॥

*१२३. **दक्षिणा-दक्षिणाराध्या:** वाम-पंथी (तांत्रिक मार्गी) एवं दक्षिण-पंथी (योग मार्गी), दोनों ही प्रकार के भक्तों द्वारा आराध्य माँ*
*१२४. **दरस्मेर-मुखाम्बुजा:** कमल स्वरुप मुख पर भीनी मुस्कान वाली माँ*
*१२५. **कौलिनी-केवला:** कौल पथ (तंत्र साधना की एक पद्धिति) के अनुयायीओं द्वारा पूजित माँ*
*१२६. **अनर्घ्य-कैवल्य-पददायिनी:** अमूल्य मोक्ष दायिनी माँ*

स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुति-संस्तुत-वैभवा ।
मनस्विनी मानवती महेशी मङ्गलाकृतिः ॥१७२॥

*१२७. **स्तोत्रप्रिया:** मंत्रोच्चारण की अनुरक्त माँ*

*१२८. **स्तुतिमती:** स्तुति की अधिकारिणी माँ*

*१२९. **श्रुति-संस्तुत-वैभवा**: श्रुति में जिनका महिमामंडन किया गया है, ऐसी माँ*

*१३०. **मनस्विनी:** आत्म-नियंत्रित माँ*

*१३१. **मानवती:** सम्मानित माँ*

*१३२. **महेशी:** भगवान् शिव शंकर की अर्धांगिनी, माँ*

*१३३. **मङ्गलाकृतिः** मंगल (शुभ) माँ*

विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी ।
प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी ॥१७३॥

*१३४. **विश्वमाता:** विश्व की जननी, माँ*

*१३५. **जगद्धात्री:** विश्व की रक्षक एवं पोषक माँ*

*१३६. **विशालाक्षी:** बड़े बड़े नेत्रों वाली (सुन्दर) माँ*

*१३७. **विरागिणी:** वैरागी माँ*

*१३८. **प्रगल्भा:** बुद्धिमान माँ*

*१३९. **परमोदारा:** अत्यंत उदार माँ*

*१४०. **परामोदा:** परम आनंदमयी माँ*

*१४१. **मनोमयी:** अद्भुत मन-मोहक माँ*

व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी ।
पञ्चयज्ञ-प्रिया पञ्च-प्रेत-मञ्चाधिशायिनी ॥१७४॥

*१४२. **व्योमकेशी:** व्योमकेश (भगवान् शिव शंकर) की अर्धांगिनी, माँ*

*१४३. **विमानस्था**: दिव्य रथ में आसीन माँ*

*१४४. **वज्रिणी:** वज्र (महा घातक अस्त्र) धारिणी माँ*

*१४५. **वामकेश्वरी:** वाम-केश्वर तंत्र (तंत्र की एक साधना) की स्वामिनी माँ*

*१४६. **पञ्चयज्ञ-प्रिया:** पांच प्रकार के यज्ञों (अग्निहोत्र यज्ञ, दर्शपूर्णमास यज्ञ, चातुर्मास्य यज्ञ, गौ-यज्ञ एवं सोम-यज्ञ) की अनुरक्त माँ*

*१४७. **पञ्च-प्रेत-मञ्चाधिशायिनी:** पञ्च-तत्वों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और*

पृथ्वी) की स्वामिनी माँ (इन पञ्च-तत्वों को पञ्च-प्रेत अथवा पञ्च-भूत भी कहा जाता है)

पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्च-संख्योपचारिणी ।
शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी ॥१७५॥

*९४८. **पञ्चमी:** पांचवीं ईश्वर माँ (ईश्वर के पाँच रूप हैं- पर, व्यूह, विभव, अंतर्यामी और अर्चावता, माँ पांचवी रूप हैं)*
*९४९. **पञ्चभूतेशी**: पञ्च-तत्वों (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) की स्वामिनी माँ*
*९५०. **पञ्च-सङ्ख्योपचारिः** अर्चना विधि की पांच वस्तुओं (इत्र, पुष्प, धूप-बत्ती, दिया एवं भोग) से आराध्य माँ*
*९५१. **शाश्वती:** अनादि माँ*
*९५२. **शाश्वतैश्वर्या:** अविनाशी माँ*
*९५३. **शर्मदा:** आनंद दायिनी माँ*
*९५४. **शम्भुमोहिनी:** भगवान् शिव शंकर को मोहित करने वाली उनकी अर्धांगिनी, माँ*

धरा धरसुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी ।
लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका ॥१७६॥

*९५५. **धरा:** पृथ्वी स्वरूपिणी माँ*
*९५६. **धरसुता:** धर (हिमवान) की पुत्री, माँ*
*९५७. **धन्या:** धन-धान्य की स्वामिनी माँ*
*९५८. **धर्मिणी:** धर्म (सत्य) का अनुसरण करने वाली माँ*
*९५९. **धर्मवर्धिनी:** धर्म (सत्य) को प्रोत्साहित करने वाली माँ*
*९६०. **लोकातीता:** ब्रह्माण्ड देने वाली (अर्थात ब्रह्माण्ड की जननी) माँ*
*९६१. **गुणातीता:** (शुभ) गुण देने वाली माँ*
*९६२. **सर्वातीता:** (भक्तों को) सब कुछ देने वाली माँ*
*९६३. **शमात्मिका:** शान्ति एवं परमानंद देने वाली माँ*

बन्धूक-कुसुमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी ।
सुमङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी ॥१७७॥

*९६४. **बन्धूक-कुसुमप्रख्या:** बंधूक पुष्प (एक प्रकार का विशेष अति सुन्दर पुष्प जो अपराह्न में अति सुगंध के साथ खिलता है) समान सुन्दर एवं सुगन्धित माँ*
*९६५. **बाला:** बाल स्वरूपिणी (अर्थात सदैव युवती) माँ*
*९६६ **.लीलाविनोदिनी:** (अपनी) लीलाओं का आनंद लेने वाली माँ*
*९६७. **सुमङ्गली:** सदैव मंगल करने वाली माँ*
*९६८. **सुखकरी:** सदैव प्रसन्नता देने वाली माँ*
*९६९. **सुवेषाढ्या:** आभूषणों से सुशोभित अति सुन्दर माँ*
*९७०. **सुवासिनी:** सधवा (आंनदित पारिवारिक जीवन वाली) माँ*

सुवासिन्यर्चन-प्रीता आशोभना शुद्धमानसा ।
बिन्दु-तर्पण-सन्तुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका ॥१७८॥

*९७१. **सुवासिन्यर्चन-प्रीता:** सुहागन स्त्रियों की अर्चना से प्रसन्न होने वाली माँ*
*९७२. **आशोभना:** सदैव देदीप्यमान माँ*
*९७३. **शुद्धमानसा:** अपने भक्तों के मष्तिष्क को पवित्र करने वाली माँ*
*९७४. **बिन्दु-तर्पण-सन्तुष्टा:** बिंदु (श्रीचक्र) अर्पण करने वालों से प्रसन्न होने वाली माँ (श्रीचक्र एक तांत्रिक चक्र या यंत्र है जिसका उपयोग सिद्धि प्राप्त करने के लिए देवी के पूजन में होता है)*
*९७५. **पूर्वजा:** सनातन माँ*
*९७६. **त्रिपुराम्बिका:** त्रिपुर नगर की स्वामिनी माँ (भारत के पूर्वी क्षेत्र में बाणासुर द्वारा निर्मित एक भव्य नगर जहां त्रिपुर-सुंदरी, जो धन, ऐश्वर्य, भोग और मोक्ष की अधिष्ठात्री पार्वती रूप देवी हैं, उनकी स्तुति की जाती है)*

दशमुद्रा-समाराध्या त्रिपुराश्री-वशङ्करी ।
ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेय-स्वरूपिणी ॥१७९॥

*१७७. **दशमुद्रा-समाराध्या:** दस मुद्रों द्वारा पूजित माँ (दस मुद्रा – सर्वसाक्षोभिणी, सर्वविद्राविनि, सर्वाकर्षिणि, सर्ववशङ्करि, सर्वोन्मादिनी, सर्वमहाङ्कुशा, सर्वखेचरी, सर्वबीजा, सर्वयोनि, सर्वत्रिखंडा)*

*१७८. **त्रिपुराश्री-वशङ्करी:** त्रिपुर नगर के वैभव (धन-धान्य) की स्वामिनी माँ*

*१७९. **ज्ञानमुद्रा:** ज्ञान मुद्रा की स्वामिनी माँ (तंत्र विद्या की एक मुद्रा जिसमें दाहिने हाथ की तर्जनी को अँगूठे से मिलाकर हाथ में रखा जाता है एवं बाएँ हाथ की उँगलियों को कमल-संपुट की आकृति देकर सिर से लेकर बाएँ जंघे तक घुमाया जाता है। इस विद्या से बुद्धिमता प्राप्त होती है।)*

*१८०. **ज्ञानगम्या:** ज्ञान (योग साधना ज्ञान) से प्राप्त होने वाली माँ*

*१८१. **ज्ञानज्ञेय-स्वरूपिणी:** ज्ञान एवं ज्ञानी माँ*

योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणा अम्बा त्रिकोणगा ।
अनघा अद्भुत-चारित्रा वाञ्छितार्थ-प्रदायिनी ॥१८०॥

*१८२. **योनिमुद्रा:** योनिमुद्रा की स्वामिनी माँ (योनिमुद्रा तांत्रिक मुद्राओं में से एक है जो यौन शक्ति को बढ़ावा देने के लिए प्रयोग में लाई जाती है।)*

*१८३. **त्रिखण्डेशी:** त्रिखंड मुद्रा की स्वामिनी माँ (त्रिखंड मुद्रा तांत्रिक मुद्राओं में से एक है जो सिद्धि प्राप्त करने के लिए उपयोग में लाई जाती है)*

*१८४. **त्रिगुणा**: त्रि-गुण (सत, रजस एवं तमस) की स्वामिनी माँ*

*१८५. **अम्बा:** ब्रह्माण्ड की जननी, माँ*

*१८६. **त्रिकोणगा:** (अनंत) त्रिकोण (जन्म, मृत्यु एवं मोक्ष) में निवास करने वाली माँ*

*१८७. **अनघा:** पवित्र माँ*

*१८८. **अद्भुत-चारित्रा:** आश्चर्यजनक (शुभ) कार्यों को करने वाली माँ*

*१८९. **वाञ्छितार्थ-प्रदायिनी:** (भक्तों की) वांछित इच्छाओं की पूर्ति करने वाली माँ*

अभ्यासातिशय-ज्ञाता षडध्वातीत-रूपिणी ।
अव्याज-करुणा-मूर्तिर् अज्ञान-ध्वान्त-दीपिका ॥१८१॥

*९९०. **अभ्यासातिशय-ज्ञाता:** आध्यात्मिक कठिन साधनाओं द्वारा प्राप्त होने वाली माँ*

*९९१. **षडध्वातीत-रूपिणी:** जीवन की छह अवस्थाओं को निर्देशित करनी वाली माँ (जीवन की छै अवस्थाएं: बालपन, किशोर, विद्यार्थी, विवाहित, वानप्रस्थ एवं संन्यास)*

*९९२. **अव्याज-करुणा-मूर्तिर्:** पवित्र करुणामयी माँ*

*९९३. **अज्ञान-ध्वान्त-दीपिका:** अज्ञान के अंधकार को दीपक के प्रकाश समान दूर करने वाली माँ*

आबाल-गोप-विदिता सर्वानुल्लङ्घ्य-शासना ।
श्रीचक्रराज-निलया श्रीमत्-त्रिपुरसुन्दरी ॥१८२॥

*९९४. **आबाल-गोप-विदि:** बालक एवं गौ-पालकों की सरंक्षक माँ*

*९९५. **सर्वानुल्लङ्घ्य-शासना:** जिनकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस किसी में नहीं, ऐसी शासक माँ*

*९९६. **श्रीचक्रराज-निलया:** श्रीचक्र के केंद्र में निवास करने वाली माँ (श्रीचक्र तांत्रिक विद्या का एक चक्र है)*

*९९७. **श्रीमत्-त्रिपुरसुन्दरी:** त्रिपुर नगर की अत्यंत सुंदरी स्वामिनी माँ*

श्रीशिवा शिव-शक्त्यैक्य-रूपिणी ललिताम्बिका ॥१८३॥

*९९८. **श्रीशिवा:** शुभ एवं दिव्य माँ*

*९९९. **शिव-शक्तैक्य-रूपिणी:** शिव एवं शक्ति, दोनों ही रूप में, स्थित माँ*

*१०००. **ललिताम्बिका:** दिव्य ललिता (अत्यंत सुन्दर) माँ*

एवं श्रीललिता देव्या नाम्नां साहस्रकं जगुः ॥

भावार्थ: आध्यात्मिकता जाग्रत करने वाले दिव्य देवी श्री ललिता के सहस्त्र नाम

॥ इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे उत्तरखण्डे श्रीहयग्रीवागस्त्यसंवादे
श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र कथनं सम्पूर्णम् ॥

श्रीब्रह्माण्डपुराण के उत्तरखंड में कथित श्री हयग्रीव (भगवान् विष्णु का एक नाम) एवं महर्षि अगस्त्य के मध्य हुआ श्रीललिता सहस्रनाम स्तोत्र का वार्तालाप सम्पूर्ण हुआ।

श्रीललितापञ्चरत्नम्

प्रातः स्मरामि ललिता-वदनारविन्दं विम्बाधरं पृथुल-मौक्तिक-शोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम्॥१॥

भावार्थः प्रातःकाल ललिता देवी के उस मनोहर मुख-कमल का स्मरण करता हूँ, जिनके बिम्ब समान रक्तवर्ण अधर, विशाल मौक्तिक (मोती के बुलाक) से सुशोभित नासिका और कर्ण पर्यन्त फैले हुए विस्तीर्ण नैन हैं, जो मणिमय कुण्डल और मन्द मुसकान से युक्त हैं तथा जिनका ललाट कस्तूरिका तिलक से सुशोभित है।

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं रक्ताङ्गुलीय-लसदङ्गुलि-पल्लवाढ्याम्।
माणिक्यहेम-वलयाङ्गद-शोभमानां पुण्ड्रेक्षुचाप-कुसुमेषु-सृणीदधानाम्॥२॥

भावार्थः मैं श्री ललितादेवी की भुजा रूपिणी कल्पलता का प्रातःकाल स्मरण करता हूँ जो लाल अंगूठी से सुशोभित सुकोमल अंगुलि रूप पल्लवों वाली तथा रत्नखचित सुवर्ण कंकण और अंगदादि से भूषित है एवं जिन्होंने पुण्ड्र-ईख के धनुष, पुष्पमय बाण और अंकुश धारण किये हैं।

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्। पद्मासनादि-सुरनायकपूजनीयं पद्माङ्कुश-ध्वज-सुदर्शन-लाञ्छनाढ्यम्॥३॥

भावार्थः मैं श्री ललितादेवी के चरण कमलों को, जो भक्तों को अभीष्ट फल देने वाले और संसार सागर के लिये सुदृढ़ जहाज रूप हैं तथा कमलासन श्री ब्रह्मा जी आदि देवेश्वरों से पूजित और पद्म, अंकुश, ध्वज एवं सुदर्शनादि मंगलमय चिह्नों से युक्त हैं, प्रातःकाल नमस्कार करता हूँ।

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानी त्रय्यन्त-वेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थिति-हेतुभूतां विद्येश्वरीं निगम-वाङ्गनसातिदूराम्॥४॥

भावार्थः मैं प्रातःकाल परम कल्याण रूपिणी श्री ललिता भवानी की स्तुति करता हूँ जिनका वैभव वेदान्तवेद्य है जो करुणामयी होने से शुद्ध स्वरूपा हैं, विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय की मुख्य हेतु हैं, विद्याकी अधिष्ठात्री देवी हैं तथा वेद, वाणी और मन की गति से अति दूर हैं।

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति। श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति॥५॥

भावार्थः हे ललिते! मैं तेरे पुण्यनाम कामेश्वरी, कमला, महेश्वरी, शाम्भवी, जगज्जननी, परा, वाग्देवी तथा त्रिपुरेश्वरी आदि का प्रातःकाल अपनी वाणी द्वारा उच्चारण करता हूँ।

यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते। तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना विद्यां श्रियं विमल-सौख्यमनन्तकीर्तिम्॥६॥

भावार्थः माता ललिता के अति सौभाग्यप्रद और सुललित इन पाँच श्लोकों को जो पुरुष प्रातःकाल पढ़ता है उसे शीघ्र ही प्रसन्न होकर ललिता देवी विद्या, धन, निर्मल सुख और अनन्त कीर्ति देती हैं।

॥श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं श्रीललितापञ्चरत्नम् तत्सत्॥

गुरु-शब्द

ललिता मां को आद्याशक्ति माना जाता है। अन्य विद्याएँ भोग या मोक्ष में से एक ही देती हैं परंतु भगवती महा-त्रिपुर-सुंदरी ललिता महाविद्या अपने उपासक को भुक्ति और मुक्ति दोनों प्रदान करती हैं। इन आद्याशक्ति षोडशी महाविद्या के स्थूल, सूक्ष्म, पर तथा तुरीय चार रूप हैं।

एक बार पराम्बा पार्वतीजी ने भगवान् शिव से पूछा, 'भगवन्, आपके द्वारा प्रकाशित तन्त्रशास्त्र की साधना से जीव के आधि-व्याधि, शोक-संताप, दीनता-हीनता तो दूर हो जायेंगे किन्तु गर्भवास और मरण के असह्य दुःख की निवृति तो इससे नहीं होगी। कृपा करके इस दुःख से निवृत्ति और मोक्षपद की प्राप्ति का कोई उपाय बताइये।'

परम कल्याणमयी पराम्बा के अनुरोध पर भगवान् शंकर ने षोडशी श्री विद्या साधना प्रणाली को प्रकट किया। भगवान् शङ्कराचार्य ने भी श्री विद्या के रूप में इन्हीं षोडशी देवी की उपासना की थी। इसीलिये आज भी सभी शाङ्कर पीठों में भगवती षोडशी राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की श्री यन्त्र के रूप में आराधना करने की परम्परा चली आ रही है।

इस लोक में श्री विद्या का सामान्य ज्ञान रखने वाले कुछ साधक तो सुलभ हैं परंतु विशेष ज्ञाता अत्यन्त दुर्लभ हैं। कारण, श्रीविद्या रहस्यमयी गुप्तविद्या है। इसका मंत्रोपदेश गुरु परम्परा द्वारा योग्य साधकों को ही दिया जाता है। भगवती की आराधना प्रदर्शनी के लिये नहीं होनी चाहिये। उत्तम तो यही है कि जिनके पास पर्याप्त समय हो, विश्वास हो, श्रद्धा हो, जो नित्य इसका जप आदि कर सकने में सक्षम हों वे ही योग्य गुरु से श्री विद्या के मन्त्र की दीक्षा लें और नित्य जपादि करें। हालांकि योग्य गुरु न मिलने पर आगमोक्त "मन्त्र ग्रहण विधि" का आश्रय लेकर भी साधक स्वयमेव दीक्षित हो सकता है परन्तु मार्गदर्शन तो गुरु ही करता है। इस श्रीविद्या का प्रकाशन हर किसी के समक्ष नहीं करना चाहिये। सामान्य आराधकों को स्तोत्रों के पाठ से ही भगवती की आराधना करनी चाहिये।

दुर्गुणों का सर्वथा त्याग कर श्री विद्या की आराधना में सुपात्र बनना अति आवश्यक है। गुणवानों की निरन्तर निन्दा करने वाले, आर्जव-शून्य (जिसमें इंद्रियों का दासत्व,

सीधे पन का अभाव हो, कुटिल हो), नित्य स्त्री प्रसंग करने वाले, उद्दण्ड, मन-वाणी-कर्म से गुरू-भक्ति-हीनता आदि दोषों से युक्त व्यक्ति से श्री विद्या की सदा रक्षा करनी चाहिये। 'षोडशिकार्णव' में कहा गया है, "नास्तिकों को, सुनने की अनिच्छा वालों को एवं अर्थ का अनर्थ ढाने वालों को यह विद्या कभी नहीं देनी चाहिये। अन्यथा उपदेष्टा गुरु शिष्य के पापों से लिप्त हो जाता है।"

ध्यान की महिमा मन्त्र जप से भी अधिक बतलाई गई है। आद्याशक्ति श्रीविद्या के ये तीन प्रकार के मुख्य स्वरूप हैं- श्री बाला-त्रिपुर-सुन्दरी, श्री षोडशी-त्रिपुर-सुन्दरी और श्री ललिता-त्रिपुर-सुन्दरी।

श्रीविद्या की विस्तृत पूजा के विधि-विधान बहुत समय साध्य हैं, अतः खड्गमाला, अष्टोत्तरशत नाम, सहस्रनाम आदि स्तोत्रों के द्वारा भी श्री ललिता महाविद्या की आराधना की जाती है। तन्त्र ग्रन्थों में षोडशी महाविद्या के प्रातः स्मरण, शतनाम, सहस्रनाम, मानस पूजन, कवच, हृदय, खड्गमाला आदि बहुत से उत्तम स्तोत्र मिलते हैं जिनके माध्यम से भगवती षोडशी की स्तोत्रात्मक स्तुति उत्तम प्रकार से की जाती है। आद्य शंकराचार्य जी द्वारा रचित 'सौंदर्य लहरी' नामक स्तोत्र सौ श्लोकों का है।

श्रीविद्या के सामान्य आराधकों को भगवती के विविध स्तोत्रों का सहारा ले लेना चाहिये। धर्मग्रन्थों में भगवती महा-त्रिपुर-सुन्दरी के विविध स्तोत्रों का विशाल संग्रह प्राप्त होता है। यहां भगवती ललिताम्बा का प्रातः स्मरण स्तोत्र प्रस्तुत है, शङ्कराचार्यजी के द्वारा रचित इस स्तोत्र को ललितापंचक स्तोत्र अथवा ललिता पञ्चरत्न स्तोत्र भी कहा जाता है।

माँ ललिताम्बा सभी को सुख, धन-धान्य, वैभव, आत्मिका एवं मरण उपरान्त मोक्ष प्रदान करे।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः

श्री राम कथा संस्थान उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव से भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण (सत, रज और तमस) के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

कवि: डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधि विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है, तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।